नव-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

(ततियो भागो)

यमक-पट्ठान-अट्ठकथा

संशोधक

डा॰ महेश तिवारी, शास्त्री

253·6
पंचा -3

नव-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला
बिहाररज्जाणाय पकासिता

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

(ततियो भागो)

यमक-पट्ठान-अट्ठकथा

पधानसंसोधको
भिक्खु जगदीसकस्सपो

निदेसको,
नवनालन्दामहाविहारस्स

संशोधक
डा० महेश तिवारी, शास्त्री, एम. ए. (पालि, संस्कृत), पी-एच. डी.,
शोध-प्राध्यापक,
नव नालन्दा महाविहार

नव नालन्दा महाविहार
नालन्दा
पटना

द्धाब्द २५१६ ई० १९७२ विक्रमाब्द २०२९

मुख्य वितरक :
चौखम्भा संस्कृत सिरिज;
गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० नं० ८
वाराणसी
(उत्तर प्रदेश)

२५२३०६
५२-चा-२

उत्तर प्रदेश संस्कृत
पुस्तकालय
ग्रन्थ आ० सं० 4526
संस्कृत भवनम् लखनऊ

मूल्य—१० रुपये मात्र

मुद्रक :—
बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस,
एक्जीवीशन रोड, पटना-१

Nava Nalanda Mahavihara Publication
Published under the authority of
Government of Bihar

THE

PAŇCAPPAKARAṆA-AṬṬHAKATHĀ

Vol. III

YAMAKA-PAṬṬHĀNA-AṬṬHAKATHĀ

General Editor,
Bhikkhu J. Kashyap,
Director, Nava Nalanda Mahavihara.

Editor,
Dr. Mahesh Tiwary, M. A. (Pali, Sanskrit), Ph. D.,
Research Professor,
NAVA NALANDA MAHAVIHARA

NAVA NALANDA MAHAVIHARA
NALANDA
PATNA.

B. E. 2516 C.E. 1972. V. E. 2029

Sole Agents :
M/s. Chaukhamba Sanskrit Series
Gopal Mandira Lane,
Post Box No. 8
Varanasi-1
(U. P.)

Price Rupees Ten only.

Printed by :
Bihar Rajya Shikshak Sahyog Sangh Ltd. Press,
Exhibition Road, Patna-1.

The Government of Bihar established the Nalanda Institute of Post-Graduate Studies and Research in Buddhist Learning and Pali (NAVA NALANDA MAHAVIHARA) at Nalanda in 1951 with the object, *inter alia*, to promote advanced studies and to publish works of permanent value to scholars. This Institute is one of five others, planned by this Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted.. It has been doing useful work in the field of scholarship for the last twenty one years.

As part of the programme of rehabilitating and reorientating ancient Learning and Scholarship, the edition and publication of the Aṭṭhakathā have been undertaken with the co-operation of the scholars of the Institute. The Government of Bihar hope to continue to sponser such projects and trust that this humble service to the work of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

प्रधान-सम्पादकीय वक्तव्य

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा के इस भाग के प्रकाशन के साथ अभिधम्मपिटक की अट्ठकथाओं का प्रकाशन समाप्त हो जाता है। इस भाग में अभिधम्मपिटक के दो प्रौढ़ एवं गम्भीर ग्रन्थ 'यमक' तथा 'पट्ठान' की अट्ठकथायें हैं। इन ग्रन्थों के अभाव में मूलग्रन्थ में निहित धर्म-दर्शन-विषयक सामग्रियों के सम्यक् ज्ञान एवं मूल्यांकन में कठिनाई का अनुभव हो रहा था। इनके प्रकाशन से इस दिशा में प्रभूत लाभ होने की आशा है।

ग्रन्थ के संशोधक डा० महेश तिवारी सम्प्रति महाविहार में शोध प्राध्यापक के पद पर काम कर रहे हैं। पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा' जैसे ग्रन्थ का सम्पादन कर उन्होंने पालि तथा अभिधर्म-साहित्य की बड़ी सेवा की है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि वे दीर्घजीवी हों तथा पालि वाङ्मय एवं अभिधर्म-दर्शन के विकास की दिशा में उत्तरोत्तर कार्य करते रहें।

भिक्खु जे० काश्यप,
निदेशक,
नव नालन्दा महाविहार-नालन्दा (पटना)

२७-३-७२

पुरोवाक्

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा, भाग-३, अभिधम्मपिटक के षष्ठ एवं सप्तम प्रकरण 'यमक' तथा पट्ठान की अट्ठकथा है। यह अभिधम्मपिटक-अट्ठकथा का अन्तिम भाग है। इस ग्रंथ की रचना लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व भारतीय विद्वान् आचार्य बुद्धघोष द्वारा लंका में हुई थी। अभीतक इसका प्रकाशन किसी भी भारतीय लिपि में नहीं हो पाया था। यह प्रसन्नता की बात है कि नव नालन्दा महाविहार द्वारा सर्वप्रथम नागरी लिपि में इसका आलोचनात्मक संस्करण सुधी जनों के सम्मुख उपस्थित किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि निर्माण में बर्मी (छट्ठ संगायन संस्करण), स्यामी (महामुकुट राज विद्यालय संस्करण) तथा सिंहली (सायमन हेवातरण संस्करण) लिपियों में उपलब्ध प्रकाशित प्रतियों का उपयोग किया गया है। छट्ठ संगायन संस्करण के पाठ को आधारपाठ मान उसका संशोधन, परिमार्जन एवं संधारण सिंहली तथा स्यामी लिपियों में प्राप्त पाठों के तुलनात्मक अभिवाचन द्वारा किया गया है। तुलनाक्रम में जो पाठभेद प्राप्त हुए हैं, उनमें अधिकतम अर्थ-परिष्कारक पदों को ग्रन्थ के कलेवरगत कर अवशेष आवश्यक पाठों को पृष्ठ पादों में समाविष्ट किया गया है। अनावश्यक पाठ भेदों के संभार से इसे विजटित रखने का यत्न किया गया है।

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा के अन्य दो भागों की भाँति इस ग्रन्थ में भी 'नालन्दा-देवनागरी-त्रिपिटक-सम्पादन-प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। ग्रन्थ को सुगमतया बोध्य बनाने के उद्देश्य से विषयानुसार नये अनुच्छेद, शीर्षक, अनुशीर्षक आदि की व्यवस्था की गई है। 'यमक' तथा पट्ठान के व्याख्यात पद कृष्ण अक्षरों में तथा पिटक के अन्य स्थलों से समाहृत पद युग्म उद्धरण चिन्हों के अन्तर्गत रखे गये हैं। पिटक तथा अट्ठकथा में सामञ्जस्य दर्शाने के उद्देश्य से पिटक ग्रन्थों के पृष्ठ प्रसंग तथा व्याख्यात ग्रन्थों के पृष्ठ तथा अनुच्छेद क्रमांक दिये गये हैं। पृष्ठ पार्श्व में छट्ठ संगायन (बर्मी) संस्करण की यमक तथा पट्ठान-अट्ठकथा की पृष्ठ संख्या दी गई है। साथ ही इनमें आगत सामग्री के सम्यक् विन्यास पुरस्सर ग्रन्थ के प्रारम्भ में एक विवरणात्मिका भूमिका दी गई है।

अभिधम्मपिटक की अट्ठकथाओं (भाष्यों) के प्रकाशन के पुनीत अवसर पर अपने कल्याण मित्रों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन मेरा पावन कर्त्तव्य है। इस दिशा में मैं बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिसके द्वारा इस ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए समुचित अनुदान दे मूलभूत उपक्रम किया गया है। परम पूज्य गुरुदेव भिक्षु जगदीश काश्यप, निदेशक, नव नालन्दा महाविहार के प्रति मैं श्रद्धा एवं भक्ति सहित नत हूँ, जिनकी प्रेरणा, ज्ञानसंचार,

सहानुभूतिपूर्ण सहयोग, सफल मार्गदर्शन, तथा आशीर्वाद के फलस्वरूप इस ग्रन्थ का प्रकाशन सुलभ हो पाया है। पुस्तक के ग्रन्थिस्थलों के परिमार्जन तथा उत्तानिकरण में पूज्य भिक्षु उ जागराभिवंस तथा स्वामी ब्रह्मानन्द से प्रभूत सहयोग प्राप्त हुआ है। इन विद्वत वरेण्यों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। महाविहार के प्राध्यापक डा॰ गुलाबचन्द चौधरी, डा॰ उ॰ धम्मरत्न, डा॰ चन्द्रिका सिंह 'उपासक', डा॰ नागेन्द्र प्रसाद, प्रो॰ दिलीप कुमार बनर्जी, प्रो॰ उमा शंकर व्यास, प्रो॰ झामा जी तथा प्रो॰ हुवेन बी ने सम्पादनक्रम में मुझे आवश्यक परामर्शों से उपकृत किया है। प्रो॰ अंगराज चौधरी तथा डा॰ ना॰ हे॰ साम्ताणि (वाराणसी) ने इस संस्करण को पूर्ण बनाने में कई दिशायें दी हैं। इन सभी व्यक्तियों के प्रति मैं उनकी सहायता के लिए कृतज्ञ हूँ।

किसी भी ग्रन्थरचना में पुस्तकालय का प्रभूत योग रहता है। महाविहार के भूतपूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मिथिलेश्वर प्रसाद तथा सहयोगी डा॰ नन्दकिशोर उपाध्याय, श्री छोटन प्रसाद प्रभृति सहकर्मियों के तत्परतापूर्वक सहयोग का विस्मरण कभी नहीं हो सकता है, जिन्होंने आवश्यक पुस्तकें प्रदान करने में दिवा रात्रि का विभेद नहीं रखा। मैं उनके ऐसे कार्य के लिए साधुवाद देते हुए उनके उत्तरोत्तर विकास की मंगल कामना करता हूँ। पुनः मैं महाविहार के उन समस्त सहयोगियों के प्रति साधुवाद व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने जिस किसी प्रकार से इस योजना को सफल बनाने में सहायता दी है।

इस दिशा में बिहार विधान सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं मेरे अभिन्न मित्र श्री श्याम देव द्विवेदी, एम॰ ए॰, डिप, लिब॰, का हार्दिक सहयोग सर्वदा स्मृति-पथ में विद्यमान रहेगा, जिन्होंने निष्ठा, तत्परता एवं समुचित परामर्शों द्वारा इस ग्रन्थ के शुद्ध रूप में प्रकाशित होने में सहायता दी है। मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे शिष्य डा॰ ब्रह्मदेव नारायण शर्मा, डा॰ रामदेव सिंह, तथा परमेश्वर दयाल, एम॰ ए॰ के समुज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ, जिन्होंने इसकी अनुक्रमणिका निर्माण में तत्परतापूर्वक सहायता प्रदान की है। अन्त में बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि॰ प्रेस के व्यवस्थापक श्री ठाकुर दयाल सिंह, अन्यान्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों को साधुवाद देता हूँ, जिनके सहयोग, निष्ठा, सद्व्यवहार, तथा प्राच्य विद्याओं के प्रति प्रेम के फलस्वरूप इस ग्रन्थ का प्रकाशन यथा समय हो पाया है।

ग्रन्थ शुद्ध तथा सर्वाङ्ग पूर्ण रूप से प्रकाशित हो, यह मेरी चेष्टा रही है, पर मनुष्य के स्वभावतः प्रमादधर्मा होने के कारण इसमें भी त्रुटियों का नितरां विराम नहीं हो पाया है। विनम्र निवेदन एवं क्षमा याचना के साथ सुधी जनों से अनुरोध है कि वे अपने अध्ययन-क्रम में इसमें प्राप्त त्रुटियों से मुझे अवगत करावें, जिससे अगला संस्करण सुन्दरतर हो सके।

नालन्दा, महेश तिवारी
२७-१-७२

भूमिका

(१) परिचिति—पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा, भाग ३, अभिधर्म पिटक के षष्ठ एवं सप्तम प्रकरण यमक तथा पट्ठान पर भाष्य (अट्ठकथा) है। ये दोनों ग्रन्थ विषय एवं शैली की दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अभिधर्म दर्शन के जिन मूलभूत तथ्यों का प्रज्ञापन धम्मसंगणि के प्रारंभ में मातिका-स्थापना के रूप में हुआ है, तथा पुनः उसके चार अध्यायों में जिनका परिपृच्छात्मक ढंग से विस्तार है, उन्हीं तथ्यों का यहाँ अत्यन्त तार्किक ढंग से विश्लेषण तथा सम्बन्ध-निरूपण देखा जाता है। अभिधर्म दर्शन के चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण नामक चार परमार्थ धर्मों के स्थापन-निरूपण एवं विवरण-प्रसंग में एक अभिनव उपक्रम के साथ ये दोनों प्रकरण दो विशिष्ठ प्रस्थान कहे जा सकते हैं।

(२) यमकप्रकरण—यह ग्रन्थ अभिधर्म पिटक का षष्ठ प्रकरण (पुस्तक) है। इसके 'यमक' नामकरण के कुछ कारण हैं। यमक शब्द का अर्थ होता है—'युग्म'[१]। यहाँ विवेच्य धर्मों का पल्लवन युग्म प्रश्नों के सहारे हुआ है, एवं उनमें निहित युग्म पक्षों को उन प्रश्नों के सहारे दर्शाने का यत्न किया गया है। इस विशेष प्रक्रिया से प्रवृत्त होने के कारण इस ग्रन्थ का नाम यमक कहा जा सकता है।[२]

पुनः ऐसी परम्परा है कि भगवान् ने "यह यमक है," "यह यमक है" ऐसा कहते हुए इसका उपदेश किया है।[३] उनके ऐसे कथन का निश्चित अभिप्राय है। भगवान् की देशना का एकमात्र उद्देश्य प्राणिमात्र को संसार-दुःख से त्राण दिलाना है। वह प्राणिमात्र केवल दो ही धर्म 'नाम' तथा 'रूप' का पुंजमात्र है। उसके व्यक्तित्व में इन दो धर्मों के अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तु की उपलब्धि नहीं होती है। ये 'नाम तथा रूप' दो धर्म ही मनुष्य, मनुज, मानव, पुरुष आदि नामों से आख्यात हैं। अतः इन्हीं दो धर्मों का निर्देश यहाँ 'यमक' शब्द से अभिप्रेत प्रतीत होता है। यस्मात् इस प्रकरण में 'नाम, रूप' का ही विश्लेषणात्मक विवरण है, फलतः इसका नाम यमक युक्त प्रतीत होता है।

---

१. "युगलट्ठेन यमकं। युगलं हि यमकं ति वुच्चति-यमकपाटिहारियं, यमकसाला ति आदीसु विय।"
य. अ. ३।

२. "इति युगलसङ्खातानं यमकानं वसेन देसितत्ता इमेसु दससु एकेकं यमकं नाम। इमेसं पन यमकानं समूहभावतो सब्बं पेतं पकरणं यमकं ति वेदितब्बं।"
य. अ. ३।

३. यमकं अथमावत्तनीलामलतनूरुहो। यं देसयि ··· ··· ···।"
य. अ. ३।

पुन: यम का अर्थ होता है 'संसार'। पुन: पुन: जन्म लेना, पुन: पुन: मृत्यु की प्राप्ति करना तथा इस क्रम से जीवन-मरण-परम्परा को बनाये रखना संसार है। 'क' प्रत्यय का योग 'हीन' या 'अनादर' अर्थ में है। अत: जो संसार को हीन अर्थात् समाप्त करे वह यमक है। इसका अभिप्राय यह है कि यमक वह प्रकरण है, जिसके मनन, चिन्तन एवं निदिध्यासन से 'यम' शब्द से आख्यात संसार का सर्वथा प्रहाण हो जाता है।

यमक शब्द का यह अर्थ व्युत्पत्ति-प्रक्रिया से भी युक्त देखा जाता है। 'यम' का अर्थ संसार तथा 'क' का अर्थ नष्ट करना होता है--"यमं (संसार) कृणोति (हिनस्ति) इति यमकं" अर्थात् जो प्रकरण संसार अर्थात् भव-परम्परा को विनष्ट करे, वह यमक है[1]।

बर्मी परम्परा में यमक शब्द के कई अर्थ निरुक्त-प्रक्रिया से देखे जाते हैं। उनका संक्षिप्त रूप निम्नलिखित क्रम से दिया जा सकता है—

१. यमन का अर्थ है उपरमन अर्थात् मृत्यु। इसके विषय का नाम है—'यम अर्थात् पञ्च उपादान-स्कन्ध। यम के अतिक्रमण करने वाले का नाम है—यमक अर्थात् बुद्ध। यमक अर्थात् बुद्ध का जो है—'वह है यमक' अर्थात् यमक-प्रकरण[2]।

२. जो सर्वदा कार्यरत रहता है, कभी विश्राम नहीं लेता है, वह यम है। इसे यमराज कहा जाता है। जो इसका विषय अर्थात् लोक है, उसे भी यम कहा जाता है। जो इसका अतिक्रमण करता है, उसका नाम यमक है। यह बुद्ध का अधिवचन है। फलत: यमक अर्थात् बुद्ध द्वारा जो उपदिष्ट है, वह यमक है। यह यमक-प्रकरण का द्योतक है[3]।

३. यमराजा के विषय अर्थात् लोक का जिसके द्वारा अतिक्रमण किया जाता है, उस प्रकरण का नाम यमक है[4]।

---

१. प्रागिवात् कः।... कुत्सिते,...अल्पे...ह्रस्वे......। काशिका ५. ३. ७०—८७।
यम + कृवि (हिंसायाम्) + ड
"अन्येभ्योऽपि दृश्यते" इति ड प्रत्ययः।
यम + कृण्व + ड। यम + कृण्व + अ।
यम + क् + ऋण्व् + अ। यम + क + अ = यमक।

२. यमनं उपरमनं यमो = मच्चु।
यमस्स विसयो यमो = पञ्चुपादानक्खन्धा।
यमं कमति अतिक्कमति इति यमका = बुद्धो। यमकस्स इदं यमकं = पकरणं"।

३. यमति न परिविसती ति यमो = यमराजा।
यमस्स विसयो यमो = यमलोको।
यमं कमती ति यमको + बुद्धो।
यमकेन देसितं यमकं = पकरणं"।

४. "यमस्स राजस्स विसयं कमति अतिक्कमति एतेना ति यमकं = पकरणं"।

४. 'यमक' शब्द के तीनों अक्षर 'य' 'म' तथा 'क' प्रतीकात्मक हैं[1]। 'य' 'यमु' धातु का प्रतीक है, जिसका अर्थ होता है –'जाना'। इस प्रकार जिसके सहारे निर्वाण नगर को जाया जाता है, उसका नाम है 'य'। 'म' यहां पर 'मन्' धातु का प्रतीक है, जिसका अर्थ होता है—'चिन्तन करना'। फलतः जिसके द्वारा परमार्थ धर्मों का चिन्तन किया जाता है, वह है 'म'। 'क' अक्षर 'कम्' धातु का प्रतीक है, जो गति अर्थ का द्योतक होता है। अतः जिसके द्वारा विचिकित्सा का अतिक्रमण किया जाता है—वह है 'क'। इस प्रकार सम्पूर्ण यमक शब्द का अर्थ है—"वह प्रकरण जिसके द्वारा निर्वाण का अधिगम, परमार्थ धर्मों का ज्ञान तथा समस्त विचिकित्साओं का प्रहाण किया जाता है।"

इस प्रकार यमक शब्द के व्याख्या-प्रसंग में अनेक युक्तियाँ अट्ठकथा तथा टीका साहित्य में उपलब्ध होती हैं।

यमक-प्रकरण का मुख्य विषय अभिधर्म दर्शन के चार परमार्थ धर्म—चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण हैं। इनमें प्रथम तीन का विश्लेषणात्मक विवरण बहुलतया उपलब्ध है। निर्वाण की चर्चा ऋजु गति से न कर, तद्विषयक पृष्ठभूमि की स्थापना-क्रम से देखा जाता है।

परमार्थ धर्मों का विश्लेषण दस अध्यायों के अन्तर्गत हुआ है। वे हैं—मूलयमक, खन्धयमक, आयतन-यमक, धातु-यमक, सच्च-यमक, संखार-यमक अनुसययमक, चित्तयमक, धम्मयमक, तथा इन्द्रिययमक[2]। प्रत्येक अध्याय में एक-एक विषय पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक विषय मुख्य या गौण रूप से परमार्थ धर्मों के अंग हैं।

(३) **यमक-अट्ठकथा**—यह आचार्य बुद्धघोष विरचित अट्ठकथा यमकप्रकरण के दस अध्यायों पर भाष्य है। अट्ठकथा लिखने में यह परम्परा सी रही है कि विषय को अत्यधिक सरल एवं बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से उसमें निदान, वत्थु, अनुपदवण्णना तथा उनका सामंजस्य आदि दर्शाया जाता है[3]? मूलभूत शब्दों के पर्याय या शब्दगत अर्थ

---

१. "निब्बानं यन्ति गच्छन्ति एतेना ति यं; मनन्ति जानन्ति परमत्थधम्मं एतेना ति मं; कमति अतिक्कमति विचिकिच्छं एतेना ति कं। यं च तं, मं च कं चा ति यमकं=पकरणं"।

—यमक-बर्मी भाषा टीका नन्दमेधाथेरो, पृ. २—५।

२. "इमेसं दसन्नं यमकानं वसेन इदं पकरणं दस विधेन विभत्तं"। य. अ. ३.।

३. "यायत्थमभिवण्णेन्ति, व्यञ्जनत्थपदानुगं।
निदानवत्थुसम्बन्धं, एसा अट्ठकथा मता"॥

सद्दनीति—धातुमाला पृ. ३१० (बर्मी)।

तुलना करें—
"सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र, वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते, भाष्यं भाष्यविदो विदुः"॥

महाभाष्यम्-१-१।

के कथन से यदि सिद्धांतों के बोध में रिक्तता रह जाती है, तो वहाँ अट्ठकथाकार द्वारा उन सिद्धान्तगत ग्रन्थियों का उद्घाटन उनमें निहित सिद्धान्तों के विवरण तथा परम्परा का उल्लेख कर किया जाता है। कहीं-कहीं ऐसे स्थलों पर अट्ठकथाकार के अभिमत भी देखे जाते हैं।

बुद्धघोष की अट्ठकथाओं में उक्त बातें कहीं पूर्णतः तथा कहीं अंशतः परिलक्षित होती हैं। विनयपिटक एवं सुत्तपिटक की अट्ठकथायें निदान से प्रारम्भ होती हैं तथा सर्वत्र अनुपदवण्णना से संविलसित हैं। विषय समुद्भासक कथायें तथा परम्पराओं का भी उल्लेख बहुलतया देखा जाता है। अभिधर्मपिटक की अट्ठकथाओं में अट्ठकथापरिभाषागत समस्त बातें अनुपलब्ध हैं। अट्ठसालिनी तथा कथावत्थु-अट्ठकथा के अतिरिक्त अन्य अट्ठकथाओं में 'निदान' नहीं है। अट्ठसालिनी तथा सम्मोहविनोदनी में अनुपदवण्णना, विषयसमुद्भासक कथा, उपमा आदि की बहुलता के साथ आचार्य बुद्धघोष की अभिनव उक्तियाँ भी हैं, पर पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा में इस क्रम में प्रभूत व्यतिक्रम देखा जाता है। जिस प्रकार त्वरा के साथ यात्रा प्रारंभ करने वाला पथिक अधिक दूर चलने के उपरान्त श्रान्त हो उठता है, उसी प्रकार सर्व-विधा-सम्पन्न अट्ठकथारचना में प्रवृत्त आचार्य बुद्धघोष अभिधर्म के उत्तरार्द्ध प्रकरणों में श्रान्त सा दीखने लगते हैं। हाँ, पट्ठान की अट्ठकथा में यत्र-तत्र मरुस्थल में हरित तृण-सम्पन्न ह्रद की भाँति सजीवता के दर्शन होते हैं।

इसका यह भी कारण हो सकता है कि पञ्चप्पकरण में आगत विषयों का वर्णन अन्य अट्ठकथाओं में हो जाने के कारण पुनरावृत्ति-निवारणार्थ आचार्य बुद्धघोष ने उन विषयों का विशद विवरण पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा में उपस्थित नहीं किया है।

यमक-अट्ठकथा, जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, यमकप्रकरण के दस अध्यायों पर भाष्य है। मूल ग्रन्थ तथा अट्ठकथा को परिपार्श्व में रख अध्ययन करने से प्रकट होता है कि मूल ग्रन्थ में ही विषय की चर्चा सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण के साथ कर दी गई है। इसलिए अट्ठकथा में मुख्यतः उस वर्णन-प्रक्रिया के ही विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालते हुए, यत्र तत्र कुछ अवशिष्ट ग्रन्थि स्थलों को सुबोध बनाने का यत्न किया गया है। इसलिए प्रकृत प्रसंग में मूल ग्रन्थ में उपलब्ध अन्यान्य बातों की विशेष चर्चा न कर अट्ठकथाकार का इस दिशा में जो विशेष योगदान है, उसका ही संक्षिप्त विवरण उपस्थित करने का उपक्रम किया जा रहा।

१. **मूलयमक**:— मूल का अर्थ हेतु या कारण होता है[१]। अभिधर्म दर्शन के अनुसार कुशल हेतु तथा अकुशल हेतु नामक दो प्रकार के हेतु कहे गये हैं। इनमें अलोभ, अद्वेष तथा अमोह को कुशल हेतु तथा लोभ, द्वेष एवं मोह को अकुशल हेतु कहा जाता है। इन हेतुओं के योग से चित्त कुशल तथा अकुशल होता है। ये चित्तों की उत्पत्ति में साधक हेतु नहीं हैं, वरन् उनके कुशल अकुशल भाव मात्र के साधक हैं। अर्थात्

१. "तत्थ हेतू ति मूलट्ठेन कारणं।" अ. स. पृ. ६।

जो कोई भी कुशल धर्म है, वे सभी कुशलमूलक हैं या जो कोई कुशल मूलक धर्म हैं, वे सभी कुशल धर्म हैं "[१]। इसी प्रकार जो कोई अकुशल धर्म हैं, वे अकुशल मूलक हैं, अथवा जो अकुशल मूलक धर्म हैं, वे अकुशल धर्म हैं[२]।"

यमक-प्रकरण के अनुसार हेतु के दस पर्याय देखे जाते हैं। वे हैं—मूल, हेतु, निदान, संभव, पभव (प्रभव), समुट्ठान (समुत्थान) आहार, आलम्बन, पच्चय (प्रत्यय) तथा समुदय[३]। इनकी व्याख्या करते हुए अट्ठकथा में कहा गया है कि ये सभी शब्द कारण के अधिवचन मात्र हैं—"तत्थ मूलादीनि सब्बानि पि कारणवेवचनानेव[४]।" "कारण हां प्रतिष्ठान के अर्थ में 'मूल' है। अपने फल के निष्पादन के लिए प्रवृत्त होने के कारण वह 'हेतु' कहलाता है। स्पष्टत: दर्शाते हुए फल प्रदान करने के अर्थ में 'निदान' कहा जाता है। इससे फल की उत्पत्ति होती है, इस अर्थ में वह 'सम्भव' कहलाता है। फल प्रदान करता है, इसलिए उसका 'प्रभव' नाम है। पुन: इसके द्वारा फल का समुत्थान होता है, इस अर्थ में उसका अभिधान होता है—'समुत्थान'। अपने फल का वह आहरण करता है, इसलिए वह 'आहार' है। न प्रतिक्षिप्त किये जाने वाले फल के द्वारा वह आलम्बन ग्रहण करता है, फलत: उसका नाम 'आलम्बन' है। इसी के प्रत्यय से, इसके व्यतिरिक्त नहीं, फल की प्रवृत्ति होती है, इस अर्थ में इसे 'प्रत्यय' कहा जाता है। इससे फल की उत्पत्ति होने के अर्थ में वह 'समुदय' कहलाता है"[५] आदि। इस प्रकार अट्ठकथाकार ने उद्दानगाथा में आये हेतु या मूल के अधिवचन-रूप दस शब्दों के अर्थ पर प्रकाश डाला है।

इस प्रसंग में पुन: 'नाम-धर्म' की व्याख्या करते हुए उसे चार अरूपी स्कन्ध तथा निर्वाण बतलाया है[६]। अरूपी स्कन्ध का अभिप्राय वेदना-स्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कार-

---

१. य. १. ३।

२ य. १. ४।

३. "मूलवारस्स वेवचनवसेन नव वारा उद्दिट्ठा। इति मूलवारो, हेतुवारो, निदानवारो, संभववारो, पभववारो, समुट्ठानवारो, आहारवारो, आलम्बणवारो, पच्चयवारो, समुदयवारो, ति सब्बे पि दस वारा होन्ति"। य. अ. ५।

४. य. अ. ५।

५. "कारणं हि पतिट्ठानट्ठेन मूलं। अत्तनो फलनिप्फादनत्थं हिनोति पवत्तती ति हेतु। 'हन्द, नं गण्हथा' ति दस्सेन्तं विय अत्तनो फलं निदेती ति निदानं। एतस्मा फलं सम्भोती ति सम्भवो। फलं पभवती ति पभवो। समुट्ठाति एत्थ फलं, एतेन वा समुट्ठाती ति समुट्ठानं, अत्तनो फलं आहरती ति आहारो। अप्पटिक्खिपितब्बेन अत्तनो फलेन आलम्बीयती ति आलम्बणं। एतं पटिच्च अप्पटिक्खिपित्वा फलं एति पवत्तती ति पच्चयो। एतस्मा फलं समुदेती ति समुदयो"। य. अ. ५.।

६. "नामा धम्मा ति नामसङ्खाता धम्मा। ते अत्थतो चत्तारो अरूपिनो खन्धा, निब्बानं च"। य.अ. ८।
तुलना—"तत्थ कतमं नामं? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, संखारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो, असङ्खता च धातु—इदं वुच्चति नामं।" ध. सं. २८४।

स्कन्ध तथा विज्ञान-स्कन्ध है। इनमें प्रथम तीन स्कन्धों को चैतसिक तथा चतुर्थ स्कन्ध को चित्त कहा जाता है। यहाँ द्रष्टव्य है कि निर्वाण को चित्त, चैतसिक के धरातल पर नाम-धर्म के अन्तर्गत दर्शाना अट्ठकथाकार की एक नयी दिशा है। धम्मसंगणि के अनुसार चित्त, चैतसिक संस्कृत तथा संप्रत्यय धर्म हैं[1]। निर्वाण को असंस्कृत तथा अप्रत्यय धर्म कहा गया है। तो क्या अट्ठकथाकार का ऐसा अभिमत हो सकता है कि निर्वाण एक असंस्कृत विज्ञान है ?

२. खन्ध-यमक—खन्ध शब्द से यहाँ पञ्च-स्कन्ध अभिप्रेत है। रूप-स्कन्ध, वेदना-स्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कार-स्कन्ध तथा विज्ञान-स्कन्ध को पञ्च-स्कन्ध कहा जाता है। चार महाभूत तथा चौबीस उपादा रूपों के समुदायरूप अट्ठाइस प्रकार के रूपों को रूप-स्कन्ध कहा जाता है। सुख-वेदना, सौमनस्य-वेदना, दुःख-वेदना, दौर्मनस्य-वेदना तथा उपेक्षा-वेदना नामक पाँच मुख्य वेदनायें हैं। काल एवं पुरुष के भेद से इनके अनेक भेद देखे जाते हैं। इन सबके समूह का नाम वेदना-स्कन्ध है। संज्ञा संजानन मात्र है। रूप-संज्ञा, शब्द-संज्ञा, गन्ध-संज्ञा, रस-संज्ञा, तथा अस्प्रष्टव्य-संज्ञा आदि इसके अनेक प्रकार हैं। इनका समूह संज्ञा-स्कन्ध है। 'अनुभवन' एवं 'संजानन' से व्यतिरिक्त जो विभिन्न प्रकार की मानसिक प्रवृत्तियाँ हैं वे संस्कार-स्कन्ध के नाम से गृहीत है। विज्ञान शब्द चित्त या मन का अधिवचन है। अभिधर्म-दर्शन के अनुसार चित्त के एक सौ एक्कीस प्रकार कहे गये हैं। चित्तों के ऐसे समूह को विज्ञान-स्कन्ध कहा जाता है।[2]

---

१. 'पञ्चक्खन्धा च रूपक्खन्धो, वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो विञ्ञाणक्खन्धो—इमे धम्मा सप्पच्चया। ××× येव ते धम्मा सप्पच्चया तेव ते धम्मा सङ्खता।"
"असङ्खता धातु—इमे धम्मा अप्पच्चया। "×××" यो एव सो धम्मो अप्पच्चयो, सो एव सो धम्मो असङ्खतो"। ध. सं. २४४.।

२ "एवमेत्थ रूपक्खन्धो ति रूपरासि रूपकोट्ठासो, वेदनाक्खन्धो ति वेदनारासि वेदनाकोट्ठासो ति इमिना नयेन सञ्ञाक्खन्धादीनं अत्थो वेदितब्बो।" मं. वि. २।

× × ×

"अतीतानागतपच्चुपन्नादिभेदभिन्ना ते ते सभागधम्मा एकज्झं रासट्ठेन खन्धा"।

विभा. टी. १७३।

× × ×

"एकस्मिं रूपनलक्खणे रासिं कत्वा ञाणेन परिग्गहिता रूपधम्मा एव। तथा एकस्मिं वेदयित-लक्खणे सञ्जाननलक्खणे रासिं कत्वा परिग्गहिता अतीतादिभेदभिन्ना वेदनासञ्ञायो वेदनाक्खन्धो सञ्ञाक्खन्धो च नाम"। प. दी. टी. ३१०।

× × ×

"यस्मा चेत्थ खन्धसद्दो रासट्ठो महाउदकक्खन्धो ति आदीसु विय, तस्मा अतीतादिविभागभिन्नं सब्बं रूपं रासिवसेन बुद्धिया एकज्झं गहेत्वा 'रूपमेवक्खन्धो रूपक्खन्धो' ति समानाधिकरणसमासो दट्ठब्बो। वि०. म. टी. २.८५।

× × ×

"यं किञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा यं दूरे सन्तिके वा, तदेकज्झं अभिसञ्ञूहित्वा अभिसङ्खिपित्वा अयं वुच्चति रूपक्खन्धो।"

वि. ३।

पञ्च-स्कन्ध आत्मा आत्मीय से विरहित धर्म-पुंज मात्र है।[1] व्यवहार में जिसे पुरुष, मनुष्य, मनुज, मानव आदि कहा जाता है, वह इन पाँच स्कन्धों का समूह मात्र है। इन पाँच स्कन्धों के एक साथ विद्यमानभाव को लक्ष्य कर कहा जाता है कि "यह पुरुष है।"[2]

खन्ध-यमक में इन्हीं पाँच स्कन्धों को लेकर युग्म प्रश्न पूछे गये हैं। अट्ठकथा में इन प्रश्नों की प्रकिया तथा गणना को विस्तारपूर्वक दर्शाया गया है।

३. आयतन-यमक—आयतन शब्द का अर्थ विस्तार होता है। जिस प्रकार 'नाम-रूप' का विस्तार पञ्च-स्कन्ध है, उसी प्रकार पञ्च-स्कन्ध का विस्तार द्वादस आयतन है। अभिधर्म-दर्शन की वर्णन प्रक्रिया मूलतः विश्लेषणात्मक होने के कारण विभिन्न विषयों का विवरण विभिन्न दृष्टियों से विभाजन कर किया गया है। आचार्य बुद्धघोष ने आयतन के इस अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि—यह 'यत्न करने', 'विस्तार करने' तथा 'ले जाने' के अर्थ में आयतन है।[3] "अपने अपने द्वार से अपने अपने आलम्बन को ग्रहण करने वाले चित्त, चैतसिक धर्म चक्षु, रूप आदि विषयों में विविध प्रकार के अनुभवादि के साथ प्रवृत्त होते हैं संघर्षण करते हैं, यत्न करते हैं। उन आयभूत धर्मों का ये विस्तार करते हैं। इस अनादि संसार में अत्यन्त विस्तृत संसार दुःख को जब तक निवृत्ति नहीं हो पाती है, तब तक आगे की ओर बढ़ाते रहते हैं"। इन्हीं कारणों से, यत्न, विस्तार एवं उपनयन के अर्थ में आयतन का प्रयोग देखा जाता है।

आयतन संख्या में बारह हैं। वे हैं—चक्षुआयतन, श्रोतायतन, घ्राणायतन, जिह्वायतन, कायायतन, मनायतन, रूपायतन, शब्दायतन, गन्धायतन, रसायतन,

---

१. "स्वायमिध रासितो अधिप्पेतो। अयं हि खन्धट्ठो नाम पिण्डट्ठो, पूगट्ठो, घट्टो, रासट्ठो। तस्मा रासिलक्खणा खन्धा ति वेदितब्बा"। सं. बि. २।

२. "एवं खन्धेसु सन्तेसु होति सत्तो ति सम्मुति"। सं. नि. १.१३५।
"किं नु सत्तो ति पच्चेसि, मार, दिट्ठिगत नु ते।
सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं, नयिधसत्तुपलब्भति" ॥ सं. नि. १.१३५।

× × ×

"फेणपिण्डूपमं रूपं, वेदना बुब्बुलूपमा।
मरीचिकूपमा सञ्ञा, सङ्खारा कदलूपमा।
मायूपमं च विञ्ञाणं, देसितादिच्चबन्धुना" ॥ सं. नि. १.१६०। सं. वि. ३३।
इनके क्रम के सम्बन्ध में :—
"भाजनं भोजनं तस्स व्यञ्जनं भोजको तथा।
भुञ्जिता चा ति पञ्चेते उपमेन्ति यथाक्कमं" ॥ ना. रू. प. ४२।

३. "आयतनतो, आयानं तननतो, आयतस्स च नयनतो आयतनं ति वेदितब्बं। चक्खुरूपादीसु हि तंतंद्वारारम्मणा चित्तचेतसिका धम्मा सेन सेन अनुभवादिना किच्चेन आयतन्ति उट्ठहन्ति घट्टेन्ति वायमन्ती ति वुत्तं होति। ते च आयभूते धम्मे एतानि तनोन्ति वित्थारेन्ती ति वुत्तं होति। इदं च अनमतग्गे संसारे पवत्तं अतीव आयतं संसारदुक्खं याव न निवत्तति ताव नयन्तेव, पवत्तयन्ती ति वुत्तं होति"। सं. वि. ४६-४७।

स्प्रष्टव्यायतन तथा धर्मायतन। इनमें मनायतन पूर्णतः नाम-धर्म है। धर्मायतन में नाम तथा रूप दोनों प्रकार के धर्म हैं। अवशेष दस आयतन केवल रूप धर्म हैं। या इस प्रकार से कहा जा सकता है कि इन बारह आयतनों के माध्यम से अभिधर्म के चार परमार्थों का विस्तार है। यथा मनायतन से समस्त एक सौ इक्कीस चित्त अभिप्रेत हैं। धर्मायतन में बावन चैतसिक, निर्वाण तथा सोलह सूक्ष्म रूप हैं[1]। इन दो आयतनों को छोड़ अन्य चक्षुआयतन से लेकर स्प्रष्टव्यायतन (पृथ्वी, अग्नि, वायु) तक बारह रूपों का कथन है। इस प्रकार एक सौ इक्कीस चित्त, बावन चैतसिक, अट्ठाइस रूप तथा एक निर्वाण का विस्तार बारह आयतनों में देखा जा सकता है। इन्हीं बारह आयतनों को लक्ष्य कर यमक में युग्म प्रश्न किये गये हैं। अट्ठकथा में इन प्रश्न-प्रक्रिया, प्रक्रिया-प्रभेद तथा विधाओं पर प्रकाश डाला गया है।

४. धातु-यमक—'नामरूप' या पञ्चस्कन्ध शब्द से आख्यात धर्मों का एक अन्य विस्तार धातु के रूप में देखा जाता है[2]। यहाँ धातु शीर्ष से इनका कथन कर यह दर्शाया गया है कि ये धर्म निःसत्त्व, निर्जीव मात्र हैं। इनमें आत्मा नामक सदवस्तु की उपलब्धि नहीं होती है।[3] अपने स्वभाव को धारण करने के अर्थ में इनका कथन धातु के रूप में किया गया है—"एता पन अत्तनो सभावं धारेन्ती ति धातुयो"। अथवा कारण रूप से सत्त्वों के साथ संसार दुःख का अनुविधान करने या धारण करने के अर्थ में भी ये धातु कहे जाते हैं—"एताहि च कारणभूताहि संसारदुक्खं सत्तेहि अनुविधीयति, तथा विहितं चेतं संसारदुक्खं एतास्वेव धीयति ठपीयती ति अत्थो"।[4]

धातु अठारह प्रकार के कहे गये हैं। वे हैं—चक्षुर्धातु, श्रोतधातु, घ्राणधातु, जिह्वाधातु, कायधातु, रूपधातु, शब्दधातु, गन्धधातु, रसधातु, स्प्रष्टव्यधातु, चक्षुर्विज्ञान-धातु, श्रोत्रविज्ञानधातु, घ्राणविज्ञानधातु, जिह्वाविज्ञानधातु, कायविज्ञानधातु, मनोधातु, धर्मधातु, मनोविज्ञानधातु। इनमें चक्षुर्धातु से लेकर स्प्रष्टव्यधातु तक दस धातु रूपधर्म हैं। धर्मधातु अंशतः रूप तथा अंशतः नाम है। अवशेष सात धातु केवल नामधर्म हैं। अभिधर्म कथित चार परमार्थों का निर्देश सुगमतया इनके माध्यम से कराया जा सकता है। चक्षुर्धातु से लेकर स्प्रष्टव्यधातु तक बारह प्रकार के रूप कथित हैं। धर्म-धातु के अन्तर्गत सोलह सूक्ष्म रूप गृहीत हैं। बावन प्रकार के चैतसिक तथा निर्वाण

---

१. "एत्थ पन चेतसिकं-सुखुमरूप-निब्बानवसेन एकूनसत्तति धम्मा धम्मायतनं धम्मधातू ति च सङ्खं गच्छन्ति।" अ. सं. १३८।

२. "पञ्चक्खन्धसङ्खातस्स अत्तभावस्स अवयवेसु धातुसमञ्ञा वेदितब्बा।" सं. वि. ७८।

३. "छ धातुको अयं, भिक्खु, पुरिसो (म. नि. ३.३२३) ति आदीसु जीवसञ्ञासमूहनत्थं धातुदेसनं अकासी ति" "अपि च धातू ति निज्जीवमत्तस्सेतं अधिवचनं।" सं. वि. ७८।

४. सं. वि. ७८।

"कस्सचि पन पुग्गलस्स वा सत्तस्स वा मनुस्सस्स वा देवस्स वा ब्रह्मनो वा वसे अवत्तित्वा अत्तनो एव सभावं धारेन्ती ति धातुयो"। प. दी. ३१४।

का भी ग्रहण धर्मधातु के अन्तर्गत है। चक्षुर्विज्ञान से लेकर कायविज्ञान तक कहे गये पाँच विज्ञान कुशल, अकुशल भेद से द्विपञ्चविज्ञान कहलाते हैं, जो दस प्रकार के चित्तों के अधिवचन हैं। मनोधातु से पञ्चद्वारावज्जन चित्त तथा कुशलाकुशल दो सम्पटिच्छन्न चित्त अभिप्रेत हैं। अवशेष छिहत्तर प्रकार के चित्तों का कथन मनोविज्ञानधातु से किया गया है।

यमकप्रकरण में इन अठारह धातुओं की पृष्ठभूमि में युग्म प्रश्न उपस्थित किये गये हैं। यमक-अट्ठकथा में आगत 'धातुयमकवण्णना'-प्रसंग में विषय-वर्णन-प्रक्रिया की ओर संकेत मात्र किया गया है।

५. सच्चयमक—दुःख, दुःखसमुदय, दुःखनिरोध, तथा दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा को चार आर्यसत्य कहा जाता है। बुद्ध आदि आर्यों द्वारा सुज्ञात एवं प्रतिविद्ध होने के कारण ये आर्य सत्य कहे जाते हैं अथवा आर्यों के सत्य होने के कारण ये आर्य कहलाते हैं[1]।

यह संसार दुःखमय है। जीवन के एक-एक क्षण दुःख से अभिभूत है, मनुष्य अशान्त एवं उद्विग्न हो वास्तविकता से दूर विपरीतगामी हो विचरण करता है[2]। इस तथ्य का कथन प्रथम आर्य-सत्य अर्थात् दुःख आर्यसत्य से किया गया है। भगवान बुद्ध ने इस सत्य को उद्भासित करते हुए "जन्म, जरा, व्याधि, मृत्यु, प्रिय जनों का वियोग, अप्रिय जनों का संयोग, तथा जीवन मात्र" को दुःख बतलाया है[3]। यह स्वरूपतः प्रीड़न, सन्तापन आदि अर्थों में प्राणिमात्र में व्याप्त प्रतिकूल, अप्रिय, अमनाप वेदना है[4]। इसलिए कहा गया है कि—

"नाबाधकं यतो दुक्खं, दुक्खा अञ्ञं न बाधकं।
बाधकत्तनियामेन, ततो सच्चमिदं मतं"॥[5]

दुःख-समुदय-आर्यसत्य दूसरा सत्य है। इसके द्वारा यह दर्शाया गया है कि यह दुःख उत्पन्न होता है। इस दुःख की उत्पत्ति में कारण तृष्णा है। तृष्णा के कारण ही अनेक प्रकार की वस्तुओं के साथ आसक्ति होती है, जिसके फलस्वरूप दुःख का प्रजनन

---

१. "बुद्धादयो अरिया पटिविज्झन्ति, तस्मा अरियसच्चानी ति वुच्चन्ति। अपि च अरियस्स सच्चानी ति पि अरियसच्चानि"। सं. वि. ८५।

२. दुक्खस्स पीळनट्ठो, सङ्खतट्ठो, सन्तापट्ठो, विपरिणामट्ठो इमे चत्तारो दुक्खस्स दुक्खट्ठा तथा अवितथा अनञ्ञथा"।

× × ×

'दु' इति अयं सद्दो कुच्छिते दिस्सति, 'खं' सद्दो पन तुच्छे। इदं च पठमसच्चं कुच्छितं अनेक-उपद्दवाधिट्ठानतो, तुच्छं बालजनपरिकप्पितधुवसुभसुखत्तभावविरहिततो। तस्मा कुच्छितत्ता च तुच्छत्ता च दुक्खं ति वुच्चति"। सं. वि. ८५।

३. म. ब. १२।

४. "एत्थ हि बाधनलक्खणं दुक्खसच्चं सन्तापनरसं, पवत्तिपच्चुपट्ठान"। सं. वि. ८६।

५. सं. वि. ८६।

होता है[१]। यह स्वभावतः उत्पत्तिलक्षणवाला है। उपच्छेद न करना इसका कृत्य है तथा विघ्न के रूप में ही अपने को ज्ञात कराता है। इसलिए कहा जाता है कि—

"तं विना नाञ्ञतो दुक्खं, न होति न च तं ततो।
दुक्खहेतुनियामेन, इति सच्चं विसत्तिका"[२]॥

दुःखनिरोध-आर्यसत्य तृतीय आर्य-सत्य है। इसके द्वारा यह दर्शाया गया है कि दुःख की परिसमाप्ति की जा सकती है। जब तृष्णा ही दुःख का कारण है, तो तृष्णा के समूल विनाश से दुःख का विनाश किया जा सकता है। इसलिए तृतीय आर्य-सत्य को निर्वाण कहा गया है।" यह शांति लक्षण वाला है। न च्युत होना ही इसका कार्य है तथा अनिमित्त से वह जाना जाता है"[३]। इसके नामकरण के सम्बन्ध में बतलाया जाता है कि 'नि' शब्द अभाव तथा 'रोध' शब्द बन्धनागार के द्योतक हैं। इस संसार रूपी बन्धनागार की समस्त गतियों के समापन रूप होने से यह अभाव है। इसकी अवाप्ति से संसार रूपी बन्धनागार से अभिव्यक्त दुःख रोध का अभाव हो जाता है। संसाररूपी बन्धनागार का प्रतिपक्षी होने से या दुःख के अनुत्पाद का प्रत्यय होने से यह दुःखनिरोध कहलाता है[४]। इसलिए बुद्धघोष ने कहा है—

"नाञ्ञा निब्बानतो सन्ति, सन्तं न च न तं यतो।
सन्तभावनियामेन, ततो सच्चमिदं मतं"[५]॥

दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा चतुर्थ आर्य-सत्य है। इसके द्वारा उस मार्ग का प्रज्ञापन किया गया है, जिसके सम्यक् प्रतिपन्नता द्वारा दुःख का निरोध सम्भव है। इसलिए यह निर्य्यान लक्षण वाला कहलाता है। क्लेशों का प्रहाण इसका कार्य है। शुद्ध रूप में चित्त के उत्थान से यह ज्ञात होता है। यह सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प आदि आठ अंगों से उपेत आर्य अष्टांगिक मार्ग का नाम है। इसकी यथार्थता पर प्रकाश डालते हुए बुद्धघोष ने दर्शाया है कि—

"मग्गा अञ्ञं न निय्यानं, अनिय्यानो न चा पि सो।
तच्छनिय्यानभावत्ता, इति सो सच्चसम्मता[६]॥

इस प्रकार इन चार आर्य-सत्यों का कथन क्रमशः प्रवृत्ति, प्रवर्त्तन, निवृत्ति, निवर्त्तन लक्षणरूप किया गया है।

---

१. "इति दुक्खस्स संयोगे उप्पत्तिकारणत्ता दुक्खसमुदयं ति वुच्चति। सं. वि. ८५। ......समुदयत्स आयूहनट्ठो निदानट्ठो संयोगट्ठो पलिबोधट्ठो......सं. वि. ८४।
× × ×
यायं तण्हा पानोब्भविका नन्दीरागसहगता तत्रतत्राभिनन्दिनी"......म. व. १२।

२. सं. वि. ८६।

३. सन्तिलक्खणं निरोधसच्चं, अच्चुतिरसं, अनिमित्तपच्चुपट्ठानं, सं. वि, ८६।

४. सं. वि. ८६।

५,६. सं. वि. ८६।

यमक-प्रकरण में इन चार आर्य-सत्यों को लक्ष्य कर अनेक दृष्टियों से युग्म प्रश्न किये गये हैं। यमक-अट्ठकथा इनके विषयगत तथ्यों पर प्रकीर्ण रूप से प्रकाश डालती है।

६. **सङ्खारयमक**—पालि परम्परा में संस्कार शब्द बहु-अर्थक है। प्रसंगानुकूल इसके अर्थ में प्रभूत परिवर्तन देखा जाता है। यहाँ पर यह काय, वाचा तथा मन के कुछ कार्यों का द्योतन करता है। यमक प्रकरण में दर्शाया गया है कि संस्कार तीन प्रकार के हैं—यथा कायसंस्कार, वचीसंस्कार तथा मनोसंस्कार। इनमें आश्वास प्रश्वास काय-संस्कार हैं। वितर्क एवं विचार को वचीसंस्कार कहा जाता है। संज्ञा एवं वेदना का नाम चित्तसंस्कार है। वितर्क विचार को छोड़ सभी चित्तसम्प्रयुक्त धर्म चित्तसंस्कार हैं।[1] यमक-अट्ठकथा में इनका व्याकरण करते हुए कहा गया है कि "कारणभूत करजकाय के फलभूत संस्कार ही कायसंस्कार हैं।" भस्ता सदृश करजकाय से संगृहीत होने के कारण ये कायसंस्कार कहे जाते हैं। कायकृत आश्वास-प्रश्वासवायु ही इससे अभिप्रेत हैं"।[2]

वाचा द्वारा अभिसंस्करण होने के कारण वितर्क विचार को वचीसंस्कार कहा जाता है। वचीपभेदसमुत्थापक वितर्क विचार का ही यह नाम है, कारण वितर्क एवं विचार के अनन्तर ही वाचाभेद होता है—"वितक्केत्वा विचारेत्वा पच्छा वाचं भिन्दति, तस्मा वितक्कविचारा वचीसङ्खारो"।[3]

"संज्ञा तथा वेदना दो चैतसिक धर्म हैं, जो चित्तप्रतिबद्ध हैं"। इस दृष्टि से चित्त के द्वारा जिसका संस्करण हो, वह चित्त संस्कार है। वितर्क विचार के व्यतिरिक्त समस्त चित्तसमुत्थान चैतसिक धर्मों का यह अधिवचन है।[4]

इन्हीं कायसंस्कार, वचीसंस्कार तथा मनोसंस्कार को लक्ष्य कर यमक प्रकरण में युग्म प्रश्न उपस्थित किये गये हैं। यमक-अट्ठकथा में मूल प्रकरण की कतिपय पंक्तियों की व्याख्या है।

७. **अनुसययमक**—अनुशय का अर्थ 'शयन करने वाला' होता है। मनुष्यों के पंच स्कन्धात्मक कलेवर में अनुशयन करने वाले क्लेशों का यह अधिवचन है। इस दृष्टि से इसकी परिभाषा करते हुए—'अनु अनु सन्ताने सेन्ती ति अनुसया' ऐसा कहा गया है। यमक-अट्ठकथा में परिपृच्छात्मक ढंग से इसके स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि—"ये अनुशयन अर्थ में अनुशय कहलाते हैं। अनुशयन का अभिप्राय "अप्रहीण" है। ये अप्रहीण अर्थ में स्कन्ध सन्तान में अनुशयन करते हैं, फलतः अनुशय कहे जाते हैं।

---

१. "अस्सासपस्सासा कायसङ्खारो, वितक्कविचारा वचीसङ्खारो, सञ्ञा च वेदना च चित्तसङ्खारो। ठपेत्वा वितक्कविचारे सब्बे पि चित्तसम्पयुत्तता धम्मा चित्तसङ्खारो"।
य. ३, म. नि. १.३७२, सं. नि. ३ २६१।

२. कारणभूतस्स करजकायस्स फलभूता एव सङ्खारो ति कायसङ्खारो। ××× कायेन कतो अस्सासपस्सासवातो ति अत्थो"। य. अ. ३४।

३. म. नि. १.३७२।

४. "सब्बेसं पि चित्तसमुट्ठानानं चेतसिकधम्मानमेतं अधिवचनं"। य. अ. ३५।

उदाहरण-स्वरूप कहा जा सकता है कि जिस प्रकार फलवाले वृक्षों में अंकुरोत्पाद-क्षण से लेकर फलनिष्पत्ति-क्षण के पूर्व तक फलोत्पादक शक्ति बीज रूप से अनुशयन करती रहती है तथा उसके अनन्तर भी अन्य फल-निष्पादन के बीज रूप में विद्यमान रहती है, उसी प्रकार अप्रहीण क्लेश स्कन्ध सन्तति में प्रतिसन्धि-क्षण से च्युति-क्षण तक एवं उसी प्रकार उसके अनन्तर भवपरम्परा में भी बीज रूप में अनुशयन करते हैं तथा अनुरूप कारण का लाभकर उत्पन्न होते रहते हैं। इस पृष्ठभूमि में इसे 'अनुशयन' अर्थ में अनुशय या 'थामगत' क्लेश कहा गया है। ये एकान्ततः अकुशल धर्म हैं।[1]

अनुशय सात प्रकार के कहे जाते हैं। वे हैं—कामरागानुशय, भवरागानुशय, प्रतिघानुशय, मानानुशय, दृष्टि-अनुशय, विचिकित्सानुशय तथा अविद्यानुशय। यमक में इन अनुशयों के वासस्थान, प्रवृत्ति क्रम आदि को लेकर युग्म प्रश्न किये गये हैं। अट्ठकथा की प्रवृत्ति इनमें से कुछ पदों की विवृत्ति के रूप में देखी जाती है।

८. **चित्तयमक :**—अभिधर्म दर्शन में मुख्यतया मनोविज्ञान की चर्चा है। मन एवं तत्सम्प्रयुक्त धर्मों का यहाँ सूक्ष्मतम विश्लेषण देखा जाता है। मन या चित्त ही समस्त कार्यकलापों का अग्रणी है। संकिलिष्ट चित्त मनुष्य के दुःख का कारण है तथा परिशुद्ध चित्त से उसकी विमुक्ति इष्ट है। चित्त ही परम हितैषी सखा है। एक शत्रु अपने शत्रु का जितना अहित नहीं कर सकता है, उससे अधिक उसका चित्त कर सकता है, यदि वह राग द्वेषादि से अभिनिविष्ट हो। माता पिता या अन्य हितैषी अपने आत्मीयजन का जितना हित नहीं कर सकते हैं, उससे अधिक हित उस चित्त से हो सकता है, जो सम्यक् रूप से परिशुद्ध हो।

चित्त का अध्ययन कई दृष्टियों से हुआ है। परिशुद्धि की दिशा में क्रमिक विकास की दृष्टि से इसकी चार भूमियाँ हैं। यथा कामावचरचित्तभूमि, रूपावचर-चित्तभूमि, अरूपावचरचित्तभूमि तथा लोकुत्तरचित्तभूमि। इन भूमिगत चित्तों को क्रमशः कामावचरचित्त, रूपावचरचित्त, अरूपावचरचित्त तथा लोकुत्तरचित्त कहा जाता है।

कामावचर-चित्त स्वभावतः चंचल, चपल तथा यत्र तत्र निपाती होता है।[2] इसमें किसी विषय पर एकाग्र होने की क्षमता नहीं है। यह क्षण क्षण नये नये विषयों के साथ आसक्ति का प्रजनन करते हुए, इच्छाओं के वशीभूत हो उत्पन्न होता रहता है। इस दृष्टि से ही इसे कामावचर-चित्त कहा जाता है।

---

१. केनट्ठेन अनुसया ? अनुसयनट्ठेन। को एस अनुसयनट्ठो नामा ति ? अप्पहीनट्ठो। एते हि अप्पहीनट्ठेन तस्स तस्स सन्ताने अनुसेन्ति नाम, तस्मा अनुसया ति वुच्चन्ति। अनुसेन्ती ति अनुरूपं कारणं लभित्वा उप्पज्जन्ती ति अत्थो।

× × ×

अप्पहीनाकारो अनुसयो, अनुसयो ति पन अप्पहीनट्ठेन थामगतकिलेसो वुच्चति। सो चित्त-सम्पयुत्तो सारम्मणो सप्पच्चयट्ठेन सहेतुको एकन्ताकुसलो अतीतो पि होति अनागतो पि पच्चुप्पन्नो पि, तस्मा उप्पज्जती ति वत्तुं युज्जति। य. अ. ४१-४२।

२. "फन्दनं चपलं चित्तं, दुरक्खं दुन्निवारयं।" ध. प. चित्तवग्ग।

कामावचर चित्त संख्या में चौवन कहे गये हैं। इनमें बारह अकुशल चित्त, अठारह अहेतुक चित्त, आठ कुशल चित्त, तेईस विपाक चित्त तथा ग्यारह क्रिया चित्त हैं[१]।

रूपावचर चित्त ध्यानिक चित्त हैं। ध्यान में उत्तरोत्तर विकास की दृष्टि से इसकी पांच अवस्थायें होती हैं, जिन्हें प्रथम ध्यानिक चित्त, द्वितीय ध्यानिक चित्त, तृतीय ध्यानिक चित्त, चतुर्थ ध्यानिक चित्त तथा पञ्चम ध्यानिक चित्त कहा जाता है। ये पांच कुशल चित्त कहे जाते हैं। इसी प्रकार पांच विपाक चित्त तथा पांच क्रिया चित्त होते हैं। समस्त रूपावचर चित्तों की संख्या पन्द्रह है[२]।

अरूपाचर चित्त भी ध्यानिक चित्त है। ध्यान-विषयक उत्तरोत्तर विकास की दृष्टि से इसके चार भेद हैं। इनका नाम कुशल चित्त है। इनके व्यतिरिक्त चार विपाक चित्त तथा चार क्रिया चित्त हैं। सभी अरूपावचर चित्तों की संख्या बारह है[३]।

उक्त तीन भूमियों के चित्त लोकिय चित्त कहे जाते हैं। इनके कारण किसी लोक में पुनर्जन्म की संभावना विद्यमान रहती है। इनसे उत्तर अर्थात् प्रणीत चित्त का नाम लोकोत्तर-चित्त है। इनके द्वारा भव-परम्परा के कारणभूत दस संयोजनों का समूल विनाश होता है तथा निर्वाण का साक्षात्कार किया जाता है। ये मार्ग-चित्त तथा फल-चित्त के भेद से दो भागों में विभक्त हैं। संयोजनों को विनष्ट करने के क्षण में उत्पन्न चित्त को मार्ग-चित्त तथा उनके विनाश के ज्ञान क्षण में उत्पन्न चित्त को फल-चित्त कहा जाता है। मार्ग-चित्तों की संख्या चार तथा फल-चित्तों की संख्या चार है। इस प्रकार लोकोत्तर चित्त आठ है[४]। ऐसा भी देखा जाता है कि योगावचर लोकोत्तर चित्त की प्रत्येक अवस्था में पांच प्रकार के रूपध्यान का अभ्यास करता है। फलतः प्रत्येक प्रकार के लोकोत्तर चित्त के पांच भेद हो जाते हैं। इस दृष्टि से लोकोत्तर चित्त चालीस प्रकार के होते हैं[५]।

इस प्रकार कामावचार चौवन, रूपावचर पन्द्रह, अरूपावचर बारह तथा लोकोत्तर आठ की गणन-प्रक्रिया से समस्त चित्तों की संख्या नवासी होती है। साथ ही लोकोत्तर-चित्तों की संख्या चालीस होने की दृष्टि से समस्त चित्त एक सौ इकीस प्रकार के हो जाते हैं[६]।

---

१. "कामे तेबीस पाकानि, पुञ्ञापुञ्ञानि वीसति।
एकादस क्रिया चेति, चतुपञ्ञास सब्बथा।" अ सं. १६।

२. "पञ्चधा झानभेदेन, रूपावचर मानसं। पुञ्ञपाकक्रियाभेदा, तं पञ्चदसधाभवे"। अ. सं. १८।

३. "आलम्बनप्पभेदेन, चतुधारूप्पमानसं। पुञ्ञपाकक्रियाभेदा, पुन द्वादसधा ठितं"। अ. सं. १६।

४. "चतुमग्गप्पभेदेन, चतुधा कुसलं तथा। पाकं तस्स फलत्ता ति, अट्ठधानुत्तरं मतं॥ अ. सं. २१।

५. "झानङ्गयोगभेदेन कत्वेकेकं तु पञ्चधा। वुच्चतानुत्तरं चित्तं, चत्तालीसविधं ति च"। अ. सं. २३।

६. "चतुपञ्ञासधा कामे, रूपे पन्नरसीरये।
चित्तानि द्वादसारुप्पे, अट्ठधानुत्तरे तथा॥
इत्थमेकूनवुतिप्पभेदं पन मानसं।
एकवीससतं वाथ, विभजन्ति विचक्खणा"। अ. सं. २१।

ये समस्त चित्त कुशलादिभेद से निम्न लिखित रूप में विभक्त होते हैं—

चित्त	संख्या (प्रथम प्रक्रिया)	संख्या (द्वितीय-प्रक्रिया)
अकुशल चित्त	१२	१२
कुशल चित्त	२१	३७
विपाक चित्त	३६	५२
क्रिया चित्त	२०	२०
	८९	१२१

यमक-प्रकरण तथा उसकी अट्ठकथा के चित्त-यमक नामक परिच्छेद में इन्हीं चित्तों की उत्पत्ति एवं निरोध आदि की चर्चा विभिन्न प्रकार के पुरुषों के प्रसंग में को गई है। चर्चा पूर्ववत् परिप्रश्नात्मक है। प्रश्न युग्म रूप में उपस्थित किये गये हैं।

९. धम्म-यमक— मूल-यमक में आगत विषय पर इस अध्याय में पर्याय भेद से प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। धर्म शब्द यहाँ अभिधर्म दर्शन प्रतिपादित चार परमार्थ धर्मों का द्योतक है। इससे चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण अभिप्रेत हैं। इनका विभाजन कुशल धर्म, अकुशल धर्म तथा अब्याकत धर्म के रूप में उपस्थित करते हुए यमक-प्रकरण में युग्म प्रश्न उपस्थि किये गये हैं। अट्ठकथा इनका विस्तार विवरण न देकर मूलयमक एवं उसकी अत्थवण्णना की ओर संकेत करती है।

धर्मों का कुशल एवं अकुशल होना वस्तुतः हेतुओं के संयोग पर निर्भर करता है। लोभ, द्वेष, मोह तथा अलोभ, अद्वेष, अमोह छ हेतु हैं। इनमें प्रथम तीन अकुशल तथा अवशेष तीन कुशल हैं। अकुशल हेतुओं के योग से चित्त अकुशल हो जाते हैं तथा कुशल हेतुओं के योग से कुशल। चित्तों से सम्प्रयुक्त चैतसिक भी तद्रूप हेतुओं के योग से कुशल तथा अकुशल होते हैं। जो धर्म न कुशल हैं, न अकुशल ही, वे अब्याकत कहे जाते है।

इसक्रम से कामावचर चित्त-भूमि के बारह चित्त अकुशल हैं। इन्हें अकुशल धर्म कहा जाता है। सभी चित्त-भूमियों में इक्कीस प्रकार के कुशल चित्त पाये जाते हैं, जो कुशल धर्म कहलाते हैं। छत्तीस विपाक चित्त, बीस क्रिया चित्त, अठाइस प्रकार के रूप तथा एक निर्वाण—ये सभी अब्याकत धर्म हैं।

१०. इद्रिय-यमक— अभिधर्म दर्शन में नाम तथा रूप इन्द्रियों की संख्या बाइस है। यहाँ इन्द्रिय का कथन अधिपति अर्थ में देखा जाता है। "जो धर्म परम ऐश्वर्य का सम्पादन करता है या अपने सम्बद्ध धर्मों में इन्द्रवत् (स्वामी सदृश) कार्य करता है, वह इन्द्रिय है"[१]। कायिक, वाचसिक तथा मानसिक कार्यों के सम्पादन में इन्द्रियों का प्रबल एवं प्रमुख योग होने से ही इनका सम्प्रयोग अधिपति अर्थ में कहा जा सकता है।

---

१. "अधिपति अट्ठेन इद्रियं", "इन्दट्ठं करोती ति इन्द्रियं"। अ. सा. ६६, २४५।

बाइस इन्द्रियां इस प्रकार हैं—चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, कायेन्द्रिय, स्त्रीन्द्रिय, पुरुषेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सुखेन्द्रिय, दुःखेन्द्रिय, सौमनस्येन्द्रिय, दौर्मनस्येन्द्रिय, उपेक्षेन्द्रिय, श्रद्धेन्द्रिय, वीर्येन्द्रिय, स्मृतीन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञेन्द्रिय, अनाज्ञातमाज्ञास्यामीन्द्रिय, आज्ञेन्द्रिय, तथा आज्ञातावीन्द्रिय। इनमें प्रथम सात इन्द्रियाँ रूप-इन्द्रियाँ हैं। जीवितेन्द्रिय नाम इन्द्रिय भी है, रूप-इन्द्रिय भी। अवशेष सभी इन्द्रियाँ नाम-इन्द्रिय हैं।

अनाज्ञातमाज्ञास्यामीन्द्रिय श्रोतापत्तिमार्ग ज्ञान का ही दूसरा नाम है[1]। इसका कारण यह है कि मार्ग एवं फल की प्राप्ति की अभिलाषा से प्रवृत्त योगावचर के मन में ऐसी निश्चयात्मक कर्त्तुकाम्यता उत्पन्न होती है कि "अभी तक अज्ञात अमृतपद निर्वाण तथा चार आर्य-सत्यों को जानने के लिए मैं प्रवृत्त होऊँगा"। ऐसे दृढ़ अध्याशय के साथ प्रवृत्त योगावचर के चित्तसन्तान में उत्पन्न श्रोतपत्तिमार्ग-ज्ञान ही अनाज्ञातमाज्ञास्यामीन्द्रिय है।

पुनः श्रोतापत्तिफलज्ञान, सकृदागामी-मार्ग-ज्ञान, सकृदागामी-फल-ज्ञान, अनागामी-मार्ग-ज्ञान, अनागामी-फल-ज्ञान तथा अर्हत्मार्ग-ज्ञान का नाम आज्ञेन्द्रिय है। वस्तुतः यह तीन लोकोत्तर मार्ग-ज्ञान तथा तीन फल-ज्ञान का ही प्राविधिक नाम है—"मज्झे छ ञाणानि अञ्ञिन्द्रियानीति पवुच्चन्ति"।

आज्ञातावीन्द्रिय अर्हत्फलज्ञान का अधिवचन है—"अरहत्तफलञाणं अञ्ञाताविन्द्रियं[2]"।

यमक-प्रकरण में इन्हीं बाइस इन्द्रियों को लेकर युग्म प्रश्न उपस्थित किये गये हैं। इन्द्रिय यमकवण्णना में यमक-प्रकरणगत कुछ पदों पर प्रकाश डाला गया है।

—o—

१. पट्ठान-प्रकरण— यह अभिधर्म-पिटक का सप्तम प्रकरण है। इसमें अभिधर्म में प्रतिपादित परमार्थ धर्मों—चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण के पारस्परिक सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है। नाम तथा रूप-धर्म परस्पर विरोधी स्वभाव के होते हुए भी एक व्यक्तित्व में पूर्ण सामंजस्य के साथ काम करते हैं। चिन्ता की दशा में शरीर भी म्लान हो जाता है। अधिक शैत्य या औष्ण्य के शरीरगत प्रकोप से चित्त में भी उद्विग्नता की वृद्धि होती है। मन में गमनागमन-विषयक निर्णय के साथ हस्तपादादि अंगों को गतिशील होते देखा जाता है। चित्त की क्रियाओं में विरमिति होने से शरीर भी निश्चेष्ठ हो जाता है। इन तथ्यों को देखने से ऐसा प्रकट होता है कि परस्पर विरोधी स्वभाव-सम्पन्न होते हुए भी नाम तथा रूप पूर्ण सहयोग से काम करते हैं।

---

१. इन्द्रियेसु पनेत्थ सोतापत्तिमग्गञाणं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं। अ. सं. १३५।

२. "पच्छिमेसु पन तीसु पठमं पुब्बभागे अनञ्ञातं अमतं पदं च सच्चधम्मं वा जानिस्सामी ति एवं पटिपन्नस्स उप्पज्जनता इन्द्रियट्ठसम्भवतो च अनञ्ञातस्स-ञ्ञामीतिन्द्रियं ति वुत्तं। दुतियं अजानतो च इन्द्रियट्ठसम्भवतो च अञ्ञिन्द्रियं। ततियं अञ्ञाताविनो चतूसु सच्चेसु निट्ठितञाणकिच्चस्स खीणासवस्सेव उप्पज्जनतो इन्द्रियट्ठसम्भवतो च अञ्ञाताविन्द्रियं। वि. अ. १२८।

पर यह कैसे होता है, एक जटिल प्रश्न है। भारतीय तथा पाश्चात्य विचारकों द्वारा यह प्रश्न बहुविध चर्चित है तथा तद्-तद् विचारधाराओं में इनके सम्बन्ध-विषयक कुछ मान्यतायें प्रस्तुत की गई हैं। अभिधर्म दर्शन के पट्ठान-प्रकरण की प्रवृत्ति इन धर्मों के पारस्परिक सम्बन्ध निदर्शन में देखी जाती है। यह सम्बन्ध चौबीस प्रत्ययों के सहारे दर्शाया गया है। वे हैं (१) हेतुप्रत्यय, (२) आलम्बन-प्रत्यय, (३) अधिपति-प्रत्यय, (४) अनन्तर-प्रत्यय, (५) समनन्तर-प्रत्यय, (६) सहजातप्रत्यय, (७) अन्योन्यप्रत्यय, (८) निश्रयप्रत्यय, (९) उपनिश्रयप्रत्यय, (१०) पुरेजातप्रत्यय, (११) पश्चाज्जात-प्रत्यय, (१२) आसेवनप्रत्यय, (१३) कर्मप्रत्यय, (१४) विपाकप्रत्यय, (१५) आहार-प्रत्यय, (१६) इन्द्रिय-प्रत्यय, (१७) ध्यानप्रत्यय, (१८) मार्गप्रत्यय, (१९) सम्प्रयुक्तप्रत्यय, (२०) विप्रयुक्तप्रत्यय, (२१) अस्तिप्रत्यय, (२२) नास्तिप्रत्यय, (१३) विगतप्रत्यय, तथा (२४) अविगतप्रत्यय।

'पट्ठान' शब्द का अर्थ कई दृष्टियों से किया जाता है। इसमें 'प' उपसर्ग प्रकार का द्योतक है। 'ठान' शब्द का अर्थ प्रत्यय होता है। प्रत्यय शब्द का अभिप्राय कारण, आधार या सम्बन्ध कहा जा सकता है। इस प्रकार जिस प्रकरण में नाना प्रकार के प्रत्ययों का वर्णन हो उसे पट्ठान कहा जा सकता है[1]।

पट्ठान शब्द का अर्थ एवं उसकी व्युत्पत्ति एक दूसरी दृष्टि से भी देखी जाती है। पट्ठान का अर्थ इस क्रम में विभाग करना कहा गया है :—"विभजनट्ठेन पट्ठानं"। मज्झिम-निकाय में आगत "प्रज्ञापन करना, प्रस्थापन करना, विवरण करना, विभक्त करना, तथा उत्तानी करना" पट्ठान के अर्थ के ही द्योतक हैं[2]। इनके सहारे पट्ठान का अर्थ विशेष रूप से विश्लेषित कर समझना होता है। इस दृष्टि से जिस प्रकरण में कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत धर्मों का चौबीस प्रत्ययों के सहारे विस्तार कर सुज्ञात करने का यत्न किया गया है, उसे पट्ठान कहा जाता है।

पट्ठान शब्द का अन्य अर्थ गति सूचक देखा आता है :—"पट्ठितत्थेन, गमनत्थेन ति अत्थो"।[3] इसका अभिप्राय यह है कि पट्ठान शब्द "पट्ठित" अर्थ में प्रयुक्त है। पट्ठित' शब्द से गमन अभिप्रेत है। जिस प्रकार गोचर भूमि में गायें स्वच्छन्दतया निर्मुक्त हो विचरण करती हैं, उसी प्रकार जिस प्रकरण में परमार्थ धर्मों का सुग्रहण, प्रजानन आदि सहजतया सुलभ है, उसे पट्ठान कहा जा सकता है।

---

१. केनट्ठेन पट्ठानं ति ? नानप्पकारपच्चयट्ठेन। 'प' कारो हि नानप्पकारत्थं दीपेति, ठानसद्दो पच्चयत्थं, ठानाट्ठानकुसलता ति आदीसु हि पच्चयो ठानं ति वुत्तो। इति नानप्पकारानं पच्चयानं वसेन देसितत्ता इमेसु चतुवीससिया पट्ठानेसु एकेकं पट्ठानं नाम। इमेसं पन पट्ठानानं समूहतो सब्बं पेतं पकरणं पट्ठानं ति वेदितब्बं। प. अ. ६०।

२. "पञ्ञापना पट्ठपना विवरणा विभजना उत्तानीकम्मं ति आगतठानस्मि हि विभजनट्ठेन पट्ठानं पञ्ञायति। प. अ ६६, म. नि. ३. ३३४.।

३. केनट्ठेन पट्ठानं ति ? पट्ठितत्थेन। गमनत्थेना ति अत्थो। गोट्ठा पट्ठितगावो ति आगतट्ठानस्मि हि येन पट्ठानेन पट्ठितगावो ति वुत्तो, तं अत्थतो गमनं होति। प. अ. ६६।

पट्ठान के उक्त अर्थों की पृष्ठभूमि में यों कहा जा सकता है कि वह प्रकरण जिसमें परमार्थ धर्मों का विश्लेषणात्मक प्रक्रिया से विस्तृत विवरण हो, एवं उनके अवगाहन में सुगमता हो, उसे पट्ठान-प्रकरण कहा जा सकता है।

अभिधर्मपिटक में पट्ठान का विशिष्ट स्थान है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने सम्यक् सम्बोधि-प्राप्ति के अनन्तर बोधि वृक्ष के परिपार्श्व में स्थित सात स्थानों में सात सप्ताह तक एक आसन से बैठ विमुक्ति सुख का अनुभवन किया। उस क्रम में उन्होंने धम्मसंगणि, विभंग आदि अभिधर्म के सातो प्रकरणों का आद्योपान्त मनन किया। धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु एवं यमक नामक छ प्रकरणों के आद्योपांत मनन करने पर भी तथागत को परितृप्ति नहीं हुई। जब उन्होंने चौबीस प्रत्ययों से संविलसित पट्ठान-प्रकरण का मनन करना प्रारंभ किया, तब उनके मन में अपार प्रीति का संचार हुआ, जिससे मन एवं काय सभी प्रसाद से आप्लावित हो उठे। इसके फलस्वरूप ही उनके शरीर से नील, पीत, लोहित, अवदात, मञ्जेष्ठ एवं प्रभास्वर वर्ण की छ रश्मियाँ प्रस्फुटित हुईं, जिनसे सारी दिशाएँ परिव्याप्त हो उठीं। कहा जाता है कि जिसप्रकार तिमिरतिमिङ्गल नामक महामत्स्य को चौरासी हजार योजन गम्भीर समुद्र में ही आनन्द आता है, उसी प्रकार भगवान बुद्ध को पट्ठान के सम्यक् अवगाहन में ही प्रमाद-बहुल की प्राप्ति होती है, तथा सर्वज्ञता का स्फुरण, प्रस्फुटन एवं उदय होता है। परम्परा में व्याप्त यह कथन पट्ठान के महत्व पर प्रभूत प्रकाश डालता है[1]।

पट्ठान में चौबीस प्रत्ययों का वर्णन है। वस्तुतः इस प्रकरण का उद्देश्य इन प्रत्ययों का विवरण मात्र नहीं है, वरन् इनके माध्यम से अभिधर्म दर्शन के परमार्थ धर्मों पर अनेक पर्यायों से प्रकाश डालना है। पट्ठान-प्रकरण में मुख्य चार विभाग हैं यथा :—अनुलोम-पट्ठान, पच्चनीय-पट्ठान, अनुलोमपच्चनीय-पट्ठान तथा पच्चनीयानुलोमपट्ठान। प्रत्येक पट्ठान में वर्णन की छ विधाएँ देखी जाती हैं, जिन्हें तिक-पट्ठान, दुक-पट्ठान, दुक-तिक पट्ठान, तिक-दुक-पट्ठान, तिक-तिक-पट्ठान एवं दुक-दुक-पट्ठान कहा जाता है। इनके ऐसे नामकरण की पृष्ठभूमि में एक प्रक्रिया है। परमार्थ धर्मों की व्याख्या के लिए धम्मसंगणि में आगत बाईस तिक-मातिका तथा एक सौ दुक-मातिकाओं का सहारा लिया गया है। उन्हीं के योग से ही यहाँ प्रत्ययों का विवरण एवं परमार्थ धर्मों का विश्लेषण देखा जाता है। बाईस तिक-मातिकाओं के सहारे वर्णन प्रक्रिया को तिक-पट्ठान कहा जाता है। इसी प्रकार एक सौ दुक-मातिकाओं के माध्यम से निर्दिष्ट पट्ठान का नाम दुक-पट्ठान है। पुनः बाईस तिक-मातिकाओं का एक सौ दुक मातिकाओं के साथ प्रक्षेपण कर जो परमार्थ धर्मों का विवरण उपस्थित किया गया है, उसे दुक-तिक पट्ठान कहा जाता है। साथ ही

---

१. तत्थ धम्मसंगणिं सम्मसन्तस्सा पि सरीरतो रस्मियो न निक्खन्ता। विभङ्गप्पकरणं धातुकथं पुग्गलपञ्ञत्ति कथावत्थुप्पकरणं यमकप्पकरणं सम्मसन्तस्सा पि सरीरतो रस्मियो न निक्खन्ता। यदा पन महापकरणं ओरुय्ह "हेतुपच्चयो, आरम्मणपच्चयो...पे...अविगतपच्चयो ति सम्मसनं आरभि, अथस्स चतुवीसतिसमन्तपट्ठानं सम्मसन्तस्स एकन्ततो सब्बञ्ञुतञाणं महापकरणे येव ओकासं लभि। यथा हि तिमिरतिमिङ्गलमहामच्छो चतुरासीतियोजनसहस्सगंभीरे महासमुद्दे येव एकन्ततो ओकासं लभति, एवमेव सब्बञ्ञुतञाणं एकन्ततो महापकरणे येव ओकासं लब्भति। अ. सा. १२।

एक सौ दुक-मातिकाओं का बाईस तिक-मातिकाओं के साथ प्रक्षेपण कर जो वर्णन प्रक्रिया प्रवृत्त हुई है, उसका नाम तिक-दुक पट्ठान है। पुनः बाईस तिक-मातिकाओं का प्रक्षेपण बाईस तिक-मातिकाओं के साथ कर जो विवरण है, वह तिक-तिक पट्ठान है, एवं एक सौ दुक-मातिकाओं के साथ एक सौ दुक-मातिकाओं के संयोग से कथित प्रक्रिया दुक-दुक-पट्ठान कही जाती है।[१] वर्णन की ये छ विधाएँ अनुलोम-पट्ठान, पच्चनीयपट्ठान, अनुलोम-पच्चनीय-पट्ठान एवं पच्चनीयानुलोम-पट्ठान में एक प्रकार सी हैं। इन्हीं चौबीस विधाओं का समूह रूप ही पट्ठान-प्रकरण है। इन विधाओं से समुपेत होने के कारण इसका नाम महाप्रकरण भी देखा जाता है :—"चतुवीसतिसमन्तपट्ठानसमोधानपट्ठानं महाप्पकरणं नामा ति हि वुत्त"।[२]

पट्ठान एक विशालकाय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में चौबीस प्रत्ययों के सहारे परमार्थ धर्मों का उत्तानीकरण अत्यन्त विश्लेषणात्मक ढंग से किया गया है। पहले उद्देस क्रम से उनका कथन है तथा पुनः निद्देस क्रम से प्रत्येक की व्याख्या है। इस प्रक्रिया द्वारा ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान का अभिप्राय धर्मों को अत्यन्त सुबोध एवं सरलतया प्रतिवेध्य बनाना था।

(२) **पट्ठान-अट्ठकथा—** पट्ठान-प्रकरण में यद्यपि विषय को सुबोध बनाने का यत्न है, तथापि वहाँ यत्र तत्र ग्रन्थिस्थल भी रह गये हैं। पट्ठान-अट्ठकथा की प्रवृत्ति दो दृष्टियों से देखी जाती है। प्रथमतः यह पट्ठान के विषय का सामान्य परिचय देती है तथा पुनः यत्र तत्र उपलब्ध ग्रन्थि-स्थलों का उत्तानीकरण करती है। अट्ठकथा की उपादेयता विषय के पूर्वापर सामञ्जस्य के साथ सुष्ठु रूप से विषय-प्रतिपादन में देखी जा सकती है।

(३) **विषय-वस्तु—** पूर्व के पृष्टों में यह कहा जा चुका है कि पट्ठान में चौबीस प्रत्ययों के सहारे परमार्थ धर्मों के पारस्परिक सम्बन्ध दर्शाते हुए उनके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्यय शब्द से यहाँ सम्बन्ध अर्थ ही अभिप्रेत है। पट्ठान के दार्शनिक पक्ष की ओर संकेत करते हुए विद्वानों ने इसे "फिलासफी औफ रिलेसन्स" बतलाया है। कुछ आधुनिक विद्वानों ने प्रत्यय को शक्ति कहा है। वस्तुतः सम्बन्ध से उपलब्ध वस्तु शक्ति है। यथा शिक्षक एवं छात्र के मध्य छात्रत्व, एवं शिक्षकत्व का सम्बन्ध होने से छात्र एवं शिक्षक दोनों में एक-एक प्रकार की शक्ति का प्रजनन होता है। छात्र में ऐसी शक्ति का उदय होता है कि जिससे वह विषय के अवगाहन में समर्थ होता है। शिक्षक में ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, जिससे वह छात्र में स्नेह का अभिवर्षण करता है, एवं

१. सम्मासम्बुद्धेन द्वावीसति तिके निस्साय तिकपट्ठानं नाम निद्दिट्ठं, सतं दुके निस्साय दुकपट्ठानं निद्दिट्ठं। ततो परं द्वावीसति तिकं गहेत्वा दुकसते पक्खिपित्वा दुकतिकपट्ठानं नाम दस्सितं। ततो परं दुकसतं गहेत्वा द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा तिकदुकपट्ठानं नाम दस्सितं। तिकं पन तिकेसु येव पक्खिपित्वा तिकतिकपट्ठानं नाम दस्सितं। दुकं च दुकेसु येव पक्खिपित्वा दुकदुकपट्ठानं नाम दस्सितं। अ. सा. ६; प. अ. ६७।

२. प. अ. ७०।

प्राप्त विद्याओं के उसके द्वारा सुग्रहण के लिए द्वार खोल देता है। इस प्रकार सम्बन्ध होने से एक प्रकार की शक्ति का प्रजनन होना इष्ट है। तो क्या प्रत्यय को शक्ति कहा जा सकता है ? प्रत्यय को वस्तुत सम्बन्ध कहना ही युक्त है, पर पर्याय से इसका अर्थ शक्ति भी हो सकता है।

अट्ठकथा में प्रत्यय के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि जो धर्म जिस धर्म की अपेक्षा कर उत्पन्न होता है, वह उसका प्रत्यय कहा जाता है। "किसी धर्म के अपेक्षा से ही जो स्थित होता है, उसका बिना परित्याग किए ही जो विद्यमान रहता है, वह प्रत्यय है।" लक्षण की दृष्टि से यह उपकारक लक्षणवाला होता है। जो धर्म जिस धर्म की स्थिति या उत्पत्ति में उपकारक है, वह उसका प्रत्यय कहलाता है। वस्तुत: प्रत्यय, हेतु, कारण, निदान, संभव तथा प्रभव शब्द अर्थत: एक हैं, केवल व्यञ्जनगत ही इनमें पार्थक्य देखा जाता है। इस दृष्टि से उपकारक लक्षण-सम्पन्न धर्म का नाम प्रत्यय हो सकता है[१]।

जब कभी सम्बन्ध की चर्चा देखी जाती है, तो उस प्रसंग में तीन बातें अवश्य उपस्थित रहती हैं। प्रथमत: वह व्यक्ति जिसका सम्बन्ध जिस किसी से होता है। पुन: वह व्यक्ति जिसके साथ उसका सम्बन्ध होता है। तीसरी बात इन दोनों के मध्य में स्थित सम्बन्ध है। उदाहरणस्वरूप पिता-पुत्र को लेकर कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध-निरूपण-क्रम में पिता वह है, जिसका सम्बन्ध होता है; पुत्र वह है जिससे उसका सम्बन्ध होता है तथा इन दोनों के मध्य सम्बन्ध नामक एक वस्तु भी विद्यमान है, जिसे पुत्रभाव या पिताभाव कहा जा सकता है। इन्हीं तीन को पारिभाषिक शब्दावली में प्रत्यय-धर्म, प्रत्ययोत्पन्न-धर्म एवं प्रत्यय कहा जाता है। प्रत्यय-धर्म वह है, जिसका सम्बन्ध किसी से होता है। प्रत्ययोत्पन्न-धर्म वह है, जिससे उसका सम्बन्ध होता है तथा दोनों के मध्य स्थित सम्बन्ध ही प्रत्यय है। पिता, पुत्र के उदाहरण में पिता को प्रत्यय-धर्म, पुत्र को प्रत्ययोत्पना-धर्म एवं दोनों के मध्य स्थित सम्बन्ध को प्रत्यय कहते हैं। एस क्रम में एक और पारिभाषिक शब्द भी ज्ञातव्य है, जिसे प्रत्यनीक-धर्म कहा जाता है। उक्त उदाहरण में पुत्र जो प्रत्ययोपन्न धर्म है, उससे भिन्न जो-जो पदार्थ प्रत्ययोत्पन्न-धर्म में गृहीत नहीं हो सकते हैं, वे सभी प्रत्यनीक-धर्म कहे जा सकते हैं। इन्हीं पारिभाषिक शब्दों की पृष्ठभूमि में पट्ठान में आगत चौबीस प्रत्ययों का सामान्य परिचय एवं उनके माध्यम से वर्णित परमार्थ धर्मो का संकेत मात्र उपस्थित करने का यत्न किया जा रहा है।

---

१. पटिच्च एतस्मा एती ति पच्चयो, अप्पच्चक्खाय नं वत्तती ति अत्थो।

× × ×

लक्खणतो पन उपकारकलक्खणो पच्चयो, यो हि धम्मो यस्स धम्मस्स ठितिया वा उप्पत्तिया वा उपकारको होति, सो तस्स पच्चयो ति वुच्चति।

प. अ. ७१।

(१) हेतु-प्रत्यय— लोभ, मोह, द्वेष तथा अलोभ, अमोह, अद्वेष नामक छ हेतु हैं। इनमें प्रथम तीन अकुशल हेतु तथा अपर तीन कुशल हेतु कहलाते हैं। ये मूल या कारण के अर्थ में हेतु कहे जाते हैं। इन हेतुओं के सम्प्रयोग से अकुशल चित्त या कुशल चित्त की अभिव्यक्ति होती है। वे अकुशल तथा कुशल चित्त पुनः तद्रूप रूप-धर्म को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार हेतु एवं हेतु सम्प्रयुक्त धर्म तथा तदुत्पन्न रूप-धर्म में जो सम्बन्ध होता है, उसे हेतु-प्रत्यय कहा जाता है। इसे लक्ष्य कर पट्ठान में कहा गया है कि—"हेतु हेतुसम्प्रयुक्त धर्म तथा तदुत्पन्न रूप-धर्मों के साथ हेतु-प्रत्यय से सम्बन्धित होता है[1]"। यहाँ द्रष्टव्य है कि लोभ, मोह, द्वेषादि मूल के अर्थ में प्रयुक्त हैं। जिस प्रकार किसी वृक्ष का मूल उस वृक्ष को धारण करने में आधार का काम करता है, एवं इस प्रकार उसका धारण कर उसे स्थिर एवं दृढ़ बनाये रखने में सहायक होता है, उसी प्रकार लोभ द्वेषादि हेतु उनसे सम्प्रयुक्त चित्त को उत्पन्न करने में मूल का काम करते हैं तथा उसके संधारण एवं परिपोषण में भी सहायक होते हैं[2]।

लोभ नामक हेतु के कारणभूत होने से लोभ सहगत चित्त की उत्पत्ति होती है। पुनः उस लोभ सहगत चित्त के कारण मनुष्य पर-वस्तु-हरण के लिए हस्तादि का संचालन करता है या वचन से तदर्थ किसी को नियोजित करता है। अथवा द्वेष नामक हेतु के मूलभूत होने से प्रतिघ चित्त की उत्पत्ति होती है, जिसके कारण मनुष्य दण्डादि धारण करता है या परुष वचन का उद्गीरण करता है। इस प्रथम उदाहरण में लोभ प्रत्यय-धर्म है; लोभ-सहगत-चित्त तथा उससे उत्पन्न रूप (हस्तादि संचालन) प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं; इन दोनों में जो सम्बन्ध है, वह हेतु का है, जिसे हेतु-प्रत्यय कहा जाता है। दूसरे उदाहरण में द्वेष प्रत्यय-धर्म है; प्रतिघ चित्त तथा तदुत्पन्न रूप प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं; एवं दोनों के मध्य स्थित सम्बन्ध को हेतु-प्रत्यय कहा जा सकता है। इस दृष्टि से हेतु उनकी उत्पति में मूल का काम करता है एवं उनके संधारण में उपकारक होता है। इसको ही परिलक्षित करते हुए—"मूलट्ठेन हेतु, उपकारकट्ठेन पच्चयो"—ऐसा कहा गया है। संक्षेप में—"मूल रूप से तथा उपकारक रूप से जो धर्म दूसरे धर्म की उत्पत्ति एवं स्थिति में सहायक होता है, तो उनके सम्बन्ध को हेतु-प्रत्यय कहा जाता है—"मूलट्ठेन उपकारको धम्मो हेतु-पच्चयो"।

आचार्य बुद्धघोष ने इस सम्बन्ध को स्पष्टतः परिदीपित करने के लिए कई उपमायें दी हैं; यथा सालिबीज एवं सालिबृक्ष, मणि एवं मणिप्रभा इत्यादि[3]। सालिबीज मूलभूत हो सालिबृक्ष को उत्पन्न करता है एवं उसकी स्थिति को सुदृढ़ बनाते हुए उसका परिपोषण करता है। मणिप्रभा के प्रस्फुटन में मणि मूलभूत कारणरूप है, जो उसकी उत्पत्ति एवं संधारण में हेतु है। इनमें सालिबीज या मणि प्रत्यय-धर्म; सालिवृक्ष

× × ×

१. प. १. ३।

२. इति मूलट्ठेन हेतु, उपकारट्ठेन पच्चयो ति मूलट्ठेन उपकारको धम्मो हेतुपच्चयो। प. अ. ७१।

३. सो हि सालिआदीनं सालिबीजादीनि विय, मणिप्पभादीनं विय मणिवण्णादयो कुसलादीनं कुसलादि-भाव साधको ति आचरियानं अधिप्पायो। प. अ. ७१।

या मणिप्रभा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म एवं इनके मध्य विद्यमान सम्बन्ध को हेतु-प्रत्यय कहा जा सकता है। इस पृष्ठभूमि में कहा जा सकता है कि हेतु-प्रत्यय एक ऐसा सम्बन्ध है जिसमें छ हेतुओं में से कोई एक हेतु प्रत्यय-धर्म होता है, एवं उस हेतु से सम्प्रयुक्त चित्त, चैतसिक एवं तदुत्पन्न रूप प्रत्ययोपन्न-धर्म होते हैं।

इस प्रकार हेतु-प्रत्यय का संक्षेप में कथन कर पट्ठान-प्रकरण में विस्तारपूर्वक यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार कुशल धर्म कुशल धर्म के, या कुशल धर्म अब्याकत धर्म के, या कुशल धर्म चित्त समुत्थान रूप के, या अकुशल धर्म अकुशल धर्म के, या अकुशल धर्म अव्याकत धर्म के हेतु प्रत्यय होते हैं[1]। इस विस्तृत विवरण के अध्ययन से यह परिलक्षित होता है कि इस सम्बध में प्रत्यय-धर्म नाम तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म नाम एवं रूप दोनों हो सकता है।

(२) **आलम्बन-प्रत्ययः**—चित्त के विषय को आलम्बन कहा जाता है। विभिन्न इन्द्रियों के माध्यम से चित्त विभिन्न आलम्बनो पर उत्पन्न होता है एवं उन्हें जानता है। ये सभी आलम्बन छ प्रकार के कहे गये हैं; यथा—रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्प्रष्टव्य एवं धर्म। इनमें प्रथम पाँच रूप के ही अधिवचन हैं। धर्मालम्बन के अन्तर्गत चित्त, चैतसिक, सूक्ष्म रूप, निर्वाण एवं प्रज्ञप्ति संगृहीत हैं। इस प्रकार इन आलम्बनों में से जिस किसी आलम्बन पर चित्त की उत्पत्ति होती है। ऐसी दशा में उस आलम्बन का तथा चित्त एवं तत्सम्प्रयुक्त चैतसिकों में जो सम्बन्ध होता है, उसे आलम्बन-प्रत्यय कहा जा सकता है। इसलिए कहा गया है कि "जिस-जिस धर्म को लक्ष्य कर जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों से आलम्बन-प्रत्यय से सम्बन्धित होते हैं"[2]। अट्ठकथा में कहा गया है कि जिस प्रकार एक दुर्बल पुरुष दण्ड या रज्जु का आलम्बन कर उठता है या खड़ा होता है, उसी प्रकार चित्त चैतसिक धर्म भी रूपादि आलम्बन का आलम्बन कर उत्पन्न भी होते हैं, स्थित भी होते हैं। इस दृष्टि से सभी चित्त चैतसिकों के आरम्मणभूत धर्म आलम्बन-प्रत्यय से ही सम्बन्धित कहे जा सकते हैं[3]। यथा—"बुद्ध रूप को देख वन्दन-चित्त उत्पन्न होता है या किसी वर्ण या आकार-सम्पन्न रूप को देख चक्षु-विज्ञान उत्पन्न होता है। इन उदाहरणों में बुद्धरूप या कोई वर्ण-सम्पन्न रूप प्रत्यय-धर्म है, वन्दन-चित्त या-चक्षुर्विज्ञान प्रत्ययोत्पन्न-धर्म है। दोनों के मध्य स्थित सम्बन्ध आलम्बन-प्रत्यय है। अतः आलम्बन-प्रत्यय की परिभाषा करते हुए कहा जा सकता है कि यह उस प्रकार के सम्बन्ध का नाम है, जिसमें चित्त, चैतसिक, रूप, निर्वाण तथा प्रज्ञप्ति प्रत्यय-धर्म हैं एवं उनमें से किसी का आलम्बन कर उत्पन्न चित्त चैतसिक प्रत्ययोत्पन्नधर्म हैं। यहाँ प्रत्यय-धर्म नाम तथा रूप दोनों हो सकते हैं तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म केवल नाम हो सकता है। यह सम्बन्ध नाम रूप एवं नाम के मध्य सम्भव है।

---

१. प. १. १२३।
२. प. १, ४i
३. प. अ. ७२।

पट्ठान में आलम्बन-प्रत्यय का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए दर्शाया गया है कि कुशल धर्म कुशल धर्म का, कुशल धर्म अकुशल धर्म का, कुशल धर्म अव्याकत धर्म का, अकुशल धर्म अकुशल धर्म का, अकुशल धर्म कुशल धर्म का, अकुशल धर्म अव्याकत धर्म का, अव्याकत धर्म अव्याकत धर्म का, अव्याकत धर्म कुशल धर्म का, तथा अव्याकत धर्म अकुशल धर्म का आलम्बन-प्रत्यय होता है।" कुशल धर्म कुशल धर्म का आलम्बन-प्रत्यय किस प्रकार हो सकता है, इसको दर्शाते हुए कहा गया है कि—कोई पुरुष दान देकर, शील का समादान कर, उपोसथ कर्म कर, उसका प्रत्यवेक्षण करता है, या पूर्व में किए गये सुकर्मों का प्रत्यवेक्षण करता है, या ध्यान से उठकर ध्यान का प्रत्यवेक्षण करता है इत्यादि[1]। यहाँ दानादि किए गए कुशल कर्म प्रत्यय-धर्म हैं; प्रत्यवेक्षण चित्त प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं; इनके मध्य का सम्बन्ध आलम्बन-प्रत्यय का है। इसी प्रकार कुशल धर्म अकुशल धर्म का आलम्बन प्रत्यय कैसे हो सकता है, इस तथ्य को प्रकाशित करते हुए कहा गया है कि—कोई पुरुष दान देकर, या शील का समादान कर, या उपेसथ कर्म कर, उसका आस्वादन करता है, या अभिनन्दन करता है, जिसके कारण राग, मिथ्या दृष्टि, विचिकित्सा, औद्धत्य, दौर्मनस्य आदि अकुशल धर्म उत्पन्न होते हैं। यहाँ दान आदि कुशलकर्म प्रत्यय-धर्म हैं; एवं उनका आस्वादन तथा अभिनन्दन-चित्त प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं। इनमें प्रत्ययधर्म कुशलधर्म हैं, पर प्रत्ययोत्पन्न-धर्म अकुशल धर्म है। इस प्रकार कुशल धर्म अकुशल धर्म का आलम्बन-प्रत्यय होता है। एतद्विषयक विस्तृत वर्णन पट्ठान में देखा जा सकता है।

(३) अधिपति-प्रत्यय—अधिपति का अर्थ स्वामी होता है। ऐसा सम्बन्ध जिसमें प्रत्यय-धर्म का प्रत्ययोत्पन्न धर्म पर व्यापक आधिपत्य हो, उसे अधिपति। प्रत्यय कहा जा सकता है। या यों कहा जाय कि "जिस-जिस धर्म को विशेष महत्व देते हुए, जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वें उन उन धर्मों से अधिपति-प्रत्यय से सम्बन्धित होते हैं"[2]। अट्ठकथाकार ने ज्येष्ठतम या वरिष्ठ रूप में उपकारक धर्म को अधिपति-प्रत्यय बतलाया है—जेट्ठकट्ठेन उपकारको धम्मो अधिपति-पच्चयो"[3]। इसका अभिप्राय यह है कि इस सम्बन्ध के अन्तर्गत प्रत्यय-धर्म अत्यन्त प्रिय होता है, जो अपने ऐसे स्वरूप के कारण प्रत्ययोतपन्नधर्म पर प्रबल आधिपत्य स्थापित करता है। जातक की कथाओं से प्रसंग निर्देश करते हुए कहा गया है कि सुतसोम को सत्य के प्रति अपूर्व निष्ठा थी, जिसके लिए उन्होंने राज्य, राज्य परिवार तथा अपना जीवन तक उत्सर्ग किया। यहाँ सत्य प्रत्यय-धर्म हैं तथा सुतसोम का त्याग-चित्त प्रत्ययोत्पन्न धर्म है। प्रत्यय-धर्म का प्रत्ययोत्पन्नधर्म पर प्रबल आधिपत्य है। इसलिए इनके मध्य अधिपति-प्रत्यय नामक सम्बन्ध कहा जा धकता है। दूसरा उदाहरण यह उपस्थित किया जाता है कि गुत्तिल नामक

---

१. प. १. १२३।
२. प. १. ४।
३. प. म. ७२।

वीणावादक के अपूर्व स्वर माधुर्य से प्रभावित हो एक वेश्या अपने प्रासाद के उपरि प्रकोष्ट से कूद पड़ी थी, या राजा पोरिसाद ने मनुष्य मांस के प्रति विशिष्ठ अभिरुचि के कारण अपने राज्य का परित्याग कर वनवासी का जीवन स्वीकार किया था। ये सभी उदाहरण इस तथ्य का परिचायन करते हैं कि अधिपति-प्रत्यय में प्रत्यय-धर्म का प्रत्ययोत्पन्न धर्म पर प्रभूत प्रभाव रहता है। अधिपति-प्रत्यय दो प्रकार का होता है, यथा—आलम्बनाधिपति एवं सहजाताधिपति।

(क) आलम्बनाधिपति—आलम्बनाधिपति में प्रत्यय-धर्म एक अत्यन्त प्रिय आलम्बन होता है एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म उस पर उत्पन्न चित्त तथा तत्सम्प्रयुक्त चैतसिक होते हैं। पट्ठान के अनुसार इस सम्बन्ध के अन्तर्गत दो प्रतिघ चित्त, दो मोमूह चित्त एवं दुःख सहगत कायविज्ञान को छोड़कर चौरासी चित्त, द्वेष, ईर्ष्या, मात्सर्य, कौकृत्य तथा विचिकित्सा को छोड़ सैंतालिस चैतसिक, अतीत, प्रत्युत्पन्न, अनागत के गुरूकरणीय तथा इष्ट अठारह रूप तथा निर्वाण प्रत्ययधर्म होते हैं। प्रत्ययोत्पन्न-धर्म कोई चित्त एवं तत्सम्प्रयुक्त चैतसिक हो सकते हैं। इस दृष्टि से प्रत्ययधर्म नाम तथा रूप दोनों हो सकते हैं एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म केवल नाम हो सकता है। फलतः यह सम्बन्ध नाम एवं रूप तथा नाम के मध्य हो सकता है। इस सम्बन्ध में आलम्बन अत्यन्त मोहनीय होता है। इस कारण ही प्रत्ययोत्पन्नधर्म पर उसका विशेष प्रभाव देखा जाता है। साधारणतः इस तथ्य को दर्शाने के लिए सुरा एवं मद्यप का उदाहरण दिया जा सकता हैं। मद्यप सुरा-पान के लिए अपने प्रिय से प्रिय वस्तुओं का परित्याग कर डालता है। यहाँ सुरा अत्यन्त प्रभावोत्पादक आलम्बन है, जो प्रत्ययधर्म है तथा मद्यपान-चित्त प्रत्ययोत्पन्नधर्म है, जो उससे प्रभावित होता है। इस प्रसंग में यह भी दर्शाया जाता है कि प्रभावती के अत्यन्त सौन्दर्य युक्त रूपालम्बन के कारण बोधिसत्व कुश राजकुमार ने एक सौ योजन की दूरी एक दिवस में ही समाप्त कर ली थी। इसमें प्रभावोत्पादक प्रभावती का रूप-लावण्य आलम्बन रूप से प्रत्ययधर्म है एवं उस राजकुमार का उसके दर्शनार्थ उत्पन्न चित्त प्रत्ययोत्पन्नधर्म है।

(ख) सहजाताधिपति—यह ऐसे सम्बन्ध का नाम है, जिसमें प्रत्ययधर्म तथा प्रत्ययोत्पन्नधर्म सहजात होते हैं। प्रत्ययधर्म सहजात होते हुए प्रत्ययोत्पन्नधर्म पर प्रभूत प्रभाव दर्शाता है। इस क्रम में चार नाम-धर्मों का उल्लेख किया जाता है, जिन्हें छन्द, चित्त, विरिय, तथा वीमंसा' कहा जाता है। छन्द एक चैतसिक है। वह उसके साथ उत्पन्न चित्त एवं अन्यान्य सम्प्रयुक्त धर्मों पर जब प्रबल आधिपत्य दर्शाता हैं, तो छन्द एवं तत्सम्प्रयुक्त धर्मों में सहजाताधिपति-प्रत्यय नामक सम्बन्ध दर्शाया जा सकता हैं। इस क्रम में छन्द को प्रत्ययधर्म तथा तत्सम्प्रयुक्त चित्त चैतसिक को प्रत्ययोत्पन्नधर्म कहा जा सकता है। इसी न्याय से चित्त, वीर्य एवं वीमांसा के योग से सहजाताधिपति-प्रत्यय का उदाहरण उपस्थित किया जा सकता है।

पट्ठान में इसकी चर्चा करते हुए कहा गया है कि "छन्दाधिपति छन्द सम्प्रयुक्त धर्म एवं तत्समुत्थान रूपों के साथ छन्दाधिपति-प्रत्यय से सम्बद्ध होता है"[१]। इसी क्रम

१. प. १.४.।

से वीर्य, चित्त एवं वीमांसा-अधिपति भी तत् तत् सम्प्रयुक्त धर्म तथा तत् तत् समुत्थान रूपों से सहजाताधिपति-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। इस क्रम में द्रष्टव्य है कि प्रत्यय-धर्म केवल नाम हो सकता है तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म नाम तथा रूप दोनों हो सकता है। इसलिए यह सम्बन्ध नाम एवं नाम तथा रूप के मध्य सम्भव है।

(४) **अनन्तर-प्रत्यय**—जहाँ अन्तर न हो उसे अनन्तर कहते हैं[१]। अन्तर का अभिप्राय देशगत भेद है। जब एक चित्त के निरूद्ध होने पर उसके तारतम्य में ही देशगत अन्तर रहित अन्य चित्त की उत्पत्ति होती है, तो उसे अनन्तर उत्पत्ति कहा जा सकता है। अभिधर्म दर्शन के अनुसार चित्तों की एक सन्तति या प्रवाह हैं, जिसमें एक चित्त उत्पन्न होता है, निरूद्ध होता है, एवं तत्क्षण ही अन्य चित्त की उत्पत्ति होती है। यह उत्पत्ति सरित् प्रवाह में उत्पन्न ऊर्मियों के समान है, जहाँ एक के अनन्तर अन्य की उत्पत्ति-पुरस्सर जल प्रवाह का तारतम्य बना रहता है। चित्तवीथि प्रसंग में देखा जाता है कि पञ्चद्वारावज्जन-चित्त चक्षुर्विज्ञान, सम्पटिच्छन्न-चित्त, सन्तीरणचित्त इत्यादि अन्तरविरहित हो उत्पन्न होते हुए चित्तप्रवाह या चित्तसन्तति का सृजन करते हैं। इसलिए अनन्तरप्रत्यय ऐसे सम्बन्ध का नाम है, जिसमें प्रत्ययधर्म एवं प्रत्ययोत्पन्नधर्म पूर्वगामी एवं अपरगामी धर्म होते हैं, अर्थात् प्रत्ययधर्म पूर्ववर्ती होता है एवं प्रत्ययोत्पन्न धर्म परवर्ती होता है। पर इनके निरोध एवं उत्पत्ति के मध्य किसी प्रकार का अन्तर नहीं होता है। ज्योंही प्रत्ययधर्म उत्पन्न हो निरूद्ध होता है, त्योंही प्रत्ययोत्पन्न-धर्म की उत्पत्ति होती है। पट्ठान में कहा गया है कि "जिस जिस धर्म के अनन्तर जो जो चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, वे वे धर्म उन उन धर्मों के साथ अनन्तर-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं"[२]। अट्ठकथा में "अनन्तरभाव से उपकारक धर्म को अनन्तर-प्रत्यय कहा गया है"[३]। इस प्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप सम्पटिच्छनचित्त एवं सन्तीरणचित्त को लिया जा सकता है। ज्योंही सम्पटिच्छनचित्त निरूद्ध होता है, त्योंहि संतीरणचित्त उत्पन्न होता है या चक्षुर्विज्ञान के अनन्तर सम्पटिच्छनचित्त, सम्पटिच्छनचित्त के अनन्तर सन्तीरणचित्त, एवं सन्तीरणचित्त के अनन्तर वोट्ठापन-चित्त का क्रम दर्शाया जा सकता है। पट्ठान के अनुसार "चक्षुर्विज्ञान-धातु एवं तत्सम्प्रयुक्त धर्म मनोधातु तथा तत्सम्प्रयुक्त धर्मों के साथ अनन्तर-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। या पूर्व-पूर्व के धर्म पश्चिम पश्चिम के धर्मों के अनन्तर-प्रत्यय होते हैं"[४]। यहाँ देखा जा सकता है कि चक्षुर्विज्ञानधातु तथा तत्सम्प्रयुक्त धर्म नाम हैं, मनोधातु तथा तत्सम्प्रयुक्त धर्म भी नाम है। इनमें चक्षुर्विज्ञानधातु एवं तत्सम्प्रयुक्त धर्म प्रत्ययधर्म हैं। मनोधातु तथा तत्सम्प्रयुक्त धर्म प्रत्ययोत्पन्नधर्म हैं। अतः यह सम्बन्ध नाम तथा नाम-धर्मों के मध्य हो सकता है। पुनः पट्ठान में कुशलाकुशल-अव्याकृत धर्मों के योग से इसका विस्तार उपस्थित किया गया है।

---

१. नत्थि एतेसं अन्तरं ति हि अनन्तरं। प. अ. ७३।
२. प. १.५।
३. अनन्तरभावेन उपकारको धम्मो अनन्तरपच्चयो। प. अ. ७२।
४. प. १.४।

(५) समनन्तर-प्रत्यय—समनन्तर के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि—"सुट्ठु अनन्तरं ति समनन्तरं[१]" अर्थात् ऐसे धर्म जिनमें लेशमात्र भी अन्तर न हो अर्थात् पूर्व चित्त के भंग एवं पश्चिम चित्त की उत्पत्ति के मध्य अन्तर न होना ही समनन्तर-प्रत्यय है। अतः यह अनन्तर-प्रत्यय का ही अधिवचन है। अट्ठकथाकार ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि—"जो अनन्तर-प्रत्यय है, वही समनन्तर-प्रत्यय है। इनमें व्यञ्जनमात्र का नानत्व है, अर्थमात्र का नहीं। अनन्तर भाव से उपकारक धर्म को अनन्तर-प्रत्यय तथा समनन्तर भाव से उपकारक धर्म को समनन्तर-प्रत्यय कहते हैं[२]।

अट्ठकथाकार ने इनके भेद-विषयक किसी अन्य आचार्य के मत को उद्धृत करते हुए कहा है कि अध्वगत अनन्तरता के अर्थ में अनन्तर-प्रत्यय है तथा कालगत अनन्तरता के अर्थ में समनन्तर प्रत्यय है[३]। इसका अर्थ यह है कि चक्षुर्विज्ञान के निरोध एवं सम्पटिच्छन-चित्त की उत्पत्ति के मध्य किसी प्रकार का अध्वगत व्यवधान या अन्तर नहीं है। इस दृष्टि से यहाँ अनन्तरप्रत्यय कहा जा सकता है तथा चक्षुर्विज्ञान के निरोध एवं सम्पटिच्छिन-चित्त की उत्पत्ति के मध्य किसी प्रकार का कालगत व्यवधान नहीं है, इस अर्थ में यहाँ समनन्तर-प्रत्यय है। पर यह मान्यता पिटक-परम्परा के विरुद्ध है, कारण वहाँ कहा गया है कि—निरोध से उठे हुए के लिए नेवसञ्ञानासञ्ञायतन-कुशल फलसमापत्ति का समनन्तर-प्रत्यय होता है। इसका अभिप्राय यह है कि निरोध-समापत्ति का पूर्ववर्ती नेवसञ्ञानासञ्ञायतन-जवन समापत्ति के काल में व्यवधान होने पर भी फल-जवन का समनन्तर-प्रत्यय होता है। इस प्रकार इस मान्यता का निराकरण करते हुए अर्थकथाकार का कथन है कि अभिनिवेश से विरहित हो व्यञ्जनमात्र का ही भेद यहाँ समझना चाहिए, अर्थ का नहीं। ऐसा क्यों? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने दर्शाया है कि—"नत्थि एतेसं अन्तरं ति अनन्तरा, संठानाभावतो सुट्ठु अनन्तरा ति समनन्तरा"

(६) सहजात-प्रत्यय—सहजात शब्द का अर्थ होता है—सह उत्पत्ति। जब प्रत्यय-धर्म तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म एक साथ उत्पन्न होते हैं, एक साथ स्थित होते हैं एवं एक साथ निरुद्ध होते हैं, तो उनके ऐसे सम्बन्ध का नाम सहजात-प्रत्यय कहा जाता है। उदाहरण-स्वरूप जब एक प्रदीप प्रज्वलित होता है, तो उसकी दीप-शिखा, प्रकाश, उष्णता आदि एक साथ उत्पन्न होते हैं तथा जब तक प्रज्वलित प्रदीप की स्थिति बनी रहती है, तबतक वे भी विद्यमान रहते हैं। प्रदीप के निर्वापित होने के साथ उनका भी निर्वापन हो जाता है। यहाँ प्रज्वलित प्रदीप तथा दीप-शिखा, प्रकाश एवं उष्णता में सहजात-प्रत्यय का सम्बन्ध कहा जा सकता है। इनमें प्रकाश आदि प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं, एवं उनका सम्बन्ध सहजात-प्रत्यय है।

---

१. प. अ. ७२।

२. प. अ. ७३।

३. "अद्धानन्तरताय अनन्तरपच्चयो, कालानन्तरताय समनन्तरपच्चयो। प. अ. ७३।

अट्ठकथाकार ने इस पर प्रकाश डालते हुए दर्शाया है कि "उत्पद्यमान के साथ उत्पद्यमान-भाव से उपकारक धर्म सहजात-प्रत्यय है[१]"। यथा प्रकाश के लिए प्रदीप। प्रदीप अपने उत्पाद के साथ प्रकाश के होने के लिए उपकारक होता है। उसी प्रकार प्रत्ययधर्म अपने उत्पाद के साथ प्रत्ययोत्पन्नधर्म के उत्पाद में उपकारक होता है। यह सहजात रूप से उपकारक-भाव छ प्रकार से देखा जाता है यथा—चार अरूपी स्कन्ध अन्योन्य सहजात-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। चार महाभूत अन्योन्य भी सहजात-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। प्रतिसन्धि के क्षण नाम रूप अन्योन्य, चित्त चैतसिक धर्म तथा चित्त समुत्थान रूप, महाभूत तथा उपादा रूप; रूपी धर्म अर्थात् हृदयवत्थु एवं अरूपी धर्म (प्रतिसन्धि के समय) सहजात-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[२]। इससे प्रकट होता है कि यह सम्बन्ध नाम और नाम के मध्य, रूप एवं रूप के मध्य, नाम एवं रूप के मध्य या रूप या नाम के मध्य हो सकता है। ऐसी दशा में प्रत्यय-धर्म एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म दोनों नाम भी हो सकते हैं, दोनों रूप भी हो सकते हैं, या दोनों पृथक् पृथक् नाम रूप भी हो सकते हैं। पट्ठान-प्रकरण में सहजात-प्रत्यय का विवरण उपस्थित करते हुए पुनः कुशल धर्म, अकुशल धर्म एवं अव्याकत धर्म के योग से एक विस्तृत विवरण उपस्थित किया गया है। "यथा—कुशल धर्म कुशल धर्म का सहजात-प्रत्यय होता है। कुशल एक स्कन्ध तीन स्कन्धों का सहजात-प्रत्यय होता है या तीन कुशल स्कन्ध एक कुशल स्कन्ध का सहजात-प्रत्यय होते हैं" इत्यादि[३]।

(७) अन्योन्य-प्रत्यय—अन्योन्य का अर्थ परस्पर होता है। परस्पर उपकारी धर्मों में अन्योन्य-प्रत्यय होता है[४]। इस दृष्टि से अन्योन्य-प्रत्यय एक ऐसा सम्बन्ध है, जिसमें प्रत्यय-धर्म तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म परस्पर एक दूसरे के सहायक होते हैं। इस परस्पर सहायक-भाव को दर्शाते हुए अट्ठकथाकार ने कहा है "कि अन्योन्य उत्पाद-उपस्थम्भन-भाव से उपकारक धर्म अन्योन्य-प्रत्यय होते हैं। यथा—परस्पर उपस्थम्भक त्रिदण्ड। जिस प्रकार तीन दण्डों को उनके सिरोविन्दु से लगाकर खड़ा कर दिया जाता है, तो वे तीनों दण्ड वैसे स्थित हो एक दूसरे के संधारण में उपकारक होते हैं[५]। जिस किसी भी दण्ड को हटा लेने से दूसरा गिर जाता है। उनकी स्थिति तभी तक बनी रहती है, जबतक वे अन्योन्यभाव से उपकार करते हुए एक दूसरे का संधारण करते हैं। या किसी तिपाई के तीनों पाद परस्पर एक दूसरे को संधारण करने तथा उसकी स्थिति बनाये रखने में सहायक होते हैं। किसी एक के भग्न होने से अन्य की स्थिति स्वतः विनष्ट हो जाती है; उसी प्रकार जब प्रत्यय-धर्म तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म अन्योन्य एक

---

१. उप्पज्जमानो च सह उप्पज्जमानभावेन उपकारको धम्मो सहजातपच्चयो, पकासस्स पदीपो विय। प. अ. ७३।

२. प. १. ६।

३. प. १. १३०।

४. अञ्ञमञ्ञ उप्पादनुपत्थम्भनभावेन उपकारको धम्मो अञ्ञमञ्ञपच्चयो। प. अ. ७४।

५. अञ्ञमञ्ञ् पत्थम्भकं तिदण्डं विय। प. अ. ७४।

दूसरे की स्थिति में सहायक होते हैं, तो उनके ऐसे सम्बन्ध को अन्योन्य-प्रत्यय कहा जाता हैं। उदाहरणतः चार अरूपी स्कन्ध अन्योन्य-प्रत्यय से आबद्ध रहते हैं। उसी प्रकार चार महाभूत तथा प्रतिसन्धि के क्षण में नाम रूप भी अन्योन्य-प्रत्यय से आबद्ध रहते हैं।''

यहाँ देखा जा सकता है कि यह सम्बन्ध नाम एवं नाम के मध्य, नाम एवं रूप के मध्य तथा रूप एवं रूप के मध्य हो सकता है। फलतः प्रत्ययधर्म एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म दोनों नाम हो सकते हैं, दोनों रूप भी हो सकते हैं या दोनों पृथक् पृथक् नाम एवं रूप हो सकते हैं। पट्ठान में अन्ययोन्य-प्रत्यय के विवरण प्रसंग में कुशल, अकुशल तथा अब्याकत धर्मों के योग से विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है। उदाहरणस्वरूप कहा जा सकता है कि ''कुशल धर्म कुशल धर्म का अन्योन्य-प्रत्यय होता है। कुशल एक स्कन्ध कुशल तीन स्कन्धों का, या कुशल तीन स्कन्ध कुशल एक स्कन्ध का या दो कुशल स्कन्ध दो स्कन्धों का अन्योन्यप्रत्यय होते हैं, इत्यादि[१]।

(८) निश्रय-प्रत्यय—निश्रय का अर्थ है आश्रय या आधार। जब प्रत्ययधर्म प्रत्योत्पन्नधर्म का आधार हो स्थित होता है, तो उनके ऐसे सम्बन्ध को निश्रय-प्रत्यय कहते हैं, या प्रत्ययधर्म एवं प्रत्ययोत्पन्नधर्म के आधार आधेय भाव से स्थिति को निश्रयप्रत्यय कहा जाता है। पट्ठान में कहा गया है कि ''जिस रूप के आश्रय से मनोधातु तथा मनोविज्ञान-धातु स्थित होते हैं, वह रूप उन मनोधतु मनोविज्ञान-धातु एवं तत्सम्प्रयुक्त धर्मों का निश्रय-प्रत्यय होता है[२]''। अर्थात् प्रत्ययधर्म आधार होता है, एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म आधेय होता हैं।

अट्ठकथाकार ने निश्रय-प्रत्यय की व्याख्या-क्रम में दर्शाया है कि ''अधिष्ठान आकार से या निश्रय-आकार से उपकारक-धर्म निश्रयप्रत्यय होता है,[३] यथा—बृक्ष के लिए पृथ्वी, चित्र कर्म के लिय पट''। वृक्षों की स्थिति के लिए पृथ्वी आधार होती है। पृथ्वी के निश्रय से ही वृक्ष स्थित एवं संधारित होते हैं। चित्त आदि वस्त्रखण्ड पर बने होते हैं। इसलिए वह वस्त्रखण्ड चित्त का आधार होता है। इन उदाहरणों में पृथ्वी तथा वस्त्रखण्ड प्रत्ययधर्म हैं एवं वृक्ष तथा चित्र प्रत्ययोत्पन्न-धर्म हैं। प्रत्यय-धर्म के निश्रय से प्रत्ययोत्पन्न-धर्म की स्थिति बनी रहती है। ऐसे सम्बन्ध को निश्रय-प्रत्यय कहा जाता है। यह सम्बन्ध नाम एवं नाम, रूप एवं नाम, तथा नाम एवं रूप में हो सकता है; यथा चार अरूपी स्कन्ध परस्पर निश्रय-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। चार महाभूत परस्पर निश्रय-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। प्रतिसन्धि के क्षण नाम एवं रूप

---

१. प. १. १३२।

२. प. १. ६।

३. अधिट्ठानाकारेन निस्सयाकारेन च उपकारको धम्मो निस्सयपच्चयो, तरुचित्तकम्मादीनं पठवीपटादयो विय। प. अ. ७४।

निश्रय-प्रत्यय से सम्बद्ध होते हैं[१]"; इत्यादि। पुनः कुशल, अकुशल एवं अब्याकत धर्मों के योग से भी पट्ठान-प्रकरण में इस प्रत्यय पर प्रकाश डाला गया है[२]।

(९) उपनिश्रय-प्रत्यय—यहाँ 'उप' विशेष या अधिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अधिक निश्रय ही उपनिश्रय है—"भूसो निस्सयो उपनिस्सयो"[३]। इसका अर्थ बलवान कारण है। इसलिये बलवान कारण के रूप में उपकारक धर्म उपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध कहा जाता है[४]।

इस सम्बन्ध के अन्तर्गत प्रत्ययधर्म एक विशिष्ट निश्रय के रूप में विद्यमान रहता है। वह उस रूप से विद्यमान होते हुए प्रत्योत्पन्नधर्म की स्थिति में एक सबल कारण का काम करता है।

उपनिश्रय-प्रत्यय केवल नाम एवं नाम या रूप धर्मों के मध्य हो सकता है यथा—"पूर्व पूर्व के कुशल धर्म पश्चिम पश्चिम के कुशल धर्मों के उपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं, या पूर्व पूर्व के अकुशल धर्म पश्चिम पश्चिम के अकुशल धर्मोंके साथ उपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं"[५] इत्यादि।

इसके तीन भेद होते हैं—आलम्बनोपनिश्रय, अनन्तरूपनिश्रय तथा प्रकृत्युपनिश्रय। इन तीनों का संक्षिप्त रूप इस प्रकार जाना जा सकता है।

जब प्रत्ययधर्म आलम्बन के रूप में प्रत्ययोत्पन्नधर्म का विशिष्ट निश्रय होता है, तो ऐसे सम्बन्ध को आलम्बनोपनिश्रय कहते हैं। यह प्रत्यय आलम्बनाधिपति-प्रत्यय सदृश् है। वहाँ आलम्बन को गरूकर अर्थात् विशेष रूप में प्रिय आदि जान चित्त चैतसिक धर्म उत्पन्न होते हैं, एवं यहाँ आलम्बन बलवान कारण के रूप में हो चित्त, चैतसिक को उत्पन्न करता है। इस प्रकार गरू कर्तव्यमात्र अर्थ में आलम्बनाधिपति-प्रत्यय है तथा बलवान कारण के अर्थ में आलम्बनोपनिश्रय-प्रत्यय है।[६] यथा—"दान देकर, शील का समादान कर, उपोसथ कर्म करके उसे गरू करते हुए कोई प्रत्ययवेक्षण करता है, उसके ऐसे करने में दानशीलादि कर्म आलम्बन रूप से उपनिश्रय हैं एवं प्रत्यवेक्षण-चित्त उनके आश्रय से उत्पन्न एवं स्थित है।

अनन्तरोपनिश्रय में प्रत्ययधर्म अनन्तर रूप से पश्चिम पश्चिम चित्तों के उत्पाद में निश्रय होता है। यथा—"पूर्व पूर्व के कुशल स्कन्ध पश्चिम पश्चिम के

---

१. प. १. ६।

२. प. १. १३३।

३. प. अ ७४।

४. तस्मा बलवकारणभावेन उपकारको धम्मो उपनिस्सयपच्चयो ति वेदितब्बो। प. अ. ७४।

५. प. १.७।

६. तत्था यं आरम्मणं गरूं कत्वा चित्तचेतसिका उप्पज्जन्ति, तं नियमतो तेसं आरम्मणेसु बलवारम्मणं होति। इति गरूकातब्बमत्तट्ठे न आरम्मणाधिपति, बलवकारणट्ठे न आरम्मणूपनिस्सयो ति एवमेतेसं नानत्तं वेदितब्बं। प. अ. ७५।

कुशल स्कन्धों के साथ अनन्तरोपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध कहे जा सकते हैं''[१]। इसे अनन्तर-प्रत्यय के सदृश ही समझना चाहिए। अट्ठकथाकार ने इसका अनन्तर-प्रत्यय से साम्य दर्शाते हुए सूक्ष्म विभेद की ओर भी निर्देश किया है। अपने अपने अनन्तर अनुरूप चित्तुप्पादभाव से अनन्तरप्रत्यय कहा जाता है तथा बलवान कारण की दृष्टि से उसका अनन्तरोपनिश्रय नाम होता है—''अत्तनो अत्तनो अनन्तरं अनुरूपचित्तुप्पादवसेन अनन्तरपच्चयो, बलवकारणवसेन अनन्तरूपनिस्सयो ति एवमेतेसं नानत्तं वेदितब्बं''।

प्रकृति अर्थात् स्वभाव से बलवान् निश्रय ही प्रकृत-उप-निश्रय है। स्वभावतः अपने अपने चित्तसन्तान में उत्पन्न श्रद्धा आदि एवं उनसे समुत्पन्न धर्म आदि में प्रकृत्युपनिश्रय-प्रत्यय होता है। यथा—श्रद्धा के उपनिश्रय से कोई पुरुष दान देता है, शील का पालन करता है, उपोसथ कर्म करता है या ध्यान की भावना करता है। वह श्रद्धा—दान-कर्म, शील-परिपालन-कर्म, उपोसथ-कर्म आदि के साथ प्रकृत्युपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध कही जा सकती है[२]। इस दृष्टि से श्रद्धा आदि प्रकृति रूप से या बलवान कारण रूप से प्रत्ययधर्म हो प्रत्ययोत्पन्न धर्म की स्थिति में उपकारक होने से उनसे प्रकृत्युपनिश्रय-प्रत्यय से आबद्ध कही जा सकती है।

(१०) पुरेजात-प्रत्यय—पुरेजात का अर्थ होता है—पूर्व में उत्पन्न। यह प्रत्ययधर्म का विशेषण है। इससे यह प्रकट होता है कि प्रत्ययधर्म प्रत्ययोत्पन्नधर्म के पूर्व में उत्पन्न होता है। इस प्रकार वह सम्बन्ध जो पूर्व में उत्पन्न प्रत्ययधर्म तथा पश्चात् उत्पन्न प्रत्योत्पन्न-धर्म के मध्य उपलब्ध होता है, उसे पुरेजातप्रत्यय कहा जाता है। अट्ठकथाकार ने दर्शाया है कि ''प्रथमतर उत्पन्न होकर वर्तमानभाव से उपकारकधर्म को पुरेजातप्रत्यय कहा जाता है''[३]। यह प्रत्ययधर्म निश्रय या आलम्बन के रूप में प्रत्ययोत्पन्नधर्म के उत्पाद के पूर्व विद्यमान हो उपकारक होता है। जिस प्रकार सूर्य एवं चन्द्रमा सुदूर अतीत में उत्पन्न हो विद्यमान होते हुए उनके अनन्तर उत्पन्न होनेवाले धर्मों को प्रकाश, शैत्य, औष्ण्य आदि प्रदान कर उपकारक होते हैं, उसी प्रकार प्रत्ययधर्म पूर्व में उत्पन्न होकर विद्यमान रहते हुए प्रत्ययोत्पन्नधर्म की स्थिति में जब उपकारक होता है, तो उनके मध्य स्थित सम्बन्ध को पुरेजात-प्रत्यय कहा जाता है। उदाहरणतः ''चक्षु:-आयतन, चक्षुर्विज्ञानधातु तथा तत्सम्प्रयुक्तधर्मों से पुरेजातप्रत्यय से सम्बद्ध होता है[४]। उसी प्रकार श्रोत्रायतन, घ्राणायतन, जिह्वायतन, कायायतन आदि श्रोत्रविज्ञानधातु, घ्रणविज्ञानधातु, जिह्वाविज्ञान-धातु तथा कायविज्ञानधातु एवं तत्सम्प्रयुक्तधर्मों से पुरेजातप्रत्यय से आबद्ध होते हैं। जिस रूप के निश्रय से मनोधातु तथा मनोविज्ञानधातु उत्पन्न एवं स्थित होते हैं, उस रूप तथा मनोधातु एवं तत्ससम्प्रयुक्तधर्मों में पुरेजातप्रत्यय का सम्बन्ध होता है''। यहाँ द्रष्टव्य है

१. प. १.७।
२. सद्धा सीलं सुतं चागो पञ्ञा सद्धाय सीलस्स सुतस्स चागस्स पञ्ञाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। प. अ. ७२।
३. पठमतरं उप्पज्जित्वा वत्तमानभावेन उपकारको धम्मो पुरेजातपच्चयो। प. अ. ७६।
४. प. १.८।

कि चक्षुआयतन पूर्व में उत्पन्न प्रत्ययधर्म है तथा चक्षुविज्ञान एवं तत्सम्प्रयुक्तधर्म तद्पश्चात् उत्पन्न प्रत्ययोत्पन्नधर्म हैं। ऐसी उत्पत्ति की पृष्ठभूमि में इनके मध्यस्थित सम्बन्ध का नाम पुरेजातप्रत्यय है।

पट्ठान की विवरणात्मक प्रक्रिया के अन्तर्गत इनका विश्लेषण उपस्थित करते हुए कहा गया है कि "अव्याकतधर्म अव्यकतधर्म के साथ पुरेजातप्रत्यय से आबद्ध है"[१]। उस प्रसंग में आलम्बनपुरेजात तथा वस्तुपुरेजात नामक इसके दो भेद देखे जाते हैं। यथा—एक अर्हत् चक्षु को अनित्यतः, दुखतः, एवं अनात्मतः देखता है। यहाँ चक्षु रूप होने के कारण अव्याकतधर्म है, जो अर्हत् के विपश्यना पूर्ण अव्याकत (क्रिया) चित्त का विषय होता है। इसलिए यह सम्बन्ध आलम्बन-पुरेजातप्रत्यय कहा जा सकता है।

वस्तुपुरेजात-प्रत्यय का उदाहरण देते हुए कहा गया है कि 'चक्षुआयतन चक्षुविज्ञान से वस्तुपुरेजात-प्रत्यय से आबद्ध होता है' इत्यादि। इस प्रसंग में द्रष्टव्य यह है कि पुरेजात-प्रत्यय में प्रत्ययधर्म रूप होता है तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म नाम होता है।

(११) **पश्चाज्जात-प्रत्यय**—पश्चात् उत्पन्न धर्म को पश्चाज्जात धर्म कहते हैं। जब प्रत्यय-धर्म पश्चाज्जात होता है, तथा प्रत्योत्पन्न-धर्म पूर्व उत्पन्न होता है, तो उत्पत्ति की ऐसी प्रक्रिया की पृष्ठभूमि में उनके मध्य स्थित सम्बन्ध को पश्चाज्जात-प्रत्यय कहा जाता है। अट्ठकथाकार ने दर्शाया है कि "पूर्व में उत्पन्न रूप-धर्मों के साथ उपस्थम्भक रूप से उपकारक अरूप धर्मों का पश्चाज्जात-प्रत्यय से सम्बन्ध होता है[२]। वहाँ गृद्ध पोतक एवं आहारचेतना की उपमा दी गई है। नीड़ में विद्यमान गृद्ध-शावक अपने माता-पिता द्वारा अपने लिए आहार लाने की आशा किए रहते हैं। आहार की आशा से सम्प्रयुक्त उनकी चेतना आहार-चेतना है। यहाँ द्रष्टव्य है कि गृद्ध शावक पूर्वजात हैं तथा आहार-चेतना पश्चाज्जात है। यह पश्चात् उत्पन्न आहार-चेतना अपनी उत्पत्ति के पूर्व में उत्पन्न गृद्ध शावक के काय के सम्पोषण में उपकारक है। इस प्रकार पश्चाज्जात-प्रत्यय में प्रत्यय-धर्म कोई चित्त एवं चैतसिक होते हैं, जो बाद में उत्पन्न होते हैं, तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म कोई रूप होता है, जो पूर्व में उत्पन्न रहता है। पश्चात् उत्पन्न प्रत्यय-धर्म, पूर्व उत्पन्न प्रत्ययोत्पन्न-धर्म का सम्पोषक होता है। जिस प्रकार पूर्व में उत्पन्न वृक्ष लतादि को पश्चात् उत्पन्न वृष्टि सम्पोषण करती है, उसी प्रकार पूर्व उत्पन्न काय को पश्चात् उत्पन्न चित्त चैतसिक धर्मों से उपकार देखा जा सकता है। इसलिए इसकी परिभाषा करते हुए पट्ठान में कहा गया है कि "पश्चाज्जात चित्त चैतसिक-धर्म पूर्वजात काय के साथ पश्चाज्जात-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[३]।" यहाँ द्रष्टव्य है कि यह सम्बन्ध रूप तथा नाम के मध्य ही हो सकता है।

(१२) **आसेवन-प्रत्यय**—पुनः पुनः सेवन आसेवन है। पुनः पुनः प्रवृत्ति ही इसका अभिप्राय है। एक बालक किसी पाठ को पढ़ता है। वह पूर्व-पूर्व क्षण में पढ़ा

---

१. प. १.८।

२. पुरेजातानं रूपधम्मानं उपत्थम्भकट्ठेन उपकारको अरूपधम्मो पच्छाजातपच्चयो। प. अ. ७६।

३. प. १.८।

हुआ पाठ अपर-अपर क्षण में पढ़े हुए पाठ का उपकारक होता है। वह बालक जितनी बार आवृत्ति करता है, उतनी बार उसमें विशेषता आती है। वह पूर्व की आवृत्ति अपर क्षण की आवृत्ति का उपकारक है। इस दृष्टि से आसेवन-प्रत्यय ऐसे सम्बन्ध का नाम है, जिसमें प्रत्यय-धर्म की पुनः पुनः आवृत्ति से प्रत्ययोत्पन्न-धर्म में विशेषता की अभिवृद्धि होती है। पट्ठान में कहा गया है कि "पूर्व पूर्व के कुशल धर्म पश्चिम पश्चिम के कुशल धर्मों के साथ आसेवन-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[1]।"

अट्ठकथा से प्रकट है कि—"आसेवन भाव से अनन्तर धर्मों का प्रगुण बलयुक्त होने के लिए उपकारक धर्म आसेवन-प्रत्यय से आबद्ध कहे जा सकते हैं[2]। उदाहरणतः ग्रन्थादि का पूर्व-पूर्व अभियोग के समान"। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि प्रत्यय-धर्म एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म दोनों नाम-धर्म होते हैं। यह सम्बन्ध असदृश धर्मों के मध्य नहीं होता है, यथा—पञ्चद्वारावज्जन-चित्त के अनन्तर उत्पन्न चक्षुर्विज्ञान में यह सम्बन्ध नहीं देखा जा सकता है। एक ही प्रकार के चित्तों की पुनरावृत्ति में यह सम्बन्ध दर्शनीय है।

(१३) कर्म-प्रत्यय—कर्म शब्द यहाँ कुशल एवं अकुशल कर्मों का द्योतक है। मनुष्य अपने व्यावहारिक जीवन में विविध प्रकार का कर्म किया करता है। बौद्ध परम्परा के अनुसार वे कर्म उस उस व्यक्ति की चितसन्तति में तद्रूप फल का प्रजनन करते हैं, जिन्हें विपाक कहा जाता है। स्पष्ट शब्दों में यों कहा जा सकता है कि कुशल कर्म कुशल विपाक उत्पन्न करते हैं तथा अकुशल कर्म अकुशल विपाक के निष्पादक होते हैं। साथ ही जो पुरुष जिस प्रकार का कर्म करता है, उसे ही तद्रूप विपाक का अनुभवन होता है। ऐसा नहीं देखा जाता है कि कर्म कोई अन्य करता है तथा विपाक का अनुभवन किसी अन्य द्वारा होता है। तब इस नियम का निर्वाह कैसे होता है? इसका उत्तर है कि कर्म एवं विपाक में सामंजस्य की स्थापना कर्म-प्रत्यय द्वारा होती है। ऐसी दशा में कर्म प्रत्यय-धर्म है तथा उसका विपाक प्रत्योत्पन्न-धर्म होता है। प्रत्यय-धर्म केवल नाम-धर्म होता है एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म नाम तथा रूप दोनों हो सकता है। कारण कर्म, विपाक तथा कर्मजरूप दोनों का जनक है। इस आशय को व्यक्त करते हुए पट्ठान में कहा गया है कि "कुशल अकुशल कर्म विपाक स्कन्धों तथा कर्मज रूपों के मध्य कर्म-प्रत्यय होते हैं"[3]।

कर्म-प्रत्यय पर एक अन्य दृष्टि से भी विचार किया जा सकता है। भगवान् ने चेतना को कर्म बतलाया है—"चेतनाहं, भिक्खवे, कम्मं वदामि"। चेतना एक मानसिक मूलभूत प्रवृत्ति है, जो किसी कर्म को करने के लिए उत्पन्न होती है। चेतना के प्रादुर्भाव होने से ही मनुष्य कुशल या अकुशल कर्म करता है। इस प्रकार चेतना के कारण चेतना-सम्प्रयुक्त चित्त चैतसिक तथा तत्समुत्थान रूप की उत्पत्ति होती है। ऐसी दशा में चेतना

१. प. १. ८।
२. आसेवनट्ठेन अनन्तरानं पगुणबलवभावाय उपकारको। प. अ. ७६।
३. प. १. ६।

प्रत्यय-धर्म है एवं तत्सम्प्रतुक्त चित्त, चैतसिक एवं तत्समुत्थान रूप प्रत्ययोत्पन्नधर्म हैं। इनके मध्य स्थित सम्बन्ध का नाम कर्म-प्रत्यय है।

अट्ठकथा में उक्त दोनों विचारों का समवधान करते हुए कहा है—"चित्तपयोगसङ्खातेन क्रियाभावेन उपकारको धम्मो कम्मपच्चयो[१]"। इसके उदाहरण उक्त दोनों अर्थों के पोषक देखे जाते हैं। यथा—"कुशलाकुशल कर्म विपाक स्कन्धों के तथा कर्मज रूपों के मध्य कर्म-प्रत्यय होते हैं। चेतना तत्सम्प्रयुक्त धर्मों तथा तत्समुत्थान रूपों से कर्म-प्रत्यय से आबद्ध है[२]।"

(१४) विपाक-प्रत्यय—कर्मफल को विपाक कहते हैं। प्रत्येक कर्म सम्पन्न हो चित्तसन्तति में तदनुरूप विपाक का निःक्षेप करता है। इस प्रकार कुशल कर्म एवं अकुशल कर्मों के विपाकों का संग्रह होता रहता है। कर्म भी अनेक प्रकार के होते हैं। इसलिए उनके विपाकों में अनेकरूपता स्वभाविक है। कुशल कर्म तथा अकुशल कर्म स्वभावतः विरोधी होते हैं। इसलिए उनके विपाकों में स्वभागत विरोधभाव अवश्यम्भावी है। अब प्रश्न है कि ये परस्पर विरोधी विपाक अर्थात् स्वरूपतः कुशल या अकुशल होते हुए उनके स्वरूपगत वैविध्य से युक्त विपाक चित्तसन्तान में पूर्ण सामंजस्य के साथ कैसे रहते हैं? इसका उत्तर यह है कि एक साथ विद्यमान रहने के क्रम में सभी विपाकों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने वाला एक सम्बन्ध है, जिसे विपाक-प्रत्यय कहा जाता है। इस प्रकार विपाक-प्रत्यय ऐसा सम्बन्ध है, जिसमें प्रत्ययधर्म तथा प्रत्ययोत्पन्नधर्म दोनों विपाक होते हैं; यथा "चारो अरूपी विपाक स्कन्ध परस्पर विपाक-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[३]"।

(१५) आहार-प्रत्यय—शरीर एवं मन को पोषण करनेवाले धर्म को आहार कहते हैं। यह पोषकत्व का ही नाम है। अभिधर्म दर्शन के अनुसार इसके चार प्रकार देखे जाते हैं। यथा—कवलीकार-आहार- स्पर्श-आहार, मनोसंचेतना-आहार एवं विज्ञान-आहार। इस सम्बन्ध के अन्तर्गत प्रत्यय-धर्म इन चार प्रकार के आहारों में से कोई एक होता है तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म उनसे सम्पोषित चित्त, चैतसिक या रूप होता है। इसलिए पट्ठान में दर्शाया गयाहै कि—"कवलीकार आहार तथा शरीर के मध्य-आहार-प्रत्यय का सम्बन्ध होता है। अरूपी आहार (स्पर्श, मनोसञ्चेतना एवं विज्ञान) तत्सम्प्रयुक्त, धर्म एवं तत्समुत्थान रूपों के साथ आहार-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं।

बुद्धघोष ने इस प्रसंग को परिमार्जित करते हुए "रूप एवं अरूपधर्म को उपस्थम्भन रूप से उपकारी चतुर्विध आहार आहार-अत्यय से आबद्ध होते हैं" ऐसा कहा है[४]। इस दृष्टि से प्रकट होता है कि आहार-प्रत्यय के कारण ही रूप एव अरूप धर्मों का

१. प. अ. ७६।
२. प. अ. ७७।
३. प. १. ६।
४. प. अ. ७७।

आहरण होता है। इस सम्बन्ध के अन्तर्गत प्रत्ययधर्म रूप होते हैं, एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म नाम अथवा प्रत्ययधर्म नाम तथा प्रत्ययोत्पन्नधर्म नाम एवं रूप हो सकता है। उदाहरणतः स्पर्श के कारण स्पर्श- युक्त चित्त एवं तज्जनित रूप की उत्पत्ति होती है। इसमें स्पर्श नाम है, तथा तत्सम्प्रयुक्त चित्त एवं तदुत्पन्न रूप प्रत्ययोत्पन्नधर्म हैं, जो नाम तथा रूप हैं। पुनः जब ऐसा कहा जाता है कि स्थूल आहार से शरीर की सम्पुष्टि होती है, तो वहाँ प्रत्ययधर्म एवं प्रत्ययोत्पन्नधर्म दोनों रूप हैं।

(१६) इन्द्रिय-प्रत्यय—इन्द्रिय का अर्थ आधिपत्य करनेवाला या स्वामी होता है—"इन्दती ति इन्द्रियं"। अन्य दृष्टि से इन्द्रिय एक साधन का नाम है, जिसके द्वारा अन्तः या बाह्य स्थित विषयों की सूचना प्राप्त होती है। इन्द्रियाँ अभिधर्म परम्परा में बाईस प्रकार की कही गई हैं। इनमें सात इन्द्रियाँ केवल रूप हैं, जीवितीन्द्रिय नाम तथा रूप दोनों है, अवशेष चौदह इन्द्रियाँ केवल नाम हैं। इन इन्द्रियों के कारण विभिन्न प्रकार के चित्त चैतसिकों की उत्पत्ति होती है, एवं तथाविध उत्पन्न चित्त रूप-धर्म को भी निष्पन्न करता हैं। इस पृष्ठभूमि में ऐसा कहा जा सकता है कि—इन्द्रिय-प्रत्यय ऐसा सम्बन्ध हैं, जिसमें प्रत्यय-धर्म रूप तथा नाम होता है, एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म केवल नाम हो सकता है तथा नाम रूप भी हो सकता है।

यहाँ इत्थीन्द्रिय, पुरिसीन्द्रिय को छोड़ बीस इन्द्रियों में से कोई एक इन्द्रिय प्रत्यय-धर्म होती है तथा उससे सम्प्रयुक्त चित्त चैतसिक एवं तज्जनित रूप प्रत्ययोत्पन्न-धर्म होता है।

(१७) ध्यान-प्रत्यय—ध्यान शब्द यहाँ एक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त है। यह जिस किसी प्रकार की एकाग्रता का नाम है। प्राविधिक रूप से कथित रूप ध्यान तथा अरूप ध्यान ही इससे अभिप्रेत नहीं हैं।

अभिधर्म दर्शन के अनुसार सात ध्यानाङ्ग कहे गये हैं। वे हैं—वितर्क, विचार, प्रीति, सौमनस्य, दौर्मनस्य, उपेक्षा एवं एकाग्रता। इन ध्यानांगो के योग से चित्त, चैतसिकों तथा रूपों की उत्पत्ति होती है। फलतः ध्यान-प्रत्यय ऐसे सम्बन्ध का नाम है, जिसमें प्रत्यय-धर्म इन सात प्रकार के ध्यानाँगों में एक होता है तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म कोई चित्त, उसके साथ उत्पन्न चैतसिक या तत्समुत्थित रूप होता है। इसके अन्तर्गत द्विपञ्चविज्ञान की गणना नहीं है।

पट्ठान-प्रकरण में कहा गया है कि—"ध्यानांग ध्यान-सम्प्रयुक्त धर्मों के तथा तदुत्पन्न रूपों के साथ ध्यान-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[१]"। बुद्धघोष ने भी दर्शाया है कि—"उपनिध्यायन अर्थ में उपकारी द्विपञ्चविज्ञान वर्जित सभी ध्यानांग अपने सम्प्रयुक्त धर्मों के साथ ध्यान-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं[२]" इत्यादि।

---

१. प. १. ६।

२. प. अ. ७८।

(१८) मार्ग-प्रत्यय—मार्ग का अर्थ पथ होता है। यह सम्यक् एवं मिथ्या भेद से दो प्रकार का होता है। सम्यक् पथ के अनुसरण से निर्वाण की प्राप्ति होती है, एवं मिथ्या पथ के अनुसरण से दुःख प्राप्त होता है। अभिधर्म-दर्शन के अनुसार बारह मार्गाङ्ग कहे गये हैं, यथा—सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक्, वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि, मिथ्या दृष्टि, मिथ्या संकल्प, मिथ्या, व्यायाम एवं मिथ्या समाधि। इन बारह मार्गाङ्गों में जिस किसी मार्गाङ्ग के योग से चित्त चैतसिकों एवं तज्जनित रूप की उत्पत्ति होती है। यथा—सम्यक् दृष्टि के योग से ज्ञानसम्प्रयुक्त चित्त, सहवर्ती चैतसिक एवं तज्जनित रूप की उत्पत्ति होती है। फलतः सम्यक् दृष्टि को प्रत्यय-धर्म, तथा तत्सम्प्रयुक्त चित्त चैतसिक एवं रूप को प्रत्ययोत्पन्न-धर्म कहा जा सकता है। इस पृष्ठभूमि में मार्ग-प्रत्यय की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है कि—इस सम्बन्ध में बारह मार्गाङ्गों में कोई एक मार्गाङ्ग प्रत्यय-धर्म होता है, एवं तत्सम्प्रयुक्त चित्त चैतसिक तथा तदुत्पन्न रूप प्रत्ययोत्पन्न-धर्म होते हैं।

(१९) सम्प्रयुक्त-प्रत्यय—सम्प्रयुक्त शब्द का अर्थ सुष्टुरूप से एकीभूत होना है। जब प्रत्ययधर्म एवं प्रत्योत्पन्नधर्म एकीभूत हो विद्यमान होते हैं, तो उनकी इस प्रकार की विद्यमानता सम्प्रयुक्त-प्रत्यय से आबद्ध कही जा सकती है। इनके एकीभूत का अर्थ यह है कि वे एक साथ उत्पन्न होते हैं, एक साथ निरूद्ध होते हैं, एक ही विषय पर प्रवृत्त होते हैं तथा एक ही उनका वस्तु होता है। यह सम्बन्ध चार अरूपी स्कन्धों में देखा जाता है। कारण वे चारो उक्त विधि से एकीभूत हो विद्यमान रहते हैं। इसलिए पट्ठान में इस सम्बन्ध को परिदीपित करते हुए कहा गया है कि चार अरूपी स्कन्ध परस्पर सम्प्रतुक्त-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। इतलिए सम्प्रयुक्त प्रत्यय ऐसे सम्बन्ध का नाम है, जिसमें प्रत्यय-धर्म तथा प्रत्ययोत्पन्न-धर्म दोनों नाम होते हैं, एवं एकाकार हो प्रवृत्त होते हैं।

(२०) विप्रपुक्त-प्रत्यय—सम्प्रयुक्त शब्द का नितरां विपरीत शब्द विप्रयुक्त है। जहाँ प्रत्यय-धर्म एवं प्रत्योत्पन्नधर्म की स्थिति एकीभूत होकर नहीं देखी जाती है, वहाँ उनके मध्य विप्रयुक्त-प्रत्यय से आबन्धन कहा जा सकता है। उदाहरणतः रूपी एवं अरूपी धर्मों को लिया जा सकता है। रूप धर्म एवं चित्त, चैतसिक परस्पर विरोधी स्वभाव के हैं। फलतः इनके सम्बन्ध को परिदीपित करते हुए पट्ठान में कहा गया है कि 'रूपी धर्म अरूपी धर्मों के साथ या अरूपी धर्म रूपी धर्मों के साथ विप्रयुक्त प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। अट्ठकथा में दर्शाया गया है कि जहाँ "प्रत्यय-धर्म एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्मों के मध्य सहोत्पत्ति, सहनिरोध, एकालम्बनता तथा एकवस्तुभाव नहीं देखा जाता है, वहाँ उनमें विप्रयुक्तप्रत्यय होता है। इस सम्बन्ध के अन्तर्गत प्रत्ययधर्म नाम तथा प्रत्योत्पन्नधर्म रूप अथवा प्रत्ययधर्म रूप एवं प्रत्ययोत्पन्नधर्म नाम हो सकते हैं।

(२१) अस्ति-प्रत्यय—अस्ति शब्द विद्यमानभाव का द्योतक है। जब प्रत्ययधर्म के विद्यमान होने से प्रत्ययोत्पन्नधर्म के विद्यमान होने की स्थिति देखी जाय, तो उनके मध्य अस्ति-प्रत्यय नामक सम्बन्ध है। इसके अन्तर्गत प्रत्यय-धर्म अस्तिभाव से विद्यमान हो प्रत्ययोत्पन्नधर्म का उपकारी होता है। चार अरूपी स्कन्ध परस्पर अस्तिप्रत्यय से

आबद्ध हो विद्यमान होते हैं। उसी प्रकार चार महाभूतों में अस्तिप्रत्यय देखा जा सकता है। प्रतिसन्धि के क्षण नाम रूप में भी परस्पर यही सम्बन्ध है। चित्त, चैतसिकधर्म तदुत्पन्न रूपों के साथ अस्तिप्रत्यय से आबद्ध होते हैं। महाभूत एवं उपादा रूपों में में अस्तिप्रत्यय देखा जाता है। इसलिए अट्ठकथा में कहा गया है कि "प्रत्ययोत्पन्न लक्षण से युक्त अस्तिभाव से तादृशधर्मों का उपस्थम्भन अर्थ में उपकारी धर्म अस्ति प्रत्यय है[1]। यहाँ द्रष्टव्य है कि इस प्रत्यय के अन्तर्गत प्रत्ययधर्म नाम भी हो सकता है, रूप भी एवं प्रत्ययोत्पन्न धर्म नाम भी एवं रूप भी हो सकता है अथवा वे क्रमशः नाम तथा रूप हो सकते हैं। चार अरूपी स्कन्धों के सन्दर्भ में दोनों नाम हो सकते हैं तथा चार महभूतों के प्रसंग में दोनों रूप हो सकते हैं। चित्त, चैतसिक तथा चित्तज रूप के सन्दर्भ में प्रत्ययधर्म नाम होता है एवं प्रत्ययोत्पन्न-धर्म रूप होता है।

(२२) नास्ति-प्रत्यय—अस्ति का विपरीत नास्ति शब्द है। यह अभाव या अप्रवृत्ति का द्योतक है। जब प्रत्यय-धर्म स्वयं निरुद्ध होकर प्रत्ययोत्पन्न-धर्म की उत्पत्ति में सहायक होता है, तो उनकी ऐसी प्रवृत्ति के मध्य नास्ति-प्रत्यय नामक सम्बन्ध कहा जा सकता है। इसलिए पट्ठान में कहा गया है कि "समनन्तर निरुद्ध चित्त चैतसिक-धर्म प्रत्युत्पन्न चित्त चैतसिक धर्मों के साथ नास्ति-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं।" यथा—चक्षुर्विज्ञान के उत्पन्न हो निरुद्ध होने के अनन्तर ही सम्पटिच्छन-चित्त की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार चक्षुर्विज्ञान निरुद्ध हो सम्पटिच्छन-चित्त की प्रवृत्ति का अवकाश प्रदान करता है। अट्ठकथा से प्रकट है कि—"समनन्तरनिरुद्ध अरूपी-धर्म अनन्तर उत्पद्यमान अरूपी धर्मों की प्रवृत्ति के लिए अवकाश प्रदान द्वारा उपकार करते हैं। ऐसा करते हुए वे नास्ति-प्रत्यय से आबद्ध कहे जाते हैं"[2]। इसलिए नास्ति-प्रत्यय ऐसा सम्बन्ध है, जिसमें प्रत्यय-धर्म का नास्तिभाव प्रत्ययोत्पन्न-धर्म के अस्तिभाव का कारण होता है। इसमें प्रत्यय-धर्म एवं प्रत्ययोत्पन्न धर्म दोनों नाम-धर्म होते हैं।

(२३) विगत-प्रत्यय—विगत का अर्थ समाप्त या निरुद्ध होता है। जब प्रत्यय-धर्म स्वयं विगत हो प्रत्ययोत्पन्न-धर्म की उत्पत्ति में सहायक होता है, तो उनके मध्य विगत-प्रत्यय नामक सम्बन्ध कहा जाता है। यथा—समनन्तर विगत चित्त चैतसिक धर्म प्रत्युत्पन्न चित्त चैतसिक-धर्मों के साथ विगत-प्रत्यय से आबद्ध होते हैं। यह प्रत्यय नास्ति-प्रत्यय का ही दूसरा नाम है। केवल इनमें व्यञ्जनगत ही पार्थक्य है।

(२४) अविगत-प्रत्यय—अविगत शब्द अस्ति-भाव या विद्यमान-भाव का द्योतक है। जो विगत न है, वह अविगत है। इसलिए प्रत्यय-धर्म विद्यमान हो जब प्रत्ययोत्पन्न-धर्म का उपकारी होता है, तो उनके मध्य अविगत-प्रत्यय नामक सम्बन्ध होता है। अट्ठकथा से भी ज्ञात है कि "अस्ति-प्रत्यय-धर्म ही अविगत भाव से उपकार करने के कारण अविगत-प्रत्यय जैसा अभिधान प्राप्त करता है[3]। यह अस्ति-प्रत्यय का ही दूसरा नाम है।

---

१. प. अ. ८८।
२. प. अ. ७६।
३, प. अ. ८०।

इस प्रकार चौबीस प्रत्ययों का सामान्य विवरण देने के अनन्तर अट्ठकथा के विभिन्न प्रसंगों में उनपर कई दृष्टियों से विचार देखा जाता है। प्रस्तावना-क्रम में इनका उल्लेख धर्म, काल, सभागविसभागता, युगलभाव, जनकाजनकभाव, भवभेद, सर्व-स्थानिकादिभेद, रूपारूपभेद आदि शीर्षों में उपलब्ध है[1]। प्रकृत प्रसंग में स्थानाभाव के कारण केवल कुछ दृष्टिकोणों को उपस्थित किया जा रहा है।

(१) **सभाग-विसभागता**—प्रत्ययों के स्वरूप पर विचार करते हुए पुनः ऐसा दर्शाया गया है कि कौन-कौन प्रत्यय स्वरूपतः सदृश हैं तथा कौन-कौन परस्पर विरूद्ध स्वभाववाले हैं। इनमें अनन्तर-प्रत्यय, समनन्तर-प्रत्यय, अनन्तरूपनिश्रय-प्रत्यय, आसेवन-प्रत्यय, नास्ति-प्रत्यय, एवं विगत-प्रत्यय सभाग अर्थात् एक स्वभाववाले हैं। आलम्बन-प्रत्यय, आलम्बनाधिपति-प्रत्यय तथा आलम्बनूपनिश्रय-प्रत्यय भी एकधर्मा हैं। इनके विपरीत पुरेजात-प्रत्यय एवं पश्चाज्जात-प्रत्यय; सम्प्रयुक्त-प्रत्यय एवं विप्रयुक्त-प्रत्यय; अस्ति-प्रत्यय एवं नास्ति-प्रत्यय, विगत-प्रत्यय एवं अविगत-प्रत्यय परस्पर विरोधी स्वभाव के हैं। ये विसभाग-प्रत्यय कहलाते हैं।

(२) **युगलभेद**—उक्त प्रत्ययों के कुछ युग्मों में कई दृष्टियों से सादृश्यभाव देखा जाता है। इस दृष्टि से उन्हें पांच युग्मों में विभक्त कर विश्लेषित किया गया है। वे हैं—अर्थ-युगल, शब्द-युगल, कालप्रतिपक्ष-युगल, अन्योन्य-प्रतिपक्ष-युगल, हेतुफल-युगल।

इनमें समनन्तर-प्रत्यय तथा अनन्तर-प्रत्यय में अर्थगत साम्य होने के कारण वे अर्थ-युगल कहे जाते हैं। निश्रय-प्रत्यय तथा उपनिश्रय-प्रत्यय में शब्दतः साम्य है। फलतः वे शब्दयुगल कहे जाते हैं। काल की दृष्टि से प्रतिपक्षधर्मा पुरेजात-प्रत्यय तथा पश्चाज्जात-प्रत्यय कालप्रतिपक्षयुगल हैं। सम्प्रयुक्त-प्रत्यय एवं विप्रयुक्त-प्रत्यय, अस्ति-प्रत्यय एवं नास्ति-प्रत्यय, विगत-प्रत्यय एवं अविगत-प्रत्यय अन्योन्य-प्रतिपक्षयुगल हैं। इसी प्रकार कर्म-प्रत्यय तथा विपाक-प्रत्यय को हेतुफलयुगल कहा जाता है[2]।

(३) **जनकाजकनभेद**—प्रत्ययों का उपकार उत्पत्ति-क्षण तथा स्थिति-क्षण में इष्ट है। जो प्रत्यय केवल उत्पत्तिक्षण में उपकारक होते हैं, वे जनक-प्रत्यय कहलाते हैं। स्थितिक्षण में उपकारक-प्रत्यय का नाम उपष्टम्भक है।

इनमें अनन्तर-प्रत्यय, समनन्तर-प्रत्यय, अनन्तर-उपनिश्रय-प्रत्यय, प्रकृति-उपनिश्रय-प्रत्यय, नानक्षणिक कर्म-प्रत्यय, आसेवन-प्रत्यय, नास्ति-प्रत्यय तथा विगत-प्रत्यय-धर्मों की उत्पत्ति में उपकारक होने के कारण जनकप्रत्यय कहलाते हैं। ये स्थितिक्षण या भङ्गक्षण में उपकारक नहीं हैं। स्थिति एवं भङ्गक्षण में उपकारक-प्रत्यय केवल एक ही देखा जाता है। वह है—पश्चाज्जात-प्रत्यय। इसे उपष्ठंभक-प्रत्यय कहा जाता है। अवशेष प्रत्यय उत्पाद एवं स्थिति दोनों अवस्थाओं में उपकारक होने के कारण जनकोपष्टम्भक-प्रत्यय कहलाते हैं।

इस क्रम से प्रत्ययों का विस्तृत विश्लेषण अट्ठकथा में अनेक दृष्टियों से देखा जा सकता है।

महेश तिवारी

---

१. धम्मतो कालतो चेव, नानप्पकारभेदतो।
पच्चयुप्पन्नतो चेव, विञ्ञातब्बो विनिच्छयो॥ प. अ. ८०।

२. प. अ. १२४।

यमक-पट्ठान-अट्ठकथा

विसय-सूची

यमक-अट्ठकथा

पट्ठान-अट्ठकथा

संकेत-सूची

अ. सा.	=	अट्ठसालिनी
अ. सं.	=	अभिधम्मत्थसङ्गहो
अं. नि.	=	अङ्गुत्तरनिकायो
उदा.	=	उदानं
दी. नि.	=	दीघनिकायो
ना. रू. प.	=	नामरूपपरिच्छेदो
प.	=	पट्ठानं
प. अ.	=	पट्ठान-अट्ठकथा
म.	=	बर्मी-संस्करण
म. नि.	=	मज्झिमनिकायो
म. व.	=	महावग्गो (विनयपिटकं)
य.	=	यमकं
य. अ	=	यमक-अट्ठकथा
रो.	=	रोमन-संस्करण
वि. म.	=	विसुद्धिमग्गो
वि. म.म. टी.	=	विसुद्धिमग्ग-महाटीका
सी.	=	सीहली-संस्करण
स्या.	=	स्यामी-संस्करण
सं. नि.	=	संयुत्तनिकायो
सं. वि.	=	सम्मोहविनोदनी

सुद्धिपण्णं

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
३	--	उद्दे स्सवारवण्णना	उद्दे सवारवण्णना
५	१६	हिनो ति	हिनोति
६६	७	०पट्ठानसभोधान०	०पट्ठानसमोधान०
७६	१०	मनाधातुया	मनोधातुया
१२१	७	अभवो	अभावो
१२१	३	आभावो	अभावो
१२४	१५	सङ्खातानं	सङ्खतानं
१५२	१४	हेवितुपाकदुके	हेतुविपाकदुके
१७१	५	अं. ति.	अं. नि.
१७६	१३	पवत्ते ति	पवत्तेति
१६२	६	निस्सउपनिस्स-अधिपाति	निस्सउपनिस्स-अधिपति

4526

—०—

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

यमक-अट्ठकथा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

यमक-अट्ठकथा

वत्थुगाथा

सङ्खेपेनेव देवानं, देवदेवो सुरालये । B. 287
कथावत्थुप्पकरणं, देसयित्वा रणञ्जहो ।
यमस्स विसयातीतो, नानायमकमण्डितं ।
अभिधम्मप्पकरणं, छट्ठं छट्ठानदेसको ।
यमकं अयमावत्त-नीलामलतनूरुहो ।
यं देसयि अनुप्पत्तो, तस्स संवण्णनाक्कमो ।
इदानि यस्मा तस्मास्स, होति संवण्णना अयं ति ॥

१. मूलयमकवण्णना

(१) उद्देसवारवण्णना

मूलयमकं, खन्धयमकं, आयतनयमकं, धातुयमकं, सच्चयमकं, सङ्खारयमकं, अनुसययमकं, चित्तयमकं, धम्मयमकं, इन्द्रिययमकं ति इमेसं दसन्नं यमकानं वसेन इदं पकरणं दस विधेन विभत्तं ति हि वुत्तं । तत्थ येसं दसन्नं यमकानं वसेन इदं पकरणं दस विधेन विभत्तं, तेसं चेव इमस्स च पकरणस्स नामत्थो ताव एवं वेदितब्बो— केनट्ठेन यमकं ति ? युगलट्ठेन । युगलं हि यमकं ति वुच्चति— 'यमकपाटिहारियं, यमकसाला' ति आदीसु विय । इति युगलसङ्खातानं यमकानं वसेन देसितत्ता इमेसु दससु एकेकं यमकं नाम । इमेसं पन यमकानं समूहभावतो सब्बं पेतं पकरणं यमकं ति वेदितब्बं ।

१-४८. तत्थ मूलवसेन पुच्छाविस्सज्जनं कत्वा देसितत्ता दसन्नं ताव सब्बपठमं मूलयमकं ति वुत्तं । तस्स उद्देसवारो, निद्देसवारो ति द्वे वारा होन्ति । तेसु उद्दिट्ठानुक्कमेन निद्दिसितब्बत्ता उद्देसवारो पठमो । B. 288

तस्स **ये केचि कुसला धम्मा, सब्बे ते कुसलमूला; ये वा पन कुसलमूला, सब्बे ते धम्मा कुसला** (य. १.३) ति इदं यमकं आदि। तस्स कुसलाकुसलमूलसङ्खातानं[1] द्विन्नं अत्थानं वसेन अत्थयमकं ति वा, तेसञ्ञेव अत्थानं वसेन अनुलोमपटिलोमतो पवत्तपाळिधम्मवसेन धम्मयमकं ति वा, अनुलोमपटिलोमतो पवत्तपुच्छावसेन पुच्छायमकं ति वा तिधा यमकभावो वेदितब्बो। सेसेसु पि एसेव नयो।

इदानि इमेसं यमकानं वसेन देसिते इमस्मिं मूलयमके उद्देसवारस्स[2] ताव नययमकपुच्छाअत्थवारप्पभेदवसेन पाळिववत्थानमेव एवं वेदितब्बं—कुसलत्तिकमातिकाय हि 'कुसला धम्मा' ति इदं आदिपदं निस्साय मूलनयो, मूलमूलनयो, मूलकनयो, मूलमूलकनयो ति इमे चत्तारो नया होन्ति। तेसं एकेकस्मिं नये मूलयमकं, एकमूलयमकं, अञ्ञमञ्ञमूलयमकं ति तीणि तीणि यमकानि। एवं चतूसु नयेसु द्वादस यमकानि, एकेकस्मिं यमके अनुलोमपटिलोमवसेन द्वे द्वे पुच्छा ति चतुवीसति पुच्छा, एकेकाय पुच्छाय सन्निट्ठानसंसयवसेन द्वे द्वे अत्था ति अट्ठचत्तालीस अत्था ति।

तत्थ **ये केचि कुसला धम्मा** (य. १.३) ति—कुसलेसु "कुसला नु खो, न कुसला नु खो" ति सन्देहाभावतो इमस्मिं पदे सन्निट्ठानत्थो वेदितब्बो।

सब्बे ते कुसलमूला ति "सब्बे ते कुसला धम्मा कुसलमूला नु खो, न नु खो" ति एवं विमतिवसेन पुच्छितत्ता इमस्मिं पदे संसयत्थो वेदितब्बो। सो च खो वेनेय्यानं संसयट्ठाने संसयदीपनत्थं वुत्तो, तथागतस्स पन संसयो नाम नत्थि। इतो परेसु पि पुच्छा पदेसु एसेव नयो।

यथा च कुसलपदं निस्साय इमे चत्तारो नया, एकेकस्मिं नये तिण्णं तिण्णं यमकानं वसेन द्वादस यमकानि, एकेकस्मिं यमके द्विन्नं द्विन्नं पुच्छानं वसेन चतुवीसति पुच्छा; एकेकाय पुच्छाय द्विन्नं द्विन्नं अत्थानं

---

१. कुसलाकुसलसङ्खातानं स्या.।

२. उद्देसवारस्सेव स्या.।

वसेन अट्ठचत्तालीस अत्था च होन्ति । अकुसलपदं निस्साय पि तथेव ।
अब्याकतपदं निस्साय पि तथेव । तीणि पि पदानि एकतो कत्वा निद्दिट्ठं
नामपदं निस्साय पि तथेवा ति कुसलत्तिकमातिकाय चतूसु पदेसु सब्बे[1]
पि सोळस नया, अट्ठचत्तालीस यमकानि, छन्नवुति पुच्छा, द्वेनवुतिसतं B. 289
अत्था च उद्देसवसेन वुत्ता ति वेदितब्बा । एत्तावता मूलवारो नाम
पठमं उद्दिट्ठो होति ।

४९. ततो परं **ये' केचि कुसला धम्मा, सब्बे ते कुसलहेतू (य. १.९)** ति आदयो तस्सेव मूलवारस्स वेवचनवसेन नव वारा उद्दिट्ठा । इति मूलवारो, हेतुवारो, निदानवारो, सम्भववारो, पभववारो, समुट्ठानवारो, आहारवारो, आलम्बणवारो, पच्चयवारो, समुदयवारो ति सब्बे पि दस वारा होन्ति । तत्थ मूलवारे आगतपरिच्छेदेनेव सेसेसु पि नयादयो वेदितब्बा ति सब्बेसु पि दससु वारेसु सट्ठिसतनया, असीति अधिकानि चत्तारि यमकसतानि, सट्ठि अधिकानि नवपुच्छासतानि, वीसाधिकानि एकूनवीसति अत्थसतानि च उद्दिट्ठानी ति वेदितब्बानि । एवं ताव उद्देसवारे नययमकपुच्छाअत्थवारप्पभेदवसेन पाळिववत्थानमेव वेदितब्बं ।

मूलं हेतु निदानं चा (य. १.९) ति गाथा दसन्नं पि वारानं उद्दानगाथा नाम । तत्थ मूलादीनि सब्बानि पि कारणवेवचनानेव । कारणं हि पतिट्ठानट्ठेन मूलं । अत्तनो फलनिप्फादनत्थं हिनो ति पवत्तती ति हेतु । 'हन्द, नं गण्हाथा' ति दस्सेन्तं विय अत्तनो फलं निदेती ति निदानं । एतस्मा फलं सम्भोती[2] ति सम्भवो । फलं[3] पभवती ति पभवो । समुट्ठाति एत्थ फलं, एतेन वा समुट्ठाती ति समुट्ठानं । अत्तनो फलं आहरती ति आहारो । अप्पटिक्खिपितब्बेन अत्तनो फलेन आलम्बीयती ति आलम्बणं । एतं पटिच्च अप्पटिक्खिपित्वा फलं एति पवत्तती ति पच्चयो । एतस्मा फलं समुदेती ति समुदयो । एवमेतेसं पदानं वचनत्थो वेदितब्बो ।

उद्देसवारवण्णना निट्ठिता

---

१. सब्बेसु स्या. । २. सम्भवती स्या. ।
३. म. पोत्थके नत्थि ।

२. निद्देसवारवण्णना

५०. इदानि **ये केचि कुसला धम्मा** (य. १. ६) ति आदिना नयेन निद्देसवारो आरद्धो। तत्थ **ये केची** ति अनवसेसवचनं। **कुसला धम्मा** ति कुसलत्तिकस्स पदभाजने वुत्तलक्खणा अनवज्जसुखविपाका कुसलसभावा। **सब्बे ते कुसलमूला** ति किं ते सब्बे येव कुसलमूला ति पुच्छति। B. 290 **तीणेव कुसलमूलानी** ति न ते सब्बे कुसलमूलानि, अलोभादीनि पन तीणि येव कुसलमूलानी ति अत्थो।

अवसेसा कुसला धम्मा न कुसलमूला ति अवसेसा फस्सादयो कुसला धम्मा कुसलमूलानि नाम न होन्ति। अथ वा अवसेसा फस्सादयो कुसला धम्मायेव नाम, न कुसलमूलानी ति पि अत्थो। **ये वा पन कुसलमूला** ति ये वा पन पठमपुच्छाय दुतियपदेन कुसलमूला ति तयो अलोभादयो गहिता। **सब्बे ते धम्मा कुसला** ति किं ते सब्बे तयो पि धम्मा कुसला ति पुच्छति। **आमन्ता** ति सब्बेसं पि कुसलमूलानं कुसलभावं सम्पटिच्छन्तो आह। अयं ताव मूलनये मूलयमकस्स अत्थो। इमिना उपायेन सब्बपुच्छासु विस्सज्जननयो वेदितब्बो। यं पन यत्थ विसेसमत्तं अत्थि[1], तदेव वण्णयिस्साम।

५१. एकमूलयमके ताव **सब्बे ते कुसलमूलेन एकमूला** ति गणनट्ठेन एकमूलकं अग्गहेत्वा समानट्ठेन गहेतब्बा। अयञ्हेत्थ अत्थो—सब्बे ते कुसलमूलेन समानमूला। यं फस्सस्स मूलं, तदेव वेदनादीनं ति। अथ नेसं तथाभावं सम्पटिच्छन्तो **आमन्ता** ति आह। **कुसलसमुट्ठानं** ति कुसलचित्तसमुट्ठानरूपं दस्सितं। **एकमूलं** ति अलोभादिना कुसलमूलेन समानमूलं। यथेव हि फस्सादीनं अलोभादयो हेतुपच्चयत्ता मूलं[2], तथा तं समुट्ठानरूपस्सा पि, कुसललक्खणाभावेन पन तं न कुसलं।

५२. अञ्ञमञ्ञयमके 'ये केचि कुसला' ति अपुच्छित्वा **ये केचि कुसलमूलेन एकमूला** ति पुच्छा कता। कस्मा ? इमिना पि ब्यञ्जनेन

१. सी० पोत्थके नत्थि। २. मूला सी०।

तस्सेवत्थस्स सम्भवतो । **कुसलमूलानी** ति इदं पुरिमस्स विसेसनं । 'मूलानि यानि एकतो उप्पज्जन्ती' ति हि वुत्तं, तानि पन कुसलमूलानि पि होन्ति अकुसलअब्याकतमूलानि पि, इध कुसलमूलानी ति विसेसदस्सनत्थमिदं वुत्तं । **अञ्ञमञ्ञमूलानि चा** ति अञ्ञमञ्ञं हेतुपच्चयेन पच्चया होन्ती ति अत्थो । तस्सेव पटिलोमपुच्छाय 'सब्बे ते धम्मा कुसलमूलेन एकमूला' ति अवत्वा **सब्बे ते धम्मा कुसला** ति वुत्तं । कस्मा ? अत्थविसेसाभावतो । कुसलमूलेन एकमूला ति हि पुच्छाय कताय 'मूलानि यानि एकतो उप्पज्जन्ती' ति हेट्ठा वुत्तनयेनेव विस्सज्जनं[1] कातब्बं भवेय्य, एवं च सति अत्थविसेसाभावो होति । तस्मा तथा अकत्वा एवं पुच्छा कता । इमिना उपायेन मूलमूलनयादीसु पि B. 291 अञ्ञमञ्ञमूलयमके पुच्छाविसेसो वेदितब्बो ।

५४. मूलमूलनये **सब्बे ते कुसलमूलमूला** ति सब्बे ते कुसलमूलसङ्खाता मूला ति पुच्छति । **एकमूलमूला** ति समानट्ठेन एकमेव मूलमूलं एतेसं ति एकमूलमूला । **अञ्ञमञ्ञमूलमूला** ति अञ्ञमञ्ञस्स मूलं अञ्ञमञ्ञमूलं, अञ्ञमञ्ञमूलं हेतुपच्चयट्ठेन मूलं एतेसं ति अञ्ञमञ्ञमूलमूला ।

५६ मूलकनये **कुसलमूलका** ति हेतुपच्चयट्ठेन कुसलं मूलं एतेसं ति कुसलमूलका । मूलमूलकनये **कुसलमूलमूलका** ति कुसलानं मूलं कुसलमूलं । हेतुपच्चयट्ठेनेव कुसलमूलं मूलं एतेसं ति कुसलमूलमूलका ति । अयं ताव कुसलपदं निस्साय नययमकपुच्छासु विसेसत्थो ।

६२-६७. **अकुसलपदादीसु** पि एसेव नयो ।

६८. अयं पन विसेसो, **अहेतुकं अकुसलं** (य.१.१५) ति विचिकिच्छाय चेव उद्धच्चेन च सम्पयुत्तं मोहं सन्धाय वुत्तं ।

७५. **अहेतुकं अब्याकतं** (य. १.१६) ति अट्ठारस चित्तुप्पादा

१. मूलविस्सज्जनं सी० ।

रूपं, निब्बानं च। **अब्याकतमूलेन न**[1] **एकमूलं** ति इध पन ठपेत्वा सहेतुक-अब्याकतसमुट्ठानं रूपं, सेसं लब्भति। सहेतुक-अब्याकत-समुट्ठानं रूपं अब्याकतमूलेन एकमूलं होति, तं अब्बोहारिकं कत्वा एकतो लब्भमानकवसेनेव चेतं विस्सज्जनं कतं।

८६. **नामा धम्मा** (य० १.१९) ति नामसङ्खाता धम्मा। ते अत्थतो चत्तारो अरूपिनो खन्धा, निब्बानं च। **नवे व नाममूलानी** ति कुसलाकुसलअब्याकतमूलवसेन नव मूलानि। **अहेतुकं नामं नाममूलेन न एकमूल** ति अहेतुकं सब्बं पि अट्ठारस चित्तुप्पादविचिकिच्छुद्धच्चसम्प-युत्तमोहनिब्बानसङ्खातं नामं नाममूलेन न एकमूलं। न हि तं तेन

B. 292 सद्धिं उप्पज्जति। **सहेतुकं नामं नाममूलेना** ति पदे पि सहेतुकं नामं नाममूलेना ति अत्थो। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

८८. हेतुवारादीसु पि इमिनावुपायेन अत्थो वेदितब्बो। **मूलं हेतु निदानं चा** (य० १.२२) ति गाथा यथानिद्दिट्ठानं दसन्नं पि वारानं पुन उद्दानवसेनेव वुत्ता ति।

निद्देसवारवण्णना निट्ठिता

मूलयमकवण्णना निट्ठिता

---

१. सी० पोत्थके वत्थि।

२. खन्धयमकवण्णना

(१) पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना

१. इदानि मूलयमके देसितेयेव कुसलादिधम्मे खन्धवसेन सङ्गण्हित्वा मूलयमकानन्तरं देसितस्स खन्धयमकस्स वण्णना होति। तत्थ पाळिववत्थानं ताव एवं वेदितब्बं—इमस्मिं हि खन्धयमके तयो महावारा होन्ति – पण्णत्तिवारो, पवत्तिवारो, परिञ्ञावारो ति। तेसु पण्णत्तिवारो खन्धानं नामाभिधानसोधनवसेनेव गतत्ता पण्णत्तिवारो ति वुच्चति। पवत्तिवारो तेन सोधितनामाभिधानानं खन्धानं उप्पादनिरोधवसेन पवत्तिं सोधयमानो गतो, तस्मा पवत्तिवारो ति वुच्चति। परिञ्ञावारो इमिनानुक्कमेन पवत्तानं खन्धानं सङ्खेपेनेव तिस्सो परिञ्ञा दीपयमानो गतो, तस्मा परिञ्ञावारो ति वुच्चति।

तत्थ पण्णत्तिवारो उद्देसनिद्देसवसेन द्वीहाकारेहि ववत्थितो। इतरेसु विसुं उद्देसवारो नत्थि। आदितो पट्ठाय पुच्छाविस्सज्जनवसेन एकधा ववत्थिता[१]। तत्थ **पञ्चक्खन्धा** (य. १.२३) ति पदं आदिं कत्वा याव **न खन्धा, न सङ्खारा** ति पदं ताव पण्णत्तिवारस्स उद्देसवारो वेदितब्बो। पुच्छावारो ति पि तस्सेव नामं। तत्थ **पञ्चक्खन्धा** ति अयं यमकवसेन पुच्छितब्बानं खन्धानं उद्देसो। **रूपक्खन्धो...पे०... विञ्ञाणक्खन्धो** ति तेसञ्ञेव पभेदतो नामववत्थानं।

इदानि इमेसं खन्धानं वसेन पदसोधनवारो, पदसोधनमूलचक्क- B. 293
वारो, सुद्धखन्धवारो, सुद्धखन्धमूलचक्कवारो ति चत्तारो नयवारा होन्ति।

२. तत्थ **रूपं रूपक्खन्धो, रूपक्खन्धो रूपं** ति आदिना नयेन पदमेव सोधेत्वा गतो पदसोधनवारो नाम। सो अनुलोमपटिलोमवसेन दुविधो होति। तत्थ अनुलोमवारे 'रूपं रूपक्खन्धो, रूपक्खन्धो रूपं' ति आदीनि पञ्च यमकानि।

---

१. ववत्थितो स्या.।

३. पटिलोमवारे पि 'न रूपं, न रूपक्खन्धो; न रूपक्खन्धो न रूपं' ति आदीनि पञ्चेव। ततो परं तेसञ्ञेव पदसोधनवारे सोधितानं खन्धानं 'रूपं रूपक्खन्धो, खन्धा वेदनाक्खन्धो' ति आदिना नयेन एकेकखन्धमूलकानि चत्तारि चत्तारि चक्कानि बन्धित्वा गतो पदसोधनमूलकानं चक्कानं अत्थिताय पदसोधनमूलचक्कवारो नाम। सो पि अनुलोमपटिलोमवसेन दुविधो होति। तत्थ अनुलोमवारे 'रूपं रूपक्खन्धो, खन्धा वेदनाक्खन्धो ति आदीनि एकेकखन्धमूलकानि चत्तारि चत्तारि कत्वा वीसति यमकानि। पटिलोमवारे पि 'न रूपं, न रूपक्खन्धो; न खन्धा न वेदनाक्खन्धो' ति आदीनि वीसतिमेव।

४. ततो परं **रूपं खन्धो खन्धा रूपं** (य० १.२६) ति आदिना नयेन सुद्धखन्धवसेनेव गतो सुद्धखन्धवारो नाम। तत्थ **खन्धा रूपं** ति आदीसु खन्धा रूपक्खन्धो, खन्धा वेदनाक्खन्धो ति अत्थो गहेतब्बो। कस्मा ? निद्देसवारे एवं भाजितत्ता[1]।

तत्थ हि 'रूपं खन्धो ति आमन्ता। खन्धा रूपक्खन्धो ति रूपक्खन्धो खन्धो चेव रूपक्खन्धो च, अवसेसा खन्धा न रूपक्खन्धो'ति एवं 'खन्धा रूपं' ति आदीनं खन्धा रूपक्खन्धो ति आदिना नयेन पदं उद्धरित्वा अत्थो विभत्तो। तेनेव च कारणेन एसो सुद्धखन्धवारो ति वुत्तो। वचनसोधने विय हि एत्थ न खन्धा ति[2] वचनं पमाणं। यथा यथा पन सुद्धखन्धा लब्भन्ति, तथा तथा अत्थो व पमाणं। परतो आयतन-यमकादीसु पि एसेव नयो। एसो पि च सुद्धखन्धवारो अनुलोमपटिलोम-वसेन दुविधो होति। तत्थ अनुलोमवारे 'रूपं खन्धो खन्धा रूपं' ति आदीनि पञ्च यमकानि। पटिलोमवारे पि 'न रूपं न खन्धो, न खन्धा न रूपं' ति आदीनि पञ्चेव।

१६. ततो परं तेसञ्ञेव सुद्धखन्धानं **रूपं खन्धो, खन्धा वेदना** (य. १.२७) ति आदिना नयेन एकेकखन्धमूलकानि चत्तारि चत्तारि

---

१. विभजितत्ता स्या.।

२. म. पोत्थके नत्थि।

चक्कानि बन्धित्वा गतो सुद्धखन्धमूलकानं चक्कानं अत्थिताय सुद्धखन्धमूलचक्कवारो नाम ।

तत्थ **खन्धा वेदना** ति आदीसु[1] खन्धा वेदनाक्खन्धो ति आदिना नयेन अत्थो वेदितब्बो । इतरथा निद्देसवारेन सद्धिं विरोधो होति । सो पि अनुलोमपटिलोमवसेन दुविधो होति । तत्थ अनुलोमवारे 'रूपं B. 294 खन्धो, खन्धा वेदना' ति आदीनि एकेकखन्धमूलकानि चत्तारि चत्तारि चक्कानि[2] कत्वा वीसति यमकानि । पटिलोमवारे पि 'न रूपं, न खन्धो, न खन्धा न वेदना' ति आदीनि वीसतिमेव । एवं ताव एकेन यमकसतेन द्वीहि पुच्छा, सतेहि एकेकपुच्छाय सन्निट्ठान-संसयवसेन द्वे द्वे अत्थे कत्वा चतूहि च अत्थसतेहि पटिमण्डितो पण्णत्तिवारस्स उद्देसवारो वेदितब्बो ति ।

पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना

१. पदसोधनवारवण्णना

२६. इदानि **रूपं रूपक्खन्धो** (य. १.३०) ति आदिना नयेन निद्देसवारो आरद्धो । तत्थ **रूपं रूपक्खन्धो** ति यं किञ्चि रूपं ति वुच्चति । सब्बं तं रूपं[3] रूपक्खन्धो ति वचनसोधनत्थं पुच्छति । **पियरूपं सातरूपं, रूपं, न रूपक्खन्धो** ति यं 'पियरूपं सातरूपं' ति एत्थ रूपं ति वुत्तं, तं रूपमेव, न रूपक्खन्धो ति अत्थो । **रूपक्खन्धो रूपञ्चेव रूपक्खन्धो चा** ति यो पन रूपक्खन्धो, सो रूपं ति पि रूपक्खन्धो ति पि वत्तुं वट्टती ति अत्थो । **रूपक्खन्धो रूपं** ति एत्थ पन यस्मा रूपक्खन्धो नियमेनेव रूपं ति वत्तब्बो । तस्मा **आमन्ता** ति आह ।

इमिना उपायेन सब्बविस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो । यो पन यत्थ विसेसो भविस्सति, तथेव तं वण्णयिस्साम । सञ्ञायमके ताव **दिट्ठि-**

१. आदीनं स्या. । २. म. पोत्थके नत्थि ।
३. म. पोत्थके नत्थि ।

सञ्ञा (य. १.३१) ति 'पपञ्चसञ्ञा' ति आदीसु आगता दिट्ठिसञ्ञा। सङ्खारयमके **अवसेसा सङ्खारा** ति 'अनिच्चा वत सङ्खारा' ति आदीसु आगता सङ्खारक्खन्धतो अवसेसा सङ्खतधम्मा। पटिलोमवारे पि एसेव नयो ति।

पदसोधनवारवण्णना निट्ठिता

२. पदसोधनमूलचक्कवारवण्णना

२८. पदसोधनमूलचक्कवारे **खन्धा वेदनाक्खन्धो** (य. १. ३२) ति ये केचि खन्धा, सब्बे ते वेदनाक्खन्धो ति पुच्छति। तस्सा[1] वेदनाक्खन्धो ति खन्धो चेव वेदनाक्खन्धो च, अवसेसा पन खन्धा खन्धा, न वेदनाक्खन्धो ति विस्सज्जनं[1]। सेसपुच्छासु पि एसेव नयो। पटिलोमे **न खन्धा न वेदनाक्खन्धो** ति एत्थ ये पञ्ञत्तिनिब्बानसङ्खाता
B, 295 धम्मा खन्धा न होन्ति, ते यस्मा वेदनाक्खन्धो पि न होन्ति, तस्मा **आमन्ता** ति आह। सेसविस्सज्जनेसु पि एसेव नयो ति।

पदसोधनमूलचक्कवारवण्णना निट्ठिता

३. सुद्धखन्धवारवण्णना

३८. सुद्धखन्धवारे **रूपं खन्धो** (य. १.३६) ति यं किञ्चि रूपं ति वुत्तं, सब्बं तं खन्धो ति पुच्छति। तत्थ यस्मा पियरूपसातरूपसङ्खातं वा रूपं होतु, भूतुपादायरूपं वा, सब्बं पञ्चसु खन्धेसु सङ्गहं गच्छतेव। तस्मा **आमन्ता** ति पटिजानाति।

दुतियपदे 'खन्धा रूपं' ति पुच्छितब्बे यस्मा रूपं ति वचनेन रूपक्खन्धो व अधिप्पेतो, तस्मा वचनं अनादियित्वा अत्थवसेन पुच्छन्तो **खन्धा रूपक्खन्धो** ति आह। इमिना नयेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। परतो आयतनयमकादीनं निद्देसवारे पि एसेव नयो। **सञ्ञाक्खन्धो** ति एत्था पि दिट्ठिसञ्ञा वा होतु, सञ्ञा एव वा, सब्बाय पि खन्धभावतो आमन्ता ति वुत्तं। **सङ्खारा खन्धो** ति पदे पि एसेव नयो। खन्धविनिमुत्तको हि सङ्खारो नाम नत्थि।

१-१. म. पोत्थके नत्थि।

३९. पटिलोमे **न रूपं न खन्धो** (य.१.४०) ति यं धम्मजातं रूपं न होति, तं खन्धो पि न होती ति पुच्छति। विस्सज्जने पनस्स **रूपं ठपेत्वा अवसेसा खन्धा न रूपं, खन्धा** ति रूपतो अञ्ञे वेदनादयो खन्धा रूपमेव न होन्ति, खन्धा पन होन्ती ति अत्थो। **रूपं च खन्धे च ठपेत्वा अवसेसा** ति पञ्चक्खन्धविनिमुत्तं निब्बानं चेव पञ्ञत्ति च। इतो परेसु पि 'अवसेसा'[1] ति पदेसु एसेव नयो ति।

सुद्धखन्धवारवण्णना निट्ठिता

४. सुद्धक्खन्धमूलचक्कवारवण्णना

४०. सुद्धक्खन्धमूलचक्कवारे **रूपं खन्धो** ति आदीनं हेट्ठावुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो ति।

सुद्धक्खन्धमूलचक्कवारवण्णना निट्ठिता

पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना निट्ठिता

३. पवत्तिवारवण्णना

५०. इदानि **यस्स रूपक्खन्धो** (य.१.४८) ति आदिना नयेन B. 296
पवत्तिवारो आरद्धो। कस्मा पनेत्थ उद्देसवारो न वुत्तो ति? हेट्ठा दस्सितनयत्ता। पण्णत्तिवारस्मिं हि उद्देसवारे नयो दस्सितो। तेन पन नयेन सक्का सो इध अवुत्तो पि जानितुं ति तं अवत्वा निद्देसवारो व आरद्धो।

इमस्मिं पन पवत्तिवारसङ्खाते महावारे उप्पादवारो, निरोधवारो, उप्पादनिरोधवारो ति तयो अन्तरवारा होन्ति। तेसु पठमो धम्मानं उप्पादलक्खणस्स दीपितत्ता **उप्पादवारो** ति वुच्चति। दुतियो तेसञ्ञेव निरोधलक्खणस्स दीपितत्ता **निरोधवारो** ति वुच्चति। ततियो उभिन्नं पि लक्खणानं दीपितत्ता **उप्पादनिरोधवारो** ति वुच्चति। उप्पादवारेन चेत्थ धम्मानं उप्पज्जनाकारो व दीपितो। निरोधवारेन 'उप्पन्नं नाम निच्चं नत्थी' ति तेसञ्ञेव अनिच्चता दीपिता। उप्पादनिरोधवारेन तदुभयं।

---

१. अवसेसं भ.।

तत्थ उप्पादवारे ताव तिण्णं अद्धानं वसेन छ कालभेदा होन्ति—पच्चुप्पन्नो, अतीतो, अनागतो, पच्चुप्पन्नेनातीतो, पच्चुप्पन्नेनानागतो, अतीतेनानागतो ति। तेसु 'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जती' ति पच्चुप्पन्नाभिधानवसेन पच्चुप्पन्नो वेदितब्बो। सो पच्चुप्पन्नानं धम्मानं पच्चक्खतो गहेतब्बता अतिविय सुविञ्ञेय्यो ति पठमो वुत्तो।

यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जित्था ति अतीताभिधानवसेन अतीतो वेदितब्बो। सो पच्चक्खतो अनुभूतपुब्बानं अतीतधम्मानं अनुमानेन अनागते हि सुविञ्ञेय्यतरत्ता दुतियो वुत्तो।

यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जिस्सती ति अनागताभिधानवसेन अनागतो वेदितब्बो। सो पच्चक्खतो च अनुभूतपुब्बवसेन च गहितधम्मानुमानेन 'अनागते पि एवरूपा धम्मा उप्पज्जिस्सन्ती' ति गहेतब्बतो ततियो वुत्तो।

यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जित्था ति पच्चुप्पन्नेन सद्धिं अतीताभिधानवसेन पच्चुप्पन्नेनातीतो वेदितब्बो। सो मिस्सकेसु तीसु सुविञ्ञेय्यतरत्ता चतुत्थो वुत्तो। **यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जिस्सती** ति पच्चुप्पन्नेन सद्धिं अनागताभिधानवसेन पच्चुप्पन्नेनानागतो वेदितब्बो। सो पच्चक्खतो गहेतब्बानं धम्मानं[1] अत्थिताय अत्थतो सुविञ्ञेय्यतरो ति पञ्चमो वुत्तो।

यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जित्थ, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जिस्सती
B. 297 ति अतीतेन सद्धिं अनागताभिधानवसेन अतीतेनानागतो वेदितब्बो। सो पुरिमेहि दुविञ्ञेय्यो ति छट्ठो वुत्तो।

एवमेतेसु छसु कालभेदेसु य्वायं पठमो पच्चुप्पन्नो, तत्थ पुग्गलतो, ओकासतो, पुग्गलोकासतो ति तयो वारा होन्ति। तेसु **यस्सा** ति पुग्गलवसेन खन्धानं उप्पत्तिदीपनो **पुग्गलवारो**। **यत्था** ति ओकासवसेन खन्धानं उप्पत्तिदीपनो **ओकासवारो**। **यस्स यत्था** ति पुग्गलोकासवसेन खन्धानं उप्पत्तिदीपनो **पुग्गलोकासवारो**। इमे पन तयो पि

१. सी. पोत्थके नत्थि।

वारा पठमं अनुलोमनयेन निद्दिसित्वा पच्छा पटिलोमनयेन निद्दिट्ठा। तेसु 'उप्पज्जति' 'उप्पज्जित्थ,' 'उप्पज्जिस्सती' ति वचनतो उप्पत्तिदीपनो अनुलोमनयो। 'नुप्पज्जति', 'नुप्पज्जित्थ,' 'नुप्पज्जिस्सती' ति वचनतो अनुप्पत्तिदीपनो पटिलोमनयो।

तत्थ पच्चुप्पन्नकाले ताव पुग्गलवारस्स अनुलोमनये "यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जति। यस्स वा पन वेदनाक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति। यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स सञ्ञाक्खन्धो सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो, उप्पज्जति। यस्स वा पन विञ्ञाणक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जती (य. १.४८) ति एवं रूपक्खन्धमूलकानि चत्तारि यमकानि; "यस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स सञ्ञाक्खन्धो उप्पज्जती' ति आदिना नयेन वेदनाक्खन्धमूलकानि तीणि; सञ्ञाक्खन्धमूलकानि द्वे; सङ्खारक्खन्धमूलकं एकं ति अग्गहितग्गहणेन दस यमकानि होन्ति।

तत्थ रूपक्खन्धमूलकेसु चतूसु आदितो एकमेव विस्सज्जितं। सेसानि तेन सदिसविस्सज्जनानी ति तन्तिया लहुभावत्थं सङ्खित्तानि। वेदनाक्खन्धादिमूलकेसु पि 'आमन्ता' ति एकसदिसमेव विस्सज्जनं। तस्मा तानि पि तन्तिया लहुभावत्थं सङ्खित्तानेवा ति एवमेतानि पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारे अनुलोमनये एकयमकविस्सज्जनेनेव दस यमकानि विस्सज्जितानि नाम होन्ती ति वेदितब्बानि।

यथा च पुग्गलवारे दस, एवं ओकासवारे दस, पुग्गलोकासवारे दसा ति पच्चुप्पन्नकाले तीसु वारेसु अनुलोमनये तिंस यमकानि होन्ति। यथा च अनुलोमनये, एवं पटिलोमनये पी ति सब्बानि पि पच्चुप्पन्नकाले सट्ठि यमकानि होन्ति। तेसु[1] वीसपुच्छासतं, चत्तारीसानि च द्वे अत्थ- B. 298
सतानि होन्ती ति वेदितब्बानि। एवं सेसेसु पि पञ्चसु कालभेदेसु पुग्गलादिभेदतो अनुलोमपटिलोमनयवसेन छ छ वारा। एकेकस्मिं वारे दस दस कत्वा सट्ठि सट्ठि यमकानी ति तीणि यमकसतानि। तानि पुरिमेहि सद्धिं सट्ठाधिकानि तीणि यमकसतानि, वीसा-

१. तेसं रो०।

धिकानि सत्तपुच्छासतानि, चत्तारीसानि च चुद्दस अत्थसतानि होन्ति। इदं ताव उप्पादवारे पाळिववत्थानं।

यथा च उप्पादवारे, तथा निरोधवारे पि, उप्पादनिरोधवारे पी ति सब्बस्मिं पि पवत्तिमहावारे असीति यमकसहस्सं, सट्ठिसताधिकानि द्वे पुच्छासहस्सानि, वीसं तिसताधिकानि[1] च चत्तारि अत्थसहस्सानि वेदितब्बानि।

पाळि पन उप्पादवारे निरोधवारे च तीसु असम्मिस्सककालभेदेसु तस्मिं तस्मिं वारे एकेकमेव यमकं विस्सज्जेत्वा सङ्खित्ता। तीसु मिस्सककालभेदेसु 'यस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स सञ्ञाक्खन्धो उप्पज्जित्था' ति आदिना नयेन वेदनाक्खन्धादिमूलकेसु पि एकं यमकं विस्सज्जितं। उप्पादनिरोधवारे पन छसु पि कालभेदेसु तं विस्सज्जितमेव। सेसानि तेन समानविस्सज्जनत्ता सङ्खित्तानी ति। इदं सकले पि पवत्तिमहावारे पाळिववत्थानं।

अत्थविनिच्छयत्थं पनस्स इदं लक्खणं वेदितब्बं—इमस्मिं हि पवत्तिमहावारे चतुन्नं पञ्हानं पञ्च विस्सज्जनानि सत्तवीसतिया ठानेसु पक्खिपित्वा अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो। तत्थ पुरेपञ्हो, पच्छापञ्हो, परिपुण्णपञ्हो, मोघपञ्हो ति इमे चत्तारो पञ्हा नाम। एकेकस्मिं हि यमके द्वे द्वे पुच्छा। एकेकपुच्छाय पि द्वे द्वे पदानि।

तत्थ याय पुच्छाय विस्सज्जने एकेनेव पदेन गहितक्खन्धस्स उप्पादो वा निरोधो वा लब्भति, अयं **पुरे पञ्हो** नाम। याय पन पुच्छाय विस्सज्जने द्वीहि पि पदेहि गहितक्खन्धानं उप्पादो वा निरोधो वा लब्भति, अयं **पच्छापञ्हो** नाम। याय पन पुच्छाय विस्सज्जने एकेना पि पदेन गहितक्खन्धस्स द्वीहि पि पदेहि गहितक्खन्धानं उप्पादो वा, निरोधो वा लब्भति, अयं **परिपुण्णपञ्हो** नाम। याय पन पुच्छाय विस्सज्जने पटिक्खेपो वा, पटिसेधो वा लब्भति, अयं **मोघपञ्हो** नाम। यस्मा पनस्स अदस्सियमानो न सक्का जानितुं, तस्मा नं दस्सयिस्साम।

---

१. तीणि सताधिकानि सी०; वीसति तिसताधिकानि च स्या०।

'यत्थ रूपक्खन्धो नुप्पज्जति, तत्थ वेदनाक्खन्धो नुप्पज्जती' ति पुच्छाय ताव उप्पज्जती ति इमस्मिं विस्सज्जने एकेनेव पदेन गहितस्स वेदनाक्खन्धस्स उप्पादो लब्भति, इति अयं चेव अञ्ञो च एवरूपो पञ्हो पुरेपञ्हो ति वेदितब्बो। 'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जित्थ, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जित्था' ति पुच्छाय पन 'आमन्ता' ति इमस्मिं विस्सज्जने द्वीहि पदेहि गहितानं रूपवेदनाक्खन्धानं यस्स कस्सचि सत्तस्स अतीते उप्पादो लब्भति। इति अयं चेव अञ्ञो च एवरूपो पञ्हो पच्छापञ्हो ति वेदितब्बो। B. 299

'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जती' ति इमाय पन पठमपुच्छाय 'असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं' ति आदिके इमस्मिं विस्सज्जने 'असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं तेसं रूपक्खन्धो उप्पज्जति, नो च तेसं वेदनाक्खन्धो उप्पज्जती' ति इमस्मिं कोट्ठासे एकेनेव पदेन गहितस्स रूपक्खन्धस्स पि उप्पादो लब्भति। 'पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं तेसं रूपक्खन्धो च उप्पज्जति वेदनाक्खन्धो च उप्पज्जती' ति इमस्मिं कोट्ठासे द्वीहि पि पदेहि सङ्गहितानं रूपवेदनाक्खन्धानं पि उप्पादो लब्भति। इति अयं चेव अञ्ञो च एवरूपो पञ्हो परिपुण्णपञ्हो ति वेदितब्बो। पुरेपच्छापञ्हो ति पि एतस्सेव नामं।

एतस्स हि विस्सज्जने पुरिमकोट्ठासे एकेन पदेन सङ्गहितस्स रूपक्खन्धस्सेव उप्पादो दस्सितो। दुतियकोट्ठासे द्वीहि पदेहि सङ्गहितानं रूपवेदनाक्खन्धानं। इमिना येव च[1] लक्खणेन[1] यत्थ एकेन पदेन सङ्गहितस्स खन्धस्स उप्पादो वा निरोधो वा लब्भति, सो पुरेपञ्हो ति वुत्तो। यत्थ द्वीहि पि पदेहि सङ्गहितानं खन्धानं उप्पादो वा निरोधो वा लब्भति, सो पच्छापञ्हो ति वुत्तो।

'यस्स रूपक्खन्धो नुप्पज्जित्थ, तस्स वेदनाक्खन्धो नुप्पज्जित्था' ति इमाय पन पुच्छाय 'नत्थी' ति इमस्मिं विस्सज्जने पटिक्खेपो लब्भति। 'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स वेदनाक्खन्धो निरुज्झती' ति पुच्छाय 'नो' ति इमस्मिं विस्सज्जने पटिसेधो लब्भति। तस्मा अयं चेव दुविधो

१-१. इमिना नयेन च लक्खणेन च स्या.।

अञ्ञो च एवरूपो पञ्हो मोघपञ्हो ति वेदितब्बो । तुच्छपञ्हो ति पि वुच्चति । एवं ताव चत्तारो पञ्हा वेदितब्बा ।

पाळिगतिया विस्सज्जनं, पटिवचनविस्सज्जनं, सरूपदस्सनेन विस्सज्जनं, पटिक्खेपेन विस्सज्जनं, पटिसेधेन विस्सज्जनं ति इमानि
B. 300 पन पञ्च विस्सज्जनानि नाम । तत्थ यं विस्सज्जनं पाळिपदमेव हुत्वा अत्थं विस्सज्जेति, इदं **पाळिगतिया विस्सज्जनं** नाम । तं पुरेपञ्हे लब्भति । 'यत्थ रूपक्खन्धो नुप्पज्जति तत्थ वेदनाक्खन्धो नुप्पज्जती' ति हि पञ्हे 'उप्पज्जती' ति इदं विस्सज्जनं पाळिपदमेव हुत्वा अत्थं विस्सज्जयमानं गतं, तस्मा एवरूपेसु ठानेसु पाळिगतिया विस्सज्जनं वेदितब्बं ।

यं पन विस्सज्जनं पटिवचनभावेन अत्थं विस्सज्जेति, इदं **पटिवचनविस्सज्जनं** नाम । तं पच्छापञ्हे लब्भति । 'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जित्थ, तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जित्था ति' हि पञ्हे 'आमन्ता' ति इदं विस्सज्जनं पटिवचनवसेनेव अत्थं विस्सज्जयमानं गतं, तस्मा एवरूपेसु ठानेसु पटिवचनविस्सज्जनं वेदितब्बं । यं विस्सज्जनं सरूपेन दस्सेत्वा अत्थं विस्सज्जेति; इदं **सरूपदस्सनेन विस्सज्जनं** नाम । तं परिपुण्णपञ्हे लब्भति ।

'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति; तस्स वेदनाक्खन्धो उप्पज्जती' ति हि पञ्हे 'असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं ति इदं विस्सज्जनं 'इमेसं रूपक्खन्धो उप्पज्जति, नो च वेदनाक्खन्धो, इमेसं रूपक्खन्धो च उप्पज्जति, वेदनाक्खन्धो चा' ति सरूपदस्सनेनेव अत्थं विस्सज्जयमानं गतं । तस्मा एवरूपेसु ठानेसु सरूपदस्सनेन विस्सज्जनं वेदितब्बं ।

यं पन विस्सज्जनं तथारूपस्स अत्थस्स अभावतो अत्थपटिक्खेपेन पञ्हं विस्सज्जेति, इदं **पटिक्खेपेन विस्सज्जनं** नाम । यं तथारूपस्स अत्थस्स एकक्खणे अलाभतो अत्थपटिसेधनेन पञ्हं विस्सज्जेति, इदं **पटिसेधेन विस्सज्जनं** नाम । तं मोघपञ्हे लब्भति । 'यस्स रूपक्खन्धो नुप्पज्जित्थ, तस्स वेदनाक्खन्धो नुप्पज्जित्था' ति हि पञ्हे 'नत्थी' ति

इदं विस्सज्जनं; एवरूपो नाम सत्तो नत्थी ति अत्थपटिक्खेपेन पञ्हं विस्सज्जयमानं गतं; तस्मा एवरूपेसु ठानेसु पटिक्खेपेन विस्सज्जनं वेदितब्बं ।

'यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जति, तस्स वेदनाक्खन्धो निरुज्झती' ति पञ्हे पन 'नो' ति इदं विस्सज्जनं एकस्मिं पटिसन्धिक्खणे उप्पादेन सद्धिं निरोधो नाम न लब्भती ति अत्थपटिसेधनेन पञ्हं विस्सज्जयमानं गतं, तस्मा एवरूपेसु ठानेसु पटिसेधेन विस्सज्जनं वेदितब्बं ।

इदानि इमे चत्तारो पञ्हा, इमानि च पञ्च विस्सज्जनानि, येसु सत्तवीसतिया ठानेसु पक्खिपितब्बानि, तानि एवं वेदितब्बानि—असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं ति एकं ठानं, असञ्ञसत्ते तत्था ति एकं, असञ्ञसत्तानं ति एकं; असञ्ञसत्ता चवन्तानं ति एकं; अरूपं उपपज्जन्तानं ति एकं, अरूपे तत्था ति एकं, अरूपानं ति एकं, अरूपा चवन्तानं ति एकं, अरूपे पच्छिमभविकानं ति एकं, अरूपे B. 301
परिनिब्बन्तानं ति एकं; ये च अरूपं उपपज्जित्वा परिनिब्बायिस्सन्ती ति एकं; पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं ति एकं, पञ्चवोकारे तत्था ति एकं, पञ्चवोकारानं ति एकं पञ्चवोकारा चवन्तानं ति एकं, पञ्चवोकारे पच्छिमभविकानं ति एकं, पञ्चवोकारे परिनिब्बन्तानं ति एकं; सुद्धावासं उपपज्जन्तानं ति एकं, सुद्धावासे तत्था ति एकं, सुद्धावासानं ति एकं, सुद्धावासे परिनिब्बन्तानं ति एकं; सब्बेसं उपपज्जन्तानं ति एकं, सब्बेसं चवन्तानं ति एकं; सब्बसाधारणवसेन पच्छिमभविकानं ति एकं, परिनिब्बन्तानं ति एकं, चतुवोकारं पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं ति एकं, चवन्तानं ति एकं । एवं इमेसं चतुन्नं पञ्हानं इमानि पञ्च विस्सज्जनानि इमेसु सत्तवीसतिया ठानेसु पक्खिपित्वा इमस्मिं पवत्तिमहावारे अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो । एवं विदित्वा हि पञ्हं विस्सज्जन्तेन सुविस्सज्जितो होति, अत्थं च विनिच्छयन्तेन सुविनिच्छितो होति ।

तत्थायं नयो—**यस्स रूपक्खन्धो उप्पज्जती** (य. १.४८) ति यस्स पुग्गलस्स उप्पादक्खणसमङ्गिताय रूपक्खन्धो उप्पज्जति । **तस्स**

वेदनाक्खन्धो उप्पज्जती ति वेदनाक्खन्धो पि तस्स तस्मिं येव खणे उप्पज्जती ति पुच्छति । **असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं** ति अचित्तकपटिसन्धिवसेन असञ्ञसत्तभवं उपपज्जन्तानं । **तेसं रूपक्खन्धो उप्पज्जती** ति तेसं एकन्तेन रूपक्खन्धो उप्पज्जति येव । पवत्ते पन[1] तत्थ[1] उप्पन्नानं रूपक्खन्धो उप्पज्जति पि निरुज्झति पि, तस्मा 'असञ्ञसत्तानं' ति अवत्वा 'असञ्ञसत्तं उपपज्जन्तानं' ति वुत्तं । **नो च तेसं वेदनाक्खन्धो उप्पज्जती** ति अचित्तकत्ता पन तेसं वेदनाक्खन्धो नुप्पज्जतेव । इदं सत्तवीसतिया ठानेसु पठमे ठाने परिपुण्णपञ्हस्स पुरिमकोट्ठासे सरूपदस्सनेन विस्सज्जनं ।

पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं (य. १.४८) ति रूपारूपमिस्सकपटिसन्धिवसेन पञ्चवोकारभवं उपपज्जन्तानं । **तेसं रूपक्खन्धो च उप्पज्जति, वेदनाक्खन्धो चा** ति तेसं एकन्तेन रूपवेदनाक्खन्धसङ्खाता द्वे पि खन्धा उप्पज्जन्ति येव । पवत्ते पन तत्थ उप्पन्नानं ते खन्धा उप्पज्जन्ति पि निरुज्झन्ति पि, तस्मा 'पञ्चवोकारानं' ति अवत्वा 'पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं ति वुत्तं । इदं पञ्चवोकारं उपपज्जन्तानं ति ठाने परिपुण्णपञ्हस्स पच्छिमकोट्ठासे सरूपदस्सनेन विस्सज्जनं । इमिना उपायेन सब्बानि विस्सज्जनानि वेदितब्बानि ।

इदं पनेत्थ उप्पादनिरोधेसु नियमलक्खणं––सकले पि हि इमस्मिं खन्धयमके तत्थ तत्थ उप्पन्नानं पवत्ते याव मरणा खन्धानं अपरियन्तेसु
B. 302 उप्पादनिरोधेसु विज्जमानेसु पि लहुपरिवत्तानं धम्मानं विनिब्भोगं कत्वा उप्पादनिरोधे दस्सेतुं न सुकरं ति पवत्तियं उप्पादनिरोधे अनामसित्वा अभिनवं विपाकवट्टं निप्फादयमानेन नानाकम्मेन निब्बत्तानं पटिसन्धिखन्धानं उप्पादं दस्सेतुं सुखं ति पटिसन्धिकाले उप्पादवसेनेव उप्पादवारो कथितो । उप्पन्नस्स पन विपाकवट्टस्स परियोसानेन निरोधं दस्सेतुं सुखं ति मरणकाले निरोधवसेन निरोधवारो कथितो ।

किं पनेत्थ पवत्तियं उप्पादनिरोधानं अनामट्ठभावे[2] पमाणं ति ? पाळियेव । पाळियं हि विसेसेन उप्पादवारस्स अनागतकालवारे 'पच्छिम-

१-१. म. पोत्थके वत्थि । २. अनामट्ठभावो स्या. ।

भविकानं तेसं रूपक्खन्धो च नुप्पज्जिस्सति, वेदनाक्खन्धो च नुप्पज्जिस्सती' ति अयं पाळि अतिपमाणमेव । पच्छिमभविकानं हि पवत्ते रूपारूपधम्मानं उप्पज्जितुं युत्तभावे सति पि 'रूपक्खन्धो च नुप्पज्जिस्सति, वेदनाक्खन्धो च नुप्पज्जिस्सती' ति सन्निट्ठानं कत्वा वुत्तभावेन पवत्ते उप्पादो न गहितो ति वेदितब्बो ।

'सुद्धावासे परिनिब्बन्तानं तेसं तत्थ सञ्ञाक्खन्धो न निरुज्झित्थ, नो च तेसं तत्थ वेदनाक्खन्धो न निरुज्झती' (य.१.७७) ति अयं पन पाळि पवत्ते निरोधस्स अनामट्ठभावे अतिविय पमाणं । सुद्धावासे परिनिब्बन्तानं हि चुतिचित्तस्स भङ्गक्खणे ठितानं पटिसन्धितो पट्ठाय पवत्ते उप्पज्जित्वा निरुद्धसञ्ञाक्खन्धानं गणनपथो नत्थि । 'एवं सन्ते पि तेसं तत्थ सञ्ञाक्खन्धो न निरुज्झित्था' ति सन्निट्ठानं कत्वा वुत्तभावेन पवत्ते निरोधो न गहितो ति वेदितब्बो ।

एवमेत्थ उप्पादनिरोधेसु नियमलक्खणं विदित्वा पटिसन्धि-उप्पादमेव चुतिनिरोधमेव च गहेत्वा तेसु तेसु ठानेसु आगतानं विस्सज्जनानं अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो । सो पन सक्का आदिविस्सज्जने वुत्तनयेन सब्बत्थ विदितुं ति विस्सज्जनपटिपाटिया न वित्थारितो । इमिना पन एवं दिन्नेन पि नयेन यो एतेसं अत्थविनिच्छयं जानितुं न सक्को ति, तेन आचरिये पयिरुपासित्वा साधुकं सुत्वा पि जानितब्बो ।

उप्पादस्स निरोधस्स, उप्पन्नं चा पि एकतो ।
नयस्स अनुलोमस्स, पटिलोमनयस्स च ॥
वसेन यानि खन्धेसु, यमकानि च पञ्चसु ।
पुग्गलं अथ ओकासं, पुग्गलोकासमेव च ॥
आमसित्वा पवत्तेसु, ठानेसु[1] कथयी जिनो । B. 303
तेसं पाळिववत्थानं, दस्सितुं अनुपुब्बतो ॥
विनिच्छयत्थं अत्थस्स, पञ्हा विस्सज्जनानि च ।
विस्सज्जनानं ठानानि, यानि तानि च सब्बसो ॥

१. वारेसु स्या. ।

दस्सेत्वा एकपञ्हस्मिं, योजना पि पकासिता ।
वित्थारेन गते एत्थ, पञ्हा विस्सज्जनक्कमे[१] ।।
अत्थं वण्णयता कातुं, किं नु सक्का इतो परं ।
नयेन इमिना तस्मा, अत्थं जानन्तु पण्डिता ति ।।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता

(४) परिञ्ञावारवण्णना

२०६. तदनन्तरे[२] परिञ्ञावारे पि छळेव कालभेदा। अनुलोमपटिलोमतो द्वेयेव नया। पुग्गलवारो, ओकासवारो, पुग्गलोकासवारो ति इमेसु पन तीसु पुग्गलवारो व लब्भति, न इतरे द्वे । किं कारणा ? सदिसविस्सज्जनताय । यो हि कोचि पुग्गलो यत्थ कत्थचि ठाने रूपक्खन्धं चे परिजानाति, वेदनाक्खन्धं पि परिजानाति येव । वेदनाक्खन्धं चे परिजानाति, रूपक्खन्धं पि परिजानाति येव । रूपक्खन्धं चे न परिजानाति, वेदनाक्खन्धं पि न परिजानाति येव । वेदनाक्खन्धं चे न परिजानाति, रूपक्खन्धं पि न परिजानाति येव । तस्मा तेसु पि 'यो रूपक्खन्धं परिजानाति, सो वेदनाक्खन्धं परिजानाती' (य.१.१०१) ति आदिवसेन पुच्छं कत्वा 'आमन्ता' त्वेव विस्सज्जनं कातब्बं । सिया ति सदिसविस्सज्जनताय ते इध न लब्भन्ती ति वेदितब्बा ।

अथ वा परिञ्ञाकिच्चं नाम पुग्गलस्सेव होति, नो ओकासस्स, पुग्गलो व परिजानितुं समत्थो,नो ओकासो ति पुग्गलवारो वेत्थ गहितो, न ओकासवारो । तस्स पन अग्गहितत्ता तदनन्तरो पुग्गलोकासवारो लब्भमानो पि न गहितो । यो पनेस पुग्गलवारो[३] गहितो, तत्थ पच्चुप्पन्नकाले[४] रूपक्खन्धमूलकानि चत्तारि, वेदनाक्खन्धमूलकानि तीणि, B. 304 सञ्ञाक्खन्धमूलकानि द्वे, सङ्खारक्खन्धमूलकं एकं ति हेट्ठा वुत्तनयेनेव

१. विस्सज्जवाक्कमो स्या. । २. तदनन्तरं स्या. ।
३. पच्चुप्पन्ने काले पुग्गलवारो स्या. । ४. तत्थ स्या. ।

अनुलोमनये अग्गहितग्गहणेन दस यमकानि। पटिलोमनये दसा ति वीसति। तथा सेसेसु पी ति एकेकस्मिं काले वीसति वीसति कत्वा छसु कालेसु वीसं यमकसतं, चत्तारीसानि द्वे पुच्छासतानि, असीत्याधिकानि चत्तारि अत्थसतानि च होन्ती ति इदमेत्थ पाळिववत्थानं।

अत्थविनिच्छये पनेत्थ अतीतानागतपच्चुप्पन्नसङ्खाता तयो अद्धा पवत्तिवारे विय चुतिपटिसन्धिवसेन न लब्भन्ति। पवत्ते चित्तक्खणवसेनेव लब्भन्ति। तेनेवेत्थ 'यो रूपक्खन्धं परिजानाति, सो वेदनाक्खन्धं परिजानाती' ति आदीसु पुच्छासु 'आमन्ता' ति विस्सज्जनं कतं। लोकुत्तरमग्गक्खणस्मिं हि निब्बानारम्मणेन चित्तेन पञ्चसु खन्धेसु परिञ्ञाकिच्चनिब्बत्तिया यं किञ्चि एकं खन्धं परिजानन्तो इतरं पि परिजानाती ति वुच्चति। एवमेत्थ 'परिजानाती' ति पञ्हेसु अनुलोमनये परिञ्ञाकिच्चस्स मत्थकप्पत्तं अग्गमग्गसमङ्गिं सन्धाय 'आमन्ता' ति वुत्तं ति वेदितब्बं।

पटिलोमनये पन 'न परिजानाती' ति पञ्हेसु पुथुज्जनादयो सन्धाय 'आमन्ता' ति वुत्तं। 'परिजानित्था' ति इमस्मिं पन अतीतकालवारे मग्गानन्तरअग्गफले ठितो पि परिञ्ञाकिच्चस्स निट्ठितत्ता परिजानित्थयेव नाम।

२०६. यो रूपक्खन्धं परिजानाति, सो वेदनाक्खन्धं परिजानित्था (य. १. १०२) ति पञ्हेन अग्गमग्गसमङ्गिं पुच्छति। यस्मा पनेस खन्धपञ्चकं परिजानातियेव नाम, न ताव निट्ठितपरिञ्ञाकिच्चो; तस्मा 'नो' ति पटिसेधो कतो।

दुतियपञ्हे पन **परिजानित्था** ति अरहन्तं पुच्छति। यस्मा पनेसो निट्ठितपरिञ्ञाकिच्चो। नत्थि तस्स परिञ्ञेय्यं नाम; तस्मा 'नो' ति पटिसेधो कतो।

पटिलोमनयविस्सज्जने पनेत्थ **अरहा रूपक्खन्धं न परिजानाती** (य. १. १०३) ति अरहतो परिञ्ञाय अभावेन वुत्तं। **अग्गमग्गसमङ्गि वेदनाक्खन्धं न परिजानित्था** ति अरहत्तमग्गट्ठस्स अनिट्ठितपरिञ्ञा-

किच्चताय वुत्तं। न केवलं च वेदनाक्खन्धमेव, एक धम्मं पि सो न परिजानित्थेव। इदं पन पुच्छावसेन वुत्तं।

नो च रूपक्खन्धं ति इदं पि पुच्छावसेनेव वुत्तं। अञ्ञं पि पन सो खन्धं परिजानाति।

२१०. **यो रूपक्खन्धं परिजानाति, सो वेदनाक्खन्धं परिजानिस्सती** (य. १. १०३) ति एत्थ यस्मा मग्गट्ठपुग्गलो एकचित्तक्खणिको, तस्मा सो परिजानिस्सती ति सङ्खं न गच्छति। तेन वुत्तं
B. 305 'नो' ति। **ते रूपक्खन्धं च न परिजानित्था** ति पुच्छासभागेन वुत्तं, न परिजानिंसू ति पनेत्थ अत्थो। इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो ति।

परिञ्ञावारवण्णना निट्ठिता
खन्धयमकवण्णना निट्ठिता

३. आयतनयमकवण्णना

(१) पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना

इदानि मूलयमके देसितेयेव कुसलादिधम्मे आयतनवसेना पि सङ्गण्हित्वा खन्धयमकानन्तरं देसितस्स आयतनयमकस्स वण्णना होति । तत्थ खन्धयमके वुत्तनयेनेव पाळिववत्थानं वेदितब्बं । यथेव हि तत्थ पण्णत्तिवारो, पवत्तिवारो, परिञ्ञावारो ति तयो महावारा होन्ति, तथा इधा पि । वचनत्थो पि नेसं तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बो । इधा पि च पण्णत्तिवारो उद्देसनिद्देसवसेन द्विधा ववत्थितो । इतरे निद्देसवसेनेव । तस्मा 'तत्थ द्वादसायतनानी' ति पदं आदिं कत्वा याव **नायतना न मनो** (य. १. ११२) ति, ताव पण्णत्तिवारस्स उद्देसवारो वेदितब्बो । तत्थ **द्वादसायतनानी** ति अयं यमकवसेन पुच्छितब्बानं आयतनानं उद्देसो ।

१. **चक्खायतनं...पे०...धम्मायतनं** (य. २. १०३) ति तेसञ्ञेव पभेदतो नामववत्थानं । यमकवसेन पुच्छासुखत्थं चेत्थ पठमं पटिपाटिया अज्झत्तरूपायतनानि वुत्तानि । पच्छा बाहिररूपायतनानि । परियोसाने मनायतनधम्मायतनानि । यथा पन हेट्ठा खन्धवसेन, एवमिध इमेसं आयतनानं वसेन पदसोधनवारो, पदसोधनमूलचक्कवारो, सुद्धायतनवारो, सुद्धायतनमूलचक्कवारो ति, चत्तारो व नयवारा होन्ति । एकेको चेत्थ अनुलोमपटिलोमवसेन दुविधो येव । तेसमत्थो तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बो ।

२. यथा पन खन्धयमके पदसोधनवारस्स अनुलोमवारे 'रूपं रूपक्खन्धो, रूपक्खन्धो रूपं' ति आदीनि पञ्च यमकानि, तथा इध 'चक्खु, चक्खायतनं; चक्खायतनं, चक्खू' ति आदीनि द्वादस । पटिलोमवारे पि 'न चक्खु, न चक्खायतनं; न चक्खायतनं, न चक्खू' ति आदीनि द्वादस, पदसोधनमूलचक्कवारस्स पनेत्थ अनुलोमवारे B. 306
एकेकायतनमूलकानि एकादसं एकादसं कत्वा द्वत्तिंससतं यमकानि । पटिलोमवारे पि द्वत्तिंससतमेव ।

३. सुद्धायतनवारस्सा पि अनुलोमवारे द्वादस, पटिलोमवारे द्वादस, सुद्धायतनमूलचक्कवारस्सा पि अनुलोमवारे एकेकायतनमूलकानि एकादसं[1] एकादसं[1] कत्वा द्वत्तिससतं यमकानि। पटिलोमवारे पि द्वत्तिससतमेवा ति एवमिध छ-सत्तताधिकेहि पञ्चहि यमकसतेहि, द्विपञ्ञासाधिकेहि एकादसहि पुच्छासतेहि, चतुराधिकेहि तेवीसाय अत्थसतेहि च पटिमण्डितो पण्णत्तिवारस्स उद्देसवारो वेदितब्बो।

पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना

१०. निद्देसवारे पन हेट्ठा खन्धयमकस्स पण्णत्तिवारनिद्देसे वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। अञ्ञत्र विसेसा। तत्रायं विसेसो—**दिब्बचक्खू** (य. १. ११२) ति दुतियविज्जाञाणं। **पञ्ञाचक्खू** ति ततियविज्जाञाणं। **दिब्बसोतं** ति दुतियअभिञ्ञाञाणं। **तण्हासोतं** ति तण्हा व। **अवसेसो कायो** ति नामकायो, रूपकायो, हत्थिकायो, अस्सकायो ति एवमादि।

अवसेसं रूपं (य. १. ११३) ति रूपायतनतो सेसं भूतूपादाय रूपं चेव पियरूपं सातरूपं च। **सीलगन्धो** ति आदीनि वायनट्ठेन सीलादीनं येव नामानि। **अत्थरसो** ति आदीनि पि साधुमधुरट्ठेन अत्थादीनञ्ञेव नामानि। **अवसेसो धम्मो** ति परियत्तिधम्मादि अनेकप्पभेदो ति अयमेत्थ विसेसो।

पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(३) पवत्तिवारवण्णना

१८. इधा पि च पवत्तिवारस्स उप्पादवारादीसु तीसु अन्तरवारेसु एकेकस्मिं छळेव कालभेदा। तेसं एकेकस्मिं काले पुग्गलवारादयो
B. 307 तयो वारा। ते सब्बे पि अनुलोमपटिलोमनयवसेन दुविधा व होन्ति।

१-१. एकादस म.।

तत्थ पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारस्स अनुलोमनये यथा खन्धयमके रूपक्खन्धमूलकानि चत्तारि, वेदनाक्खन्धमूलकानि तीणि, सञ्ञाक्खन्धमूलकानि द्वे, सङ्खारक्खन्धमूलकं एकं ति अग्गहितग्गहणेन दस यमकानि होन्ति। एवं "यस्स चक्खायतनं उप्पज्जति, तस्स सोतायतनं उप्पज्जति; यस्स वा पन सोतायतनं उप्पज्जति, तस्स चक्खायतनं उप्पज्जति; यस्स चक्खायतनं उप्पज्जति, तस्स घाणायतनं, जिव्हायतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठब्बायतनं, मनायतनं, धम्मायतनं उप्पज्जति; यस्स वा पन धम्मायतनं उप्पज्जति, तस्स चक्खायतनं उप्पज्जती" ति एवं चक्खायतनमूलकानि एकादस।

"यस्स सोतायतनं उप्पज्जति, तस्स घाणायतनं उप्पज्जती" ति आदिना नयेन सोतायतनमूलकानि दस; घाणायतनमूलकानि नव, जिव्हायतनमूलकानि अट्ठ; कायायतनमूलकानि सत्त; रूपायतनमूलकानि छ; सद्दायतनमूलकानि पञ्च; गन्धायतनमूलकानि चत्तारि; रसायतनमूलकानि तीणि; फोट्ठब्बायतनमूलकानि द्वे; मनायतनमूलकं एकं ति अग्गहितग्गहणेन छ सट्ठि यमकानि होन्ति।

तत्थ चक्खायतनमूलकेसु एकादससु "यस्स चक्खायतनं उप्पज्जति, तस्स सोतायतनं, घाणायतनं, रूपायतनं, मनायतनं, धम्मायतनं उप्पज्जती" ति इमानि पञ्चेव विस्सज्जितानि।

तेसु पठमं विस्सज्जेतब्बं ताव विस्सज्जितं। दुतियं किञ्चा पि पठमेन सदिसविस्सज्जनं, चक्खुसोतायतनानं पवत्तिट्ठाने पन घाणायतनस्स न एकन्तेन पवत्तितो "कथं, नु खो, एतं विस्सज्जेतब्बं" ति विमतिनिवारणत्थं विस्सज्जितं। रूपायतनमनायतनधम्मायतनेहि सद्धिं तीणि यमकानि असदिसविस्सज्जनत्ता विस्सज्जितानि। सेसेसु जिव्हायतनकायायतनेहि ताव सद्धिं द्वे यमकानि पुरिमेहि द्वीहि सद्धिं सदिसविस्सज्जनानि। सद्दायतनस्स पटिसन्धिक्खणे अनुप्पत्तितो तेन सद्धिं यमकस्स विस्सज्जनमेव नत्थि।

गन्धरसफोट्ठब्बायतनेहि पि सद्धिं तीणि यमकानि पुरिमेहि द्वीहि[१] सदिसविस्सज्जनानेव होन्ती ति तन्तिया लहुभावत्थं सङ्खित्तानि। सोतायतनमूलकेसु यं लब्भति, तं पुरिमेहि सदिसविस्सज्जनमेवा ति एकं पि पाळि नारुळ्हं। घाणायतनमूलकेसु रूपायतनेन सद्धिं एकं, मनायतनधम्मायतनेन हि सद्धिं द्वे[२] ति तीणि[२] यमकानि पाळि आरुळ्हानि। सेसानि घाणायतनयमकेन[३] सदिसविस्सज्जनत्ता B. 304 नारुळ्हानि। तथा जिव्हायतनकायायतनमूलकानि। रूपायतनमूलकेसु मनायतनधम्मायतनेहि सद्धिं द्वे येव विस्सज्जितानि।

गन्धरसफोट्ठब्बेहि पन सद्धिं तीणि रूपायतनमनायतनेहि सद्धिं सदिसविस्सज्जनानि। यथेव हेत्थ[४] "सरूपकानं अचित्तकानं" ति आदि वुत्तं, तथा इधा पि "सरूपकानं अगन्धकानं, अरसकानं अफोट्ठब्बकानं ति योजना वेदितब्बा।

गन्धादीनि चेत्थ आयतनभूतानेव अधिप्पेतानि। तस्मा "सरूपकानं सगन्धायतनानं" ति आयतनवसेनेत्थ अत्थो वेदितब्बो[५]। सद्दायतनमूलकानि अत्थाभावतो पाळि नारुळ्हानेव। गन्धरसफोट्ठब्बमूलकानि चत्तारि तीणि द्वे च हेट्ठिमेहि सदिसविस्सज्जनत्ता पाळि नारुळ्हानि।

मनायतनमूलकं विस्सज्जितमेवा ति एवमेतानि पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारस्स अनुलोमनये[६] कतिपययमकविस्सज्जनेनेव छसट्ठि यमकानि विस्सज्जितानि नाम होन्ती ति वेदितब्बानि। यथा च पुग्गलवारे, एवं ओकासवारे पि पुग्गलोकासवारे पि छ–सट्ठी ति पच्चुप्पन्नकाले तीसु वारेसु अनुलोमनये अट्ठ-नवुतिसतं यमकानि होन्ति। यथा च अनुलोमनये, एवं पटिलोमनये पी ति सब्बानि पि पच्चुप्पन्नकाले छन्नवुताधिकानि तीणि यमकसतानि होन्ति।

१, द्वीहि सद्धिं स्या.। २-२. द्वे तीणि स्या.।
३. ०सद्धिं स्या.। ४. हेट्ठा सी.।
५. दट्ठब्बो म.। ६. अनुलोमवारे म.।

तेसु द्वानवुताधिकानि सत्तपुच्छासतानि, चतुरासीताधिकानि च पण्णरस अत्थसतानि होन्ती ति वेदितब्बानि। एवं सेसेसु पि पञ्चसु कालभेदेसू ति सब्बानि पि छ-सत्तताधिकानि तेवीसतियमकसतानि। ततो दिगुणा पुच्छा, ततो दिगुणा अत्था ति इदमेत्थ उप्पादवारे पाळिववत्थानं। निरोधवारउप्पादनिरोधवारेसु पि एसेव नयो ति। सब्बस्मिं पि पवत्तिवारे अट्ठवीसानि एकसत्तति यमकसतानि। ततो दिगुणा पुच्छा, ततो दिगुणा अत्था वेदितब्बा।

पाळि पन मनायतनं धम्मायतनं च एकसदिसं, नानं नत्थि। उपरि पन "वारसङ्खेपो[1] होती" ति आदीनि वत्वा तत्थ तत्थ सङ्खित्ता। तस्मा यं तत्थ तत्थ सङ्खित्तं, तं सब्बं असम्मुय्हन्तेहि सल्लक्खेतब्बं।

अत्थविनिच्छये पनेत्थ इदं नयमुखं। **सचक्खुकानं असोतकानं** (य. १. १२२) ति अपाये जातिबधिरओपपातिकं सन्धाय वुत्तं। सो हि सचक्खुको असोतको हुत्वा उपपज्जति। यथाह—"कामधातुया उपपत्तिक्खणे कस्सचि अपरानि दसायतनानि पातुभवन्ति। ओपपातिकानं पेतानं, ओपपातिकानं असुरानं, ओपपातिकानं B. 309 तिरच्छानगतानं, ओपपातिकानं नेरयिकानं; जच्चबधिरानं उपपत्तिक्खणे दसायतनानि पातुभवन्ति, चक्खायतनं रूपघानगन्धजिव्हारसकाय-फोट्ठब्बायतनं मनायतनं धम्मायतनं" ति।

सचक्खुकानं ससोतकानं ति सुगतिदुग्गतीसु परिपुण्णायतने च ओपपातिके रूपीब्रह्माणो च सन्धाय वुत्तं। ते हि सचक्खुका ससोतका हुत्वा उपपज्जन्ति। यथाह—"कामधातुया उपपत्तिक्खणे कस्सचि एकादसायतनानि पातुभवन्ति; कामावचरानं देवानं, पठमकप्पिकानं मनुस्सानं, ओपपातिकानं पेतानं, ओपपातिकानं असुरानं, ओपपातिकानं तिरच्छानगतानं, ओपपातिकानं नेरयिकानं, परिपुण्णायतनानं। रूपधातुया उपपत्तिक्खणे पञ्चायतनानि[2] पातुभवन्ति, चक्खायतनं रूपसोतमनायतनं धम्मायतनं" ति।

---

१. वारेसङ्खेपो स्या.। २. कतमावि पञ्चयतनानि स्या.।

अघानकानं (य. १. १२३) ति ब्रह्मपारिसज्जादयो सन्धाय वुत्तं। ते हि सचक्खुका अघानका हुत्वा उपपज्जन्ति। कामधातुयं पन अघानको ओपपातिको नत्थि। यदि भवेय्य "कस्सचि अट्ठायतनानि पातुभवन्ती" ति वेदय्य। यो गब्भसेय्यको पन अघानको सिया, सो "सचक्खुकानं" ति वचनतो इध अनधिप्पेतो।

सचक्खुकानं सघानकानं ति जच्चबधिरं पि परिपुण्णायतनं पि ओपपातिकं सन्धाय वुत्तं। **सघानकानं अचक्खुकानं** ति जच्चन्धं पि जच्चबधिरं पि ओपपातिकं सन्धाय वुत्तमेव। **सघानकानं सचक्खुकानं** ति परिपुण्णायतनमेव ओपपातिकं सन्धाय वुत्तं।

सरूपकानं अचक्खुकानं ति एत्थ जच्चन्धजच्चबधिरओपपातिकेसु अञ्ञतरो पि गब्भसेय्यको पि लब्भतियेव। **सचित्तकानं अचक्खुकानं** ति एत्थ हेट्ठा वुत्तेहि जच्चन्धादीहि तीहि सद्धिं अरूपिनो पि लब्भन्ति।

अचक्खुकानं ति एत्थ पुरिमपदे वुत्तेहि चतूहि सद्धिं असञ्ञसत्ता पि लब्भन्ति। **सरूपकानं अघानकानं** ति एत्थ गब्भसेय्यका च असञ्ञसत्ता च सेसरूपीब्रह्मानो च लब्भन्ति।

सचित्तकानं अघानकानं (य. १.१२४) ति एत्थ गब्भसेय्यका च रूपारूपब्रह्मानो च लब्भन्ति। **अचित्तकानं अरूपकानं** ति पदेसु पन एकवोकारचतुवोकारसत्ता व लब्भन्ती ति इमिना नयेन सब्बेसु पुग्गलवारेसु पुग्गलविभागो वेदितब्बो।

२२. ओकासवारे **यत्थ चक्खायतनं** ति रूपिब्रह्मलोकं[1] पुच्छति।
B, 310 तेनेव **आमन्ता** ति वुत्तं। तस्मिं हि तले नियमतो तानि आयतनानि पटिसन्धियं उप्पज्जन्ति। इदमेत्थ नयमुखं। इमिना नयमुखेन सकले पि पवत्तिवारे अत्थो वेदितब्बो। परिञ्ञावारो खन्धयमके वुत्तनयो येवा ति।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता
आयतनयमकवण्णना निट्ठिता

---

१. रूपिब्रह्मलोके स्या०।

४. धातुयमकवण्णना

१-१६. इदानि ते येव मूलयमके देसिते कुसलादिधम्मे धातुवसेन सङ्गण्हित्वा आयतनयमकानन्तरं देसितस्स धातुयमकस्स वण्णना होति। तत्थ आयतनयमके वुत्तनयेनेव पाळिववत्थानं वेतिदब्बं। इधा पि हि पण्णत्तिवारादयो तयो महावारा, अवसेसा अन्तरवारा च सद्धिं कालप्पभेदादीहि आयतनयमके आगतसदिसा येव। इधा पि च यमकपुच्छासुखत्थं पटिपाटिया अज्झत्तिकबाहिरा रूपधातुयो व वत्वा विञ्ञाणधातुयो वुत्ता।

धातूनं पन बहुत्ता इध आयतनयमकतो बहुतरानि यमकानि, यमकादिगुणा पुच्छा, पुच्छादिगुणा च अत्था होन्ति। तत्थ चक्खुधातुमूलकादीसु यमकेसु लब्भमानानं यमकानं अत्थविनिच्छयो आयतनयमके वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। तं सदिसा येव हेत्थ अत्थगति, तेनेव च कारणेन पाळि पि सङ्खित्ता। परिञ्ञावारो पाकतिको येवा ति।

धातुयमकवण्णना निट्ठिता

५. सच्चयमकवण्णना

(१) पण्णत्तिवारवण्णना

१-६. इदानि ते येव मूलयमके देसिते कुसलादिधम्मे सच्चवसेन सङ्गण्हित्वा धातुयमकानन्तरं देसितस्स सच्चयमकस्स वण्णना होति। तत्था पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव पण्णत्तिवारादयो तयो महावारा B. 311
अन्तरवारादयो च अवसेसप्पभेदा वेदितब्बा। पण्णत्तिवारे पनेत्थ चतुन्नं सच्चानं वसेन पदसोधनवारो, पदसोधनमूलचक्कवारो, सुद्धसच्चवारो, सुद्धसच्चमूलचक्कवारो ति इमेसु चतूसु वारेसु यमकगणना वेदितब्बा।

१०-२६. पण्णत्तिवारनिद्देसे पन **अवसेसं दुक्खसच्चं** (य. १. ३१५) ति दुक्खवेदनाय चेव तण्हाय च विनिमुत्ता तेभूमकधम्मा वेदितब्बा। **अवसेसो समुदयो** ति सच्चविभङ्गे निद्दिट्ठकामावचरकुसलादिभेदो दुक्खसच्चस्स पच्चयो। **अवसेसो निरोधो** ति तदङ्गविक्खम्भनसमुच्छेदपटिप्पस्सद्धिनिरोधो चेव खणभङ्गनिरोधो च। **अवसेसो मग्गो** ति "तस्मिं खो पन समये पञ्चङ्गिको मग्गो होति, अट्ठङ्गिको मग्गो, मिच्छामग्गो, जङ्घमग्गो, सकटमग्गो" ति एवमादिको।

पण्णत्तिवारवण्णना निट्ठिता

(२) पवत्तिवारवण्णना

२७. पवत्तिवारे पनेत्थ पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारस्स अनुलोमनये "यस्स दुक्खसच्चं उप्पज्जति, तस्स समुदयसच्चं उप्पज्जति; यस्स वा पन समुदयसच्चं उप्पज्जति, तस्स दुक्खसच्चं उप्पज्जती" ति दुक्खसच्चमूलकेहि तीहि, समुदयसच्चमूलकेहि द्वीहि, निरोधसच्चमूलकेन एकेना ति लब्भमानं च अलब्भमानं च गहेत्वा पाळिवसेन छ हि यमकेहि भवितब्बं। तेसु यस्मा निरोधस्स नेव उप्पादो, न निरोधो युज्जति, तस्मा दुक्खसच्चमूलकानि समुदयसच्चमग्गसच्चेहि सद्धिं द्वे, समुदयसच्चमूलकं मग्गसच्चेन सद्धिं एकं ति तीणि यमकानि आगतानि। तस्स पटिलोमनये पि ओकासवारादीसु पि एसेव नयो। एवमेत्थ सब्बवारेसु तिण्णं तिण्णं यमकानं वसेन यमकगणना वेदितब्बा।

अत्थविनिच्छये पनेत्थ इदं लक्खणं—इमस्स हि सच्चयमकस्स पवत्तिवारे निरोधसच्चं ताव न लब्भतेव। सेसेसु पन तीसु समुदयसच्चमग्गसच्चानि एकन्तेन पवत्तियं येव लब्भन्ति। दुक्खसच्चं चुतिपटिसन्धीसु पि लब्भति। पच्चुप्पन्नादयो पन तयो काला चुतिपटिसन्धीनं पि पवत्तिया[1] पि वसेन लब्भन्ति। एवमेत्थ यं यं लब्भति, तस्स तस्स वसेन अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो।

१. पवत्तस्स सी.।

तत्रिदं नयमुखं—**सब्बेसं उपपज्जन्तानं** (य. १. ३२३) ति अन्तमसो सुद्धावासानं पि। ते पि हि दुक्खसच्चेनेव उपपज्जन्ति। **तण्हाविप्पयुत्तचित्तस्सा** ति इदं दुक्खसच्चसमुदयसच्चेसु एककोट्ठासस्स उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। तस्मा पञ्चवोकारवसेनेव गहेतब्बं। चतुवोकारे पन तण्हाविप्पयुत्तस्स फलसमापत्तिचित्तस्स उप्पादक्खणे एकं पि सच्चं नुप्पज्जति। इदं इध न गहेतब्बं। **तेसं दुक्खसच्चं चा** ति तस्मिं हि खणे तण्हं ठपेत्वा सेसं दुक्खसच्चं नाम होती ति सन्धायेतं वुत्तं। B. 312

मग्गस्स उप्पादक्खणे पि एसेव नयो। तत्थ पन रूपमेव दुक्खसच्चं नाम। सेसा मग्गसम्पयुत्तका धम्मा सच्चविनिमुत्ता। तेनेव कारणेन "अरूपे मग्गस्स उप्पादक्खणे तेसं मग्गसच्चं उप्पज्जति, नो च तेसं दुक्खसच्चं उप्पज्जती" ति वुत्तं।

सब्बेसं उपपज्जन्तानं पवत्ते तण्हा विप्पयुत्तचित्तस्स उप्पादक्खणे तेसं तत्था ति तेसं तस्मिं उपपत्तिक्खणे तण्हा विप्पयुत्तचित्तुप्पत्तिक्खणे चा ति एवमेत्थ खणवसेन ओकासो वेदितब्बो। अञ्ञेसु पि एवरूपेसु एसेव नयो। **अनभिसमेतावीनं** ति चतुसच्चपटिवेधसङ्खातं अभिसमयं अप्पत्तसत्तानं। **अभिसमेतावीनं** ति अभिसमितसच्चानं ति। इमिना नयमुखेन सब्बत्थ अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता

(३) परिञ्ञावारवण्णना

१६५. परिञ्ञावारे पन ञातपरिञ्ञा, तीरणपरिञ्ञा, पहाणपरिञ्ञा ति तिस्सो पेत्थ परिञ्ञायो लब्भन्ति। यस्मा च लोकुत्तरधम्मेसु परिञ्ञा नाम नत्थि; तस्मा इध द्वे सच्चानि गहितानि। तत्थ **दुक्खसच्चं परिजानाती** (य. १.३६७) ति ञाततीरणपरिञ्ञावसेनेव वुत्तं। **समुदयसच्चं पजहती** ति ञातपहानपरिञ्ञावसेन। इति इमासं परिञ्ञानं वसेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो ति।

परिञ्ञावारवण्णना निट्ठिता
सच्चयमकवण्णना निट्ठिता

६. सङ्खारयमकवण्णना

(१) पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना

B. 313 १. इदानि तेसञ्ञेव मूलयमके देसितानं कुसलादिधम्मानं लब्भमानवसेन एकदेसं सङ्गण्हित्वा सच्चयमकानन्तरं देसितस्स सङ्खारयमकस्स वण्णना होति। तत्था पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव पण्णत्तिवारादयो तयो महावारा, अन्तरवारादयो च अवसेसप्पभेदा वेदितब्बा।

अयं पनेत्थ विसेसो—पण्णत्तिवारे ताव यथा हेट्ठा खन्धादयो धम्मे उद्दिसित्वा "रूपं रूपक्खन्धो; चक्खु चक्खायतनं; चक्खु चक्खुधातु; दुक्खं दुक्खसच्चं" ति पदसोधनवारो आरद्धो। तथा अनारभित्वा "अस्सासपस्सासा कायसङ्खारो" ति पठमं तयो पि सङ्खारा विभजित्वा दस्सिता।

तत्थ कायस्स सङ्खारो **कायसङ्खारो**। "अस्सासपस्सासा कायिका, एते धम्मा कायपटिबद्धा" (म. नि. १.३७२, सं. नि. ३.२६१) ति हि वचनतो कारणभूतस्स करजकायस्स फलभूतो एव सङ्खारो ति कायसङ्खारो। अपरो नयो—सङ्खरीयती ति सङ्खारो। केन सङ्खरीयती ति ? कायेन। अयं हि वातो विय भस्ताय करजकायेन सङ्खरीयती ति। एवं पि कायस्स सङ्खारो ति कायसङ्खारो। कायेन कतो अस्सासपस्सासवातो ति अत्थो।

"पुब्बेव खो आवुसो, विसाख, वितक्केत्वा विचारेत्वा पच्छा वाचं भिन्दति, तस्मा वितक्कविचारा वचीसङ्खारो" (म. नि. १.३७२) ति वचनतो पन सङ्खरोती ति सङ्खारो। किं सङ्खरोती ति ? वचिं। वचिया सङ्खरोति **वचीसङ्खारो**। वचीभेदसमुट्ठापकस्स वितक्कविचारद्वयस्सेतं नामं।

"सञ्ञा च वेदना च चेतसिका एते धम्मा चित्तपटिबद्धा" (म. नि. १.३७२) ति वचनतो येव पन ततियपदे पि सङ्खरीयती ति सङ्खारो। केन सङ्खरीयति ? चित्तेन। करणत्थे सामिवचनं कत्वा

चित्तस्स सङ्खारो ति **चित्तसङ्खारो**। सब्बेसं पि चित्तसमुट्ठानानं चेतसिकधम्मानमेतं अधिवचनं। वितक्कविचारानं पन वचीसङ्खार-भावेन विसुं गहितत्ता "ठपेत्वा वितक्कविचारे" ति वुत्तं।

२. इदानि **कायो कायसङ्खारो** (य. २.३) ति पदसोधनवारो B. 314
आरद्धो। तस्स अनुलोमनये तीणि, पटिलोमनये तीणी ति छ यमकानि। पदसोधनमूलचक्कवारे एकेकसङ्खारमूलकानि द्वे द्वे कत्वा अनुलोमनये छ, पटिलोमनये छा ति द्वादस यमकानि। सुद्धसङ्खारवारे पन यथा सुद्धखन्धवारादीसु "रूपं खन्धो, खन्धा रूपं; चक्खु आयतनं, आयतना चक्खू' ति आदिना नयेन यमकानि वुत्तानि। एवं "कायो सङ्खारो, सङ्खारा[1] कायो" ति अवत्वा "कायसङ्खारो वचीसङ्खारो, वचीसङ्खारो कायसङ्खारो" ति आदिना नयेन कायसङ्खारमूलकानि द्वे, वचीसङ्खारमूलकं एकं ति अनुलोमे तीणि, पटिलोमे तीणी ति सब्बानि पि सुद्धिकवारे छ यमकानि वुत्तानि।

किं कारणा? सुद्धिकएकेकपदवसेन अत्थाभावतो। यथा हि खन्धयमकादीसु रूपादिविसिट्ठानं खन्धानं चक्खादिविसिट्ठानं च आयतनादीनं अधिप्पेतत्ता "रूपं खन्धो, खन्धा रूपं, चक्खु आयतनं, आयतना[2] चक्खू" ति सुद्धिकएकेकपदवसेन[3] अत्थो अत्थि। एवमिध "कायो सङ्खारो, सङ्खारा[4] कायो" ति नत्थि। काय-सङ्खारो ति पन द्वीहि पि पदेहि एको व अत्थो लब्भति। अस्सासो वा पस्सासो वा ति सुद्धिकएकेकपदवसेन[5] अत्थाभावतो "कायो सङ्खारो, सङ्खारा कायो" ति न वुत्तं। "कायो कायसङ्खारो" ति आदि पन वत्तब्बं सिया। तं पि कायवचीचित्तपदेहि इध अधिप्पेतानं सङ्खारानं अग्गहितत्ता न युज्जति। सुद्धसङ्खारवारो हेस।

पदसोधने पन विना पि अत्थेन वचनं युज्जती[6] ति[6] तत्थ सो नयो गहितो व। इध पन कायसङ्खारस्स वचीसङ्खारादीहि,

---

१. सङ्खारो स्या.। २. आयतनं स्या.।
३. पदसोधनवसेन स्या.। ४. सङ्खारो स्या.।
५. पदसोधनवसेन स्या.। ६-६. न युज्जती ति स्या.।

वचीसङ्खारस्स च चित्तसङ्खारादीहि, चित्तसङ्खारस्स च कायसङ्खारादीहि, अञ्ञत्ता "कायसङ्खारो वचीसङ्खारो, वचीसङ्खारो कायसङ्खारो" ति एकेकसङ्खारमूलकानि द्वे द्वे कत्वा छ यमकानि युज्जन्ति। तेसु अग्गहितग्गहणेन तीणेव लब्भन्ति। तस्मा तानेव दस्सेतुं अनुलोमनये तीणि, पटिलोमनये तीणी ति छ यमकानि वुत्तानि। सुद्धसङ्खारमूलचक्कवारो पनेत्थ न गहितो ति। एवं पण्णत्तिवारस्स उद्देसवारो वेदितब्बो।

पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना

८. निद्देसवारे पनस्स अनुलोमे ताव यस्मा न कायादयो व कायसङ्खारादीनं नामं, तस्मा **नो** (य. २-५) ति पटिसेधो कतो।

९. पटिलोमे **न कायो न कायसङ्खारो** (य. २-६) ति यो न कायो सो कायसङ्खारो पि न होती ति पुच्छति। **कायसङ्खारो न**
B. 315 **कायो कायसङ्खारो** ति कायसङ्खारो कायो न होती, कायसङ्खारो येव पनेसो ति अत्थो। **अवसेसं** ति न केवलं सेससङ्खारद्वयमेव। कायसङ्खारविनिमुत्तं पन सेसं सब्बं पि सङ्खतासङ्खतपण्णत्तिभेदं धम्मजातं नेव कायो, न कायसङ्खारो ति इमिना उपायेन सब्बविस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो ति।

पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पवत्तिवारवण्णना

१९. पवत्तिवारे पनेत्थ पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारस्स अनुलोमनये "यस्स कायसङ्खारो उप्पज्जति, तस्स वचीसङ्खारो उप्पज्जती" ति कायसङ्खारमूलकानि द्वे, वचीसङ्खारमूलकं एकं ति तीणेव यमकानि लब्भन्ति; तानि गहितानेव। तस्स पटिलोमनये पि ओकासवारादीसु

पि एसेव नयो। एवमेत्थ सब्बवारेसु तिण्णं तिण्णं यमकानं वसेन यमकगणना वेदितब्बा।

अत्थविनिच्छये पनेत्थ इदं लक्खणं––इमस्मिं हि सङ्खारयमके "अस्सासपस्सासानं उप्पादक्खणे वितक्कविचारानं उप्पादक्खणे" ति आदिवचनतो पच्चुप्पन्नादिकालभेदो पवत्तिवसेना पि गहेतब्बो, न चुतिपटिसन्धिवसेनेव। "दुतियज्झाने ततियज्झाने तत्थ कायसङ्खारो उप्पज्जती" ति आदिवचनतो च झानं पि[1] ओकासवसेन गहितं ति वेदितब्बं। एवमेत्थ यं यं लब्भति, तस्स तस्स वसेन अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो।

तत्रिदं नयमुखं––**विना वितक्कविचारेही** (य. २.१०) ति दुतियततियज्झानवसेन[2] वुत्तं। **तेसं** ति तेसं दुतियततियज्झान-समङ्गिनं। **कामावचरानं** ति कामावचरे उप्पन्नसत्तानं। रूपावचर-देवानं पन अस्सासपस्सासा नत्थि। अरूपावचरानं रूपमेव नत्थि। **विना अस्सासपस्सासेही** ति रूपारूपभवेसु निब्बत्तसत्तानं वितक्क-विचारूप्पत्तिं सन्धाय वुत्तं।

पठमज्झाने कामावचरे (य. २.११) ति कामावचरभूमियं उप्पन्ने पठमज्झाने। अङ्गमत्तवसेन चेत्थ पठमज्झानं गहेतब्बं, न अप्पनावसेनेव। अनप्पनापत्ते पि हि सवितक्कसविचारचित्ते इदं सङ्खारद्वयं उप्पज्जतेव।

चित्तस्स भङ्गक्खणे (य. २.१३) ति इदं कायसङ्खारस्स एकन्त- B. 316
चित्तसमुट्ठानत्ता वुत्तं। उप्पज्जमानमेव हि चित्तं रूपं वा अरूपं वा समुट्ठापेति, न भिज्जमानं।

३७. **सुद्धावासानं दुतिये चित्ते वत्तमाने** (य. २.१८) ति पटिसन्धितो दुतिये भवङ्गचित्ते। कामं चेतं पटिसन्धिचित्ते पि वत्तमाने तेसं तत्थ नुप्पज्जित्थेव। याव पन अब्बोकिण्णं विपाकचित्तं

१. चतुत्थज्झानं पि स्या.।
२. दुतियततियवसेन स्या.।

वत्तति, ताव नुप्पज्जित्थेव नामा ति दस्सनत्थमेतं वुत्तं। यस्स वा झानस्स विपाकचित्तेन ते निब्बत्ता, तं सतसो पि सहस्ससो पि उप्पज्जमानं पठमचित्तमेव। विपाकचित्तेन पन विसदिसं भवनिकन्तिया आवज्जनचित्तं दुतियचित्तं नाम। तं सन्धायेतं वुत्तं ति वेदितब्बं।

४७. **पच्छिमचित्तसमङ्गिनं** (य. २.२३) ति सब्बपच्छिमेन अपटिसन्धिकचित्तेन समङ्गिभूतानं खीणासवानं। **अवितक्क-अविचारं पच्छिमचित्तं** ति रूपावचरानं दुतियज्झानिकादि चुतिचित्तवसेन, अरूपावचरानं च चतुत्थज्झानिकचुतिचित्तवसेनेतं वुत्तं। **तेसं** ति तेसं पच्छिमचित्तसमङ्गिआदीनं।

७-९. **यस्स कायसङ्खारो निरुज्झति, तस्स चित्तसङ्खारो निरुज्झती** (य. २-३९) ति एत्थ नियमतो कायसङ्खारस्स चित्तसङ्खारेन सद्धिं एकक्खणे निरुज्झन्तो आमन्ता ति पटिवचनं दिन्नं। न चित्तसङ्खारस्स कायसङ्खारेन सद्धिं। किं कारणा? चित्तसङ्खारो हि कायसङ्खारेन विना पि उप्पज्जति च निरुज्झति च। कायसङ्खारो पन चित्तसमुट्ठानो अस्सासपस्सासवातो। चित्तसमुट्ठानरूपं च चित्तस्स उप्पादक्खणे उप्पज्जित्वा याव अञ्ञानि सोळसचित्तानि उप्पज्जन्ति, ताव तिट्ठति। तेसं सोळसन्नं सब्बपच्छिमेन सद्धिं निरुज्झती ति येन चित्तेन सद्धिं उप्पज्जति, ततो पट्ठाय सत्तरसमेन सद्धिं निरुज्झति। न कस्सचि चित्तस्स उप्पादक्खणे वा ठितिक्खणे वा निरुज्झति, ना पि ठितिक्खणे वा भङ्गक्खणे वा उप्पज्जति। एसा चित्तसमुट्ठानरूपस्स धम्मता ति नियमतो चित्तसङ्खारेन सद्धिं एकक्खणे निरुज्झन्तो आमन्ता ति वुत्तं।

यं पन विभङ्गप्पकरणस्स सीहळट्ठकथायं "चित्तसमुट्ठानं रूपं सत्तरसमस्स चित्तस्स उप्पादक्खणे निरुज्झती" ति वुत्तं, तं इमाय पाळिया विरूज्झति। अट्ठकथातो च पाळियेव बलवतरा ति पाळियं वुत्तमेव पमाणं।

१२८. यस्स कायसङ्खारो **उप्पज्जति, तस्स वचीसङ्खारो निरुज्झती** ति एत्थ यस्मा कायसङ्खारो चित्तस्स उप्पादक्खणे उप्पज्जति, न च तस्मिं खणे वितक्कविचारा निरुज्झन्ति, तस्मा **नो** B. 317
ति पटिसेधो कतो ति। इमिना नयमुखेन सब्बत्थ अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो। परिञ्ञावारो पाकतिको येवा ति।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता
सङ्खारयमकवण्णना निट्ठिता

७. अनुसययमकवण्णना

(१) परिच्छेदपरिच्छिन्नुद्देसवारवण्णना

१. इदानि तेसञ्ञेव मूलयमके देसितानं कुसलादिधम्मानं लब्भमानवसेन एकदेसं सङ्गण्हित्वा सङ्खारयमकानन्तरं देसितस्स अनुसययमकस्स अत्थ-वण्णना होति। तत्थ पाळिववत्थानं ताव वेदितब्बं—इमस्मिं हि अनुसययमके खन्धयमकादीसु विय देसनं अकत्वा अञ्ञेन नयेन पाळिदेसना कता।

कथं? पठमं ताव परिच्छेदतो, उद्देसतो, उप्पत्तिट्ठानतो ति तीहाकारेहि अनुसये गहापेतुं परिच्छेदवारो, परिच्छिन्नुद्देसवारो, उप्पत्तिट्ठानवारो ति, तयो वारा देसिता। ततो सत्तन्नं महावारानं वसेन अनुसये योजेत्वा यमकदेसना कता। **तत्थ सत्तानुसया ति** अयं "सत्तेव", न ततो उद्धं, न हेट्ठा" ति गणनपरिच्छेदेन परिच्छिन्दित्वा अनुसयानं देसितत्ता परिच्छेदवारो नाम। **कामरागानुसयो…पे… अविज्जानुसयो** (य. २. १) ति अयं परिच्छेदवारेन परिच्छिन्नानं नाममत्तं उद्दिसित्वा "इमे नाम ते" ति देसितत्ता परिच्छिन्नुद्देसवारो नाम।

कत्थ कामरागानुसयो अनुसेति…पे…एत्थ अविज्जानुसयो अनुसेती ति अयं "इमेसु नाम-ठानेसु इमे अनुसया अनुसेन्ति" ति एवं तेसंयेव उप्पत्तिट्ठानस्स देसितत्ता उप्पत्तिट्ठानवारो नाम।

येसं पन सत्तन्नं महावारानं वसेन अनुसये योजेत्वा यमकदेसना कता, तेसं इमानि नामानि अनुसयवारो, सानुसयवारो, पजहनवारो, परिञ्ञावारो, पहीनवारो, उप्पज्जनवारो धातुवारो ति। तेसु पठमो अनुसयवारो। सो अनुलोमपटिलोमनयवसेन
B. 318 दुविधो होति। तत्थ अनुलोमनये "यस्स अनुसेति, यत्थ अनुसेति, यस्स यत्थ अनुसेती" ति पुग्गलोकासतदुभयवसेन तयो अन्तरवारा होन्ति। तेसु पठमे पुग्गलवारे "यस्स कामरागानुसयो अनुसेति, तस्स पटिघानुसयो अनुसेति; यस्स वा पन पटिघानुसयो अनुसेति, तस्स कामरागानुसयो अनुसेति; यस्स कामरागानुसयो अनुसेति, तस्स मानानुसयो, दिट्ठानुसयो, विचिकिच्छानुसयो, भवरागानुसयो, अविज्जानुसयो अनुसेति। यस्स वा पन अविज्जानुसयो अनुसेति, तस्स कामरागानुसयो अनुसेती" ति कामरागानुसयमूलकानि छ यमकानि।

पुन अगहितग्गहणवसेन पटिघानुसयमूलकानि पञ्च, मानानुसयमूलकानि चत्तारि, दिट्ठानुसयमूलकानि तीणि, विचिकिच्छानुसयमूलकानि द्वे, भवरागानुसयमूलकं एकं ति एवं सब्बानि पि एकमूलकानि एकवीसति।

पुन "यस्स कामरागानुसयो च पटिघानुसयो च अनुसेन्ती" ति एवं आगतानि दुकमूलकानि पञ्च, तिकमूलकानि चत्तारि, चतुक्कमूलकानि तीणि, पञ्चकमूलकानि द्वे, छक्कमूलकं एकं ति अपरानि पि पण्णरस होन्ति। तानि पुरिमेहि एकवीसतिया सद्धिं छत्तिंसा ति पुग्गलवारे छत्तिंस यमकानि। तथा ओकासवारे, तथा पुग्गलोकासवारे ति सब्बानि पि अनुलोमनये अट्ठसतं यमकानि।

तथा पटिलोमनये ति अनुसयवारे सोळसाधिकानि द्वे यमकसतानि, ततो दिगुणा पुच्छा, ततो दिगुणा अत्था च वेदितब्बा। यथा चेत्थ, एवं अनुसयवारो, पजहनवारो, परिञ्ञावारो, पहीनवारो, उप्पज्जनवारो ति इमेसं पि पञ्चन्नं वारानं, एकेकस्मिं यमकगणना; यमकदिगुणा पुच्छा, पुच्छादिगुणा च अत्था वेदितब्बा। अयं पनेत्थ पुरिमेसु तीसु वारेसु विसेसो। ओकासवारे "यत्थ तत्था" ति अवत्वा यतो ततो ति मिस्सकवचनेन देसना कता। सेसं तादिसमेव।

यो पनायं सब्बपच्छिमो धातुवारो नाम, सो पुच्छावारो, विस्सज्जनवारो ति द्विधा ठितो । तस्स पुच्छावारे **कामधातुया चुतस्स कामधातुं उपपज्जन्तस्सा** ति वत्वा "कामधातुं वा पन उपपज्जन्तस्स कामधातुया चुतस्सा" ति न वुत्तं । किं कारणा ? अत्थविसेसाभावतो । द्वे पि हि एता पुच्छा एकत्थायेव, तस्मा एकेकस्मा यमका एकेकमेव पुच्छं पुच्छित्वा सब्बपुच्छावसाने पुच्छानुक्कमेनेव "कामधातुया B. 319
चुतस्स कामधातुं उपपज्जन्तस्स कस्सचि सत्तानुसया अनुसेन्ती" ति आदिना नयेन विस्सज्जनं कतं ।

तत्थ "कामधातुया चुतस्स कामधातुं उपपज्जन्तस्स, रूपधातुं, अरूपधातुं, न कामधातुं, न रूपधातुं, न अरूपधातुं, उपपज्जन्तस्सा" ति छ सुद्धिकपुच्छा; "न कामधातुं, न अरूपधातुं, न रूपधातुं; न अरूपधातुं, न कामधातुं, न रूपधातुं, उपपज्जन्तस्सा" ति तिस्सो मिस्सका पुच्छा चा ति कामधातुमूलका नव अनुलोमपुच्छा होन्ति । तथा रूपधातुमूलका नव, अरूपधातुमूलका नवा ति सत्तवीसति अनुलोमपुच्छा होन्ति । तथा नकामधातु-नरूपधातु-नअरूपधातु-मूलका सत्तवीसति पटिलोमपुच्छा ।

पुन "नकामधातुया, नअरूपधातुया, नरूपधातुया, नअरूपधातुया, नकामधातुया, नअरूपधातुया" ति सत्तवीसति दुकमूलका पुच्छा ति सब्बा पि सम्पिण्डिता एकासी ति पुच्छा होन्ति । तासं वसेनेत्थ विस्सज्जनं कतं ति इदं धातुवारे पाळिववत्थानं । एवं ताव सकले पि अनुसययमके पाळिववत्थानमेतं वेदितब्बं ।

आदितो पट्ठाय पनेत्थ यं यं अनुत्तानं, तत्थ तत्थ अयं विनिच्छय-कथा—**अनुसया** ति केनट्ठेन अनुसया ? अनुसयनट्ठेन । को एस अनुसयनट्ठो नामा ति ? अप्पहीनट्ठो । एते हि अप्पहीनट्ठेन तस्स तस्स[1] सन्ताने अनुसेन्ति नाम, तस्मा अनुसया ति वुच्चन्ति । **अनुसेन्ती** ति अनुरूपं कारणं लभित्वा उप्पज्जन्ती ति अत्थो ।

१. ० सत्तस्स स्या. ।

अथ पि सिया--अनुसयनट्ठो नाम अप्पहीनाकारो। अप्पहीनाकारो च उप्पज्जती ति वत्तुं न युज्जति, तस्मा न अनुसया उप्पज्जन्ती ति। तत्रिदं पटिवचनं—अप्पहीनाकारो अनुसयो, अनुसयो ति पन अप्पहीनट्ठेन थामगतकिलेसो वुच्चति। सो चित्तसम्पयुत्तो सारम्मणो सप्पच्चयट्ठेन सहेतुको एकन्ताकुसलो अतीतो पि होति अनागतो पि पच्चुप्पन्नो पि, तस्मा उप्पज्जती ति वत्तुं युज्जति।

तत्रिदं पमाणं—अभिधम्मे ताव कथावत्थुस्मिं "अनुसया अब्याकता, अनुसया अहेतुका, अनुसया चित्तविप्पयुत्ता" (क. व. ३८७) ति सब्बे वादा पटिसेधिता। पटिसम्भिदामग्गे "पच्चुप्पन्ने किलेसे पजहती" (प. म. ४८१) ति पुच्छं कत्वा अनुसयानं पच्चुप्पन्नभावस्स
B. 320 अत्थिताय "थामगतानुसयं पजहती" ति वुत्तं। धम्मसङ्गहे पन मोहस्स पदभाजने "अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं, अयं तस्मिं समये मोहो होती" (ध. सं. ९६) ति अकुसलचित्तेन सद्धिं अविज्जानुसयस्स उप्पन्नभावो वुत्तो। इमस्मिं येव अनुसययमके सत्तन्नं महावारानं अञ्ञतरस्मिं उप्पज्जनवारे "यस्स कामरागानुसयो उप्पज्जति, तस्स पटिघानुसयो उप्पज्जती" ति आदि वुत्तं। तस्मा "अनुसेन्ती ति अनुरूपं कारणं लभित्वा उप्पज्जन्ती" ति यं वुत्तं, तं इमिना तन्तिप्पमाणेन सुवुत्तं ति वेदितब्बं। यम्पि "चित्तसम्पयुत्तो सारम्मणो" ति आदि वुत्तं, तम्पि सुवुत्तमेव।

अनुसयो हि नामेस परिनिप्फन्नो चित्तसम्पयुत्तो अकुसलधम्मो ति निट्ठमेत्थ गन्तब्बं। **कामरागानुसयो** ति आदीसु कामरागो च सो अप्पहीनट्ठेन अनुसयो चा ति कामरागानुसयो। सेसपदेसु पि एसेव नयो।

परिच्छेदपरिच्छिन्नुद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) उप्पत्तिट्ठानवारवण्णना

२. इदानि तेसं उप्पत्तिट्ठानं पकासेतुं **'कत्थ कामरागानुसयो अनुसेती** (य. २.८१) ति आदिमाह। तत्थ **कामधातुया द्वीसु वेदनासु**

ति कामावचरभूमियं सुखाय च उपेक्खाय चा ति द्वीसु वेदनासु। **एत्थ कामरागानुसयो अनुसेती** ति इमासु द्वीसु वेदनासु उप्पज्जति। सो पनेस अकुसलवेदनासु सहजातवसेन आरम्मणवसेन चा ति द्वीहाकारेहि अनुसेति। अकुसलाय सुखाय वेदनाय चेव उपेक्खाय वेदनाय च सहजातो पि हुत्वा उप्पज्जति। ता वेदना आरम्मणं कत्वा पि उप्पज्जती ति अत्थो। अवसेसा पन कामावचरकुसलविपाककिरियवेदना आरम्मणमेव कत्वा उप्पज्जति।

कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसयमानो चेस ताहि वेदनाहि सम्पयुत्तेसु सञ्ञासङ्खारविञ्ञाणेसु पि अनुसेति येव। न हि सक्का वेदनासु अनुसयमानेन तं सम्पयुत्तेहि सञ्ञादीहि सद्धिं असहजातेन वा भवितुं, तं सम्पयुत्ते वा सञ्ञादयो आरम्मणं अकत्वा उप्पज्जितुं। एवं सन्ते पि पन यस्मा इमा द्वे वेदना व सातसन्तसुखत्ता B. 321
अस्सादट्ठेन कामरागानुसयस्स उप्पत्तिया सेससम्पयुत्तधम्मेसु पधाना, तस्मा "द्वीसु वेदनासु एत्थ कामरागानुसयो अनुसेती" ति वुत्तं, ओळारिकवसेन हि बोधनेय्ये सुखं बोधेतुं ति।

ननु चेस आरम्मणवसेन अनुसयमानो न केवलं इमासु द्वीसु वेदनासु चेव वेदनासम्पयुत्तधम्मेसु च अनुसेति, इट्ठेसु पन रूपादीसु पि अनुसेति येव। वुत्तम्पि चेतं विभङ्गप्पकरणे "यं लोके पियरूपं सातरूपं, एत्थ सत्तानं कामरागानुसयो अनुसेती" ति इमस्मिं पि पकरणे अनुसयवारस्स पटिलोमनये वुत्तं।

"यत्थ कामरागानुसयो नानुसेति तत्थ दिट्ठानुसयो नानुसेती" ति दुक्खाय वेदनाय रूपधातुया अरूपधातुया यत्थ कामरागानुसयो नानुसेति, नो च तत्थ दिट्ठानुसयो नानुसेति। अपरियापन्ने यत्थ कामरागानुसयो च नानुसेति, दिट्ठानुसयो च नानुसेती" ति। एत्थ हि दुक्खवेदनाय चेव रूपधातुआदीसु च नानुसेती ति वुत्तत्ता ससम्पयुत्तधम्मं दुक्खवेदनं सओकासे रूपारूपावचरधम्मे नव च, लोकुत्तरधम्मे ठपेत्वा अवसेसेसु रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बेसु अनुसेती ति वुत्तं होति। तं इध कस्मा न वुत्तन्ति ? अनोळारिकत्ता। हेट्ठा वुत्तनयेन

हि वेदनानञ्ञेव ओळारिकत्ता इमेसं पन[1] अनोळारिकत्ता एतेसु रूपादीसु अनुसेती ति न वुत्तं, अत्थतो पन लब्भति । तस्मा एतेसु पि कामरागानुसयो अनुसेति येवा ति वेदितब्बो ।

न हि सत्था सब्बं सब्बत्थ कथेति । बोधनेय्यसत्तानं पन वसेन कत्थचि यं लब्भति, तं सब्बं कथेति, कत्थचि न कथेति । तथा हि अनेन कत्थचि दिट्ठानुसयो अनुसेती ति पुच्छित्वा "सब्बसक्कायपरियापन्नेसु धम्मेसु एत्थ दिट्ठानुसयो अनुसेती" ति यं लब्भति तं सब्बं कथितं । अपरस्मिं ठाने विस्सज्जन्तेन "रूपधातुया अरूपधातुया यत्थ विचिकिच्छानुसयो च मानानुसयो च दिट्ठानुसयो च अनुसेन्ति, कामधातुया द्वीसु वेदनासु यत्थ विचिकिच्छानुसयो च कामरागानुसयो च मानानुसयो च दिट्ठानुसयो च अनुसेन्ति, दुक्खाय वेदनाय यत्थ
B. 322 विचिकिच्छानुसयो च पटिघानुसयो च दिट्ठानुसयो च अविज्जानुसयो च अनुसेन्ती" ति यं लब्भति तं सब्बं अकथेत्वा रूपधातुअरूपधातूहि सद्धिं तिस्सो वेदना व कथिता ।

वेदनासम्पयुत्ता पन अरूपधम्मा, सब्बं च रूपं न कथितं । किञ्चा पि न कथितं, दिट्ठानुसयो पनेत्थ अनुसेति येव । एवमेव किञ्चा पि इध रूपादिइट्ठारम्मणं न कथितं, कामरागानुसयो पनेत्थ अनुसेति येवा ति । एवं ताव कामरागानुसयस्स अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं ।

पटिघानुसयस्स पन "दुक्खाय वेदनाया" ति वचनतो द्वे दोमनस्सवेदना कायविञ्ञाणसम्पयुत्ता दुक्खवेदना ति तिस्सो वेदना अनुसयनट्ठानं । सो पनेस दोमनस्सवेदनासु सहजातवसेन[2] आरम्मणवसेन चा ति द्वीहाकारेहि अनुसेति । अवसेसदुक्खवेदनाय पन आरम्मणवसेनेव अनुसेति । तासु वेदनासु अनुसयमानो चेस ताहि सम्पयुत्तेसु सञ्ञाक्खन्धादीसु पि अनुसेति येव । याय हि वेदनाय एस सहजातो, तं सम्पयुत्तेहि सञ्ञादीहि पि सहजातो व ।

---

१. च सी. ।
२. पच्चयेन सी. ।

या च वेदना आरम्मणं करोति, ताहि सम्पयुत्ते सञ्ञादयो पि करोति येव। एवं सन्ते पि यस्मा दुक्खवेदना व असातदुक्खवेदयितत्ता निरस्सादट्ठेन पटिघानुसयस्स उप्पत्तिया सेससम्पयुत्तधम्मेसु अधिका; तस्मा "दुक्खाय वेदनाय एत्थ पटिघानुसयो अनुसेती" ति वुत्तं, ओळारिकवसेन हि बोधनेय्ये सुखं बोधेतुं ति।

ननु चेस आरम्मणवसेन अनुसयमानो न केवलं दुक्खवेदनाय चेव तंसम्पयुत्तधम्मेसु च अनुसेति, अनिट्ठेसु पन रूपादीसु पि अनुसेति येव? वुत्तं पि चेतं विभङ्गप्पकरणे "यं लोके अप्पियरूपं असातरूपं, यत्थ सत्तानं पटिघानुसयो अनुसेती" (विभं. ४०३) ति इमस्मिं पि पकरणे अनुसयवारस्स पटिलोमनये वुत्तं—"कामधातुया द्वीसु वेदनासु यत्थ पटिघानुसयो नानुसेति, नो च तत्थ कामरागानुसयो नानुसेति। रूपधातुया अरूपधातुया अपरियापन्ने यत्थ पटिघानुसयो च नानुसेति, कामरागानुसयो च नानुसेती" ति। एत्थ हि द्वीसु कामावचरवेदनासु चेव रूपधातुआदीसु च नानुसेती ति वुत्तत्ता ससम्पयुत्तधम्मा द्वे वेदना सओकासे रूपारूपावचरधम्मे नव च, लोकुत्तरधम्मे ठपेत्वा अवसेसेसु रूपादीसु अनुसेती ति वुत्तं होति।

तं इध कस्मा न वुत्तं ति? अनोळारिकत्ता। हेट्ठावुत्तनयेन हि B. 323
दुक्खवेदनाय एव ओळारिकत्ता इमेसं पन अनोळारिकत्ता एतेसु रूपादीसु अनुसेती ति न वुत्तं। अत्थतो पन लब्भति, तस्मा एतेसु पि पटिघानुसयो अनुसेति येवा ति वेदितब्बो।

किं पन इतरा द्वे वेदना इट्ठारम्मणं वा पटिघस्स आरम्मणं न होन्ती ति? नो न होन्ति। परिहीनज्झानस्स विप्पटिसारवसेन ससम्पयुत्तधम्मा ता वेदना आरब्भ दोमनस्सं उप्पज्जति। इट्ठारम्मणस्स च पटिलद्धस्स विपरिणामं वा अपटिलद्धस्स अपटिलाभं वा समनुस्सरतो पि दोमनस्सं उप्पज्जति। दोमनस्समत्तमेव पन तं होति, न पटिघानुसयो। पटिघानुसयो हि अनिट्ठारम्मणे पटिहञ्ञनवसेन उप्पन्नो थामगतो किलेसो, तस्मा एत्थ दोमनस्सेन सद्धिं पटिघो उप्पन्नो पि अत्तनो पटिघकिच्चं अकरणभावेन एव पटिघानुसयो न होति अब्बोहारिकत्तं गच्छति।

यथा हि पाणातिपातचेतनाय सद्धिं उप्पन्नो पि ब्यापादो मनोकम्मं नाम न होति अब्बोहारिकत्तं गच्छति, एवं पटिघानुसयो न होति, अब्बोहारिकत्तं गच्छति। वुत्तं पि चेतं एकच्चं इट्ठारम्मणं नेक्खम्मसितं पि वा दोमनस्सं सन्धाय "यं एवरूपं दोमनस्सं पटिघं तेन पजहति न तत्थ पटिघानुसयो अनुसेती" (म. नि. १. ३७४) ति। एवं पटिघानुसयस्स अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं।

मानानुसयस्स पन "कामधातुया द्वीसु वेदनादीसू" ति आदिवचनतो द्वे कामावचरवेदना रूपारूपधातुयो चा ति इदं तिविधं अनुसयनट्ठानं। तस्स अकुसलासु वेदनासु कामरागानुसयस्स विय सहजातानुसयता वेदितब्बा। ससम्पयुत्तधम्मासु पन सब्बासु पि कामावचरासु सुखअदुक्खमसुखवेदनासु रूपारूपधातूसु च आरम्मणवसेनेव अनुसेति। अनुसयवारस्स पन पटिलोमनये "दुक्खाय वेदनाय अपरियापन्ने यत्थ कामरागानुसयो च नानुसेति, मानानुसयो च नानुसेती" ति वुत्तत्ता ठपेत्वा दुक्खवेदनं चेव नवविधं लोकुत्तरधम्मं च सेसरूपारूपधम्मेसु पि अयं अनुसेति येवा ति। एवं मानानुसयस्स अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं।

B. 324 दिट्ठानुसयविचिकिच्छानुसया पन केवलं लोकुत्तरधम्मे स्वेव नानुसेन्ति। तेभूमकेसु पन सब्बेसु पि अनुसेन्ति येव। तेन वुत्तं— "सब्बसक्कायपरियापन्नेसु धम्मेसु यत्थ दिट्ठानुसयो अनुसेति, तत्थ विचिकिच्छानुसयो अनुसेती" ति। **सब्बसक्कायपरियापन्नेसू** ति संसारवट्टनिस्सितट्ठेन सक्काय परियापन्नेसु सब्बधम्मेसू ति अत्थो। तत्थ पनेते पञ्चसु चित्तुप्पादेसु सहजातानुसयनवसेन अनुसेन्ति। ते वा पन पञ्च चित्तुप्पादे अञ्ञे वा तेभूमकधम्मे आरब्भ पवत्तिकाले आरम्मणानुसयनवसेन अनुसेन्ती ति। एवं दिट्ठानुसयविचिकिच्छानुसयानं अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं।

भवरागानुसयो पन किञ्चा पि दिट्ठिविप्पयुत्तेसु चतूसु चित्तेसु उप्पज्जनतो सहजातानुसयनवसेन "कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसेती" ति वत्तब्बो भवेय्य। कामधातुयं पनेस द्वीहि वेदनाहि सद्धिं उप्पज्जमानो पि रूपारूपावचरधम्ममेव पटिलभति। कामधातुया परियापन्नं

एकधम्मं पि आरम्मणं न करोति, तस्मा आरम्मणानुसयनवसेन नियमं कत्वा "रूपधातुया अरूपधातुया एत्थ भवरागानुसयो अनुसेती" ति वुत्तं ।

अपि च रागो नामेस कामरागभवरागवसेन दुविधो । तत्थ कामरागो कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसेती ति वुत्तो । सचे पन भवरागो पि कामरागो विय एवं वुच्चेय्य, कामरागेन सद्धिं देसना संकिण्णा विय भवेय्या ति रागकिलेसं द्विधा भिन्दित्वा कामरागतो भवरागस्स विसेसदस्सनत्थं पि एवं देसना कता ति । एवं भवरागानुसयस्स अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं ।

अविज्जानुसयो पन सब्बेसु पि तेभूमकधम्मेसु अनुसेति । तेन वुत्तं "सब्बसक्कायपरियापन्नेसु धम्मेसु एत्थ अविज्जानुसयो अनुसेती" ति । तस्स द्वादससु चित्तुप्पादेसु सहजातानुसयता वेदितब्बा । आरम्मणकरणवसेन पन न किञ्चि तेभूमकधम्मं आरब्भ न पवत्तती ति । एवं अविज्जानुसयस्स अनुसयनट्ठानं वेदितब्बं । अयं ताव परिच्छेदवार-परिच्छिन्नुद्देसवार-उप्पत्तिट्ठानवारेसु विनिच्छयकथा ।

उप्पत्तिट्ठानवारवण्णना निट्ठिता

(३) महावारवण्णना

(१) अनुसयवारवण्णना

३. सत्तन्नं पन महावारानं पठमे अनुसयवारे **"यस्स कामरागानुसयो अनुसेति, तस्स पटिघानुसयो अनुसेती** (य. ८२) ति एत्थ यदेतं B. 325
"आमन्ता" ति पटिवचनं दिन्नं, तं दुद्दिन्नं विय खायति । कस्मा ? कामरागपटिघानं एकक्खणे अनुप्पत्तितो । यथा हि "यस्स मनायतनं उप्पज्जति, तस्स धम्मायतनं उप्पज्जती ति 'आमन्ता', अस्सासपस्सासानं उप्पादक्खणे तेसं कायसङ्खारो च उप्पज्जति, वचीसङ्खारो च उप्पज्जती" ति आदीसु मनायतनधम्मायतनानि कायसङ्खारवचीसङ्खारा च एकक्खणे उप्पज्जन्ति, न तथा कामरागपटिघा ।

कामरागो हि अट्ठसु लोभसहगतचित्तुप्पादेसु उप्पज्जति । पटिघो द्वीसु दोमनस्ससहगतेसू ति, नत्थि तेसं एकक्खणे उप्पत्ति; तस्मा एत्थ 'नो' ति पटिसेधो कत्तब्बो सिया । तं अकत्वा पन 'आमन्ता' ति पटिवचनस्स दिन्नत्ता हेट्ठा यमकेसु विय एत्थ खणपच्चुप्पन्नवसेन वत्तमानवोहारं अग्गहेत्वा अञ्ञथा च गहेतब्बो ।

कथं ? अप्पहीनवसेन । अप्पहीनतं हि सन्धाय अयं "अनुसेती" ति वत्तमानवोहारो वुत्तो, न खणपच्चुप्पन्नतं । यस्मा च अप्पहीनतं सन्धाय वुत्तो, तस्मा "यस्स कामरागानुसयो अनुसेति, तस्स पटिघानुसयो अनुसेती" ति पुच्छाय यस्स कामरागानुसयो अप्पहीनो, न अनुप्पत्तिधम्मतं आपादितो, तस्स पटिघानुसयो पि अप्पहीनो ति एवमत्थो दट्ठब्बो ।

यस्मा च तेसु यस्सेको अप्पहीनो, तस्स इतरो पि अप्पहीनो व होति, तस्मा "आमन्ता" ति वुत्तं । यदि एवं, यं उपरि उप्पज्जनवारे 'यस्स कामरागानुसयो उप्पज्जति, तस्स पटिघानुसयो उप्पज्जती' ति पुच्छित्वा 'आमन्ता' ति वुत्तं; तत्थ कथं अत्थो गहेतब्बो ति ? तत्था पि अप्पहीनवसेनेव उप्पत्तिपच्चये सति उप्पत्तिया अनिवारितवसेन वा । यथाहि चित्तकम्मादीनि आरभित्वा अपरिनिट्ठितकम्मन्ता चित्तकारादयो तेसं कम्मन्तानं अकरणक्खणे पि मित्तसुहज्जादीहि दिट्ठदिट्ठट्ठाने "इमेसु दिवसेसु किं करोथा" ति वुत्ता, "चित्तकम्मं करोम, कट्ठकम्मं करोमा" ति वदन्ति । ते किञ्चा पि तस्मिं खणे न करोन्ति अविच्छिन्नकम्मन्तत्ता पन कतखणं च कत्तब्बखणं च उपादाय करोन्ति येव नाम होन्ति ।

एवमेव यम्हि सन्ताने अनुसया अप्पहीना, यम्हि वा पन नेसं
B. 326 सन्ताने उप्पत्तिपच्चये सति उप्पत्ति अनिवारिता, तत्थ अनुप्पज्जनक्खणे पि उप्पन्नपुब्बं चेव कालन्तरे उप्पज्जनकं च उपादाय यस्स कामरागानुसयो उप्पज्जति, तस्स पटिघानुसयो उप्पज्जति येव नामा ति एवमत्थो वेदितब्बो । इमिना इतो परेसु पि एवरूपेसु विस्सज्जनेसु एसेव नयो ।

नो च तस्सा ति इदं अनागामिस्स कामरागब्यापादानं अनवसेसतो पहीनत्ता वुत्तं। **तिण्णं पुग्गलानं** ति पुथुज्जनसोतापन्न-सकदागामीनं। **द्विन्नं पुग्गलानं** (य. २.८४) ति सोतापन्नसकदागामीनं। परतो पि एवरूपेसु ठानेसु एसेव नयो।

१४. ओकासवारस्स पठमदुतियपुच्छासु यस्मा **कामरागानुसयो** कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसेति, पटिघानुसयो दुक्खवेदनाय; तस्मा **'नो'** ति पटिसेधो कतो। ततियपुच्छायं उभिन्नं पि कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसयनतो 'आमन्ता' ति पटिवचनं दिन्नं। रूपधातुअरूपधातुया पन मानानुसयस्स कामरागानुसयेन सद्धिं असाधारणं उप्पत्तिट्ठानं। तस्मा **नो च तत्थ कामरागानुसयो** (य. २.८६) ति वुत्तं। इमिना नयेन सब्बेसं उप्पत्तिट्ठानवारं ओलोकेत्वा साधारणासाधारणं उप्पत्तिट्ठानं वेदितब्बं।

दुकमूलकपुच्छायं यस्मा कामरागपटिघानुसया ना पि एकस्मिं ठाने उप्पज्जन्ति, न एकं धम्मं आरम्मणं करोन्ति, तस्मा **नत्थी** ति पटिक्खेपो कतो। अयञ्हेत्थ अधिप्पायो। यस्मिं इमे द्वे अनुसया अनुसयेय्युं, तं ठानमेव नत्थि। तस्मा "कत्थ मानानुसयो अनुसेती" ति अयं पुच्छा अपुच्छा येवा ति। अञ्ञेसु पि एवरूपेसु एसेव नयो।

२५. पुग्गलोकासवारे **चतुन्नं** (य. २.१०३) ति पुथुज्जनसोतापन्नसकदागामी-अनागामीनं।

३६. पटिलोमनये **यस्स कामरागानुसयो नानुसेती** (य. २.११४) ति अयं पुच्छा अनागामिं गहेत्वा पुच्छति।

द्विन्नं पुग्गलानं सब्बत्थ कामरागानुसयो नानुसेती ति अनागामि- B. 327
अरहन्तानं। **कामधातुया तीसु वेदनासू** ति च वेदनाग्गहणेन वेदना सम्पयुत्तकानं पि तेसं वत्थारम्मणानं पी ति सब्बेसं पि कामावचरधम्मानं गहणं वेदितब्बं। अयं अनुसयवारे विनिच्छयकथा।

अनुसयवारवण्णना निट्ठिता

(२) सानुसयवारवण्णना

६६. सानुसयवारे पन **यो कामरागानुसयेन सानुसयो** (य. २. १४४) ति यथा एकन्तरिकजरादिरोगेन आबाधिको याव तस्मा रोगा न मुच्चति, ताव तस्स रोगस्स अनुपत्तिक्खणे पि सरोगो एव नाम होति। एवं ससंकिलेसस्स[1] वट्टगामीसत्तस्स याव अरियमग्गेन अनुसया समुग्घातं न गच्छन्ति, ताव तेसं अनुसयानं अनुप्पत्तिक्खणे पि सानुसयो येव नाम होति। एवरूपं सानुसयतं सन्धाय **'आमन्ता'** ति वुत्तं। सेसमेत्थ अनुसयवारसदिसमेव।

७७. ओकासवारे पन "रूपधातुया अरूपधातुया एत्थ मानानुसयेन सानुसयो" ति वुत्ते तासु धातूसु पुग्गलस्स सानुसयता पञ्ञायेय्य, अनुसयस्स उप्पत्तिट्ठानं न पञ्ञायेय्य। अनुसयस्स च उप्पत्तिट्ठानदस्सनत्थं अयं वारो आरद्धो, तस्मा **ततो मानानुसयेन सानुसयो** (य. २. १५०) ति वुत्तं। एवं हि सति ततो धातुद्वयतो उप्पन्नेन मानानुसयेन सानुसयो ति अनुसयस्स उप्पत्तिट्ठानं दस्सितं होति। इमस्स पन पञ्हस्स अत्थे अवुत्ते आदिपञ्हस्स अत्थो पाकटो न होती ति पठमं न वुत्तो, तस्मा सो एवं वेदितब्बो।

यतो कामरागानुसयेना ति यतो उप्पन्नेन कामरागानुसयेन सानुसयो, किं सो ततो उप्पन्नेन पटिघानुसयेन पि सानुसयो ति? यस्मा पनेते द्वे एकस्मा ठाना नुप्पज्जन्ति; तस्मा "नो" ति पटिसेधो कतो। **अरहा सब्बत्था** ति अरहा सब्बधम्मेसु उप्पज्जनकेन केनचि[2] अनुसयेन निरानुसयो ति। इमिना अत्थवसेन निप्पदेसट्ठानेसु भुम्मवचनमेव कतं ति। इमिना उपायेन सब्बत्थ अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो ति।

सानुसयवारवण्णना निट्ठिता

---

१. सानुसयकिलेसस्स सी.।
२. उप्पादकेव येन केनचि सी.;
उप्पज्जनकेन येन केनचि स्या.।

(३) पजहनवारवण्णना

१३२. पजहनवारे **पजहती** (य. २. २०३) ति तेन तेन **मग्गेन** पहानपरिञ्ञावसेन पजहति, आयतिं अनुप्पत्तिधम्मतं आपादेति। **आमन्ता** ति अनागामीमग्गट्ठं सन्धाय पटिवचनं। **तदेकट्ठं पजहती** ति पहानेकट्ठतं सन्धाय वुत्तं। **नो** ति अरहत्तमग्गट्ठं सन्धाय पटिसेधो[1]। B. 328

यतो कामरागानुसयं पजहती ति यतो उप्पज्जनकं कामरागानुसयं पजहती ति अत्थो। **अट्ठमको** ति अरहत्तफलट्ठतो पट्ठाय पच्चोरोहनगणनाय गणियमानो सोतापत्तिमग्गट्ठो अट्ठमको नाम। **दक्खिणेय्यगणनाय हि अरहा** अग्गदक्खिणेय्यत्ता पठमो, अरहत्तमग्गट्ठो दुतियो, अनागामी ततियो...पे....सोतापत्तिमग्गट्ठो अट्ठमो। सो इध "अट्ठमको" ति वुत्तो। नामसञ्ञा येव वा एसा तस्सा ति। **अनागामीमग्गसमङ्गिञ्च अट्ठमकञ्च ठपेत्वा अवसेसा** ति सद्धिं पुथुज्जनेन सेक्खासेक्खा। तेसु हि पुथुज्जनो[2] पहानपरिञ्ञाय अभावेन न पजहति[3]। सेसा तेसं अनुसयानं पहीनत्ता। **द्विन्नं मग्गसमङ्गिनं** ति द्वे मग्गसमङ्गिनो ठपेत्वा ति अत्थो। इमिना नयेन सब्बत्थ विनिच्छयो वेदितब्बो ति।

पजहनवारवण्णना निट्ठिता

(४) परिञ्ञावारवण्णना

१६८. परिञ्ञावारे **परिजानाती** (य. २. २६०) ति तीहि परिञ्ञाहि परिजानाति। सेसमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयमेव। अयं पि हि वारो पजहनवारो विय मग्गट्ठानञ्ञेव वसेन विस्सज्जितो ति।

परिञ्ञावारवण्णना निट्ठिता

(५) पहीनवारवण्णना

२६४. पहीनवारे फलट्ठवसेनेव देसना आरद्धा। अनागामिस्स हि उभो पेते अनुसया पहीना, तस्मा "आमन्ता" ति वुत्तं।

---

१. पटिसेधो कतो स्या.।

२. पुथुज्जना स्या.।

३. पजहन्ति स्या.।

B. 329 २७५. ओकासवारे **यत्थ कामरागानुसयो पहीनो तत्थ पटिघानुसयो पहीनो** (य. २. ३२६) ति पुच्छित्वा **न वत्तब्बो पहीनो ति वा अप्पहीनो ति वा** ति वुत्तं तं कस्मा ति? उप्पत्तिट्ठानस्स असाधारणत्ता। अञ्ञं हि कामरागानुसयस्स उप्पत्तिट्ठानं, अञ्ञं पटिघानुसयस्स। अभावितमग्गस्स च यत्थ अनुसयो उप्पज्जति, मग्गे भाविते तत्थेव सो पहीनो नाम होति।

तत्थ यस्मा नेव कामरागानुसयट्ठाने पटिघानुसयो उप्पज्जति, न पटिघानुसयट्ठाने कामरागानुसयो, तस्मा तत्थ सो पहीनो ति वा अप्पहीनो ति वा न वत्तब्बो। सो हि यस्मिं अत्तनो उप्पत्तिट्ठाने कामरागानुसयो पहीनो, तस्मिं अप्पहीनत्ता तत्थ पहीनो ति न वत्तब्बो। यं कामरागानुसयस्स उप्पत्तिट्ठानं, तस्मिं अट्ठितत्ता तत्थ अप्पहीनो ति न वत्तब्बो। **यत्थ कामरागानुसयो पहीनो, तत्थ मानानुसयो पहीनो** ति एत्थ पन साधारणट्ठानं सन्धाय आमन्ता ति वुत्तं। कामरागानुसयो हि कामधातुया द्वीसु वेदनासु अनुसेति। मानानुसयो तासु चेव रूपारूपधातूसु च। सो ठपेत्वा असाधारणट्ठानं साधारणट्ठाने तेन सद्धिं पहीनो नाम होति। तस्मा 'आमन्ता' ति वुत्तं। इमिना नयेन सब्बस्मिं पि ओकासवारे पहीनता च न वत्तब्बता च वेदितब्बा। 'नत्थी' ति आगतट्ठानेसु पन हेट्ठा वुत्तसदिसो व विनिच्छयो।

4526

२८६. पुग्गलोकासवारो, ओकासवारगतिको येव।

२९७. पटिलोमनये **यस्स कामरागानुसयो अप्पहीनो** (य. २. ३४९) ति पुथुज्जनसोतापन्नसकदागामिवसेन पुच्छति। किञ्चा पि हि इमे द्वे अनुसया पुथुज्जनतो पट्ठाय याव अनागामिमग्गट्ठा छन्नं पुग्गलानं अप्पहीना। इध पन परतो "तिण्णं पुग्गलानं द्विन्नं पुग्गलानं" ति आदिवचनतो मग्गट्ठा अनधिप्पेता, तस्मा पुथुज्जनसोतापन्नसकदागामिनो व सन्धाय 'आमन्ता' ति वुत्तं।

द्विन्नं पुग्गलानं ति सोतापन्नसकदागामीनं। इमिना नयेन पुग्गलवारे विनिच्छयो वेदितब्बो।

ओकासवारपुग्गलोकासवारा पन हेट्ठा वुत्तनयेन व वेदितब्बा ति।

पहीनवारवण्णना निट्ठिता

(६) उप्पज्जनवारवण्णना

३३०. उप्पज्जनवारो अनुसयवारसदिसो येव । B. 330

उप्पज्जनवारवण्णना निट्ठिता

(७) धातुपुच्छावारवण्णना

३३२. धातुवारस्स पुच्छावारे ताव **कति अनुसया अनुसेन्ती** तिं कति अनुसया सन्तानं अनुगता हुत्वा सयन्ति । **कति अनुसया नानुसेन्ती** ति कति अनुसया सन्तानं न अनुगता हुत्वा सयन्ति । **कति अनुसया भङ्गा** ति कति अनुसया अनुसेन्ति नानुसेन्ती ति एवं विभजितब्बा ति अत्थो । सेसमेत्थ यं वत्तब्बं सिया, तं हेट्ठा पाळिववत्थाने वुत्तमेव ।

धातुपुच्छावारवण्णना निट्ठिता

(८) धातुविस्सज्जनवारवण्णना

३४१. निद्देसवारे पनस्स **कस्सचि सत्त अनुसया अनुसेन्ती** ति पुथुज्जनवसेन वुत्तं । **कस्सचि पञ्चा** ति सोतापन्नसकदागामिवसेन वुत्तं । तेसं हि दिट्ठानुसयो च विचिकिच्छानुसयो च पहीना ति पञ्चेव अनुसेन्ति ।

तत्थ यथा अनुसयवारे "अनुसेन्ती" ति पदस्स उप्पज्जन्ती ति अत्थो गहितो, एवमिध न गहेतब्बो । कस्मा ? तस्मिं खणे अनुप्पज्जनतो । कामधातुं उपपज्जन्तस्स हि विपाकचित्तं चेव कम्मसमुट्ठानरूपं च उप्पज्जति, अकुसलचित्तं नत्थि । अनुसया च अकुसलचित्तक्खणे उप्पज्जन्ति, न विपाकचित्तक्खणे ति तस्मिं खणे अनुप्पज्जनतो तथा अत्थो न गहेतब्बो ।

कथं पन गहेतब्बो ति ? यथा लब्भति तथा गहेतब्बो । कथं च लब्भति ? अप्पहीनट्ठेन । यथा हि रागदोसमोहानं अप्पहीनत्ता । कुसलाब्याकतचित्तसमङ्गी पुग्गलो "सरागो सदोसो समोहो" ति वुच्चति, एवं मग्गभावनाय अप्पहीनत्ता पटिसन्धिक्खणे पि तस्स तस्स पुग्गलस्स ते ते अनुसया अनुसेन्ती ति वुच्चन्ति । न केवलं च वुच्चन्ति, अप्पहीनत्ता पन ते अनुसेन्ति येव नामा ति वेदितब्बा ।

अनुसया भङ्गा नत्थी ति यस्स हि यो अनुसेति, सो अनुसेति येव; यो नानुसेति, सो नानुसेति येव। अयं अनुसेति च नानुसेति च, अयं सिया अनुसेति सिया नानुसेती ति, एवं विभजितब्बो अनुसयो नाम नत्थि।

B. 331 ३४२ **रूपधातुं उपपज्जन्तस्स कस्सचि तयो** (य. २.३८७) ति अनागामिवसेन वुत्तं। तस्स हि कामरागपटिघदिट्ठिविचिकिच्छानुसया चत्तारो पि अनवसेसतो पहीना। इतरे तयो व अप्पहीना। तेन वुत्तं—"कस्सचि तयो अनुसया अनुसेन्ती" ति।

न कामधातुं ति कामधातुया पटिसिद्धत्ता सेसा द्वे धातुयो उपपज्जन्तस्सा ति अत्थो। **सत्ते वा** ति यस्मा अरियसावकस्स रूपधातुया चुतस्स कामधातुयं उपपत्ति नाम नत्थि, पुथुज्जनस्सेव होति, तस्मा सत्ते वा ति नियमेत्वा वुत्तं। "अरूपधातुया चुतस्स कामधातुं उपपज्जन्तस्स सत्ते वा" ति एत्था पि एसेव नयो। **रूपधातुया उपपत्ति नत्थी** ति कस्मा नत्थि? उपपत्तिनिप्फादकस्स रूपावचरज्झानस्स अभावा। सो हि सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा तं धातुं उपपन्नो ति नास्स तत्थ रूपावचरज्झानं अत्थि। तदभावा रूपधातुयं उपपत्ति नत्थी ति वेदितब्बा। **अरूपधातुया चुतस्स न कामधातुं** ति एत्थ अरूपधातु येव अधिप्पेता। इमिना नयेन सब्बविस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो ति।

धातुविस्सज्जनवारवण्णना निट्ठिता

अनुसययमकवण्णना निट्ठिता

८. चित्तयमकवण्णना

(१) उद्देसवारवण्णना

१६२. इदानि तेसञ्ञेव मूलयमके देसितानं कुसलादिधम्मानं लब्भमानवसेन एकदेसमेव सङ्गण्हित्वा अनुसययमकानन्तरं देसितस्स चित्तयमकस्स अत्थवण्णना होति। तत्थ पाळिववत्थानं ताव वेदितब्बं। इमस्मिं हि चित्तयमके मातिका ठपनं, ठपितमातिकाय विस्सज्जनं ति द्वे वारा होन्ति। तत्थ मातिकाठपने पुग्गलवारो, धम्मवारो, पुग्गलधम्मवारो ति आदितो व तयो सुद्धिकमहावारा होन्ति।

तत्थ "यस्स चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झती" ति एवं पुग्गलवसेन चित्तस्स उप्पज्जननिरुज्झनादिभेदं दीपेन्तो गतो पुग्गलवारो नाम। "यं चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झती" ति एवं धम्मवसेनेव चित्तस्स उप्पज्जननिरुज्झनादि भेदं दीपेन्तो गतो धम्मवारो नाम। "यस्स यं चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झती" ति एवं उभयवसेन चित्तस्स B. 332 उप्पज्जननिरुज्झनादिभेदं दीपेन्तो गतो पुग्गलधम्मवारो नाम। ततो "यस्स सरागं चित्तं" ति सोळसन्नं पदानं वसेन अपरे सरागादिपदविसेसिता सोळसपुग्गलवारा, सोळसधम्मवारा, सोळसपुग्गलधम्मवारा ति अट्ठचत्ताळीसं मिस्सकवारा होन्ति। ते सरागादिपदमत्तं दस्सेत्वा सङ्खित्ता।

ततो "यस्स कुसलं चित्तं" ति आदिना नयेन छसट्ठिद्विसतसङ्खानं अभिधम्ममातिकापदानं वसेन अपरे कुसलादिपदविसेसिता छसट्ठिद्विसतपुग्गलवारा, छसट्ठिद्विसतधम्मवारा छसट्ठिद्विसतपुग्गलधम्मवारा ति अट्ठनवुतिसत्तसता मिस्सकवारा होन्ति। ते पि कुसलादिपदमत्तं दस्सेत्वा सङ्खित्ता येव। यानि पेत्थ सनिदस्सनादीनि पदानि चित्तेन सद्धिं न युज्जन्ति, तानि मोघपुच्छावसेन ठपितानि।

तेसु पन तीसु वारेसु सब्बपठमे सुद्धिकपुग्गलमहावारे उप्पादनिरोधकालसम्भेदवारो, उप्पादुप्पन्नवारो, निरोधुप्पन्नवारो, उप्पादवारो,

निरोधवारो, उप्पादनिरोधवारो उप्पज्जमाननिरोधवारो, उप्पज्जमानुप्पन्नवारो, निरुज्झमानुप्पन्नवारो, उप्पन्नुप्पादवारो, अतीतानागतवारो, उप्पन्नुप्पज्जमानवारो, निरुद्धनिरुज्झमानवारो, अतिक्कन्तकालवारो ति चुद्दस अन्तरवारा। तेसु उप्पादवारो, निरोधवारो, उप्पादनिरोधवारो ति इमेसु तीसु वारेसु अनुलोमपटिलोमवसेन छ छ कत्वा अट्ठारसयमकानि।

उप्पन्नुप्पादवारे अतीतानागतकालवसेन अनुलोमतो द्वे, पटिलोमतो द्वे ति चत्तारि यमकानि। सेसेसु आदितो निद्दिट्ठेसु तीसु, अनन्तरे निद्दिट्ठेसु तीसु; अवसाने निद्दिट्ठेसु चतूसू ति दससु वारेसु अनुलोमतो एकं, पटिलोमतो एकं ति द्वे द्वे कत्वा वीसति यमकानि। एवं सब्बेसु पि चुद्दससु अन्तरवारेसु द्वाचत्तालीस यमकानि, चतुरासीति पुच्छा अट्ठसट्ठिअत्थसतं होति।

यथा च एकस्मिं सुद्धिकपुग्गलमहावारे, तथा सुद्धिकधम्मवारे पि सुद्धिकपुग्गलधम्मवारे पी ति तीसु महावारेसु छब्बीसतियमकसतं, ततो दिगुणा पुच्छा, ततो दिगुणा अत्था च वेदितब्बा। इदं पन वारत्तयं सरागादिवसेन सोळसगुणं, कुसलादिवसेन छसट्ठिद्विसतगुणं कत्वा इमस्मिं चित्तयमके अनेकानि यमकसहस्सानि, ततो दिगुणा पुच्छा, ततो दिगुणा अत्था च होन्ती ति। पाठो पन संखित्तो ति। एवं ताव इमस्मिं चित्तयमके पाळिववत्थानं वेदितब्बं।

उद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) निद्देसवारवण्णना

B. 333 ६३. इदानि ठपितानुक्कमेन मातिकं विस्सज्जेतुं **यस्स चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झती** (य. २. ४०६) ति आदि आरद्धं। तत्थ **उप्पज्जती** ति उप्पादक्खणसमङ्गिताय उप्पज्जति **न निरुज्झती** ति निरोधक्खणं अप्पत्तताय न निरुज्झति। **तस्स चित्तं** ति तस्स पुग्गलस्स ततो पट्ठाय चित्तं निरुज्झिस्सति नुप्पज्जिस्सती ति पुच्छति।

तेसं चित्तं ति येसं परिच्छिन्नवट्टदुक्खानं खीणासवानं सब्बपच्छिमस्स चुतिचित्तस्स उप्पादक्खणे वत्तति, एतेसं तदेव चुतिचित्तं उप्पादपत्तताय उप्पज्जति नाम, भङ्गं अप्पत्तताय न निरुज्झति ।

इदानि पन भङ्गं पत्वा तं तेसं चित्तं निरुज्झिस्सति, ततो अपटिसन्धिकत्ता अञ्ञं नुप्पज्जिस्सति । **इतरेसं** ति पच्छिमचित्तसमङ्गिं खीणासवं ठपेत्वा अवसेसानं सेक्खासेक्खपुथुज्जनानं **निरुज्झिस्सति चेव उप्पज्जिस्सति चा** ति यं तं उप्पादक्खणप्पत्तं तं निरुज्झिस्सतियेव । अञ्ञं पन तस्मिं वा अञ्ञस्मिं वा अत्तभावे उप्पज्जिस्सति चेव निरुज्झिस्सति च । दुतियपुच्छा विस्सज्जने पि तथारूपस्सेव खीणासवस्स चित्तं सन्धाय 'आमन्ता' ति वुत्तं ।

नुप्पज्जति निरुज्झती ति भङ्गक्खणे अरहतो पच्छिमचित्तं पि सेसानं भिज्जमानचित्तं पि । ततो पट्ठाय पन अरहतो चित्तं न निरुज्झिस्सती ति सक्का वत्तुं उप्पज्जिस्सती ति पन न सक्का । सेसानं उप्पज्जिस्सती ति सक्का वत्तुं, न निरुज्झिस्सती ति न सक्का । तस्मा 'नो' ति पटिसेधो कतो ।

दुतियपञ्हे यस्स चित्तं न निरुज्झिस्सति, उप्पज्जिस्सती (य.२.४०९) ति सो पुग्गलो येव नत्थि, तस्मा नत्थी ति पटिक्खेपो कतो ।

६४. **उप्पन्नं** (य.२. ४१०) ति उप्पादसमङ्गिनो पेतं नामं । उप्पादं पत्वा अनिरुद्धस्सा पि । तत्थ उप्पादसमङ्गितं सन्धाय 'आमन्ता' ति, उप्पादं पत्वा अनिरुद्धभावं सन्धाय "तेसं चित्तं उप्पन्नं" ति वुत्तं । **अनुप्पन्नं** ति उप्पादं अप्पत्तं । **तेसं चित्तं उप्पज्जित्था** ति एत्था पि सब्बेसं ताव चित्तं खणपच्चुप्पन्नमेव हुत्वा उप्पादक्खणं अतीतत्ता उप्पज्जित्थ नाम, निरोधसमापन्नानं निरोधतो पुब्बे उप्पन्नपुब्बत्ता, असञ्ञसत्तानं सञ्ञीभवे उप्पन्नपुब्बत्ता ।

उप्पज्जित्थ चेव उप्पज्जति चा ति उप्पादं पत्तत्ता उप्पज्जित्थ, अनतीतत्ता उप्पज्जति नामा ति अत्थो ।

उप्पादक्खणे **अनागतं** चा ति उप्पादक्खणे च चित्तं अनागतं च चित्तं ति अत्थो ।

अतिक्कन्तकालवारे **उप्पज्जमानं खणं** ति उप्पादक्खणं। तत्थ किञ्चा पि उप्पादक्खणो उप्पज्जमानो नाम न होति, उप्पज्जमानस्स B. 334 पन खणत्ता एवं वुत्तो। **खणं वीतिक्कन्तं अतिक्कन्तकालं** ति न चिरं वीतिक्कन्तं तमेव पन उप्पादक्खणं वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं ति सङ्खं गच्छति। **निरुज्झमानं खणं** ति निरोधक्खणं। तत्थ किञ्चा पि निरोधक्खणो निरुज्झमानो नाम न होति, निरुज्झमानस्स पन खणत्ता एवं वुत्तो। खणं **वीतिक्कन्तं अतिक्कन्तकालं** ति किं तस्स चित्तं एवं निरोधक्खणं ति वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं नाम होती ति पुच्छति।

तत्थ यस्मा भङ्गक्खणे चित्तं उप्पादक्खणं खणं वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं होति, निरोधक्खणं खणं वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं नाम न होति। अतीतं पन चित्तं उभो पि खणे खणं वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं नाम, तस्मा "भङ्गक्खणे चित्तं उप्पादक्खणं वीतिक्कन्तं, भङ्गक्खणं अवीतिक्कन्तं, अतीतं चित्तं उप्पादक्खणं च वीतिक्कन्तं भङ्गक्खणं च वीतिक्कन्तं ति विस्सज्जनमाह।

दुतियपञ्हस्स विस्सज्जने यस्मा अतीतं चित्तं उभो पि खणे वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं नाम होति, तस्मा अतीतं चित्तं ति वुत्तं।

पटिलोमपञ्हस्स विस्सज्जने यस्मा उप्पादक्खणे च चित्तं अनागतं च चित्तं उभो पि खणे खणं वीतिक्कन्तं हुत्वा अतिक्कन्तकालं नाम न होति, तेसं खणानं अवीतिक्कन्तत्ता। तस्मा "उप्पादक्खणे चित्तं अनागतं चित्तं ति वुत्तं।

दुतियविस्सज्जनं पाकटमेव।

८४. धम्मवारे पि इमिनावुपायेन सब्बविस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो।

१०५. पुग्गलधम्मवारो धम्मवारगतिको येव।

११४-१६. सब्बे पि मिस्सकवारा **यस्स सरागं चित्तं** (य. २. ४३२) ति आदिना नयेन मुखमत्तं दस्सेत्वा सङ्खित्ता। वित्थारो पन तेसं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

तेसु पन "यस्स सरागं चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झति; तस्स चित्तं निरुज्झिस्सति, नुप्पज्जिस्सती" ति एवं वित्थारेतब्बताय पुच्छा व सदिसा होति। यस्मा पन सरागं चित्तं पच्छिमचित्तं न होति, तस्मा "यस्स सरागं चित्तं उप्पज्जति, न निरुज्झति; तस्स चित्तं निरुज्झिस्सति, नुप्पज्जिस्सती ति नो" ति एवं विस्सज्जितब्बत्ता विस्सज्जनं असदिसं होति। तं तं तस्सा तस्सा पुच्छाय अनुरूपवसेन वेदितब्बं ति।

निद्देसवारवण्णना निट्ठिता

चित्तयमकवण्णना निट्ठिता

९. धम्मयमकवण्णना

(१) पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना

१-१५. इदानि तेसञ्ञेव मूलयमके देसितानं कुसलादिधम्मानं B. 335
मातिकं ठपेत्वा चित्तयमकानन्तरं देसितस्स धम्मयमकस्स वण्णना होति। तत्थ खन्धयमके वुत्तनयेनेव पाळिववत्थानं वेदितब्बं। यथा हि तत्थ पण्णत्तिवारादयो तयो महावारा, अवसेसा अन्तरवारा च होन्ति, तथा इधा पि।

"यो कुसलं धम्मं भावेति, सो अकुसलं धम्मं पजहती" ति आगतत्ता पनेत्थ परिञ्ञावारो, भावनावारो नामा ति वेदितब्बा। तत्थ यस्मा अब्याकतो धम्मो नेव भावेतब्बो, न पहातब्बो, तस्मा तं पदमेव न उद्धटं।

पण्णत्तिवारे पनेत्थ तिण्णं कुसलादि धम्मानं वसेन पदसोधनवारो, पदसोधनमूलचक्कवारो, सुद्धधम्मवारो, सुद्धधम्ममूलचक्कवारो ति इमेसु चतूसु वारेसु यमकगणना वेदितब्बा।

पण्णत्तिउद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना

१७. पण्णत्तिवारनिद्देसे पन **कुसलाकुसलधम्मा** (य. ३.६) ति कुसलानं एकन्तेन कुसलधम्मत्ता "आमन्ता" ति वुत्तं। सेसविस्सज्जनेसु पि एसेव नयो। **अवसेसा धम्मा न अकुसला धम्मा** (य. ३.७) ति अवसेसा धम्मा अकुसला न होन्ति, धम्मा पन होन्ती ति अत्थो। इमिना नयेन सब्बविस्सज्जनानि वेदितब्बानि।

पण्णत्तिनिद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(२) पवत्तिवारवण्णना

३३. पवत्तिवारे पनेत्थ पच्चुप्पन्नकाले पुग्गलवारस्स अनुलोमनये "यस्स कुसला धम्मा उप्पज्जन्ति, तस्स अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति; यस्स वा पन अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति, तस्स कुसला धम्मा उप्पज्जन्ती" ति कुसलधम्ममूलकानि द्वे यमकानि, अकुसलधम्ममूलकं एकं ति तीणि यमकानि होन्ति। तस्स पटिलोमनये पि ओकासवारादीसु पि एसेव नयो। एवमेत्थ सब्बवारेसु तिण्णं तिण्णं यमकानं वसेन यमकगणना वेदितब्बा।

B. 336 अत्थविनिच्छये पनेत्थ इदं लक्खणं—इमस्स हि धम्मयमकस्स पवत्तिमहावारे "उप्पज्जन्ति निरुज्झन्ती" ति इमेसु उप्पादनिरोधेसु कुसलाकुसलधम्मा ताव एकन्तेन पवत्तियं येव लब्भन्ति, न चुतिपटिसन्धीसु। अब्याकतधम्मा पन पवत्ते च चुतिपटिसन्धीसु चा ति तीसु पि कालेसु लब्भन्ति। एवमेत्थ यं यत्थ यत्थ लब्भति, तस्स वसेन तत्थ तत्थ विनिच्छयो वेदितब्बो।

तत्रिदं नयमुखं—कुसलाकुसलानं ताव एकक्खणे अनुप्पज्जनतो "नो" ति पटिसेधो कतो। **अब्याकता चा** ति चित्तसमुट्ठानरूपवसेन वुत्तं।

४१. **यत्थ कुसला धम्मा नुप्पज्जन्ती** (य. ३. १८) ति असञ्ञभवं सन्धाय वुत्तं। तेनेवेत्थ "आमन्ता" ति विस्सज्जनं कतं। **उप्पज्जन्ती** ति इदं पि असञ्ञभवं येव सन्धाय वुत्तं। अब्याकतानं पन अनुप्पत्तिट्ठानस्स अभावा "नत्थी" ति पटिक्खेपो कतो।

दुतिये अकुसले ति भवं अस्सादेत्वा उप्पन्नेसु निकन्तिजवनेसु दुतिये जवनचित्ते। **दुतिये चित्ते वत्तमाने** ति पटिसन्धितो दुतिये भवङ्गचित्ते वत्तमाने सह वा पटिसन्धिया भवङ्गं विपाकवसेन एकमेव कत्वा भवनिकन्तिया आवज्जनचित्ते। तं हि किरियचित्तत्ता अब्याकतजातियं विपाकतो दुतियं नाम होति।

यस्स चित्तस्स अनन्तरा अग्गमग्गं ति गोत्रभुचित्तं सन्धाय वुत्तं। **कुसला धम्मा उप्पज्जिस्सन्ती** ति ते अग्गमग्गधम्मे येव सन्धाय वुत्तं।

यस्स चित्तस्स अनन्तरा अग्गमग्गं पटिलभिस्सन्ति, तस्स चित्तस्स उप्पादक्खणे ति इदं चित्तजातिवसेन वुत्तं। तज्जातिकस्स हि एकावज्जनेन उप्पन्नस्स ततो ओरिमचित्तस्स उप्पादक्खणे पि एतं लक्खणं लब्भतेव।

९९. निरोधवारे पि कुसलाकुसलानं एकतो अनिरुज्झनतो "नो" ति वुत्तं। इमिना नयमुखेन सब्बत्थ विनिच्छयो वेदितब्बो ति।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता

धम्मयकवण्णना निट्ठिता

१०. इन्द्रिययमकवण्णना

(१) पण्णत्तिवारवण्णना

B. 337 १. इदानि तेसञ्ञेव मूलयमके देसितानं कुसलादिधम्मानं लब्भमानवसेन एकदेसं संगण्हित्वा धम्मयमकानन्तरं देसितस्स इन्द्रिययमकस्स वण्णना होति। तत्थ खन्धयमकादीसु वुत्तनयेनेव पाळिववत्थानं वेदितब्बं। इधा पि हि पण्णत्तिवारादयो तयो महावारा अवसेसा अन्तरवारा च सद्धिं कालप्पभेदादीहि खन्धयमकादीसु आगतसदिसा व। इन्द्रियानं पन बहुताय धातुयमकतो पि बहुतरानि यमकानि होन्ति।

यथा पन हेट्ठा पुग्गलवारादीसु चक्खायतनचक्खुधातुमूलके नये चक्खायतनचक्खुधातूहि सद्धिं जिव्हायतनकायायतनानि न योजितानि। जिव्हायतनकायायतनमूलकानि च यमकानेव न गहितानि, तथा इधा पि चक्खुन्द्रियमूलके नये जिव्हिन्द्रियकायिन्द्रियानि न योजितानि, जिव्हिन्द्रियकायिन्द्रियमूलकानि च यमकानेव न गहितानि। तेसं अग्गहणे कारणं तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

मनिन्द्रियं पन यथा चक्खुन्द्रियादिमूलकेहि तथेव इत्थिन्द्रियादिमूलकेहि पि सद्धिं यस्मा योजनं गच्छति, तस्मा निक्खित्तपटिपाटिया अयोजेत्वा सब्बेहि पि चक्खुन्द्रियमूलकादीहि सद्धिं परियोसाने योजितं ति वेदितब्बं।

चक्खुन्द्रियेन सद्धिं इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियजीवितिन्द्रियानि योजितानि सुखिन्द्रियदुक्खिन्द्रियदोमनस्सिन्द्रियानि पटिसन्धियं नत्थी ति न गहितानि। सोमनस्सिन्द्रियउपेक्खिन्द्रियानि पटिसन्धियं उप्पत्तिसब्भावतो गहितानि। तथा सद्धिन्द्रियादीनि पञ्च। लोकुत्तरानि तीणि पटिसन्धियं अभावेनेव न गहितानि। इति यानि गहितानि, तेसं वसेनेत्थ चक्खुन्द्रियमूलके नये यमकगणना वेदितब्बा। यथा चेत्थ, एवं सब्बत्थ। यानि पन न गहितानि, तेसं वसेन यमकानि न गणेतब्बानि। गणेन्तेन

वा मोघपुच्छावसेन गणेतब्बानी ति एवं ताव सब्बवारेसु पाळिववत्थानमेव वेदितब्बं ।

पण्णत्तिवारवण्णना निट्ठिता

(२) पवत्तिवारवण्णना

१८६. अत्थविनिच्छये पनेत्थ इदं नयमुखं—**सचक्खुकानं न इत्थीनं** (य. ३. १८०) ति ब्रह्मपारिसज्जादीनं चेव रूपीनं पुरिसनपुंसकानं च वसेन वुत्तं। तेसं हि इत्थिन्द्रियं नुप्पज्जति। **सचक्खुकानं न पुरिसानं** ति रूपीब्रह्मानं चेव इत्थिनपुंसकानं च वसेन वुत्तं। तेसं हि पुरिसिन्द्रियं नुप्पज्जति। **अचक्खुकानं उपपज्जन्तानं तेसं जीवितिन्द्रियं उप्पज्जती** ति एकवोकारचतुवोकारकामधातुसत्ते सन्धाय वुत्तं।

सचक्खुकानं विना सोमनस्सेना (य. ३. १८१) ति उपेक्खासहगतानं चतुन्नं महाविपाकपटिसन्धीनं वसेन वुत्तं। **सचक्खुकानं विना उपेक्खाया** ति सोमनस्ससहगतपटिसन्धिकानं वसेन वुत्तं। B. 338

उपेक्खाय अचक्खुकानं ति अहेतुकपटिसन्धिवसेन वुत्तं। **अहेतुकानं** ति अहेतुकपटिसन्धिचित्तेन सद्धिं सद्धिन्द्रियादीनं अभावतो वुत्तं। तत्थ हि एकन्तेनेव सद्धासतिपञ्ञायो नत्थि। समाधिवीरियानि पन इन्द्रियप्पत्तानि न होन्ति। **सहेतुकानं अचक्खुकानं** ति गब्भसेय्यकवसेन चेव अरूपीवसेन च वुत्तं। अञ्ञो हि सहेतुको अचक्खुको नाम नत्थि।

सचक्खुकानं अहेतुकानं (य. ३.१८१) ति अपाये ओपपातिकवसेन वुत्तं। **सचक्खुकानं ञाणविप्पयुत्तानं** ति कामधातुयं दुहेतुकपटिसन्धिकानं वसेन वुत्तं। **सचक्खुकानं ञाणसम्पयुत्तानं** ति रूपीब्रह्मानो चेव कामावचरदेवमनुस्से च सन्धाय वुत्तं। **ञाणसम्पयुत्तानं अचक्खुकानं** ति अरूपिनो च तिहेतुकगब्भसेय्यके च सन्धाय वुत्तं।

जीवितिन्द्रियमूलके **विना सोमनस्सेन उपपज्जन्तानं** ति द्वे पि जीवितिन्द्रियानि सन्धाय वुत्तं। **पवत्ते सोमनस्सविप्पयुत्तचित्तस्स**

उप्पादक्खणे ति अरूपजीवितिन्द्रियं सन्धाय वुत्तं। इमिना नयेन सब्बत्था पि पटिसन्धिपवत्तिवसेन जीवितिन्द्रिययोजना वेदितब्बा। सोमनस्सिन्द्रियादिमूलकेसु पि पटिसन्धिपवत्तिवसेनेवत्थो गहेतब्बो।

पटिलोमनये पन निरोधवारे च एतेसं चेव अञ्ञेसं च धम्मानं यथा लाभवसेन चुतिपटिसन्धिपवत्तेसु तीसु पि अनुप्पादनिरोधा वेदितब्बा।

२८१. अनागतवारे **एतेनेव भावेना** ति एतेन पुरिसभावेनेव, अन्तरा इत्थिभावं अनापज्जित्वा पुरिसपटिसन्धिगहणेनेवा ति अत्थो। **कतिचि भवे दस्सेत्वा परिनिब्बायिस्सन्ती** ति कतिचि पटिसन्धियो गहेत्वा इत्थिभावं अप्पत्वा व परिनिब्बायिस्सन्ती ति अत्थो। दुतियपुच्छाय पि एसेव नयो।

पच्चुप्पन्नेन अतीतवारे **सुद्धावासानं उपपत्तिचित्तस्स भङ्गक्खणे मनिन्द्रियं च नुप्पज्जित्था** ति चित्तयमके विय उप्पादक्खणातिक्कमवसेन अत्थं अग्गहेत्वा तस्मिं भवे अनुप्पन्नपुब्बवसेन गहेतब्बो ति। इमिना नयमुखेन सब्बस्मिं पि पवत्तिवारे अत्थविनिच्छयो वेदितब्बो।

पवत्तिवारवण्णना निट्ठिता

(३) परिञ्ञावारवण्णना

B. 339 ४३५. परिञ्ञावारे पन चक्खुमूलकादीसु एकमेव चक्खुसोतयमकं दस्सितं। यस्मा पन सेसानि पि लोकियअब्याकतानि चेव लोकियअब्याकतमिस्सकानि च परिञ्ञेय्यानेव, तस्मा तानि अनुपदिट्ठानि पि इमिना व दस्सितानि होन्ति। यस्मा पन अकुसलं एकन्ततो पहातब्बमेव, एकन्तं कुसलं भावेतब्बमेव, लोकुत्तराब्याकतं सच्छिकातब्बं, तस्मा "दोमनस्सिन्द्रियं पजहती" ति "अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं भावेती" ति "अञ्ञाताविन्द्रियं सच्छिकरोती" ति वुत्तं।

अञ्ञिन्द्रियं पन भावेतब्बं पि अत्थि सच्छिकातब्बं पि, तं भावनावसेनेव गहितं। तत्थ **द्वे पुग्गला** ति सकदागामिमग्गसमङ्गी च, अरहत्तमग्गसमङ्गी च। तेसु एको समुच्छिन्दितुं असमत्थत्ता दोम-

नस्सिन्द्रियं न पजहति नाम । एको पहीनदोसत्ता **चक्खुन्द्रियं न परिजानाती** ति अनुप्पादं आपादेतुं असमत्थताय न परिजानाति । इमिना नयेन सब्बविस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो ति ।

परिञ्ञावारवण्णना निट्ठिता
इन्द्रिययमकवण्णना निट्ठिता

निगमनकथा

एत्तावता च—

यस्सोवादे ठत्वा, निट्ठितकिच्चस्स किच्चसम्पन्नो ।
युवतिजनो पि अतीतो, सुविहितनियमो यमस्साणं ।।

देवपरिसाय मज्झे, देवपुरे सब्बदेवदेवेन ।
यमकं नाम पकासितं, यमामललोमेन यं तेन ।।

पाळिववत्थानविधिं, पुच्छाविस्सज्जने च अत्थनयं ।
दस्सेतुं आरद्धा, यमकअट्ठकथा मया तस्स ।।

सा सुबहुअन्तराये, लोकम्हि यथा अनन्तरायेन ।
अयमज्ज पञ्चमत्तेहि, तन्तिया भाणवारेहि ।।

निट्ठं पत्ता एवं, निट्ठानं पापुणन्तु सब्बे पि ।
हितसुखनिब्बत्तिकरा, मनोरथा सब्बसत्तानं ति ।।

यमकप्पकरणअट्ठकथा निट्ठिता

●

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा

पट्ठान-अट्ठकथा

वत्थुगाथा

देवातिदेवो देवानं, देवदानवपूजितो, B, 341
देसयित्वा पकरणं, यमकं सुद्धसंयमो ।

अत्थतो धम्मतो चेव, गम्भीरस्साथ तस्स यं,
अनन्तरं महावीरो, सत्तमं इसिसत्तमो ॥

पट्ठानं नाम नामेन, नामरूपनिरोधनो,
देसेसि अतिगम्भीरं, नयमण्डितदेसनं ।

इदानि तस्स सम्पत्तो, यस्मा संवण्णनाक्कमो,
तस्मा नं वण्णयिस्सामि, तं सुणाथ समाहिता ति ॥

(क) पच्चयुद्देसवण्णना

सम्मासम्बुद्धेन हि अनुलोमपट्ठाने द्वावीसति तिके निस्साय तिकपट्ठानं नाम निद्दिट्ठं, सतं दुके निस्साय दुकपट्ठानं नाम निद्दिट्ठं । ततो परं द्वावीसति तिके गहेत्वा दुकसते पक्खिपित्वा दुकतिकपट्ठानं नाम दस्सितं । ततो परं दुकसतं गहेत्वा द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा तिकदुकपट्ठानं नाम दस्सितं । तिके पन तिकेसु येव पक्खिपित्वा तिकतिकपट्ठानं नाम दस्सितं । दुके च दुकेसु येव पक्खिपित्वा दुकदुकपट्ठानं नाम दस्सितं ।

एवं—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च,
छ **अनुलोमम्हि** नया सुगम्भीरा ति ॥

B. 342 पच्चनीयपट्ठाने पि द्वावीसति तिके निस्साय तिकपट्ठानं नाम। दुकसतं निस्साय दुकपट्ठानं नाम। द्वावीसति तिके दुकसते पक्खिपित्वा दुकतिकपट्ठानं नाम। दुकसतं द्वावीसतिया तिकेसु येव[1] पक्खिपित्वा तिकदुकपट्ठानं नाम। तिके तिकेसु येव पक्खिपित्वा तिकतिकपट्ठानं नाम। दुके दुकेसु येव पक्खिपित्वा दुकदुकपट्ठानं नामा ति एवं पच्चनीये पि छहि नयेहि पट्ठानं निद्दिट्ठं।

तेन वुत्तं—

"तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च,
छ **पच्चनीयम्हि** नया सुगम्भीरा" ति ॥

ततो परं अनुलोमपच्चनीये पि एतेनेवुपायेन छ नया दस्सिता।

तेनाह[2]—

"तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च,
छ **अनुलोमपच्चनीयम्हि** नया सुगम्भीरा" ति ॥

तदनन्तरं पच्चनीयानुलोमम्हि एतेहेव छहि नयेहि निद्दिट्ठं।

---

१. स्या. म. पोत्थकेसु वत्थि।

२. तेनेवाह सी.।

तेनाह–

"तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च ।
तिकं तिकं चेव दुकं दुकं च,
छ **पच्चनीयानुलोमम्हि** नया सुगम्भीरा" ति ॥

एवं अनुलोमे छ पट्ठानानि, पच्चनीये छ, अनुलोमपच्चनीये छ, पच्चनीयानुलोमे छ पट्ठानानी ति इदं "चतुवीसतिसमन्तपट्ठानसमोधानपट्ठानमहापकरणं नामा" ति हि वुत्तं ।

तत्थ येसं चतुवीसतिया समन्तपट्ठानानं समोधानवसेनेतं चतुवीसतिसमन्तपट्ठानसमोधानं पट्ठानमहापकरणं नामा ति[1] वुत्तं, तेसं चेव इमस्स च पकरणस्स नामत्थो ताव एवं वेदितब्बो । केनट्ठेन **पट्ठानं** B. 343 ति ? नानप्पकारपच्चयट्ठेन । 'प-कारो' हि नानप्पकारत्थं दीपेति, ठानसद्दो पच्चयत्थं । ठानाट्ठानकुसलता ति आदीसु हि पच्चयो ठानं ति वुत्तो । इति नानप्पकारानं पच्चयानं वसेन देसितत्ता इमेसु चतुवीसतिया पट्ठानेसु एकेकं पट्ठानं नाम । इमेसं पन पट्ठानानं समूहतो सब्बं पेतं पकरणं पट्ठानं ति वेदितब्बं ।

अपरो नयो—केनट्ठेन पट्ठानं ति ? विभजनट्ठेन । "पञ्ञापना पट्ठपना विवरणा विभजना उत्तानीकम्मं" (म. नि. ३.३३४) ति आगतट्ठानस्मि हि विभजनट्ठेन पट्ठानं पञ्ञायति । इति कुसलादीनं धम्मानं हेतुपच्चयादिवसेन विभत्तत्ता इमेसु चतुवीसतिया पट्ठानेसु एकेकं पट्ठानं नाम । इमेसं पन पट्ठानानं समूहतो सब्बं पेतं पकरणं पट्ठानं नामा ति वेदितब्बं ।

अपरो नयो—केनट्ठेन पट्ठानं ति ? पट्ठितत्थेन । गमनट्ठेना ति अत्थो । "गोट्ठा पट्ठितगावो" (म. नि. १. १११) ति आगतट्ठानस्मि हि येन पट्ठानेन पट्ठितगावो ति वुत्तो, तं अत्थतो गमनं होति । इति नातिवित्थारितनयेसु धम्मसङ्गणीआदीसु अनिस्सङ्गगमनस्स सब्बञ्ञुत-

1. हि स्या. ।

ञाणस्स हेतुपच्चयादिभेदभिन्नेसु कुसलादीसु वित्थारितनयलाभतो निस्सङ्गवसेन पवत्तगमनत्ता इमेसु चतुवीसतिया पट्ठानेसु एकेकं पट्ठानं नाम। इमेसं पन पट्ठानानं समूहतो सब्बं पेतं पकरणं पट्ठानं नामा ति वेदितब्बं।

तत्थ अनुलोमम्हि ताव पठमं तिकवसेन देसितत्ता तिकपट्ठानं नाम। तस्स पदच्छेदो—तिकानं पट्ठानं एत्थ अत्थी ति **तिकपट्ठानं**। तिकानं नानप्पकारका पच्चया एतिस्सा देसनाय अत्थी ति अत्थो। दुतियविकप्पे पि तिकानं पट्ठानं त्वेव तिकपट्ठानं। हेतुपच्चयादिवसेन तिकानं विभजना ति अत्थो। ततियविकप्पे हेतुपच्चयादिभेदभिन्नताय लद्धवित्थारा तिका एव पट्ठानं तिकपट्ठानं। सब्बञ्ञुतञाणस्स निस्सङ्गगमनभूमी ति अत्थो। दुकपट्ठानादीसु पि एसेव नयो। एवं अनुलोमे छ पट्ठानानि विदित्वा पच्चनीयादीसु पि इमिनावुपायेन वेदितब्बानि।

यस्मा पनेतानि अनुलोमे, पच्चनीये, अनुलोमपच्चनीये, पच्चनीयानुलोमे ति समन्ता छ छ हुत्वा चतुवीसति होन्ति; तस्मा
B. 344 "चतुवीसति समन्तपट्ठानानी" ति वुच्चन्ति। इति इमेसं चतुवीसतिया खुद्दकपट्ठानसङ्खातानं समन्तपट्ठानानं समोधानवसेनेतं चतुवीसति-समन्तपट्ठानसमोधानं पट्ठानमहापकरणं नाम।

तं पनेतं ये तिकादयो निस्साय निद्दिट्ठत्ता "तिकपट्ठानं दुकपट्ठानं ...पे०... दुकदुकपट्ठानं" ति वुत्तं, ते अनामसित्वा येसं पच्चयानं वसेन ते तिकादयो विभत्ता ते पच्चये दस्सेतुं आदितो तावस्स मातिका-निक्खेपवारो नाम वुत्तो; पच्चयविभङ्गवारो ति पि तस्सेव नामं। सो उद्देसनिद्देसतो दुविधो। तस्स **हेतुपच्चयो ...पे०... अविगतपच्चयो** (प. १. ३.) ति अयं उद्देसो।

तत्थ हेतु च सो पच्चयो चा ति **हेतुपच्चयो**। हेतु हुत्वा पच्चयो, हेतुभावेन पच्चयो ति वुत्तं होति। आरम्मणपच्चयादीसु पि एसेव नयो। तत्थ **हेतू** ति वचनावयवकारणमूलानमेतं अधिवचनं।

"पटिञ्ञा हेतू" ति आदीसु हि लोके वचनावयवो हेतू ति वुच्चति। सासने पन "ये धम्मा हेतुप्पभवा" (म. व. ३६) ति आदीसु कारणं। "तयो कुसला हेतू, तयो अकुसला हेतू" (ध. सं. २३६) ति आदीसु मूलं हेतू ति वुच्चति। तं इध अधिप्पेतं।

पच्चयो ति एत्थ पन अयं वचनत्थो—पटिच्च एतस्मा एती ति पच्चयो, अप्पच्चक्खाय नं वत्तती ति अत्थो। यो हि धम्मो यं धम्मं अप्पच्चक्खाय तिट्ठति वा उप्पज्जति वा, सो तस्स पच्चयो ति वुत्तं होति।

लक्खणतो पन उपकारकलक्खणो पच्चयो, यो हि धम्मो यस्स धम्मस्स ठितिया वा उप्पत्तिया वा उपकारको होति, सो तस्स पच्चयो ति वुच्चति। पच्चयो, हेतु; कारणं निदानं सम्भवो, पभवो ति अत्थतो एकं, ब्यञ्जनतो नानं। इति मूलट्ठेन हेतु, उपकारकट्ठेन पच्चयो ति सङ्खेपतो मूलट्ठेन उपकारको धम्मो हेतुपच्चयो। सो हि सालिआदीनं सालिबीजादीनि विय, मणिप्पभादीनं विय च मणिवण्णादयो कुसलादीनं कुसलादिभावसाधको ति आचरियानं अधिप्पायो। एवं सन्ते पन तं समुट्ठानरूपेसु हेतुपच्चयता न सम्पज्जति। न हि सो तेसं कुसलादिभावं साधेति, न च पच्चयो न होती ति। वुत्तं हेतं "हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं हेतुपच्चयेन पच्चयो" B. 345
ति। अहेतुकचित्तानं च विना एतेन अब्याकतभावो सिद्धो।

सहेतुकानं पि च योनिसोमनसिकारादिपटिबद्धो कुसलादिभावो न सम्पयुत्तहेतुपटिबद्धो। यदि च सम्पयुत्तहेतूसु सभावतो व कुसलादिभावो सिया, तं सम्पयुत्तेसु हेतुपटिबद्धो अलोभो कुसलो वा सिया अब्याकतो वा। यस्मा पन उभयथा पि होति, तस्मा यथा सम्पयुत्तेसु, एवं हेतूसु पि कुसलादिता परियेसितब्बा। कुसलादिभावसाधनवसेन पन हेतूनं 'मूलट्ठं' अग्गहेत्वा सुप्पतिट्ठितभावसाधनवसेन गय्हमाने न किञ्चि विरुज्झति। लद्धहेतुपच्चया हि धम्मा विरूळ्हमूला विय पादपा थिरा होन्ति सुप्पतिट्ठिता, अहेतुका पन तिलबीजकादिसेवाला विय न सुप्पतिट्ठिता। इति मूलट्ठेन उपकारको ति सुप्पतिट्ठितभावसाधनेन उपकारको धम्मो हेतुपच्चयो ति वेदितब्बो।

ततो परेसु आरम्मणवसेन[1] उपकारको धम्मो **आरम्मणपच्चयो**। सो[2] "रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया" ति आरभित्वा पि "यं यं धम्मं आरब्भ ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति ओसापितत्ता न कोचि धम्मो न होति। यथा हि दुब्बलो पुरिसो दण्डं वा रज्जुं वा आलम्बित्वा व उट्ठहति चेव तिट्ठति च, एवं चित्तचेतसिका धम्मा रूपादिआरम्मणं आरब्भेव उप्पज्जन्ति चेव तिट्ठन्ति च। तस्मा सब्बे पि चित्तचेतसिकानं धम्मानं आरम्मणभूता धम्मा आरम्मणपच्चयो ति वेदितब्बा।

जेट्ठकट्ठेन उपकारको धम्मो **अधिपतिपच्चयो**। सो सहजातारम्मणवसेन दुविधो। तत्थ "छन्दाधिपति छन्दसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो" ति आदि वचनतो छन्दविरियचित्तवीमंससंखाता चत्तारो धम्मा सहजाताधिपतिपच्चयो ति वेदितब्बा, नो च खो एकतो। यदा हि छन्दं धुरं जेट्ठकं कत्वा चित्तं पवत्तति, तदा छन्दो व अधिपति, न इतरे। एस नयो सेसेसु पि। यं पन धम्मं गरुं कत्वा अरूपधम्मा पवत्तन्ति,
B. 346 सो नेसं आरम्मणाधिपति। तेन वुत्तं—"यं यं धम्मं गरुं कत्वा ये ये धम्मा उप्पज्जन्ति चित्तचेतसिका धम्मा, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं अधिपतिपच्चयेन पच्चयो" ति।

अनन्तरभावेन उपकारको धम्मो **अनन्तरपच्चयो**। समनन्तरभावेन उपकारको धम्मो **समनन्तरपच्चयो**। इदं च पच्चयद्वयं बहुधा पपञ्चयन्ति। अयं पनेत्थ सारो—यो हि एस चक्खुविञ्ञाणानन्तरा मनोधातु, मनोधातु अनन्तरा मनोविञ्ञाणधातू ति आदि चित्तनियमो, सो यस्मा पुरिमचित्तवसेनेव इज्झति, न अञ्ञथा। तस्मा अत्तनो अत्तनो अनन्तरं अनुरूपस्स चित्तुप्पादस्स उप्पादनसमत्थो व धम्मो अनन्तरपच्चयो। तेनेवाह—"अनन्तरपच्चयो ति चक्खुविञ्ञाणधातु

---

१. ० भावेन सी.।

२. ० रूपादिवसेन छविधो ० स्या. पोत्थके अधिको पाठो।

तं सम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आदि ।

यो अनन्तरपच्चयो, स्वेव समनन्तरपच्चयो । ब्यञ्जनमत्तमेव हेत्थ नानं, उपचयसन्तति आदीसु विय, अधिवचननिरुत्तिदुकादीसु विय च, अत्थतो पन नानं नत्थि । यम्पि "अद्धानन्तरताय अनन्तरपच्चयो, कालानन्तरताय समनन्तरपच्चयो" ति आचरियानं मतं, तं "निरोधा वुट्ठहन्तस्स नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकुसलं फलसमापत्तिया समनन्तरपच्चयेनपच्चयो" ति आदीहि निरुज्झति । यम्पि तत्थ वदन्ति–– "धम्मानं समुट्ठापनसमत्थता न परिहायति, भावनाबलेन पन वारितत्ता धम्मा समनन्तरं नुप्पज्जन्ती" ति, तम्पि कालानन्तरताय अभावमेव साधेति । भावनाबलेन हि तत्थ कालानन्तरता नत्थी ति, मयं पि एतदेव वदाम । यस्मा च कालानन्तरता नत्थि, तस्मा समनन्तरपच्चयता न युज्जति । कालानन्तरताय हि तेसं समनन्तरपच्चयो होती ति लद्धि । तस्मा अभिनिवेसं अकत्वा ब्यञ्जनमत्ततो वेत्थ नानाकरणं पच्चेतब्बं, न अत्थतो । कथं ? नत्थि एतेसं अन्तरं ति हि अनन्तरा । सण्ठानाभावतो सुट्ठु अनन्तरा ति समनन्तरा ।

उप्पज्जमानो च[१] सह उप्पज्जमानभावेन उपकारको धम्मो **सहजातपच्चयो**, पकासस्स[२] पदीपो विय । सो अरूपक्खन्धादिवसेन छब्बिधो होति । यथाह—चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयेन पच्चयो । चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं...पे०..., ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं...पे०... चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं...पे०... महाभूता उपादारूपानं...पे..., रूपिनो धम्मा अरूपीनं धम्मानं किञ्चिकाले सहजातपच्चयेन पच्चयो; किञ्चिकाले न सहजातपच्चयेन पच्चयो ति । इदं हदयवत्थुमेव सन्धाय वुत्तं ।

१. म. पोत्थके नत्थि ।

२. पभासस्स स्या. ।

अञ्ञमञ्ञं उप्पादनुपत्थम्भनभावेन उपकारको धम्मो **अञ्ञमञ्ञपच्चयो**। अञ्ञमञ्ञुपत्थम्भकं तिदण्डं विय। सो अरूपक्खन्धादिवसेन तिविधो होति। यथाह—चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। चत्तारो महाभूता···पे०···, ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो ति।

अधिट्ठानाकारेन निस्सयाकारेन च उपकारको धम्मो **निस्सयपच्चयो**, तरुचित्तकम्मादीनं पठवीपटादयो विय। सो "चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं निस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति एवं सहजाते वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। छट्ठो पनेत्थ कोट्ठासो "चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया, सोत-घान-जिव्हा-कायायतनं कायविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो। यं रूपं निस्साय मनोधातू च मनोविञ्ञाण धातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं निस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति एवं विभत्तो।

उपनिस्सयपच्चयो ति इध पन अयं ताव वचनत्थो—तदधीनवुत्तिताय अत्तनो फलेन निस्सतो, न पटिक्खित्तो ति निस्सयो। यथा पन भुसो आयासो उपायासो, एवं भुसो निस्सयो उपनिस्सयो। बलवकारणस्सेतं अधिवचनं। तस्मा बलवकारणभावेन उपकारको धम्मो उपनिस्सयपच्चयो ति वेदितब्बो। सो आरम्मणुपनिस्सयो, अनन्तरूपनिस्सयो पकतूपनिस्सयो ति तिविधो होति।

तत्थ "दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा तं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, पुब्बे सुचिण्णानि गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, झाना वुट्ठहित्वा झानं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, सेक्खा गोत्रभुं गरुं कत्वा पच्चवेक्खन्ति, वोदानं गरुं कत्वा पच्चवेक्खन्ति, सेक्खा मग्गा वुट्ठहित्वा मग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खन्ती" ति एवमादिना नयेन **आरम्मणूपनिस्सयो** ताव आरम्मणाधिपतिना सद्धिं नानत्तं अकत्वा विभत्तो। तत्थ यं आरम्मणं गरुं कत्वा चित्तचेतसिका उप्पज्जन्ति, तं नियमतो तेसं

आरम्मणेसु बलवारम्मणं होति । इति गरुकातब्बमत्तट्ठेन आरम्मणाधिपति, बलवकारणट्ठेन आरम्मणूपनिस्सयो ति एवमेतेसं नानत्तं वेदितब्बं । B. 348

अनन्तरूपनिस्सयो पि "पुरिमा पुरिमा कुसला खन्धा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं खन्धानं उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन अनन्तरपच्चयेन सद्धिं नानत्तं अकत्वा विभत्तो । मातिकानिक्खेपे पन नेसं "चक्खुविञ्ञाणधातु तं सम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन अनन्तरस्स च "पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं उपनिस्सय पच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन उपनिस्सयस्स च आगतत्ता निक्खेपविसेसो अत्थि, सो पि अत्थतो एकीभावमेव गच्छति । एवं सन्ते पि अत्तनो अत्तनो अनन्तरं अनुरूपस्स चित्तुप्पादस्स पवत्तनसमत्थताय अनन्तरता पुरिमचित्तस्स च पच्छिमचित्तुप्पादने बलवताय अनन्तरूपनिस्सयता वेदितब्बा । यथा हि हेतुपच्चयादीसु किञ्चि धम्मं विना पि चित्तं उप्पज्जति, न एवं अनन्तरचित्तं, विना चित्तस्स उप्पत्ति नाम अत्थि, तस्मा बलवपच्चयो होति । इति अत्तनो अत्तनो अनन्तरं अनुरूपचित्तुप्पादवसेन अनन्तरपच्चयो, बलवकारणवसेन अनन्तरूपनिस्सयो ति एवमेतेसं नानत्तं वेदितब्बं ।

पकतूपनिस्सयो पन पकतो उपनिस्सयो पकतूपनिस्सयो । पकतो नाम अत्तनो सन्ताने निप्फादितो वा सद्धा सीलादि; उपसेवितो वा उतुभोजनादि । पकतिया येव वा उपनिस्सयो पकतूपनिस्सयो, आरम्मणानन्तरेहि असम्मिस्सो ति अत्थो । तस्स "पकतूपनिस्सयो—सद्धं उपनिस्साय दानं देति, सीलं समादियति, उपोसथकम्मं करोति, झानं उप्पादेति, विपस्सनं उप्पादेति, मग्गं उप्पादेति, अभिञ्ञं उप्पादेति, समापत्तिं उप्पादेति, सीलं सुतं चागं पञ्ञं उपनिस्साय दानं देति…पे० समापत्तिं उप्पादेति । सद्धा सीलं सुतं चागो पञ्ञा सद्धाय सीलस्स सुतस्स चागस्स पञ्ञाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन अनेकप्पकारको पभेदो वेदितब्बो । इति इमे सद्धादयो पकता चेव बलवकारणट्ठेन उपनिस्सया चा ति पकतूपनिस्सयो ति ।

पठमतरं उप्पज्जित्वा वत्तमानभावेन उपकारको धम्मो **पुरेजात-पच्चयो ।** सो पञ्चद्वारे वत्थारम्मणहदयवत्थुवसेन एकादसविधो B, 349 होति । यथाह—चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो । सोतायतनं, घानायनं, जिव्हा-यतनं, कायायतनं, रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठब्बायतनं, कायविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो । रूपायतनं, सद्दायतनं, गन्धायतनं, रसायतनं, फोट्ठाब्बायतनं मनोधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो । यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया तं सम्पयुत्तकानंच धम्मानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो, मनोविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं किञ्चि काले पुरेजात-पच्चयेन पच्चयो, किञ्चि काले न पुरेजातपच्चयेन पच्चयो ति ।

पुरेजातानं रूपधम्मानं उपत्थम्भकट्ठेन उपकारको अरूपधम्मो **पच्छाजातपच्चयो,** गिज्झपोतकसरीरानं आहारा सा–चेतना विय । तेन वुत्तं–"पच्छाजाता चित्तचेतसिका धम्मा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो" ति ।

आसेवनट्ठेन अनन्तरानं पगुणबलवभावाय उपकारको धम्मो **आसेवनपच्चयो,** गन्थादीसु पुरिपुमरिमाभियोगो विय । सो कुसला-कुसलक्रियाजवनवसेन तिविधो होति । यथाह—पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो । पुरिमा पुरिमा अकुसला...पे०...क्रियाब्याकता धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं क्रियाब्याकतानं धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो ति ।

चित्तपयोगसङ्खातेन क्रियाभावेन उपकारको धम्मो **कम्मपच्चयो ।** सो नानाक्खणिकाय चेव कुसलाकुसलचेतनाय सहजाताय च सब्बाय पि[1] चेतनाय वसेन दुविधो होति । यथाह—कुसलाकुसलं कम्मं

१. सी. पोत्थके नत्थि ।

विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो। चेतना सम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो ति।

निरुस्साहसन्तभावेन निरुस्साहसन्तभावाय उपकारको विपाकधम्मो **विपाकपच्चयो**। सो पवत्ते चित्तसमुट्ठानानं,[1] पटिसन्धियं कटत्ता च रूपानं, सब्बत्थ च सम्पयुत्तधम्मानं विपाकपच्चयो होति। B. 350 यथाह—विपाकाब्याकतो एको खन्धो तिण्णं खन्धानं, चित्तसमुट्ठानानं च रूपानं, विपाकपच्चयेन पच्चयो...पे०...पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतो एको खन्धो...पे०...द्वे खन्धा द्विन्नं खन्धानं कटत्ता च रूपानं विपाकपच्चयेन पच्चयो। खन्धा वत्थुस्स विपाकपच्चयेन पच्चयो ति।

रूपारूपानं उपत्थम्भकट्ठेन उपकारका चत्तारो आहारा **आहारपच्चयो**। यथाह—कवळीकारो आहारो इमस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो। अरूपिनो आहारा सम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं आहारपच्चयेन पच्चयो ति। पञ्हावारे पन "पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता आहारा सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं आहारपच्चयेन पच्चयो" ति पि वुत्तं।

अधिपतिअट्ठेन उपकारका इत्थिन्द्रिय-पुरिसिन्द्रियवज्जा वीसतिन्द्रिया **इन्द्रियपच्चयो**। तत्थ चक्खुन्द्रियादयो पञ्च अरूपधम्मानं येव, सेसा रूपारूपानं पच्चया होन्ति। यथाह—चक्खुन्द्रियं चक्खुविञ्ञाणधातुया, सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं, कायिन्द्रियं कायविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। रूपजीवितिन्द्रियं कटत्ता रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। अरूपिनो इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो ति। पञ्हावारे पन "पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं धम्मानं कटत्ता च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो" ति पि वुत्तं।

---

१. ० रूपानं स्या.।

उपनिज्झायनट्ठेन उपकारकानि ठपेत्वा द्विपञ्चविञ्ञाणेसु कायिक-सुखदुक्खवेदनाद्वयं सब्बानि पि कुसलादिभेदानि सत्त झानङ्गानि **झानपच्चयो**। यथाह झानङ्गानि झानसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं सम्पयुत्तकानं च रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो ति। पञ्हावारे पन पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतानि झानङ्गानि सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो" ति पि वुत्तं।

यतो ततो वा निय्यानट्ठेन उपकारकानि कुसलादिभेदानि द्वादस-मग्गङ्गानि **मग्गपच्चयो**। यथाह "मग्गङ्गानि मग्गसम्पयुत्तकानं धम्मानं
B. 351 तं समुट्ठानानं च रूपानं मग्गपच्चयेन पच्चयो" ति। पञ्हावारे पन "पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतानि मग्गङ्गानि सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं मग्गपच्चयेन पच्चयो" ति वुत्तं। न एते पन द्वे पि झानमग्गपच्चया यथा सङ्ख्यं द्विपञ्चविञ्ञाणाहेतुकचित्तेसु लब्भन्ती ति वेदितब्बा।

एकवत्थुक-एकारम्मण-एकुप्पादेकनिरोधसङ्खातेन सम्पयुत्तभावेन उपकारका अरूपधम्मा **सम्पयुत्तपच्चयो**। यथाह—"चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं सम्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो" ति।

एकवत्थुकादिभावानुपगमेन उपकारका रूपिनो धम्मा अरूपीनं, अरूपिनो धम्मा रूपीनं **विप्पयुत्तपच्चयेन** पच्चयो। सो सहजात-पच्छाजात-पुरेजातवसेन तिविधो होति। वुत्तञ्हेतं—सहजाता कुसला खन्धा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। पच्छाजाता कुसला खन्धा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो ति। अब्याकतपदस्स पन सहजातविभङ्गे—"पटिसन्धिक्खणे विपाका-ब्याकता खन्धा कटत्तारूपानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। खन्धा वत्थुस्स, वत्थु खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो" ति वुत्तं। पुरेजातं पन चक्खुन्द्रियादि वत्थुवसेनेव वेदितब्बं। यथाह—पुरेजातं चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणस्स...पे०...कायायतनं कायविञ्ञाणस्स विप्पयुत्त-पच्चयेन पच्चयो। वत्थुविपाकाब्याकतानं क्रियाब्याकतानं खन्धानं, वत्थु कुसलानं खन्धानं, वत्थु अकुसलानं खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो ति।

पच्चुप्पन्नलक्खणेन अत्थिभावेन तादिसस्सेव धम्मस्स उपत्थम्भकट्ठेन उपकारको धम्मो **अत्थिपच्चयो**। तस्स अरूपक्खन्ध-महाभूत-नामरूप-चित्तचेतसिक-महाभूतायतन-वत्थुवसेन सत्तधा मातिका निक्खित्ता। यथाह—चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं अत्थिपच्चयेन पच्चयो; चत्तारो महाभूता अञ्ञमञ्ञं, ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं अञ्ञमञ्ञं, चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं, महाभूता उपादा रूपानं, चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया...पे०...कायायतनं...पे०...फोट्ठब्बायतनं कायविञ्ञाणधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। रूपायतनं...पे०...फोट्ठब्बायतनं मनोधातुया तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो। यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ति, तं रूपं मनोधातुया च मनोविञ्ञाणधातुया च तं सम्पयुत्तकानं च धम्मानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो ति।

पञ्हावारे पन सहजातं, पुरेजातं, पच्छाजातं, आहारं, इन्द्रियं ति पि निक्खिपित्वा सहजाते ताव "एको खन्धो तिण्णं खन्धानं चित्त- B 352
समुट्ठानानं च रूपानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन निद्देसो कतो। पुरेजाते पुरेजातानं चक्खादीनं वसेन निद्देसो कतो। पच्छाजाते पुरेजातस्स इमस्स कायस्स पच्छाजातानं चित्तचेतसिकानं पच्चयवसेन निद्देसो कतो। आहारिन्द्रियेसु पन "कबळीकारो आहारो इमस्स कायस्स अत्थिपच्चयेन पच्चयो। रूपजीवितिन्द्रियं कटत्तारूपानं अत्थिपच्चयेन पच्चयो" ति एवं निद्देसो कतो ति।

अत्तनो अनन्तरं उप्पज्जमानानं अरूपधम्मानं पवत्तिओकासस्स दानेन उपकारका समनन्तरनिरुद्धा अरूपधम्मा **नत्थिपच्चयो**। यथाह—समनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा पटुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं नत्थिपच्चयेन पच्चयो ति।

ते एव विगतभावेन उपकारकत्ता **विगतपच्चयो**। यथाह – समनन्तरविगता चित्तचेतसिका धम्मा पटुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं विगतपच्चयेन पच्चयो ति।

अत्थिपच्चयधम्मा एव अविगतभावेन उपकारकत्ता अविगतपच्चयो ति वेदितब्बा । देसनाविलासेन पन तथा विनेतब्बवेनेय्यवसेन वा अयं दुको वुत्तो; सहेतुकदुकं वत्वा पि हेतुसम्पयुत्तदुको विया ति ।

इमेसु पन चतुवीसतिया पच्चयेसु असम्मोहत्थं–

धम्मतो कालतो चेव, नानप्पकारभेदतो ।
पच्चयुप्पन्नतो चेव, विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ॥

तत्थ धम्मतो ति — इमेसु हि पच्चयेसु हेतुपच्चयो ताव नामरूपधम्मेसु नामधम्मेकदेसो । आरम्मणपच्चयो सद्धिं पञ्ञत्तिया च अभावेन सब्बे पि नामरूपधम्मा । अधिपतिपच्चयेन सहजाताधिपति नाम धम्मेकदेसो, तथा कम्म-झान-मग्गपच्चया । आरम्मणाधिपति सब्बे पि गरुकातब्बा आरम्मणधम्मा । अनन्तर-समनन्तर-पच्छाजात-आसेवन-विपाक-सम्पयुत्त-नत्थि-विगतपच्चया नामधम्मा व । निब्बानस्स असङ्गहितत्ता नामधम्मेकदेसो ति पि वत्तुं वट्टति । पुरेजातपच्चयो रूपेकदेसो । सेसा यथा लाभवसेन नामरूपधम्मा ति एवं तावेत्थ धम्मतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

B. 353 कालतो ति —

पच्चुप्पन्नाव होन्तेत्थ, पच्चया दस पञ्च च, ।
अतीता एव पञ्चेको, ते काले द्वे पि निस्सितो ।
तयो तिकालिका चेव, विमुत्ता चा पि कालतो ति ।

एतेसु हि हेतुपच्चयो सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-पुरेजात-पच्छाजात-विपाक-आहार-इन्द्रिय-झान-मग्ग-सम्पयुत्त- विप्पयुत्त-अत्थि-अविगत-पच्चयो ति इमे पन्नरस पच्चया पच्चुप्पन्नधम्मा व होन्ति । अनन्तर-पच्चयो समनन्तर-आसेवन-नत्थि-विगतपच्चयो ति इमे पञ्च अतीता येव होन्ति । एको पन कम्मपच्चयो, सो पच्चुप्पन्नातीते द्वे पि काले निस्सितो होति । सेसा आरम्मणपच्चयो अधिपतिपच्चयो उपनिस्सयच्चयो ति इमे तयो पच्चया तेकालिका पि होन्ति, पञ्ञत्तिया सद्धिं निब्बानस्स सङ्गहितत्ता कालविमुत्ता पी ति । एवमेत्थ कालतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

नानप्पकारभेदतो पच्चयुप्पन्नतो ति इमेसं पन द्विन्नं पदानं अत्थो निद्देसवारे आविभविस्सती ति ।

पच्चयुद्देसवण्णना निट्ठिता

(ख) पच्चयनिद्देसवण्णना

(१) हेतुपच्चयनिद्देसवण्णना

१. इदानि सब्बे पि ते पच्चये उद्दिट्ठपटिपाटिया निद्दिसित्वा दस्सेतुं **हेतु पच्चयो ति हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानञ्च रूपानं हेतुपच्चयेन पच्चयो** (प. १.३) ति आदिमाह। तत्थ **हेतुपच्चयो** ति चतुवीसतिया पच्चयेसु निक्खित्तपटिपाटिया सब्बपठमं भाजेतब्बस्स पदुद्धारो । सेसपच्चयेसु पि इमिना व नयेन पठमं भाजेतब्बपदं उद्धरित्वा विस्सज्जनं कतं ति वेदितब्बं । अयं पनेत्थ सम्बन्धो--यो पच्चयुद्देसे हेतुपच्चयो ति उद्दिट्ठो, सो निद्देसतो "हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति एवं वेदितब्बो । इमिना उपायेन सब्बपच्चयेसु भाजेतब्बस्स पदस्स B. 354
विस्सज्जनेन सद्धिं सम्बन्धो वेदितब्बो ।

इदानि **हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं** ति एत्थ "सम्पयुत्तकानं" ति अवत्वा "हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं" ति कस्मा वुत्तं ति ? पच्चयस्स चेव पच्चयुप्पन्नानं च ववत्थापनतो । हेतुसम्पयुत्तकानं ति हि वुत्ते हेतुना सम्पयुत्तकानं हेतुपच्चयेन पच्चयो ति अत्थो भवेय्य । एवं सन्ते असुको नाम धम्मो हेतुपच्चयेन पच्चयो ति पच्चयववत्थानं न पञ्ञायेय्य । अथा पि हेतुना सम्पयुत्तकानं हेतुसम्पयुत्तकानं ति अत्थं अग्गहेत्वाव येसं केसञ्चि सम्पयुत्तकानं हेतू हेतुपच्चयेन पच्चयो ति अत्थो भवेय्य, एवं सन्ते हेतुना विप्पयुत्ता चक्खुविञ्ञाणादयो पि सम्पयुत्तका येव, हेतुना सम्पयुत्ता कुसलादयो पि ।

तत्थ अयं हेतु असुकस्स नाम सम्पयुत्तकधम्मस्स पच्चयो ति पच्चयुप्पन्नववत्थानं न पञ्ञायेय्य । तस्मा पच्चयं चेव पच्चयुप्पन्नं च

ववत्थापेन्तो "हेतू हेतुसम्पयुत्तकानं" ति आह। तस्सत्थो—हेतुसम्पयुत्तकानं कुसलादिधम्मानं यो हेतु सम्पयुत्तको, सो हेतुपच्चयेन पच्चयो ति।

तत्रा पि "पच्चयो" ति अवत्वा "हेतुपच्चयेना" ति वचनं हेतुनो अञ्ञथा पच्चयभावपटिसेधनत्थं। अयं हि हेतू हेतुपच्चयेना पि पच्चयो होति, सहजातादिपच्चयेना पि। तत्रास्स ख्वायं सहजातादिपच्चयवसेन अञ्ञथा पि पच्चयभावो, तस्स पटिसेधनत्थं हेतुपच्चयेना ति वुत्तं। एवं सन्ते पि "तं सम्पयुत्तकानं" ति अवत्वा कस्मा "हेतुसम्पयुत्तकानं" ति वुत्तं ति? निद्दिसितब्बस्स अपाकटत्ता। तं सम्पयुत्तकानं ति हि वुत्ते येन ते सम्पयुत्तका नाम होन्ति, अयं नाम सो ति निद्दिसितब्बो अपाकटो। तस्स अपाकटत्ता येन सम्पयुत्ता ते तं सम्पयुत्तका ति वुच्चन्ति, तं सरूपतो व दस्सेतुं "हेतुसम्पयुत्तकानं" ति वुत्तं।

तं समुट्ठानानं ति एत्थ पन निद्दिसितब्बस्स पाकटत्ता तं-गहणं कतं। अयं हेत्थ अत्थो—ते हेतू चेव हेतुसम्पयुत्तका च धम्मा समुट्ठानं[1] एतेसं ति तं समुट्ठानानि। तेसं तं समुट्ठानानं, हेतुतो चेव हेतुसम्पयुत्तधम्मेहि च निब्बत्तानं ति अत्थो। इमिना चित्तसमुट्ठानरूपं
B. 355 गण्हाति। किं पन तं चित्ततो अञ्ञेन पि समुट्ठाती ति? आम समुट्ठाति। सब्बं पि हि चित्तचेतसिका एकतो हुत्वा रूपं समुट्ठापेन्ति। लोकियधम्मदेसनायं पन चित्तस्स अधिकभावतो तथाविधं रूपं चित्तसमुट्ठानं ति वुच्चति। तेनेवाह – चित्तचेतसिका धम्मा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं सहजातपच्चयेन पच्चयो ति।

यदि एवं इधा पि "तं समुट्ठानानं" ति अवत्वा चित्तसमुट्ठानानं ति कस्मा न वुत्तं ति? अचित्तसमुट्ठानानं पि सङ्गण्हनतो। पञ्हावारस्मिं हि "पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता हेतुसम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं हेतुपच्चयेन पच्चयो ति आगतं"। तस्स सङ्गण्हनत्थं इध चित्तसमुट्ठानानं ति अवत्वा तं समुट्ठानानं ति वुत्तं। तस्सत्थो—चित्तज-

---

१. समुट्ठाना सी. स्या.।

रूपं अजनयमाना पि ते हेतू हेतुसम्पयुत्तका धम्मा सहजातादि पच्चयवसेन समुट्ठानं[1] एतेसं ति तं समुट्ठानानि। तेसं तं समुट्ठानानं पवत्ते चित्तजानं पटिसन्धियं च कटत्तारूपानं पि[2] हेतु हेतुपच्चयेन पच्चयो ति। इमिना उपायेन अञ्ञेसु पि तं समुट्ठानानं ति आगतट्ठानेसु अत्थो वेदितब्बो।

कस्मा पनायं हेतु पटिसन्धियमेव कटत्ता रूपानं हेतुपच्चयो होति, न पवत्ते ति? पटिसन्धियं कम्मजरूपानं चित्तपटिबद्धवुत्तिताय। पटिसन्धियं हि कम्मजरूपानं चित्तपटिबद्धा पवत्ति, चित्तवसेन उप्पज्जन्ति चेव तिट्ठन्ति च। तस्मिं हि खणे चित्तं चित्तजरूपं जनेतुं न सक्कोति, तानि पि विना चित्तेन उप्पज्जितुं वा ठातुं वा न सक्कोन्ति। तेनेवाह–"विञ्ञाणपच्चया नामरूपं, तस्मिं पतिट्ठिते विञ्ञाणे नामरूपस्स अवक्कन्ति होती" (सं. नि. २.३) ति। पवत्तियं पन तेसं चित्ते विज्जमाने पि कम्मपटिबद्धा वा पवत्ति, न चित्तपटिबद्धा। अविज्जमाने चा पि चित्ते निरोधसमापन्नानं उप्पज्जन्ति येव।

कस्मा पन पटिसन्धिक्खणे चित्तं चित्तजरूपं जनेतुं न सक्कोती ति? कम्मवेगक्खित्तताय चेव अप्पतिट्ठितवत्थुताय च दुब्बलत्ता। तं हि तदा कम्मवेगक्खित्तं अपुरेजातवत्थुकत्ता च अप्पतिट्ठितवत्थुकं ति दुब्बलं होति। तस्मा पपाते पतितमत्तो पुरिसो किञ्चि सिप्पं कातुं विय रूपं जनेतुं न सक्कोति; कम्मजरूपमेव पनस्स चित्तसमुट्ठानरूपट्ठाने तिट्ठति। तं च कम्मजरूपस्सेव बीजट्ठाने तिट्ठति। कम्मं पनस्स खेत्तसदिसं, किलेसा आपसदिसा। तस्मा सन्ते पि खेत्ते आपे च पठ- B. 356
मुप्पत्तियं बीजानुभावेन रुक्खुप्पत्ति विय पटिसन्धिक्खणे चित्तानुभावेन रूपकायस्स उप्पत्ति। बीजे पन विगते पि पठवीआपानुभावेन रुक्खस्स उपरूपरि पवत्तिविय; विना चित्तेन कम्मतो व कटत्ता रूपानं पवत्ति होती ति वेदितब्बा। वुत्तम्पि चेतं—"कम्मं खेत्तं विञ्ञाणं बीजं तण्हा स्नेहो" (अं. नि. १.२०७) ति।

---

१. समुट्ठाना स्या.।

२. स्या. पोत्थके नत्थि।

अयं च पनत्थो ओकासवसेनेव गहेतब्बो। तयो हि ओकासा— नामोकासो, रूपोकासो, नामरूपोकासो ति। तत्थ अरूपभवो नामोकासो नाम। तत्रहि हदयवत्थुमत्तं पि रूपपच्चयं विना अरूपधम्मा व उप्पज्जन्ति। असञ्ञभवो रूपोकासो नाम। तत्र हि पटिसन्धिचित्तमत्तंपि अरूपपच्चयं विना रूपधम्मा व उप्पज्जन्ति। पञ्चवोकारभवो नामरूपोकासो नाम। तत्र हि वत्थुरूपमत्तं पि विना पटिसन्धियं अरूपधम्मा, पटिसन्धिचित्तं च विना कम्मजा पि रूपधम्मा नुप्पज्जन्ति। युगनद्धवा[1] व रूपारूपानं उप्पत्ति।

यथा हि सस्सामिके सराजके गेहे सद्वारपालके राजाणत्तिं विना पठमप्पवेसो नाम नत्थि, अपरभागे पन विना पि आणत्ति पुरिमाणत्ति-आनुभावेनेव होति, एवमेव पञ्चवोकारे पटिसन्धि-विञ्ञाणराजस्स सहजातादिपच्चयतं विना रूपस्स पटिसन्धिवसेन पठमुप्पत्ति नाम नत्थि। अपरभागे पन विना पि पटिसन्धिविञ्ञाणस्स सहजातादि पच्चयानुभावं पुरिमानुभाववसेन लद्धप्पवेसस्स कम्मतो पवत्ति होति। असञ्ञभवो पन यस्मा अरूपोकासो न होति, तस्मा तत्थ विना व अरूपपच्चया असञ्ञोकासत्ता[2] रूपं पवत्तति, अस्सामिके सुञ्ञगेहे अत्तनो गेहे च पुरिसस्स पवेसो विय। अरूपभवो पि यस्मा रूपोकासो न होति, तस्मा तत्थ विना व रूपपच्चया अञ्ञोकासत्ता अरूपधम्मा पवत्तन्ति। पञ्चवोकारभवो पन रूपारूपोकासो ति नत्थेत्थ अरूपपच्चयं विना पटिसन्धिक्खणे रूपानं उप्पत्ती ति। इति अयं हेतुपटिसन्धियमेव कटत्तारूपानं पच्चयो होति, न पवत्ते ति।

ननु "हेतू सहजातानं हेतुपच्चयेन पच्चयो ति वुत्ते सब्बो पि अयमत्थो गहितो होति, अथ कस्मा "हेतुसम्पयुत्तकानं धम्मानं तं समुट्ठानानं च रूपानं" ति इदं गहितं ति? पवत्तियं कटत्तारूपादीनं पच्चयभावपटि-
B. 357 वाहनो। एवं हि सति यानि पवत्तियं हेतुना सह एकक्खणे कटत्ता रूपानि चेव उतुआहारसमुट्ठानानि च जायन्ति, तेसं पि हेतू हेतुपच्चयो

१. युगनन्द्धा व सी.।
२. अञ्ञोकसत्ता सी.।

ति आपज्जेय्य, न च सो तेसं पच्चयो। तस्मा तेसं पच्चयभावस्स पटिबाहनत्थमेतं गहितं ति वेदितब्बं।

इदानि "नानप्पकारभेदतो पच्चयुप्पन्नतो" ति इमेसं पदानं वसेनेत्थ विञ्ञातब्बो विनिच्छयो। तेसु **नानप्पकारभेदतो** ति अयं हि हेतु 'नाम जातितो कुसलाकुसलविपाकक्रियाभेदतो चतुब्बिधो। तत्थ कुसलहेतु भूमन्तरतो कामावचरादिभेदेन चतुब्बिधो, अकुसलहेतु कामावचरो व, विपाकहेतु कामावचरादिभेदेन चतुब्बिधो, किरियाहेतु कामावचरो रूपावचरो अरूपावचरो ति तिविधो। तत्थ कामावचरकुसलहेतु नामतो अलोभादिवसेन तिविधो। रूपावचरादिकुसलहेतुसु पि एसेव नयो।

अकुसलहेतु लोभादि वसेन तिविधो। विपाककिरियाहेतू पन अलोभादिवसेन तयो तयो होन्ति। तं तं चित्तसम्पयोगवसेन पन तेसं तेसं हेतूनं नानप्पकारभेदो येवा ति एवं तावेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

पच्चयुप्पन्नतो ति इमिना पच्चयेन इमे धम्मा उप्पज्जन्ति, इमेसं नाम धम्मानं अयं पच्चयो ति एवं पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति अत्थो। तत्थ इमस्मिं ताव हेतुपच्चये कामावचरकुसलहेतु कामभवरूपभवेसु अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च हेतुपच्चयो होति, अरूपभवे सम्पयुत्तधम्मानं येव। रूपावचरकुसलहेतु कामभवरूपभवेसु-येव सम्पयुत्त-धम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च हेतुपच्चयो। अरूपावचरकुसलहेतु कामावचरकुसलहेतु-सदिसो व। तथा अपरियापन्नकुसलहेतु, तथा अकुसलहेतु। कामावचरविपाकहेतु पन कामभवस्मि येव अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं, पटिसन्धियं कटत्ता रूपानं, पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपानं च हेतुपच्चयो। रूपावचरविपाकहेतु रूपभवे वुत्तप्पकारानं येव हेतुपच्चयो। अरूपावचरविपाक-हेतु अरूपभवे सम्पयुत्तकानं चेव हेतुपच्चयो। अपरियापन्नविपाकहेतु कामभवरूपभवेसु सम्पयुत्तकानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च अरूपभवे अरूपधम्मानं येव हेतुपच्चयो। किरियाहेतूसु पन तेभूमकेसु पि कुसलहेतुसदिसोव पच्चयो ति। एवमेत्थ B. 358
पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छतो ति।

हेतुपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२) आरम्मणपच्चयनिद्देसवण्णना

२. आरम्मणपच्चयनिद्देसे **रूपायतनं** ति रूपसङ्खातं आयतनं। सेसेसु पि एसेव नयो। **चक्खुविञ्ञाणधातुया** (प. १.३) ति चक्खुविञ्ञाणसङ्खाताय धातुया। सेसपदेसु पि एसेव नयो। **तं सम्पयुत्तकानं** ति ताय चक्खुविञ्ञाणधातुया सम्पयुत्तकानं तिण्णं खन्धानं, सब्बेसं पि चक्खुप्पसादवत्थुकानं चतुन्नं खन्धानं रूपायतनं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो ति अत्थो। इतो परेसु पि एसेव नयो। **मनोधातुया** ति ससम्पयुत्तधम्माय तिविधाय पि मनोधातुया रूपायतनादीनि पञ्च आरम्मण-पच्चयेन पच्चयो, नो च एकक्खणे।

सब्बे धम्मा ति एतानि च रूपायतनादीनि पञ्च अवसेसा च सब्बे पि ञेय्यधम्मा इमा छ धातुयो ठपेत्वा सेसाय ससम्पयुत्तधम्माय मनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणपच्चयेन पच्चयो ति अत्थो। **यं यं धम्मं आरब्भा** ति इमिना ये एते एतासं सत्तन्नं विञ्ञाणधातूनं आरम्मणधम्मा वुत्ता, ते तासं धातूनं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जनक्खणे येव आरम्मणपच्चयो होन्ती ति दीपेति। एवं होन्ता पि च न एकतो होन्ति, यं यं आरब्भ ये ये उप्पज्जन्ति, तेसं ते ते विसुं विसुं आरम्मण-पच्चयो होन्ती ति पि दीपेति।

उप्पज्जन्ती ति इदं यथा नज्जो सन्दन्ति, पब्बता तिट्ठन्ती ति सब्बकालसङ्गहवसेन, एवं वुत्तं ति वेदितब्बं। तेन ये पि आरब्भ ये उप्पज्जिंसु, ये पि उप्पज्जिस्सन्ति, ते सब्बे आरम्मणपच्चयेनेव उप्पज्जिंसु च उप्पज्जिस्सन्ति चा ति सिद्धं होति।

चित्तचेतसिका धम्मा ति इदं "ये ये धम्मा" ति वुत्तानं सरूपतो निदस्सनं। **ते ते धम्मा** ति ते ते आरम्मणधम्मा। **तेसं तेसं** ति तेसं तेसं चित्तचेतसिकधम्मानं। अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

इदं पन आरम्मणं नाम रूपारम्मणं सद्द-गन्ध-रस-पोट्ठब्ब-धम्मारम्मणं ति कोट्ठासतो छब्बिधं होति। तत्थ ठपेत्वा पञ्ञत्ति
B. 359 अवसेसं भूमितो कामावचरं, रूपावचरं, अरूपावचरं, अपरियापन्नं ति

चतुब्बिधं होति। तत्थ कामावचरं कुसलाकुसलविपाककिरियारूपभेदतो पञ्चविधं; रूपावचरं कुसलविपाककिरियतो तिविधं, तथा अरूपावचरं, अपरियापन्नं कुसलविपाकनिब्बानवसेन तिविधं होति। सब्बमेव वा एतं कुसलाकुसलविपाककिरियारूपनिब्बानपञ्ञत्तिभेदतो सत्तविधं होति। तत्थ कुसलं भूमिभेदतो चतुब्बिधं होति, अकुसलं कामावचरमेव, विपाकं चतुभूमकं, किरियं तिभूमकं, रूपं एकभूमकं कामावचरमेव, निब्बानं पि एकभूमकं अपरियापन्नमेव, पञ्ञत्ति भूमिविनिम्मुत्ता ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेतस्मिं आरम्मणे कामावचरकुसलारम्मणं कामावचरकुसलस्स, रूपावचरकुसलस्स, अकुलस्स, कामावचरविपाकस्स, कामावचरकिरियस्स, रूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। रूपावचरकुसलारम्मणं तेसु छसु रासीसु कामावचरविपाकवज्जानं पञ्चन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। अरूपावचरकुसलारम्मणं कामावचरकुसलस्स, रूपावचरकुसलस्स, अरूपावचरकुसलस्स, अकुसलस्स, अरूपावरचरविपाकस्स, कामावचरकिरियस्स, रूपावचरकिरियस्स, अरूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं अट्ठन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति।

अपरियापन्नकुसलारम्मणं कामावचररूपावचरतो कुसलक्रियानमेव आरम्मणपच्चयो होति।

अकुसलारम्मणं कामावचररूपावचरकुसलस्स, अकुसलस्स, कामावचरविपाकस्स, कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति।

कामावचरविपाकारम्मणं कामावचररूपावचरकुसलस्स, अकुसलस्स, कामावचरविपाकस्स, कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। रूपावचरविपाकारम्मणं कामावचर- B. 360
रूपावचरकुसलस्स, अकुसलस्स, कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति

इमेसं पञ्चन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। अरूपावचरविपाकारम्मणं पि इमेसं येव पञ्चन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। अपरियापन्नविपाकारम्मणं कामावचररूपावचरकुसलकिरियानञ्ञेव आरम्मणपच्चयो होति।

कामावचरकिरियारम्मणं कामावचररूपावचरकुसलस्स, अकुसलस्स, कामावचरविपाकस्स, कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। रूपावचरकिरियारम्मणं इमेसु छसु रासीसु कामावचरविपाकवज्जानं पञ्चन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। अरूपावचरकिरियारम्मणं तेसं पञ्चन्नं अरूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति।

चतुसमुट्ठानं रूपक्खन्धसङ्खातं रूपारम्मणं कामावचररूपावचरकुसलस्स अकुसलस्स कामावचरविपाकस्स कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। निब्बानारम्मणं कामावचर-रूपावचरकुसलस्स, अपरियापन्नतो कुसलविपाकस्स, कामावचररूपावचरकिरियस्स चा ति इमेसं छन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। रूपावचरकुसलकिरियानं केचि निच्छन्ति, तं युत्तितो उपधारेतब्बं। नानप्पकारकं पन पञ्ञत्तिआरम्मणं तेभूमककुसलस्स, अकुसलस्स, रूपावचरविपाकस्स, अरूपावचरविपाकस्स, तेभूमककिरियस्स चा ति इमेसं नवन्नं रासीनं आरम्मणपच्चयो होति। तत्थ यं यं आरम्मणं येसं येसं पच्चयो, ते ते तं तं पच्चयुप्पन्ना नाम होन्ती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

आरम्मणपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(३) अधिपतिपच्चयनिद्देसवण्णना

३. अधिपतिपच्चयनिद्देसे **छन्दाधिपती** (प. १.४) ति छन्दसङ्खातो अधिपति। छन्दं धुरं कत्वा छन्दं जेट्ठकं कत्वा चित्तुप्पत्तिकाले उप्पन्नस्स कत्तुकम्यता-छन्दस्सेतं नामं। सेसेसु पि एसेव नयो। कस्मा पन यथा हेतुपच्चयनिद्देसे हेतु हेतुसम्पयुत्तकानं" ति वुत्तं,

एवमिध "अधिपति अधिपतिसम्पयुत्तकानं ति अवत्वा "छन्दाधिपति छन्दसम्पयुत्तकानं" ति आदिना नयेन देसना कता ति ? एकक्खणे अभावतो । पुरिमनयस्मिं हि द्वे तयो हेतू एकक्खणे पि हेतुपच्चयो होन्ति मूलट्ठेन । उपकारकभावस्स अविजहनतो । अधिपति पन जेट्ठकट्ठेन उपकारको, न च एकक्खणे बहू जेट्ठका नाम होन्ति । तस्मा एकतो उप्पन्नानं पि नेसं एकक्खणे अधिपतिपच्चयभावो नत्थि । तस्स अधिपतिपच्चयभावस्स एकक्खणे अभावतो इध एवं देसना कता ति ।

एवं सहजाताधिपतिं दस्सेत्वा इदानि आरम्मणाधिपतिं दस्सेतुं B. 361 **यं यं धम्मं गरुं कत्वा** ति आदि आरद्धं । तत्थ **यं यं धम्मं** ति यं यं आरम्मणधम्मं । **गरुं कत्वा** ति गरुकारचित्तीकारवसेन वा अस्सादवसेन वा गरुं भारियं लद्धब्बं अविजहितब्बं अनवञ्ञातं कत्वा । **ते ते धम्मा** ति ते ते गरुकातब्बधम्मा । **तेसं तेसं** ति तेसं तेसं गरुकारकधम्मानं । **अधिपतिपच्चयेना** ति आरम्मणाधिपतिपच्चयेन पच्चयो होती ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना ।

अयं पन अधिपति नाम सहजातारम्मणवसेन दुविधो । तत्थ सहजातो छन्दादिवसेन चतुब्बिधो । तेसु एकेको कामावचरादिवसेन भूमितो चतुब्बिधो । तत्थ कामावचरो कुसलाकुसलकिरियावसेन तिविधो । अकुसलं पत्वा पनेत्थ वीमंसाधिपति न लब्भति । रूपारूपावचरो कुसलकिरियवसेन दुविधो, अपरियापन्नो कुसलविपाकवसेन दुविधो । आरम्मणाधिपति पन जातिभेदतो कुसलाकुसलविपाककिरियरूपनिब्बानानं वसेन छब्बिधो ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

एवं भिन्ने पनेत्थ सहजाताधिपतिम्हि ताव कामावचरकुसलकिरियसङ्खातो अधिपति दुहेतुकतिहेतुकेसु चित्तुप्पादेसु छन्दादीनं अञ्ञतरं जेट्ठकं कत्वा उप्पत्तिकाले अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च अधिपतिपच्चयो होति । रूपावचरकुसलकिरियसङ्खाते पि एसेव नयो । अयं पन[1] एकन्ते नेव लब्भति । न हि ते धम्मा सह-

जाताधिपतिं विना उप्पज्जन्ति । अरूपावचरकुसलकिरियसङ्खातो पन पञ्चवोकारे रूपावचराधिपतिसदिसो व, चतुवोकारे पन सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव अधिपतिपच्चयो होति । तथा तत्थुप्पन्नो सब्बो पि कामावचराधिपति । अपरियापन्नो कुसलतो पि विपाकतो पि पञ्चवोकारे एकन्तेनेव सम्पयुत्तधम्मानञ्चेव चित्तसमुट्ठानरूपानञ्च अधिपतिपच्चयो होति, चतुवोकारे अरूपधम्मानञ्ञेव ।

अकुसलो कामभवे मिच्छत्तनियतचित्तेसु एकन्तेनेव सम्पयुत्तकानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च अधिपतिपच्चयो होति । अनियतो
B, 362 कामभवरूपभवेसु अत्तनो अधिपतिकाले तेसञ्ञेव । अरूपभवे अरूपधम्मानञ्ञेव अधिपतिपच्चयो होति । अयं ताव सहजाताधिपतिम्हि नयो ।

आरम्मणाधिपतिम्हि पन कामावचरकुसलो आरम्मणाधिपति कामावचरकुसलस्स लोभसहगताकुसलस्सा ति इमेसं द्विन्नं रासीनं आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । रूपावचरारूपावचरे पि कुसलारम्मणाधिपतिम्हि एसेव नयो । अपरियापन्नकुसलो पन आरम्मणाधिपति कामावचरतो ञाणसम्पयुत्तकुसलस्स चेव ञाणसम्पयुत्तकिरियस्स च आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । अकुसलो पन आरम्मणाधिपति नाम लोभसहगतचित्तुप्पादो वुच्चति । सो लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । कामावचरो पन विपाकारम्मणाधिपति लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । तथा रूपावचरारूपावचरविपाकारम्मणाधिपति । लोकुत्तरो पन विपाकारम्मणाधिपति कामावचरतो ञाणसम्पयुत्तकुसलकिरियानञ्ञेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । कामावचरादिभेदतो पन तिविधो पि किरियारम्मणाधिपति लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । चतु समुट्ठानिकरूपसङ्खातो रूपक्खन्धो आरम्मणाधिपति लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति । निब्बानं कामावचरतो ञाणसम्पयुत्तकुसलस्स ञाणसम्पयुत्तकिरियस्स लोकुत्तरकुसलस्स लोकुत्तरविपाकस्स

१. पचेत्थ स्या. ।

चा ति इमेसं चतुन्नं रासीनं आरम्मणाधिपतिपच्चयो होती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति ।

अधिपतिपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(४) अनन्तरपच्चयनिद्देसवण्णना

४. अनन्तरपच्चयनिद्देसे **मनोधातुया** ति विपाकमनोधातुया । **मनोविञ्ञाणधातुया** (प. १. ४) ति सन्तीरणकिच्चाय अहेतुकविपाकमनोविञ्ञाणधातुया । ततो परं पन वोट्ठब्बन-जवन-तदारम्मण-भवङ्गकिच्चा मनोविञ्ञाणधातुयो वत्तब्बा सियुं, ता अवुत्ता पि इमिना व नयेन वेदितब्बा ति नयं दस्सेत्वा देसना सङ्खित्तता । "पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा" ति आदिके च छट्ठनये ता सङ्गहिता ति पि इध न वुत्ता ति वेदितब्बा । तत्थ **पुरिमा पुरिमा** ति छसु द्वारेसु पि अनन्तरातीता कुसलजवनधम्मा दट्ठब्बा । **पच्छिमानं पच्छिमानं** ति अनन्तरउप्पज्जमानानञ्ञेव । **कुसलानं** ति सदिसकुसलानं । B. 363

अब्याकतानं ति इदं पन कुसलानन्तरं तदारम्मणभवङ्गफलसमापत्तिवसेन वुत्तं । अकुसलमूलके **अब्याकतानं** ति तदारम्मणभवङ्गसङ्खातानञ्ञेव । अब्याकतमूलके **अब्याकतानं** ति आवज्जनजवनवसेन वा भवङ्गवसेन वा पवत्तानं किरियविपाकाब्याकतानं किरियमनोधातुतो पट्ठाय पन याव वोट्ठब्बनकिच्चा मनोविञ्ञाण, धातु, ताव पवत्तेसु वीथिचित्तेसु पि अयं नयो लब्भते व । **कुसलानं** ति पञ्चद्वारे वोट्ठब्बनानन्तरानं मनोद्वारे आवज्जनान्तरानं पठमजवनकुसलानं । **अकुसलानं** ति पदे पि एसेव नयो । **येसं येसं** ति इदं सब्बेसम्पि अनन्तरपच्चयधम्मानं । सङ्खेपलक्खणं ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना ।

अयं पन अनन्तरपच्चयो नाम ठपेत्वा निब्बानं चतुभूमको अरूपधम्मरासियेवा ति वेदितब्बो । सो जातिवसेन कुसलाकुसलविपाककिरियतो चतुधा भिज्जति । तत्थ कुसलो कामावचरादिभेदतो चतुब्बिधो होति, अकुसलो कामावचरो व, विपाको चतुभूमको, किरियानन्तरपच्चयो पन ते भूमको ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

एवं भिन्ने पनेत्थ कामावचरकुसलो अत्तना सदिसस्सेव कामावचरकुसलस्स अनन्तरपच्चयो होति। ञाणसम्पयुत्तकामावचरकुसलो पन रूपावचरकुसलस्स अरूपावचरकुसलस्स लोकुत्तरकुसलस्सा ति इमेसं तिण्णं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। कामावचरकुसलो च कामावचरविपाकस्स, रूपावचरारूपावचरविपाकस्स, ञाणसम्पयुत्तो लोकुत्तरविपाकस्सा पी ति इमेसं चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। रूपावचरकुसलो रूपावचरकुसलस्स, ञाणसम्पयुत्तकामावचरविपाकस्स, रूपावचरविपाकस्सा ति इमेसं तिण्णं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। B. 364 अरूपावचरकुसलो तेसं द्विन्नं विपाकानं अत्तनो कुसलस्स विपाकस्स चा ति अविसेसेन चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। विसेसेन पनेत्थ नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकुसलो अनागामिफलसङ्खातस्स लोकुत्तरविपाकस्सा पि अनन्तरपच्चयो होति। लोकुत्तरकुसलो लोकुत्तरविपाकस्सेव अनन्तरपच्चयो होति। अकुसलो अविसेसेन अकुसलस्स चेव कुसलाकुसलविपाकस्स च। विसेसेन पनेत्थ सुखमज्झत्तवेदनासम्पयुत्तो अकुसलो रूपावचरारूपावचरविपाकस्सा पी ति इमेसं चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति।

कामावचरविपाकस्स ञाणसम्पयुत्तो वा ञाणविप्पयुत्तो वा विपाको कामावचरकिरियावज्जनस्स, ञाणसम्पयुत्तविपाको पनेत्थ पटिसन्धिवसेन उप्पज्जमानस्स रूपावचरारूपावचरविपाकस्स पी ति इमेसं चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। रूपावचरविपाको सहेतुककामावचरविपाकस्स रूपावचरारूपावचरविपाकस्स कामावचरकिरियावज्जनस्सा ति इमेसं चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। अरूपावचरविपाको तिहेतुककामावचरविपाकस्स अरूपावचरविपाकस्स कामावचरकिरियावज्जनस्सा ति तिण्णं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। लोकुत्तरविपाको तिहेतुककामावचरविपाकस्स रूपावचरारूपावचरलोकुत्तरविपाकस्सा ति चतुन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति।

कामावचरकिरियं कामावचरकुसलाकुसलस्स चतुभूमकविपाकस्स तेभूमककिरियस्सा ति नवन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। रूपावचर-

किरियं तिहेतुककामावचरविपाकस्स रूपावचरविपाकस्स रूपावचरकिरियस्सा ति तिण्णं रासीनं अनन्तरपच्चयो होति। अरूपावचरकिरियं तिहेतुककामावचरविपाकस्स रूपावचरारूपावचरलोकुत्तरविपाकस्स अरूपावचरकिरियस्सा ति पञ्चन्नं रासीनं अनन्तरपच्चयो होती ति। एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

अनन्तरपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(५) समनन्तरपच्चयनिद्देसवण्णना

५. समनन्तरपच्चयनिद्देसो पि इमिना समानगतिको व। इमे B. 365
पन द्वे पच्चया महावित्थारा, तस्मा सब्बचित्तुप्पत्तिवसेन तेसं उपपरिक्खित्वा वित्थारो गहेतब्बो ति।

समनन्तरपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(६) सहजातपच्चयनिद्देसवण्णना

६. सहजातपच्चयनिद्देसे **अञ्ञमञ्ञं** (प. १.६) ति अञ्ञो अञ्ञस्स। इमिना[1] एतेसं[1] धम्मानं एकक्खणे पच्चयभावं चेव पच्चयुप्पन्नभावं च दीपेति। **ओक्कन्तिक्खणे** ति पञ्चवोकारभवे पटिसन्धिक्खणे। तस्मिं हि खणे नामरूपं ओक्कन्तं विय पक्खन्दन्तं परलोकतो इमं लोकं आगन्त्वा पविसन्तं विय उप्पज्जति, तस्मा सो खणो "ओक्कन्तिक्खणो" ति वुच्चति। एत्थ च **रूपं** ति हदयवत्थुमत्तमेव अधिप्पेतं। तं हि नामस्स, नामं च तस्स अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयट्ठं फरति। **चित्तचेतसिका** ति पवत्तियं चत्तारो खन्धा।

सहजातपच्चयेना ति एत्थ चित्तसमुट्ठानरूपा चित्तचेतसिकानं पच्चयट्ठं न फरन्ति, तस्मा "अञ्ञमञ्ञं" ति न वुत्तं। तथा उपादारूपा भूतानं। **रूपिनो धम्मा अरूपीनं धम्मानं** ति हदयवत्थु चतुन्नं

१-१. इमिना व तेसं सी.।

खन्धानं। **किञ्चि काले** ति किस्मिञ्चि काले। **सहजातपच्चयेना** ति पटिसन्धिं सन्धाय वुत्तं। **न सहजातपच्चयेना** ति पवत्तिं सन्धाय वुत्तं।

अयं पन 'चत्तारो खन्धा अरूपिनो अञ्ञमञ्ञं सहजातपच्चयेन पच्चयो' ति एवं छहि कोट्ठासेहि ठितो। तत्थ तयो कोट्ठासा अञ्ञमञ्ञवसेन वुत्ता, तयो न अञ्ञमञ्ञवसेन। तत्थ पठमकोट्ठासे अरूपमेव पच्चयो चेव पच्चयुप्पन्नं च, दुतिये रूपमेव, ततिये नामरूपं, चतुत्थे पच्चयो अरूपं, पच्चयुप्पन्नं रूपं; पञ्चमे पच्चयो पि पच्चयुप्पन्नम्पि रूपमेव; छट्ठे पच्चयो रूपं, पच्चयुप्पन्नं अरूपं ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन सहजातपच्चयो जातिवसेन कुसलो अकुसलो विपाको
B. 366 किरियं रूपं ति पञ्चधा भिज्जति। तत्थ कुसलो भूमितो चतुब्बिधो होति, अकुसलो एकविधो व, विपाको चतुब्बिधो, किरियसङ्खातो तिविधो, रूपं एकविधं कामावचरमेवा ति एवं तावेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमकं पि कुसलं पञ्चवोकारभवे अत्तना सम्पयुत्तधम्मानञ्चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सहजातपच्चयो होति, तथा अकुसलं। यं पनेत्थ अरूपे उप्पज्जति, तं अरूपधम्मानं येव सहजातपच्चयो होति।

कामावचररूपावचरविपाकं चित्तसमुट्ठानरूपस्स चेव सम्पयुत्तधम्मानं च सहजातपच्चयो होति। यं पनेत्थ रूपं न समुट्ठापेति, तं सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव। यं पटिसन्धियं उप्पज्जति, तं कटत्तारूपानं चा पि सहजातपच्चयो होति। अरूपावचरविपाकं सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव। लोकुत्तरविपाकं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानञ्चेव चित्तसमुट्ठानरूपानञ्च, चतुवोकारे अरूपानञ्ञेव। कामावचरअरूपावचरकिरिया पञ्चवोकारे सम्पयुत्तकानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च सहजातपच्चयो होति, चतुवोकारे अरूपानञ्ञेव। रूपावचरकिरिया सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च एकन्तेन सहजातपच्चयो होति।

चतुसमुट्ठानिकस्स रूपस्स कम्मसमुट्ठानरूपे एकं महाभूतं तिण्णं, तीणि एकस्स, द्वे द्विन्नं महाभूतानं, महाभूता उपादारूपस्स सहजातपच्चयेन पच्चयो। कामावचररूपावचरपटिसन्धिक्खणे वत्थुरूपं विपाकक्खन्धानं सहजातपच्चयेन पच्चयो। उतुचित्ताहारसमुट्ठानेसु पन महाभूतानि अञ्ञमञ्ञं चेव उपादारूपस्स च सहजातपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

सहजातपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता।

(७) अञ्ञमञ्ञपच्चयनिद्देसवण्णना

७. अञ्ञमञ्ञपच्चयनिद्देसे सहजातपच्चयनिद्देसस्स पुरिमानं तिण्णं कोट्ठासानं वसेन पाळि आगता। तस्सा तत्थ वुत्तसदिसा व वण्णना ति पुन न गहिता। अयं पि च अञ्ञमञ्ञपच्चयो जातिवसेन कुसलो अकुसलो विपाको किरियं रूपं ति पञ्चधा भिन्नो। तत्थ कुसलो भूमितो चतुब्बिधो। सब्बं पुरिमसदिसमेवा ति एवमेत्थ नानप्पकार- B. 367
भेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ सब्बं पि चतुभूमकं कुसलं अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। तथा अकुसलं। विपाके पन कामावचररूपावचरविपाकं पटिसन्धियं वत्थुरूपस्स, पवत्ते सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव। अरूपावचरलोकुत्तरविपाकं अत्तना सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। सब्बं पि किरियं सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। चतुसमुट्ठानिकरूपस्स कम्मसमुट्ठाने एकं महाभूतं तिण्णं, तीणि एकस्स, द्वे द्विन्नं महाभूतानं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। कामावचररूपावचरपटिसन्धियं वत्थुरूपं विपाकक्खन्धानं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो। उतुचित्ताहारसमुट्ठानेसु महाभूतानेव महाभूतानं अञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

अञ्ञमञ्ञपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(८) निस्सयपच्चयनिद्देसवण्णना

८. निस्सयपच्चयनिद्देसे सहजातपच्चयनिद्देसस्स पुरिमानं पञ्चन्नं कोट्ठासानं वसेन सहजातनिस्सयनयं दस्सेत्वा पुन छट्ठेन कोट्ठासेन पुरेजातनिस्सयनयं दस्सेतुं **चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया** (प. १.७) ति आदि आरद्धं। तत्थ **यं रूपं निस्साया** ति वत्थुरूपं सन्धाय वुत्तं। तञ्हि निस्साय तिविधा मनोधातु, ठपेत्वा अरूपविपाकं द्वासत्ततिविधा मनोविञ्ञाणधातू ति इमानि पञ्चसत्तति चित्तानि वत्तन्ती ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयम्पि निस्सयपच्चयो जातिवसेन कुसलादिभेदता पञ्चधा व भिज्जति। तत्थ कुसलो भूमितो चतुब्बिधो व, अकुसलो एकविधो विपाको चतुब्बिधो, किरियसङ्खातो तिविधो, रूपं एकविधमेवा ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमकं पि कुसलं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च निस्सयपच्चयेन पच्चयो होति। तथा
B. 368 अकुसलं। यं पनेत्थ आरुप्पे उप्पज्जति, तं अरूपधम्मानञ्ञेव निस्सयपच्चयो होति।

कामावचररूपावचरविपाकं पवत्ते सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, पटिसन्धियं कटत्तारूपस्सा पि निस्सयपच्चयो होति। अरूपावचरविपाकं सम्पयुत्तक्खन्धानं[1] येव होति। लोकुत्तरविपाकं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तकानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, चतुवोकारे अरूपस्सेव निस्सयपच्चयो होति। कामावचरअरूपावचरकिरिया पञ्चवोकारे सम्पयुत्तकानञ्चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च निस्सयपच्चयो होति, चतुवोकारे अरूपानञ्ञेव। रूपावचरकिरिया पञ्चवोकारे[2] सम्पयुत्तकानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च एकन्तेन निस्सयपच्चयो होति।

---

१. सम्पयुत्तधम्मानं स्या.।

२. म. पोत्थके नत्थि।

चतुसमुट्ठानिकरूपस्स च कम्मसमुट्ठानरूपे एकं महाभूतं तिण्णं, तीणि एकस्स, द्वे द्विन्नं महाभूतानं, महाभूता उपादारूपानं, वत्थुरूपं पञ्चवोकारभवे चतुभूमककुसलस्स, अकुसलस्स, ठपेत्वा आरुप्पविपाकं चेव द्वे पञ्चविञ्ञाणानि च सेसतेभूमकविपाकस्स, तेभूमककिरियस्सा ति इमेसं चतुन्नं धम्मरासीनं निस्सयपच्चयो होति। चक्खायतनादीनि पञ्च ससम्पयुत्तानं चक्खुविञ्ञाणादीनं निस्सयपच्चयो होति। उतुचित्ताहारसमुट्ठानेसु पन महाभूता महाभूतानं चेव उपादारूपस्स च निस्सयपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

निस्सयपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(९) उपनिस्सयपच्चयनिद्देसवण्णना

९. उपनिस्सयपच्चयनिद्देसे **पुरिमा पुरिमा** ति अनन्तरूपनिस्सये समनन्तरातीता लब्भन्ति, आरम्मणूपनिस्सयपकतूपनिस्सयेसु नानावीथिवसेन पुरिमतरा। ते तयो पि रासयो कुसलवसेन[1] कुसलपदे लब्भन्ति, कुसलेन पन अकुसले समनन्तरातीता न लब्भन्ति। तेनेव वुत्तं "अकुसलानं धम्मानं केसंचि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति।

इदं हि—"कुसलो धम्मो अकुसलस्स धम्मस्स उपनिस्सयपच्चयेन B. 369
पच्चयो; आरम्मणूपनिस्सयो पकतूपनिस्सयो। आरम्मणूपनिस्सयो—दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा तं गरुं कत्वा अस्सादेति अभिनन्दति, तं गरुं कत्वा रागो उप्पज्जति, दिट्ठि उप्पज्जति, पुब्बे सुचिण्णानि गरुं कत्वा अस्सादेति अभिनन्दति, तं गरुं कत्वा रागो उप्पज्जति, दिट्ठि उप्पज्जति। झाना वुट्ठहित्वा झानं गरुं कत्वा अस्सादेति अभिनन्दति, तं गरुं कत्वा रागो उप्पज्जति दिट्ठि उप्पज्जति। पकतूपनिस्सयो—सद्धं उपनिस्साय मानं जप्पेति, दिट्ठिं गण्हाति। सीलं सुतं चागं पञ्ञं उपनिस्साय मानं जप्पेति, दिट्ठिं गण्हाति। सद्धा सीलं सुतं चागो पञ्ञा रागस्स दोसस्स मोहस्स

१. कुसलपदेव स्या.।

मानस्स दिट्ठिया पत्थनाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति इमं नयं सन्धाय वुत्तं। कुसलेन अब्याकते तयो पि लब्भन्ति, तथा अकुसलेन अकुसले।

अकुसलेन पन कुसले समनन्तरातीता न लब्भन्ति। तेन वुत्तं— "कुसलानं धम्मानं केसंचि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति।

इदं पि हि—"अकुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पकतूपनिस्सयो—रागं उपनिस्साय दानं देति, सीलं समादियति, उपोसथकम्मं करोति, झानं उप्पादेति, विपस्सनं उप्पादेति, मग्गं उप्पादेति, अभिञ्ञं उप्पादेति, समापत्तिं उप्पादेति; दोसं मोहं मानं दिट्ठिं पत्थनं उपनिस्साय दानं देति...पे०...समापत्तिं उप्पादेति। रागो दोसो मोहो मानो दिट्ठि पत्थना सद्धाय सीलस्स सुतस्स चागस्स पञ्ञाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो। पाणं हन्त्वा तस्स पटिघातत्थाय दानं देती" ति आदिना नयेन पञ्हावारे आगतं पकतूपनिस्सयमेव सन्धाय वुत्तं।

अकुसलं पन कुसलस्स आरम्मणूपनिस्सयो न होति। कस्मा? तं गरुं कत्वा तस्स अप्पवत्तनतो ति यथा अनन्तरूपनिस्सयो, एवं आरम्मणूपनिस्सयो पेत्थ न लब्भती ति वेदितब्बो। अकुसलेन अब्याकतपदे आरम्मणूपनिस्सयो व न लब्भति। न हि अब्याकता धम्मा अकुसलं गरुं करोन्ति। यस्मा पन अनन्तरता लब्भति, तस्मा एत्थ "केसञ्ची" ति न वुत्तं। अब्याकतेन पन अब्याकते कुसले अकुसले ति तीसु नयेसु तयो पि उपनिस्सया लब्भन्तेव।

पुग्गलो पि सेनासनं पी ति इदं द्वयं पकतूपनिस्सयवसेन वुत्तं। इदं
B. 370 हि द्वयं कुसलाकुसलप्पवत्तिया बलवपच्चयो होति। पच्चयभावो चस्स पनेत्थ परियायवसेन वेदितब्बो ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन उपनिस्सयपच्चयो नाम सद्धिं एकच्चाय पञ्ञत्तिया सब्बे पि चतुभूमकधम्मा। विभागतो पन आरम्मणूपनिस्सयादिवसेन तिविधो होति। तत्थ आरम्मणूपनिस्सयो आरम्मणाधिपतिना निन्नानाकरणो

ति हेट्ठा वुत्तनयेनेव नानप्पकारभेदतो गहेतब्बो। अनन्तरूपनिस्सयो अनन्तरपच्चयेन निन्नानाकरणो, सो पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव नानप्पकारभेदतो वेदितब्बो। पच्चयुप्पन्नतो पि नेसं तत्थ वुत्तनयेनेव विनिच्छयो वेदितब्बो।

पकतूपनिस्सयो पन जातिवसेन कुसलाकुसलविपाककिरियरूपभेदतो पञ्चविधो होति, कुसलादीनं पन भूमिभेदतो अनेकविधो ति एवं तावेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ तेभूमककुसलो चतुभूमकस्सा पि कुसलस्स अकुसलस्स विपाककिरियस्सा ति चतुन्नं रासीनं पकतूपनिस्सयो होति। लोकुत्तरो अकुसलस्सेव न होति। अम्हाकं आचरियेन "लोकुत्तरधम्मो निब्बत्तितो" ति इमिना पन नयेन अञ्ञेसं अकुसलस्सा पि होति। यस्स वा उप्पज्जिस्सति, तस्सा पि अनुत्तरेसु विमोक्खेसु पिहं उपट्ठापयतो[1] ति इमिना नयेन होति येव। अकुसलो सब्बेसं पि चतुभूमकानं खन्धानं पकतूपनिस्सयो होति, तथा तेभूमकविपाको। लोकुत्तरविपाके हेट्ठिमानि तीणि फलानि अकुसलस्सेव न होन्ति, उपरिट्ठिमं कुसलस्सा पि। पुरिमनयेन पन अञ्ञेसं वा यस्स वा उप्पज्जिस्सति, तस्स सन्ताने सब्बो पि लोकुत्तरविपाको सब्बेसं कुसलादीनं अरूपक्खन्धानं पकतूपनिस्सयो होति। किरियसङ्खातो पि पकतूपनिस्सयो चतुभूमकानं अकुसलादिखन्धानं होति येव, तथा रूपसङ्खातो। सयं पन रूपं इमस्मिं पट्ठानमहापकरणे आगतनयेन उपनिस्सयपच्चयं न लभति, सुत्तन्तिकपरियायेन पन लभती ति वत्तुं वट्टति। एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

उपनिस्सयपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१०) पुरेजातपच्चयनिद्देसवण्णना

१०. पुरेजातपच्चयनिद्देसे **पुरेजातपच्चयेन पच्चयो** (प. १.८) ति B. 371
एत्थ पुरेजातं नाम यस्स पच्चयो होति, ततो पुरिमतरं जातं जाति-

---

१. म. पोत्थके नत्थि.।

क्खणं अतिक्कमित्वा ठितिक्खणप्पत्तं । **चक्खायतनं** ति आदि वत्थुपुरेजातवसेन वुत्तं । **रूपायतनं** ति आदि आरम्मणपुरेजातवसेन । **किञ्चि काले पुरेजातपच्चयेना** ति पवत्तिं सन्धाय वुत्तं । **किञ्चि काले न पुरेजातपच्चयेना** ति पटिसन्धिं सन्धाय वुत्तं । एवं सब्बथा पि पञ्चद्वारे वत्थारम्मणवसेन, मनोद्वारे वत्थुवसेनेवायं पाळि आगता, पञ्हावारे पन "आरम्मणपुरेजातं—सेक्खा वा पुथुज्जना वा चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सन्ती" ति आगतत्ता मनोद्वारे पि आरम्मणपुरेजातं लब्भतेव । इध पन सावसेसवसेन देसना कता ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना ।

अयं पन पुरेजातपच्चयो सुद्धरूपमेव होति । तं च खो उप्पादक्खणं अतिक्कमित्वा ठितिप्पत्तं अट्ठारसविधं रूपरूपमेव । तं सब्बं पि वत्थुपुरेजातं आरम्मणपुरेजातं ति द्विधा ठितं । तत्थ चक्खायतनं ···पे०···कायायतनं वत्थुरूपं ति इदं वत्थुपुरेजातं नाम । सेसं इमाय पाळिया आगतं च अनागतं च वण्णो सद्दो गन्धो रसो चतस्सो धातुयो तीणि इन्द्रियाणि कवळीकारो आहारो ति द्वादसविधं रूपं आरम्मणपुरेजातपच्चयो नामा ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

एवं भिन्ने पनेत्थ चक्खायतनं द्विन्नं चक्खुविञ्ञाणानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो, तथा इतरानि चत्तारि सोतविञ्ञाणादीनं । वत्थुरूपं पन ठपेत्वा द्विपञ्चविञ्ञाणानि चत्तारो च आरूप्पविपाके सेसानं सब्बेसं पि चतुभूमकानं कुसलाकुसलाब्याकतानं चित्तचेतसिकानं पुरेजातपच्चयो होति । रूपादीनि पन पञ्चारम्मणानि द्विपञ्चविञ्ञाणानञ्चेव मनोधातूनञ्च एकन्तेनेव पुरेजातपच्चया होन्ति । अट्ठारसविधं पि पनेतं रूपरूपं कामावचरकुसलस्स रूपावचरतो अभिञ्ञाकुसलस्स अकुसलस्स तदारम्मणभाविनो कामावचरविपाकस्स कामावचरकिरि-
B. 372 यस्स रूपावचरतो अभिञ्ञाक्रियस्सा ति इमेसं छन्नं रासीनं पुरेजातपच्चयो होती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति ।

पुरेजातपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(११) पच्छाजातपच्चयनिद्देसवण्णना

११. पच्छाजातपच्चयनिद्देसे **पच्छाजाता** ति यस्स कायस्स पच्चया होन्ति, तस्मिं उप्पज्जित्वा ठिते जाता। **पुरेजातस्सा** (प.१.८) ति तेसं उप्पादतो पठमतरं जातस्स जातिक्खणं अतिक्कमित्वा ठितिप्पत्तस्स। **इमस्स कायस्सा** ति इमस्स चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिकभूतउपादारूपसङ्खातस्स कायस्स। एत्थ च तिसमुट्ठानिककायो ति आहारसमुट्ठानस्स अभावतो ब्रह्मपारिसज्जादीनं कायो वेदितब्बो। अयमेत्थ पाळिवण्णना। अयं पन पच्छाजातपच्चयो नाम सङ्खेपतो ठपेत्वा आरुप्पविपाके अवसेसा चतुभूमका अरूपक्खन्धा। सो जातिवसेन कुसलाकुसलविपाककिरियभेदेन चतुधा भिज्जती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ पञ्चवोकारभवे उप्पन्नं चतुभूमककुसलं च अकुसलं च उप्पादक्खणं अतिक्कमित्वा ठितिप्पत्तस्स चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिकरूपकायस्स पच्छाजातपच्चयो होति। विपाके पि ठपेत्वा पटिसन्धिविपाकं अवसेसो कामावचररूपावचरविपाको तस्सेव एकन्तेन पच्छाजातापच्चयो होति। लोकुत्तरो पि पञ्चवोकारे उप्पन्नविपाको तस्सेव पच्छाजातपच्चयो होति। तेभूमककिरिया पि पञ्चवोकारे उप्पन्ना व वुत्तप्पकारस्स कायस्स पच्छाजातपच्चयो होती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

पच्छाजातपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१२) आसेवनपच्चयनिद्देसवण्णना

१२. आसेवनपच्चयनिद्देसे **पुरिमा पुरिमा** (प.१.८) ति सब्बनयेसु समनन्तरातीता व दट्ठब्बा। कस्मा पनेत्थ अनन्तरपच्चये विय "पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं अब्याकतानं धम्मानं" ति आदिना नयेन भिन्नजातिकेहि सद्धिं निद्देसो न कतो ति ? अत्तनो गतिं गाहापेतुं असमत्थताय। भिन्नजातिका हि भिन्नजातिकानं अरूपधम्मानं[1] आसेवनगुणेन पगुणबलवभावं साधयमाना अत्तनो कुसलादिभावसङ्खातं B 373

१. स्या. पोत्थके नत्थि।

गतिं गाहापेतुं न सक्कोन्ति। तस्मा तेहि सद्धिं निद्देसं अकत्वा ये येसं वासना सङ्खातेन आसेवनेन पगुणतरबलवतरभावविसिट्ठं अत्तनो कुसलादिभावसङ्खातं गतिं गाहापेतुं सक्कोन्ति, तेसं तेहि समानजातिकेहेव सद्धिं निद्देसो कतो ति वेदितब्बो।

अथ विपाकाब्याकतं कस्मा न गहितं ति? आसेवनाभावेन। विपाकं हि कम्मवसेन विपाकभावप्पत्तं कम्मपरिणामितं हुत्वा वत्तति निरुस्साहं दुब्बलं ति[1] तं आसेवनगुणेन अत्तनो सभावं गाहापेत्वा परिभावेत्वा नेव अञ्ञं विपाकं उप्पादेतुं सक्कोति, न पुरिमविपाकानुभावं गहेत्वा उप्पज्जितुं ति। कम्मवेगक्खित्तं पन पतितं विय हुत्वा उप्पज्जती ति सब्बथा पि विपाके आसेवनं नत्थी ति आसेवनाभावेन विपाकं न गहितं। कुसलाकुसलकिरियानन्तरं उप्पज्जमानं पि चेतं कम्मपटिबद्धवुत्तिताय आसेवनगुणं न गण्हाती ति कुसलादयो पिस्स आसेवनपच्चया न होन्ति। अपि च नानाजातिकत्तापेते न होन्ति येव।

भूमितो पन आरम्मणतो वा नानाजातिकत्तं नाम नत्थि। तस्मा कामावचरकुसलकिरियमहग्गतकुसलकिरियानं पि, सङ्खारारम्मणं च अनुलोमकुसलं निब्बानारम्मणस्स गोत्रभूकुसलस्स आसेवनपच्चयो होति येवा ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन आसेवनपच्चयो जातितो ताव कुसलो अकुसलो किरियाब्याकतो ति तिधा ठितो। तत्थ कुसलो भूमितो कामावचरो रूपावचरो अरूपावचरो ति तिविधो होति, अकुसलो कामावचरो व, किरियाब्याकतो कामावचरो रूपावचरो अरूपावचरो ति तिविधो व, लोकुत्तरो आसेवनपच्चयो नाम नत्थी ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ कामावचरकुसलं अत्तनो अनन्तरस्स कामावचरकुसलस्सेव। यं पनेत्थ ञाणसम्पयुत्तं, तं अत्तना सदिसवेदनस्स रूपावचर-

१. स्या. पोत्थके नत्थि।

कुसलस्स अरूपावचरकुसलस्स लोकुत्तरकुसलस्सा ति इमेसं रासीनं B. 374
आसेवनपच्चयो होति। रूपावचरकुसलं पन रूपावचरकुसलस्सेव। अरूपावचरकुसलं अरूपावचरकुसलस्सेव। अकुसलं पन अकुसलस्सेव आसेवनपच्चयो होति। किरियतो पन कामावचरकिरियसङ्खातो ताव कामावचरकिरियस्सेव। यो पनेत्थ ञाणसम्पयुत्तो, सो अत्तना सदिसवेदनस्स रूपावचरकिरियस्स अरूपावचरकिरियस्सा ति इमेसं रासीनं आसेवनपच्चयो होति। रूपावचरकिरियसङ्खातो पन रूपावचरकिरियस्सेव, अरूपावचरकिरियसङ्खातो अरूपावचरकिरियस्सेव आसेवनपच्चयो होति। विपाको पन एकधम्मस्सा पि एकधम्मो पि वा कोचि विपाकस्स आसेवनपच्चयो नत्थी ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

आसेवनपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१३) कम्मपच्चयनिद्देसवण्णना

१३. कम्मपच्चयनिद्देसे **कम्मं** ति चेतनाकम्ममेव। **कटत्ता च रूपानं** (प. १.६) ति कम्मस्स कटत्ता उप्पन्नरूपानं। **कम्मपच्चयेना** ति अनेकानं पि कप्पकोटीनं मत्थके अत्तनो फलं उप्पादेतुं समत्थेन नानाक्खणिककम्मपच्चयेना ति अत्थो। कुसलाकुसलं हि कम्मं अत्तनो पवत्तिक्खणे फलं न देति। यदि फलं[1] ददेय्य, यं मनुस्सो देवलोकूपगं कुसलकम्मं करोति, तस्सानुभावेन तस्मिं येव खणे देवो भवेय्य।

यस्मिं पन खणे तं कतं, ततो अञ्ञस्मिं खणे अविज्जमानं पि केवलं कटत्ता येव दिट्ठेव धम्मे उपपज्जे वा अपरे वा परियाये अवसेसपच्चयसमायोगे सति फलं उप्पादेति निरुद्धा पि पुरिमसिप्पादिकिरिया विय कालन्तरे पच्छिमसिप्पादिकिरियाय। तस्मा नानाक्खणिककम्मपच्चयो ति वुच्चति।

चेतनासम्पयुत्तकानं धम्मानं ति या काचि चेतना अत्तना सम्पयुत्तकानं धम्मानं। **तं समुट्ठानानं** ति इमिना पटिसन्धिक्खणे

---

१. स्या. पोत्थके नत्थि।

कटत्तारूपं पि गण्हाति। **कम्मपच्चयेना** ति इदं सहजातचेतनं सन्धाय वुत्तं। कुसलादीसु हि या काचि सहजात[२]-चेतना सेसधम्मानं B. 375 चित्तपयोगसङ्खातेन किरियाभावेन उपकारिका होति। तस्मा सहजातकम्मपच्चयो ति वुच्चति। अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन कम्मपच्चयो अत्थतो चतुभूमिकचेतनामत्तमेव। सो हि जातिभेदतो कुसलो अकुसलो विपाको किरिया ति चतुधा भिज्जति। तत्थ कुसलो भूमितो कामावचरादिवसेन चतुधा भिज्जति। अकुसलो एकधा व, विपाको चतुधा, किरिया तिधा वा ति एवमेत्थ नानप्पकार-भेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ सहजाता कामावचरकुसलचेतना पञ्चवोकारे अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, चतुवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव सहजातकम्मपच्चयो होति। उप्पज्जित्वा निरुद्धा पन अत्तनो विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं नानक्खणिक-कम्मपच्चयेन पच्चयो होति। सा च खो पञ्चवोकारे येव, न अञ्ञत्थ। सहजाता रूपावचरकुसलचेतना अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च एकन्तेनेव सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो। उप्पज्जित्वा निरुद्धा पन अत्तनो विपाकानं चेव कटत्तारूपानं च नानाक्खणिककम्मपच्चयेन पच्चयो। अरूपावचरा पन लोकुत्तरा च सहजाता कुसलचेतना पञ्चवोकारे अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्त-समुट्ठानरूपानं च, चतुवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव सहजातकम्म-पच्चयेन पच्चयो।

उप्पज्जित्वा निरुद्धा पनेसा दुविधा पि अत्तनो अत्तनो विपाक-क्खन्धानञ्ञेव नानाक्खणिककम्मपच्चयेन पच्चयो। सहजाता अकुसल-चेतना पञ्चवोकारे अत्तना सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपानं च चतुवोकारे अरूपक्खन्धानञ्ञेव सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो। उप्पज्जित्वा निरुद्धा पन विपाकक्खन्धानं चेव कटत्ता रूपानं च नानाक्खणिककम्मपच्चयेन पच्चयो।

२. म. पोत्थके नत्थि।

कामावचररूपावचरतो विपाकचेतना अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपानं, पटिसन्धियं कटत्ता रूपानं च सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो । अरूपावचरविपाकचेतना अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो । लोकुत्तरविपाकचेतना पञ्चवोकारे अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, चतुवोकारे अरूपस्सेव सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो । तेभूमिकाकिरियचेतना पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सहजात- B 376
कम्मपच्चयेन पच्चयो । या पनेत्थ आरुप्पे उप्पज्जति, सा अरूपधम्मानञ्ञेव[1] सहजातकम्मपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति ।

कम्मपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१४) विपाकपच्चयनिद्देसवण्णना

१४. विपाकपच्चयनिद्देसे **विपाका चत्तारो खन्धा** (प. १. ६) ति यस्मा कम्मसमुट्ठाना पि रूपा विपाका न होन्ति, तस्मा "विपाका" ति वत्वा "चत्तारो खन्धा" ति वुत्तं । एवं अयं पाळि अरूपधम्मानञ्ञेव विपाकपच्चयवसेन आगता । पञ्हावारे पन "विपाकाब्याकतो एको खन्धो तिण्णं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानं च रूपानं विपाकपच्चयेन पच्चयो । पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतो एको खन्धो तिण्णन्नं खन्धानं कटत्ता च रूपानं विपाकपच्चयेन पच्चयो" ति आगतत्ता चित्तसमुट्ठान-कम्मसमुट्ठानरूपानं पि विपाकपच्चयो लब्भति । इध पन सावसेसवसेन देसना कता ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना ।

अयं पन विपाकपच्चयो विपाकभावेन जातितो एकविधो, भूमिभेदतो कामावचरादिवसेन चतुधा भिज्जती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

एवं भिन्ने पनेत्थ कामावचररूपावचरविपाको अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं[2] पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपानं पटिसन्धियं कटत्तारूपानं च

१. अरूपानञ्ञेव स्या. । २. सम्पयुत्तक्खन्धानं स्या. ।

विपाकपच्चयो होति। अरूपावचरविपाको सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव। लोकुत्तरविपाको पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, चतुवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव[1] विपाकपच्चयो होती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

विपाकपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१५) आहारपच्चयनिद्देसवण्णना

B, 377 १५. आहारपच्चयनिद्देसे **कवळीकारो आहारो** ति चतुसन्ततिसमुट्ठाने रूपे ओजा आहारो नाम। सो पन यस्मा कवळं करित्वा अज्झोहरितो व आहारकिच्चं करोति, न बहि ठितो, तस्मा आहारो ति अवत्वा "कवळीकारो आहारो" ति वुत्तं। कवळं करित्वा अज्झोहरितब्बवत्थुकत्ता वा कवळीकारो ति नाममेतं[2] तस्स।

अरूपिनो आहारा (प. १. ६) ति फस्सचेतनाविञ्ञाणाहारा। **तं समुट्ठानानं** ति इधा पि कम्मसमुट्ठानानि गहितानेव। वुत्तं हेतं पञ्हावारे— पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता आहारा सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं आहारपच्चयेन पच्चयो ति। अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन आहारपच्चयो सङ्खेपतो कवळीकारो आहारो, फस्सो, चेतना, विञ्ञाणं ति चत्तारो व धम्मा होन्ति। तत्थ ठपेत्वा कवळीकाराहारं सेसा तयो अरूपाहारा जातिवसेन कुसलाकुसलविपाककिरियभेदतो चतुधा भिज्जन्ति। पुन भूमिभेदेन कुसलो चतुधा, अकुसलो एकधा, विपाको चतुधा, किरिया तिधा ति एवं अनेकधा भिज्जन्ति। कवळीकाराहारो पन जातितो अब्याकतो, भूमितो कामावचरो वा ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

---

१. सम्पयुत्तधम्मानं स्या.।

२. नाममत्तमेवेतं स्या.।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमिका पि तयो कुसलाहारा पञ्चवोकारे अत्तना सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च आहारपच्चयेन पच्चयो, ठपेत्वा पन रूपावचरं अवसेसा आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव आहारपच्चयेन पच्चयो। अकुसलाहारेसु पि एसेव नयो। चतुभूमक-विपाकाहारा पन सब्बत्थ सम्पयुत्तकानं आहारपच्चया होन्ति। कामावचररूपावचरविपाका पनेत्थ पञ्चवोकारे उप्पज्जमाना पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपस्स पटिसन्धियं कटत्तारूपस्सा पि आहारपच्चया होन्ति।

लोकुत्तरा पन चित्तसमुट्ठानरूपस्सेव, आरुप्पे उप्पन्ना रूपस्स पच्चयो न होन्ति। तेभूमका पि तयो किरियाहारा पञ्चवोकारे सम्पयुत्त-धम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, कामावचरारूपावचरा पन आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव आहारपच्चयेन पच्चयो। चतुसन्तति समुट्ठानो B. 378
कवळीकाराहारो किञ्चा पि "इमस्स कायस्सा" ति अविसेसतो वुत्तो, विसेसतो पनायमेत्थ आहारसमुट्ठानरूपस्स जनको चेव अनुपालको च हुत्वा आहारपच्चयेन पच्चयो होति, सेसतिसन्ततिसमुट्ठानस्स अनुपालको व हुत्वा आहारपच्चयेन पच्चयो होती ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

आहारपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१६) इन्द्रियपच्चयनिद्देसवण्णना

१६. इन्द्रियपच्चयनिद्देसे **चक्खुन्द्रियं** ति चक्खुसङ्खातं इन्द्रियं। **इन्द्रियपच्चयेना** (प. १. ९) ति सयं पुरेजातो हुत्वा अरूपधम्मानं उप्पादतो पट्ठाय याव भङ्गा इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो होति। सोतिन्द्रिया-दीसु पि एसेव नयो। **अरूपिनो इन्द्रिया** ति एत्थ अरूपजीवितिन्द्रियं पि सङ्गहितं। **तं समुट्ठानानं** ति एत्थ हेट्ठा वुत्तनयेनेव कटत्ता रूपं पि सङ्गहितं।

वुत्तं हेतं पञ्हावारे पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो ति। एवं तावेत्थ पाळिवण्णना वेदितब्बा।

अयं पन इन्द्रियपच्चयो इत्थिन्द्रिय-पुरिसिन्द्रियवज्जानं समवीसतिया इन्द्रियानं वसेन ठितो । इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियानि हि किञ्चा पि इत्थिलिङ्गपुरिसलिङ्गादीनं बीजभूतानि, कललादिकाले पन विज्जमानेसु पि तेसु इत्थिलिङ्गपुरिसलिङ्गादीनं अभावा तानि नेव तेसं, न अञ्ञेसं इन्द्रियपच्चयतं फरन्ति । इन्द्रियपच्चयो हि अत्तनो विज्जमानक्खणे अविनिब्भुत्तधम्मानं इन्द्रियपच्चयतं अफरन्तो नाम नत्थि, तस्मा तानि इन्द्रियपच्चया न होन्ति । येसं पनेतानि बीजभूतानि, तेसं तानि सुत्तन्तिकपरियायेन पकतूपनिस्सयभावं भजन्ति । इति इन्द्रियपच्चयो समवीसतिया इन्द्रियानं वसेन ठितो ति वेदितब्बो ।

सो जातितो कुसलाकुसलविपाककिरियरूपवसेन पञ्चधा भिज्जति । तत्थ कुसलो भूमिवसेन चतुधा, अकुसलो कामावचरो व, विपाको चतुधा व, किरियासङ्खातो तिधा, रूपं कामावचरमेवा ति एवं अनेकधा भिज्जती ति एवं तावेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

B. 379 एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमको पि कुसलिन्द्रियपच्चयो पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो, तथा अकुसलो । ठपेत्वा पन रूपावचरकुसलं अवसेसा कुसलाकुसला आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो । चतुभूमको विपाकिन्द्रियपच्चयो एकन्तेनेव सम्पयुत्तकानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो । कामावचररूपावचरा पनेत्थ पञ्चवोकारे उप्पज्जनतो पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपस्स, पटिसन्धियं कटत्तारूपस्सा पि इन्द्रियपच्चयेन पच्चया होन्ति । लोकुत्तरा चित्तसमुट्ठानरूपस्सेव । आरुप्पे उप्पन्ना लोकुत्तरविपाका इन्द्रियारूपस्स पच्चया न होन्ति ।

तेभूमका किरियिन्द्रिया पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, कामावचरा रूपावचरा पन आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव इन्द्रियपच्चयतं फरन्ति । चक्खुन्द्रियादिवसेन छब्बिधे रूपिन्द्रिये चक्खुन्द्रियं कुसलाकुसलविपाकतो सम्पयुत्तधम्मानं द्विन्नं चक्खुविञ्ञाणानं, सोतिन्द्रियादीनि तथाविधानञ्ञेव सोतविञ्ञाणादीनं, रूप-

जीवितिन्द्रियं अत्तना सहजातरूपानं ठितिक्खणे इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो। सहजातपच्चयता पन तस्स नत्थी ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति ।

इन्द्रियपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१७) झानपच्चयनिद्देसवण्णना

१७. झानपच्चयनिद्देसे **झानङ्गानी** (प.१.६) ति द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जेसु सेसचित्तेसु उप्पन्नानि वितक्कविचारपीतिसोमनस्सदोमनस्सुपेक्खाचित्तेकग्गतासङ्खातानि सत्त अङ्गानि । पञ्चन्नं पन विञ्ञाणकायानं अभिनिपातमत्तत्ता तेसु विज्जमानानि पि उपेक्खासुखदुक्खानि उपनिज्झानाकारस्स अभावतो झानङ्गानी ति न उद्धटानि । तत्थ पच्छिन्नत्ता पन सेसा हेतुकेसु पि झानङ्गं न उद्धटमेव[1] । **तं समुट्ठानानं** ति इधा पि कटत्ता रूपं सङ्गहितं ति वेदितब्बं । वुत्तञ्हेतं पञ्हावारे– पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतानि झानङ्गानि सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो ति । अयं तावेत्थ पाळि- B. 380
वण्णना ।

अयं पन झानपच्चयो सत्तन्नं झानङ्गानं वसेन ठितो पि जातिभेदतो कुसलाकुसलविपाककिरियवसेन चतुधा भिज्जति, पुन भूमिवसेन चतुधा; एकधा, चतुधा, तिविधा ति द्वादसधा भिज्जती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमकं पि कुसलझानङ्गं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, ठपेत्वा रूपावचरं अवसेसं आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव झानपच्चयेन पच्चयो । अकुसले पि एसेव नयो । कामावचररूपावचरविपाकं पवत्ते सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, पटिसन्धियं सम्पयुत्तधम्मानं चेव कटत्तारूपस्स च, आरुप्प-

---

१. ० धम्मसङ्गहे इध पन उद्धटमेव स्या. पोत्थके अधिको पाठो ।

विपाकं सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव, यञ्च आरुप्पे लोकुत्तरविपाकं उप्पज्जति, तञ्च। पञ्चवोकारे पन तं चित्तसमुट्ठानरूपस्स पि झानपच्चयेन पच्चयो होति।

तेभूमिकं पि किरियझानङ्गं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च। यं पनेत्थ आरुप्पे उप्पज्जति, तं सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव झानपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

झानपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता।

(१८) मग्गपच्चयनिद्देसवण्णना

१८. मग्गपच्चयनिद्देसे **मग्गङ्गानी** ति अहेतुकचित्तुप्पादवज्जेसु सेसचित्तेसु उप्पन्नानि पञ्ञा, वितक्को, सम्मावाचाकम्मन्ताजीवा, विरियं, सति, समाधि, मिच्छादिट्ठि, मिच्छावाचाकम्मन्ताजीवा ति इमानि द्वादसङ्गानि। मग्गस्स पन हेतुपच्छिमकत्ता अहेतुकचित्तेसु मग्गङ्गानि न उद्धटानि। तं **समुट्ठानानं** (प. १.६) ति इधा पि कटत्तारूपं सङ्गहितमेव। वुत्तं हेतं पञ्हावारे—"पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकतानि मग्गङ्गानि सम्पयुत्तकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं मग्गपच्चयेन पच्चयो" ति। अयं तावेत्थ पाळिवण्णना।

अयं पन मग्गपच्चयो द्वादसन्नं मग्गङ्गानं वसेन ठितो पि जातिभेदतो कुसलादिवसेन चतुधा, कुसलादीनं च कामावचरादिभूमिभेदतो द्वादसधा भिज्जती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो
B. 381 विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमकं पि कुसलमग्गङ्गं पञ्चवोकारे सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, ठपेत्वा रूपावचरं अवसेसं आरुप्पे सम्पयुत्तधम्मानञ्ञेव मग्गपच्चयेन पच्चयो ति सब्बं झानपच्चये विय वित्थारेतब्बं ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

मग्गपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(१९) सम्पयुत्तपच्चयनिद्देसवण्णना

१९. सम्पयुत्तपच्चयनिद्देसे पाळिउत्तानत्था एव। अयं पन सम्पयुत्तपच्चयो नाम सङ्खेपतो सब्बे पि अरूपिनो खन्धा। पभेदतो पनेस जातितो कुसलादीनं, भूमितो च कामावचरादीनं वसेन अनेकधा भिज्जती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमकेसु पि कुसलक्खन्धेसु एको खन्धो तिण्णं खन्धानं, तयो एकस्स, द्वे द्विन्नं ति एवं सब्बे पि अञ्ञमञ्ञं सम्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। अकुसलविपाककिरियक्खन्धेसु पि एसेव नयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

सम्पयुत्तपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२०) विप्पयुत्तपच्चयनिद्देसवण्णना

२०. विप्पयुत्तपच्चयनिद्देसे **रूपिनो धम्मा अरूपीनं** (प. १.९) ति इदं ताव हदयवत्थुनो चेव चक्खुन्द्रियादीनं च वसेन वेदितब्बं। रूपधम्मेसु हि एते येव छ कोट्ठासा अरूपक्खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चया होन्ति। रूपायतनादयो पन आरम्मणधम्मा किञ्चा पि विप्पयुत्तधम्मा, विप्पयुत्तपच्चया पन न होन्ति। किं कारणा? सम्पयोगासङ्काय अभावतो। अरूपिनो हि खन्धा चक्खादीनं वत्थूनं अब्भन्तरतो निक्खमन्ता विय उप्पज्जन्ति। तत्थ आसङ्का होति—"किं नु खो एते एतेहि सम्पयुत्ता, उदाहु विप्पयुत्ता" ति। आरम्मणधम्मा पन वत्थुनिस्सयेन उप्पज्जमानानं आरम्मणमत्ता[1] होन्ती ति नत्थि तेसु सम्पयोगासङ्का। इति सम्पयोगासङ्काय अभावतो न ते विप्पयुत्त- B. 382
पच्चया। हदयवत्थु-आदीसु एव पनायं विप्पयुत्तपच्चयता वेदितब्बा। वुत्तं पि चेतं पञ्हावारे—वत्थु कुसलानं खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। वत्थु अकुसलानं खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणस्स विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। सोत०

---

१. ० मत्ताव स्या.।

घाण० जिव्हा० कायायतनं कायविञ्ञाणस्स विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। वत्थु विपाकाब्याकतानं किरियाब्याकतानं खन्धानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो ति।

अरूपिनो धम्मा रूपीनं ति इदं पन चतुन्नं खन्धानं वसेन वेदितब्बं। अरूपधम्मेसु हि चत्तारो खन्धा व सहजातपुरेजातानं रूपधम्मानं विप्पयुत्तपच्चया होन्ति, निब्बानं पन अरूपं पि समानं रूपस्स विप्पयुत्तपच्चयो न होति। "चतूहि सम्पयोगो चतूहि विप्पयोगो" ति हि वुत्तं। इति चतुन्नं अरूपक्खन्धानं येव विप्पयुत्तपच्चयता वेदितब्बा। वुत्तं पि चेतं पञ्हावारे – सहजाता कुसला खन्धा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। पच्छाजाता कुसला खन्धा पुरेजातस्स इमस्स कायस्स विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो। पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकता खन्धा कटत्तारूपानं विप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो, खन्धा वत्थुस्सा ति। एवं तावेत्थ पाळिवण्णना वेदितब्बा।

अयं पन विप्पयुत्तपच्चयो नाम सङ्खेपतो पञ्चवोकारभवे वत्तमाना रूपारूपधम्मा। तेसु रूपं वत्थुनो चक्खादीनं च वसेन छधा भिन्नं, अरूपं पञ्चवोकारभवे उप्पन्नकुसलाकुसलविपाककिरियवसेन चतुधा भिन्नं। तस्स भूमितो कामावचरादिवसेन चतुधा, एकधा, तिधा, तिधा ति एकदसधा भेदो होति। आरुप्पविपाकं हि विप्पयुत्तपच्चयो न होती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ पञ्चवोकारभवे उप्पन्नं चतुभूमकं पि कुसलं अकुसलं च अत्तना समुट्ठापितचित्तसमुट्ठानरूपस्स सहजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो होति। उप्पादक्खणं पन अतिक्कमित्वा ठितिक्खणं पत्तस्स पुरेजातस्स चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिकरूपकायस्स पच्छाजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो होति। एत्थ च तिसमुट्ठानिककायो ति आहारसमुट्ठानस्स अभावतो ब्रह्मपारिसज्जादीनं कायो वेदितब्बो।

कामावचररूपावचरविपाकं पन पवत्ते चित्तसमुट्ठानरूपस्स,
B. 383 पटिसन्धियं कटत्तारूपस्स च सहजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो होति।
लोकुत्तरविपाकं चित्तसमुट्ठानरूपस्सेव। तिविधं पि पनेतं पुरेजातस्स

चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो । तेभूमकं पि किरियं चित्तसमुट्ठानस्स सहजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो, पुरेजातस्स चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो । छधा ठितेसु पन रूपेसु वत्थुरूपं पटिसन्धिक्खणे कामावचररूपावचरविपाकानं सहजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो, पवत्ते उप्पज्जमानानं चतुभूमककुसलानं अकुसलानं द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जानं तेभूमकविपाकानं तेभूमककिरियानं च पुरेजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो । चक्खायतनादीनि चक्खुविञ्ञाणादीनं पुरेजातविप्पयुत्तपच्चयेन पच्चयो ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

विप्पयुत्तपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२१) अत्थिपच्चयवण्णना

२१. अत्थिपच्चयनिद्देसे **चत्तारो खन्धा** ति आदी हि सहजातवसेन अत्थिपच्चयो निद्दिट्ठो । **चक्खायतनं** ति आदी हि पुरेजातवसेन । **यं रूपं निस्साया** (प. १. १०) ति एत्थ सहजातपुरेजातवसेन अत्थिपच्चयो निद्दिट्ठो । एवमयं पाळि सहजातपुरेजातानं येव अत्थिपच्चयानं वसेन आगता । पञ्हावारे पन सहजातं, पुरेजातं, पच्छाजातं, आहारं, इन्द्रियं ति इमेसं वसेन आगतत्ता पच्छाजातआहारिन्द्रियवसेना पि अत्थिपच्चयो लब्भति । इध पन सावसेसवसेन देसना कता ति अयं तावेत्थ पाळिवण्णना ।

अयं पन अत्थिपच्चयो नाम दुविधो—अञ्ञमञ्ञतो, न अञ्ञमञ्ञतो । तत्थ अञ्ञमञ्ञं तिविधं—अरूपं अरूपेन, रूपं रूपेन, रूपारूपं रूपारूपेन । "चत्तारो खन्धा अरूपिनो" ति एत्थ हि सब्बचित्तुप्पत्तिवसेन अरूपं अरूपेन वुत्तं । "चत्तारो महाभूता" ति एत्थ सब्बसन्ततिवसेन रूपं रूपेन । "ओक्कन्तिक्खणे नामरूपं" ति एत्थ पटिसन्धिखन्धानं चेव वत्थुनो च वसेन रूपारूपं रूपारूपेन वुत्तं । न अञ्ञमञ्ञं पि तिविधं—"अरूपं रूपस्स, रूपं रूपस्स, रूपं अरूपस्स चित्तचेतसिका धम्मा" B. 384
ति एत्थ हि पञ्चवोकारवसेन अरूपं रूपस्स वुत्तं ।

"महाभूता उपादारूपानं" ति एत्थ सब्बसन्तसिवसेन रूपं रूपस्स। "चक्खायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया" ति आदीसु वत्थारम्मणवसेन रूपं अरूपस्स अत्थिपच्चयो ति वुत्तं। अपि चेस अत्थिपच्चयो नाम सङ्खेपतो खंणत्तयप्पत्तं नामं चेव रूपं च, वत्तमाना पञ्चक्खन्धा ति पि वत्तुं वट्टति। सो जातिभेदतो कुसलाकुसलविपाककिरियारूपवसेन पञ्चधा भिज्जति। तत्थ कुसलो जहजातपच्छाजातवसेन दुविधो होति, तथा अकुसलो विपाककिरियसङ्खातो च। तेसु कुसलो कामावचरादिभेदेन चतुधा भिज्जति, अकुसलो कामावचरो व, विपाको चतुभूमको, किरियसङ्खातो तिभूमको। रूपसङ्खातो अत्थिपच्चयो कामावचरो व। सो पन सहजातपुरेजातवसेन दुविधो। तत्थ पञ्चवत्थूनि आरम्मणानि च पुरेजातानेव, हदयवत्थु सहजातं वा होति पुरेजातं वा। पञ्हावारे पन आगतो आहारो इन्द्रियं च सहजातादिभेदं लभती ति एवमेत्थ नानप्पकारभेदतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एवं भिन्ने पनेत्थ चतुभूमककुसलो पि सहजातो अत्थिपच्चयो पञ्चवोकारे" एको खन्धो तिण्णं खन्धानं" ति आदिना नयेन अञ्ञमञ्ञं खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च ठपेत्वा पन रूपावचरकुसलं अवसेसो आरुप्पे सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव सहजातकुसलो अत्थिपच्चयेन पच्चयो होति। चतुभूमको पनेस पञ्चवोकारे चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातो कुसलो अत्थिपच्चयेन पच्चयो होति। अकुसले पि एसेव नयो। सो पि हि पञ्चवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च, चतुवोकारे सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव सहजाताकुसलो अत्थिपच्चयेन पच्चयो। पञ्चवोकारे चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजाताकुसलो अत्थिपच्चयेन पच्चयो।

विपाकतो पन कामावचररूपावचरो अत्थिपच्चयो नियमेनेव पटिसन्धिक्खणे खन्धानं चेव कटत्तारूपस्स च सहजातत्थिपच्चयेन
B. 385 पच्चयो। पवत्ते पन सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो, ठितिप्पत्तस्स चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठा-

निककायस्स पच्छाजातत्थिपच्चयेन पच्चयो। अरूपावचरविपाको पन आरुप्पे उप्पन्नलोकुत्तरविपाको च अत्तना सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो। पञ्चवोकारे लोकुत्तरविपाको सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो, चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातत्थिपच्चयेन पच्चयो। किरियतो रूपावचरो अत्थिपच्चयो सम्पयुत्तक्खन्धानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो, चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातत्थिपच्चयेन पच्चयो। कामावचरारूपावचरो पन आरुप्पे सम्पयुत्तक्खन्धानञ्ञेव, पञ्चवोकारे चित्तसमुट्ठानरूपस्सा पि सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो, चतुसमुट्ठानिकतिसमुट्ठानिककायस्स पच्छाजातत्थि पच्चयेन पच्चयो।

रूपसङ्खातो पन अत्थिपच्चयो सहजातो, पुरेजातो, आहारो, इन्द्रियं ति चतुब्बिधो। तत्थ सहजात-[1]रूपत्थिपच्चयो चतुसमुट्ठानवसेन चतुधा ठितो। तत्थ कम्मसमुट्ठानो एकं महाभूतं तिण्णं महाभूतानं, तीणि एकस्स, द्वे द्विन्नं, महाभूता उपादारूपानं ति एवं सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो होति। पटिसन्धिक्खणे वत्थुरूपं कामावचररूपावचरविपाकक्खन्धानं सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो होति। तेसं पि तिसमुट्ठानिकरूपं एकं महाभूतं तिण्णं महाभूतानं, तीणि एकस्स, द्वे द्विन्नं, महाभूता उपादारूपानं ति एवं सहजातत्थिपच्चयेन पच्चयो होति।

पुरेजातत्थिपच्चयो पन वत्थुपुरेजात-आरम्मणपुरेजातवसेन दुविधो होति। सो दुविधो पि हेट्ठा पुरेजातपच्चये वुत्तनयेनेव योजेत्वा गहेतब्बो। आहारत्थिपच्चयो पि हेट्ठा कवलीकाराहारपच्चये योजितनयेनेव योजेतब्बो। इध पनेस अत्तनो अनिरुद्धक्खणे पच्चयभावेन अत्थिपच्चयो ति वुत्तो। रूपजीवितिन्द्रियं पि हेट्ठा इन्द्रियपच्चये रूपजीवितिन्द्रिययोजनायं वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इध पनेतं पि

१. सहजातो स्या.।

अत्तनो अनिरुद्धक्खणे येव पच्चयभावेन अत्थिपच्चयो ति वुत्तं ति एवमेत्थ पच्चयुप्पन्नतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति ।

अत्थिपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२२) नत्थिपच्चयनिद्देसवण्णना

B. 386 २२. नत्थिपच्चयनिद्देसे **समनन्तरनिरुद्धा** ति अञ्ञेन चित्तुप्पादेन अनन्तरिका हुत्वा समनन्तरनिरुद्धा । **पटुप्पन्नानं** ति पच्चुप्पन्नानं । इमिना नत्थिपच्चयस्स ओकासदानट्ठेन नत्थिपच्चयभावं साधेति । पुरिमेसु हि निरोधवसेन पच्छिमानं पवत्तनोकासं अदेन्तेसु तेसं पटुप्पन्नभावो न सिया ति अयमेत्थ पाळिवण्णना ।

सेसं सब्बं अनन्तरपच्चये वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । पच्चयलक्खणमेव हेत्थ नानं, पच्चयानं पन पच्चयुप्पन्नानञ्च नानाकरणं नत्थि । केवलं पन तत्थ "चक्खुविञ्ञाणधातु तं सम्पयुत्तका च धम्मा मनोधातुया" ति आदिना नयेन पच्चया च पच्चयुप्पन्ना च सरूपतो दस्सिता । इध पन "समनन्तरनिरुद्धा चित्तचेतसिका धम्मा पटुप्पन्नानं चित्तचेतसिकानं धम्मानं" ति सब्बे पि ते निरोधुप्पादवसेन सामञ्ञतो दस्सिता ति ।

नत्थिपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२३) विगतपच्चयनिद्देसवण्णना

२३. विगतपच्चयनिद्देसे **समनन्तरविगता** (प. १.१०) ति समनन्तरमेव विगता । इमिना विगतपच्चयस्स विगच्छमानभावेनेव पच्चयभावं दस्सेति । इति नत्थि-पच्चयस्स च इमस्स च ब्यञ्जनमत्ते येव नानत्तं, न अत्थे ति ।

विगतपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(२४) अविगतपच्चयनिद्देसवण्णना

२४. अविगतपच्चयनिद्देसे **चत्तारो खन्धा** (प. १.१०) ति आदीनं सब्बाकारेन अत्थिपच्चयनिद्देसे वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। इमस्सा पि हि पच्चयस्स अत्थिपच्चयेन सद्धिं ब्यञ्जनमत्ते येव नानत्तं, न अत्थे ति।

अविगतपच्चयनिद्देसवण्णना निट्ठिता

(ख-१.) पच्चयनिद्देसपकिण्णकविनिच्छयकथा

इदानि एवं उद्देसनिद्देसतो दस्सितेसु इमेसु चतुवीसतिया पच्चयेसु B. 387 ञाणवारस्स विसदभावत्थं अनेकधम्मानं एकपच्चयभावतो, एकधम्मस्स अनेकपच्चयभावतो, एकपच्चयस्स अनेकपच्चयभावतो, पच्चयसभागतो, पच्चयविसभागतो, युगलकतो, जनकाजनकतो, सब्बट्ठानिका-सब्बट्ठानिकतो, रूपं रूपस्सा ति आदिविकप्पतो, भवभेदतो ति इमेसं दसन्नं पदानं वसेन पकिण्णकविनिच्छयो वेदिब्बो।

तत्थ **अनेकधम्मानं एकपच्चयभावतो** ति एतेसु हि ठपेत्वा कम्मपच्चयं अवसेसेसु तेवीसतिया पच्चयेसु अनेकधम्मा एकतो पच्चया होन्ति। कम्मपच्चयो पन एको चेतना-धम्मो येवा ति एवं तावेत्थ अनेकधम्मानं एकपच्चयभावतो विनिच्छियो वेदितब्बो।

एकधम्मस्स अनेकपच्चयभावतो ति हेतुपच्चये ताव अमोहो एको धम्मो। सो पुरेजातकम्माहारझानपच्चयो व न होति, सेसानं वीसतिया पच्चयानं वसेन पच्चयो होति। अलोभादोसा इन्द्रियमग्गपच्चया पि न होन्ति, सेसानं अट्ठारसन्नं पच्चयानं वसेन पच्चया होन्ति। लोभमोहा विपाकपच्चया पि न होन्ति, सेसानं सत्तरसन्नं पच्चयानं वसेन पच्चया होन्ति। दोसो अधिपतिपच्चयो पि न होति, सेसानं सोळसन्नं पच्चयानं वसेन पच्चयो होति। आरम्मणपच्चये रूपायतनं चक्खुविञ्ञाणधातुया आरम्मणपुरेजात-अत्थि-अविगतवसेन चतुधा पच्चयो; तथा मनोधातुया अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुया च। सहेतुकाय

पन आरम्मणाधिपति आरम्मणूपनिस्सयवसेना पि पच्चयो होति। इमिना नयेन सब्बेसं आरम्मणपच्चयधम्मानं अनेकपच्चयभावो वेदितब्बो।

अधिपतिपच्चये आरम्मणाधिपतिनो आरम्मणपच्चये वुत्तनयेनेव अनेकपच्चयभावो वेदितब्बो।

सहजाताधिपतीसु वीमंसा अमोहहेतु विय वीसतिधा पच्चयो होति। छन्दो हेतुपुरेजातकम्मआहारइन्द्रियज्झानमग्गपच्चयो न होति, सेसानं सत्तरसन्नं पच्चयानं वसेन पच्चयो होति। चित्तं हेतुपुरेजातकम्मझानमग्गपच्चयो न होति, सेसानं एकूनवीसतिया पच्चयानं वसेन पच्चयो होति। विरियं हेतुपुरेजातकम्माहारझानपच्चयो न होति, सेसानं एकूनवीसतिया वसेन पच्चयो होति।

B. 388 अनन्तरपच्चये "चक्खुविञ्ञाणधातू" ति आदिना नयेन वुत्तेसु चतूसु खन्धेसु वेदनाक्खन्धो हेतुपुरेजातकम्माहारमग्गपच्चयो न होति, सेसानं एकूनवीसतिया वसेन पच्चयो होति। सञ्ञाक्खन्धो इन्द्रियज्झानपच्चयो पि न होति, सेसानं सत्तरसन्नं वसेन पच्चयो होति। सङ्खारक्खन्धे हेतू हेतुपच्चये वुत्तनयेन, छन्दविरियानि अधिपतिपच्चये वुत्तनयेनेव पच्चया होन्ति।

फस्सो हेतुपुरेजातकम्मइन्द्रियज्झान-मग्गपच्चयो न होति, सेसानं अट्ठारसन्नं वसेन पच्चयो होति। चेतना हेतुपुरेजातइन्द्रियज्झानमग्गपच्चयो न होति।

वितक्को हेतुपुरेजातकम्माहारिन्द्रियपच्चयो न होति, सेसानं एकूनवीसतिया वसेन पच्चयो होति। विचारो मग्गपच्चयो पि न होति, सेसानं अट्ठारसन्नं वसेन पच्चयो होति,। पीति तेसञ्ञेव वसेन पच्चयो होति। चित्तेकग्गता हेतुपुरेजातकम्माहारपच्चयो न होति, सेसानं वीसतियावसेन पच्चयो होति।

सद्धा हेतुपुरेजातकम्माहारझानमग्गपच्चयो न होति, सेसानं अट्ठारसन्नं वसेन पच्चयो होति। सति तेहि चेव मग्गपच्चयेन चा ति

एकूनवीसतिया पच्चयो होति। जीवितिन्द्रियं सद्धाय वुत्तानं अट्ठारसन्नं वसेन पच्चयो होति। हिरोत्तप्पं ततो इन्द्रियपच्चयं अपनेत्वा सेसानं सत्तरसन्नं वसेन पच्चयो होति। तथा कायपस्सद्धादीनि युगलकानि, येवापनकेसु अधिमोक्खमनसिकारतत्रमज्झत्तता करुणामुदिता च। विरतियो पन तेहि चेव मग्गपच्चयेन चा ति अट्ठारसधा पच्चया होन्ति।

मिच्छादिट्ठि ततो विपाकपच्चयं अपनेत्वा सत्तरसधा, मिच्छावाचा-कम्मन्ताजीवा तेहि चेव कम्माहारपच्चयेहि चा ति एकूनवीसतिधा। अहिरिकं अनोत्तप्पं मानो थीनं मिद्धं उद्धच्चं ति इमे हेतुपुरेजातकम्म-विपाकाहारिन्द्रियज्झानमग्गपच्चया न होन्ति, सेसानं पन सोळसन्नं वसेन पच्चया होन्ति। विचिकिच्छाइस्सामच्छरियकुक्कुच्चानि ततो अधिपतिपच्चयं अपनेत्वा पन्नरसधा विञ्ञाणक्खन्धस्स। अधिपति-पच्चये वुत्तनयेनेव अनेकपच्चयभावो वेदितब्बो। समनन्तरपच्चये पि एसेव नयो।

सहजातपच्चये चतुसु ताव खन्धेसु एकेकस्स धम्मस्स अनेकपच्चय-भावो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। चत्तारि महाभूतानि आरम्मणाधि B. 389
पति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-उपनिस्सय-पुरेजात-अत्थि-अविगतवसेन नवधा पच्चयो होन्ति। हदयवत्थु तेसं चेव विप्पयुत्तस्स च वसेन दसधा पच्चयो होति। अञ्ञमञ्ञपच्चये अपुब्बं नत्थि। निस्सयपच्चये चक्खायतनादीनि आरम्मण-आरम्मणाधिपति-निस्सय-उपनिस्सय-पुरेजात-इन्द्रिय-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतवसेन नवधा पच्चया होन्ति। उपनिस्सये अपुब्बं नत्थि।

पुरेजातपच्चये रूपसद्दगन्धरसायतनानि आरम्मण-आरम्मणाधि-पति-उपनिस्सय-पुरेजात-अत्थि-अविगतवसेन छधा पच्चया होन्ति। एत्तकमेवेत्थ अपुब्बं। पच्छाजातादीसु अपुब्बं नत्थि। आहारपच्चये कवलीकाराहारो आरम्मण-आरम्मणाधिपति-उपनिस्सय-आहार-अत्थि-अविगतवसेन छधा पच्चयो होति। इन्द्रियादीसु अपुब्बं नत्थि। एवमेत्थ एकधम्मस्स अनेकपच्चयभावतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

एकपच्चयस्स अनेकपच्चयभावतो ति हेतुपच्चयादीसु यस्स कस्सचि एकस्स पच्चयस्स येनाकारेन येनत्थेन यो पच्चयुप्पन्नानं पच्चयो होति, तं आकारं तं अत्थं अविजहित्वाव अञ्ञेहि पि येहाकारेहि येहि अत्थेहि सो तस्मिं चेव खणे तेसं धम्मानं अनेकपच्चयभावं गच्छति, ततो अनेकपच्चयभावतो तस्स विनिच्छयो वेदितब्बो ति अत्थो। सेय्यथीदं ? अमोहो हेतुपच्चयो, सो हेतुपच्चयत्तं अविजहन्तो व अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-विपाक-इन्द्रिय-मग्ग- सम्पयुत्तविप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि एकादसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अलोभादोसा ततो अधिपति-इन्द्रिय-मग्गपच्चये तयो अपनेत्वा सेसानं वसेन अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति। इदं विपाकहेतूसु येव लब्भति, कुसलकिरियेसु पन विपाकपच्चयता परिहायति। लोभदोसमोहा ते तयो विपाकं चा ति चत्तारो अपनेत्वा सेसानं वसेन अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति।

आरम्मणपच्चयो तं आरम्मणपच्चयत्तं अविजहन्तं येव आरम्मणाधिपति-निस्सय-उपनिस्सय-पुरेजात-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि सत्तहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अयमेत्थ उक्कट्ठपरिच्छेद, अरूपधम्मानं पन अतीतानागतानं वा रूपधम्मानं आरम्मणपच्चयभावे सति आरम्मणाधिपति-आरम्मणूपनिस्सय-मत्तञ्ञेव उत्तरि लब्भति।

B. 390 अधिपतिपच्चये वीमंसा अमोहसदिसा। छन्दो अधिपतिपच्चयो अधिपतिपच्चयत्तं अविजहन्तो व सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-विपाक-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि अट्ठहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। विरियं तेसं चेव इन्द्रियमग्गपच्चयानं चा ति इमेसं वसेन अपरेहि पि दसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। चित्तं ततो मग्गपच्चयं अपनेत्वा आहारपच्चयं पक्खिपित्वा इमेसं वसेन अधिपतिपच्चयतो उत्तरि दसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। आरम्मणाधिपतिनो पन हेट्ठा आरम्मणपच्चये वुत्तनयेनेव अनेकपच्चयभावो वेदितब्बो।

अनन्तरसमनन्तरपच्चया अनन्तरसमनन्तरपच्चयत्तं अविजहन्ताव उपनिस्सय-कम्म-आसेवननत्थि-विगतानं वसेन अपरेहि पि पञ्चहाकारेहि

अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति। अरियमग्गचेतना येव चेत्थ कम्मपच्चयतं लभति, न सेसधम्मा।

सहजातपच्चयो सहजातपच्चयत्तं अविजहन्तो व हेतु-अधिपति-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-कम्म-विपाक-आहार-इन्द्रिय–झान-मग्ग-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि चुद्दसाहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अयं पि उक्कट्ठपरिच्छेदो वत्थुसहजातादीनं पन वसेनेत्थ हेतुपच्चयादीनं अभवो पि वेदितब्बो।

अञ्ञमञ्ञपच्चये पि एसेव नयो। निस्सयपच्चयो निस्सयपच्चयत्तं अविजहन्तो व चतुवीसतिया पच्चयेसु अत्तनो निस्सय-पच्चयत्तं चेव अनन्तर-समनन्तर-पच्छाजात-आसेवन-नत्थि-विगतपच्चये च छ अपनेत्वा सेसानं वसेन अपरेहि पि सत्तरसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अयं पि उक्कट्ठपरिच्छेदो व, वत्थुनिस्सयादीनं पन वसेनेत्थ हेतुपच्चयादीनं आभावो पि वेदितब्बो।

उपनिस्सयपच्चये आरम्मणूपनिस्सयो आरम्मणाधिपतिसदिसो। अनन्तरूपनिस्सयो अनन्तरूपनिस्सयपच्चयत्तं अविजहन्तो व अनन्तर-समनन्तर-कम्म-आसेवन-नत्थि-विगतानं वसेन अपरेहि पि छहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अरियमग्गचेतना येव चेत्थ कम्मपच्चयतं लभति, न सेसधम्मा। पकतूपनिस्सयो पकतूपनिस्सयो व।

पुरेजातपच्चयो अत्तनो पुरेजातपच्चयत्तं अविजहन्तो व आरम्मण-आरम्मणाधिपति–निस्सय-उपनिस्सय-इन्द्रिय-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि अट्ठहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अयं पि B. 391
उक्कट्ठनिद्देसो व, आरम्मण–पुरेजाते पनेत्थ निस्सय-इन्द्रिय-विप्पयुत्त-पच्चयता न लब्भति। इतो उत्तरि पि लब्भमानालब्भमानं वेदितब्बं।

पच्छाजातपच्चयो अत्तनो पच्छाजातपच्चयभावं अविजहन्तो व विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि तीहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। आसेवनपच्चयो आसेवनपच्चयत्तं अविजहन्तोव अनन्तर-समनन्तर-उपनिस्सय-नत्थि-विगतानं वसेन अपरेहि पि पञ्चहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति।

कम्मपच्चयो कम्मपच्चयत्तं अविजहन्तो व एकक्खणिको ताव सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-विपाक - आहार-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि नवहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। नानाक्खणिको उपनिस्सय-अनन्तर-समनन्तर-नत्थि-विगतानं वसेन अपरेहि पि पञ्चहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति।

विपाकपच्चयो विपाकपच्चयत्तं अविजहन्तोव हेतु-अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-कम्म-आहार-इन्द्रिय-झान - मग्ग - सम्पयुत्त-विप्पयुत्त–अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि चुद्दसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति।

आहारपच्चये कवलीकारो आहारो आहारपच्चयत्तं अविजहन्तो व अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि द्वीहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति। सेसा तयो आहारपच्चयत्तं अविजहन्ताव यथानुरूपं अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-कम्म-विपाक - इन्द्रिय-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि एकादसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति।

इन्द्रियपच्चये रूपिनो पञ्चिन्द्रिया इन्द्रियपच्चयत्तं अविजहन्ताव निस्सय-पुरेजात-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि पञ्चहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति। रूपजीवितिन्द्रियं पि इन्द्रियपच्चयत्तं अविजहन्तं येव अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि द्वीहाकारे हि अनेकपच्चयभावं गच्छति। अरूपिनो इन्द्रियानि पि यथानुरूपं इन्द्रियपच्चयत्तं अविजहन्तानेव हेतु-अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-विपाक-आहार-झान-मग्ग-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि तेरसाहाकारे हि अनेकपच्चयभावं गच्छन्ति।

B. 392 झानपच्चयो झानपच्चयत्तं अविजहन्तो व यथानुरूपं सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-विपाक-इन्द्रिय-मग्ग-सम्पयुत्त-विप्पयुत्त-अत्थि - अविगतानं वसेन अपरेहि पि दसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति।

मग्गपच्चयो मग्गपच्चयत्तं अविजहन्तो व यथानुरूपं झानपच्चये वुत्तानं दसन्नं हेतु-अधिपतीनं चा ति इमेसं वसेन अपरेहि पि द्वादसहाकारेहि अनेक-पच्चयभावं गच्छति ।

सम्पयुत्तपच्चयो सम्पयुत्तपच्चयत्तं अविजहन्तो व यथानुरूपं हेतु-अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-कम्म-विपाक-आहार-इन्द्रिय--झान-मग्ग-अत्थि-अविगतानं वसेन अपरेहि पि तेरसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति ।

विप्पयुत्तपच्चयो विप्पयुत्तपच्चयत्तं अविजहन्तो व अनन्तर-समनन्तर-आसेवन-सम्पयुत्त -नत्थि-विगतसङ्खाते छ पच्चये अपनेत्वा सेसानं वसेन यथानुरूपं अपरेहि पि सत्तरसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति । तत्थ रूपस्स च अरूपस्स च पच्चयविभागो वेदितब्बो ।

अत्थिपच्चयो अत्थिपच्चयत्तं अविजहन्तो व अनन्तर-समनन्तर-आसेवन-नत्थि-विगत-सङ्खाते पञ्च पच्चये अपनेत्वा सेसानं वसेन यथानुरूपं अपरेहि पि अट्ठारसहाकारेहि अनेकपच्चयभावं गच्छति ।

नत्थिपच्चयविगतपच्चया अनन्तरपच्चयसदिसा । अविगत-पच्चयो अत्थिपच्चयसदिसो येवा ति एवमेत्थ एकपच्चयस्स अनेक-पच्चयभावतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

पच्चयसभागतो ति एतेसु हि चतुवीसतिया पच्चयेसु अनन्तर-समनन्तर-अनन्तरूपनिस्सय-आसेवन-नत्थि-विगता सभागा, तथा आरम्मण-आरम्मणाधिपति आरम्मणूपनिस्सया ति इमिना उपायेनेत्थ पच्चयसभागतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

पच्चयविसभागतो ति पुरेजातपच्चयो पनेत्थ पच्छाजातपच्चयेन विसभागो, तथा सम्पयुत्तपच्चयो विप्पयुत्तपच्चयेन, अत्थिपच्चयो नत्थिपच्चयेन, विगतपच्चयो अविगतपच्चयेना ति इमिना उपायेनेत्थ पच्चयविसभागतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

युगलकतो ति एतेसु च अत्थसरिक्खताय, सद्दसरिक्खताय, कालपटिपक्खताय, हेतुफलताय, अञ्ञमञ्ञपटिपक्खताया ति इमेहि कारणेहि युगलकतो विञ्ञातब्बो विनिच्छयो । अनन्तरसमनन्तरा हि B. 380 अत्थसरिक्खताय एकं युगलकं नाम; निस्सयुपनिस्सया सद्दसरिक्खताय, पुरेजातपच्छाजाता कालपटिपक्खताय, कम्मपच्चयविपाकपच्चया हेतुफलताय, सम्पयुत्तविप्पयुत्तपच्चया अञ्ञमञ्ञपटिपक्खताय एकं युगलकं नाम, तथा अत्थि-नत्थि-पच्चया, विगताविगतपच्चया चा ति एवमेत्थ युगलकतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

जनकाजनकतो ति एतेसु च अनन्तरसमनन्तरानन्तरूपनिस्सयपकतूपनिस्सयासेवनपच्चयानानाक्खणिको, कम्मपच्चयो, नत्थि-विगतपच्चया ति इमे पच्चया जनकायेव, न अजनका । पच्छाजातपच्चयो केवलं उपत्थम्भको येव, न जनको । सेसा जनका च उपत्थम्भका चा ति अत्थो । एवमेत्थ जनकाजनकतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

सब्बट्ठानिकासब्बाट्ठानिकतो ति एतेसु च सहजात-निस्सय-अत्थि-अविगतपच्चया सब्बट्ठानिका नाम, सब्बेसं सङ्खातानं रूपारूपधम्मानं ठानभूता कारणभूता ति अत्थो । एतेहि विना उप्पज्जमानो एकधम्मो पि नत्थी ति । आरम्मण-आरम्मणाधिपति-अनन्तर-समनन्तरानन्तरूपनिस्सय-पकतूपनिस्सयासेवन-सम्पयुत्त-नत्थि-विगतपच्चया असब्बट्ठानिका नाम । न सब्बेसं रूपारूपधम्मानं ठानभूता, अरूपक्खन्धानं येव पन ठानभूता कारणभूता ति अत्थो । अरूपधम्मा येव हि एतेहि उप्पज्जन्ति, न रूपधम्मा । पुरेजातपच्छाजाता पि असब्बट्ठानिका अरूपरूपानं येव यथाक्कमेन पच्चयभावतो । वुत्तावसेसा पि एकच्चानं रूपारूपधम्मानं उप्पत्तिहेतुतो न सब्बट्ठानिका ति एवमेत्थ सब्बट्ठानिका सब्बट्ठानिकतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ।

रूपं रूपस्सा ति आदिविकप्पतो ति एतेसु च चतुवीसतिया पच्चयेसु एकपच्चयो पि एकन्तेन रूपमेव हुत्वा रूपस्सेव पच्चयो नाम नत्थि, एकन्तेन पन रूपं हुत्वा अरूपस्सेव पच्चयो नामा ति अत्थि । कतरो पनेसो ति ? पुरेजातपच्चयो । पुरेजातपच्चयो हि एकन्तेन रूपमेव

हुत्वा अरूपस्सेव पच्चयो होति। एकन्तेन रूपमेव हुत्वा रूपारूपस्सेव पच्चयो नामा ति पि नत्थि, एकन्तेन पन अरूपं हुत्वा अरूपस्सेव पच्चयो नाम अत्थि। कतरो पनेसो ति? अनन्तर-समनन्तर-आसेवन-सम्पयुत्त-नत्थि-विगतवसेन छब्बिधो। सो हि सब्बो पि एकन्तेन अरूपमेव हुत्वा अरूपस्सेव पच्चयो होति। एकन्तेन अरूपमेव हुत्वा पि एकन्तेन रूपस्सेव पच्चयो नामा ति पि अत्थि। कतरो पनेसो ति? पच्छाजात-पच्चयो। सो हि एकन्तेन अरूपं हुत्वा रूपस्सेव पच्चयो होति; एकन्तेन B. 394 पन अरूपधम्मो व हुत्वा रूपारूपानं पच्चयो पि अत्थि। कतरो पनेसो ति? हेतु-कम्म-विपाक-झान-मग्गवसेन पञ्चविधो। सो हि सब्बो पि एकन्तेन अरूपमेव हुत्वा रूपधम्मानं अरूपधम्मानं पि पच्चयो होति। एकन्तेन पन रूपारूपमेव हुत्वा रूपस्सेव पच्चयो नामा ति पि नत्थि, अरूपस्सेव पन होति। कतरो पनेसो ति? आरम्मणपच्चयो चेव उपनिस्सयपच्चयो च। इदं हि द्वयं एकन्तेन रूपारूपमेव हुत्वा अरूपस्सेव पच्चयो होति। एकन्तेन रूपारूपमेव हुत्वा पन रूपारूपस्सेव पच्चयो नामा ति पि अत्थि। कतरो पनेसो ति? अधिपति-सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-आहार-इन्द्रिय-विप्पयुत्त-अत्थि-अविगतवसेन नवविधो। सो हि सब्बो पि एकन्तेन रूपारूपमेव हुत्वा रूपारूपस्सेव पच्चयो होती ति एवमेत्थ रूपं रूपस्सा ति आदि विकप्पतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो।

भवभेदतो ति इमेसु पन चतुवीसतिया पच्चयेसु पञ्चवोकारभवे ताव न कोचि पच्चयो न लब्भति नाम। चतुवोकारभवे पन तयो पुरेजात-पच्छाजात-विप्पयुत्तपच्चये अपनेत्वा सेसा एकवीसतिमेव लब्भन्ति। एकवोकारभवे सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-कम्म-इन्द्रिय-अत्थि-अविगतवसेन सत्तेव लब्भन्ति। बाहिरे पन अनिन्द्रियबद्धरूपे सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-अत्थि-अविगत-वसेन पञ्चेव लब्भन्ती ति एवमेत्थ भवभेदतो पि विञ्ञातब्बो विनिच्छयो ति।

पच्चयनिद्देसपकिण्णकविनिच्छयकथा निट्ठिता

पच्चयनिद्देसवारवण्णना निट्ठिता

(ग) पुच्छावारवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

२५. एवं अनुलोमपट्ठानादीसु तिकपट्ठानादिवसेन चतुवीसतिसमन्तपट्ठानसमोधाने पट्ठानमहापकरणे ये तिकादयो निस्साय निद्दिट्ठत्ता एतं तिकपट्ठानं, दुकपट्ठानं...पे०...दुकदुकपट्ठानं ति वुत्तं। ते अनामसित्वा येसं पच्चयानं वसेन ते तिकादयो विभत्ता, ते पच्चये एव ताव इमिना मातिका निक्खेपपच्चयविभङ्गसङ्खातेन वारेन उद्देसतो च निद्देसतो च दस्सेत्वा, इदानि ये तिकादयो निस्साय निद्दिट्ठत्ता एतं
B. 395 तिकपट्ठानं, दुकपट्ठानं...पे०...दुकदुकपट्ठानं ति वुत्तं। ते तिकादयो इमेसं पच्चयानं वसेन वित्थारेत्वा दस्सेतुं एकेकं तिकदुकं निस्साय सत्तहि महावारेहि देसना कता। तेसं इमानि—पटिच्चवारो, सहजातवारो, पच्चयवारो, निस्सयवारो, संसट्ठवारो, सम्पयुत्तवारो, पञ्हावारो ति।

तत्थ "कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो" ति एवं पटिच्चाभिधानवसेन वुत्तो **पटिच्चवारो** नाम। कुसलं धम्मं सहजातो कुसलो धम्मो" ति एवं सहजाताभिधानवसेन वुत्तो **सहजातवारो** नाम। सो पुरिमेन पटिच्चवारेन अत्थतो निन्नानाकरणो। पटिच्चाभिधानवसेन बुज्झनकानं वसेन पन पठमो वुत्तो, सहजाताभिधानवसेन बुज्झनकानं वसेन दुतियो। द्वीसु पि चेतेसु रूपारूपधम्मवसेन पच्चया चेव पच्चयुप्पन्नधम्मा च वेदितब्बा। ते च खो सहजाताव, न पुरेजातपच्छाजाता लब्भन्ति।

"कुसलं धम्मं पच्चया कुसलो धम्मो" ति एवं पच्चयाभिधानवसेन वुत्तो पन **पच्चयवारो** नाम। सो पि पुरिमवारद्वयं विय रूपारूपधम्मवसेनेव वेदितब्बो। पच्चयो पनेत्थ पुरेजातो पि लब्भति। अयमस्स पुरिमवारद्वयतो विसेसो। तदनन्तरो "कुसलं धम्मं निस्साय कुसलो धम्मो" ति एवं निस्सयाभिधानवसेन वुत्तो **निस्सयवारो** नाम। सो पुरिमेन पच्चयवारेन अत्थतो निन्नानाकरणो। पच्चयाभिधानवसेन

बुज्झनकानं वसेन पन पठमो वुत्तो, निस्सयाभिधानवसेन बुज्झनकानं वसेन दुतियो। ततो परं "कुसलं धम्मं संसट्ठो कुसलो धम्मो" ति एवं संसट्ठाभिधानवसेन वुत्तो **संसट्ठवारो** नाम।

"कुसलं धम्मं सम्पयुत्तो कुसलो धम्मो" ति एवं सम्पयुत्ताभिधानवसेन वुत्तो **सम्पयुत्तवारो** नाम। सो पुरिमेन संसट्ठवारेन अत्थतो निन्नानाकरणो। संसट्ठाभिधानवसेन बुज्झनकानं वसेन पन पठमो वुत्तो, सम्पयुत्ताभिधानवसेन दुतियो। द्वीसु पि चेतेसु अरूपधम्मवसेनेव पच्चया पच्चयुप्पन्ना च वेदितब्बा। सत्तमवारे पन यस्मा "कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना नयेन ते ते पञ्हे उद्धरित्वा पुन "कुसला हेतू सम्पयुत्तकानं खन्धानं" ति आदिना नयेन सब्बे पि ते पञ्हा निज्जटा निग्गुम्बा च कत्वा विभत्ता, तस्मा सो वारो पञ्हानं साधुकं विभत्तत्ता **पञ्हावारो** सङ्खयं गतो। रूपारूपधम्मवसेनेव पनेत्थ पच्चया पि पच्चयुप्पन्ना पि वेदितब्बा।

तत्थ यो ताव एस सब्बपठमो पटिच्चवारो नाम, सो उद्देसतो B. 396
निद्देसतो च दुविधो होति। तत्थ उद्देसवारो पठमो, पुच्छावारो ति पि वुच्चति। पण्णत्तिवारो ति पि तस्सेव नामं। सो हि कुसलादयो पटिच्चकुसलादीनं हेतुपच्चयादीनं वसेन उद्दिट्ठत्ता उद्देसवारो, कुसलादयो पटिच्च हेतुपच्चयादिवसेन कुसलादीनं उप्पत्तिया पुच्छितत्ता पुच्छावारो, कुसलादयो पटिच्च हेतुपच्चयादिवसेन कुसलादीनं उप्पत्तिया पञ्ञापितत्ता पण्णत्तिवारो ति पि वुत्तो।

तत्थ **सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चयो** (प. १. ११) ति परिकप्पपुच्छा। अयं हेत्थ अत्थो—यो कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया, किं सो कुसलं धम्मं पटिच्च सिया ति अथवा कुसलं धम्मं पटिच्च यो कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य, सो हेतु-पच्चया सिया ति अयमेत्थ अत्थो।

तत्थ **पटी** ति सदिसत्थे वत्तति। सदिसपुग्गलो हि पटिपुग्गलो, सदिसभागो च पटिभागो ति वुच्चति। **इच्चा** ति गमनुस्सुक्कवचनमेतं।

उभयं एकतो कत्वा[1] **पटिच्चा** ति पटिगन्त्वा सहुप्पत्ति सङ्खातेन सदिसभावेन पत्वा, तेन सद्धिं एकतो उप्पत्तिभावं उपगन्त्वा ति वुत्तं होति। **कुसलो धम्मो** ति एवं सहुप्पत्तिभावेन कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया ति पुच्छति। अथवा **पटिच्चा** ति पच्चयं कत्वा। तं पन पच्चयकरणं पुरेजाते पि पच्चये लब्भति सहजाते पि। इध सहजातं अधिप्पेतं।

सिया कुसलं धम्मं पटिच्च अकुसलो (प. १. ११) ति आदीसु पि एसेव नयो। तत्थ किञ्चा पि सहजातवसेन कुसलं धम्मं पटिच्च अकुसलो नत्थि, इमस्मिं पन पुच्छावारे यम्पि विस्सज्जियमानं अत्थतो लब्भति, यम्पि न लब्भति, तं सब्बं पुच्छावसेन उद्धटं। परतो पन विस्सज्जने यं न लब्भति, तं पहाय यं लब्भति, तदेव विस्सज्जितं। एवमेत्थ पुच्छानं अत्थं चेव पुच्छागतिं च ञत्वा इदानि गणनवसेन पुच्छापरिच्छेदो वेदितब्बो।

एत्थ हि "कुसलं धम्मं पटिच्चा" ति कुसलपदं आदिं कत्वा कुसलाकुसलाब्याकतन्ता तिस्सो पुच्छा, पुन तदेवादिं कत्वा कुसला-ब्याकतादिवसेन दुकप्पभेदन्ता तिस्सो, पुन तदेवादिं कत्वा तिकन्ता च
B. 397 एका, एवं कुसलं धम्मं पटिच्चा ति कुसलादिका सत्त पुच्छा, तथा अकुसलादिका, तथा अब्याकतादिका, तथा कुसलाब्याकतादिका, अकुसलाब्याकतादिका, कुसलाकुसलादिका, कुसलाकुसलाब्याकतादिका ति सब्बा पि सत्तन्नं सत्तकानं वसेन कुसलत्तिकं निस्साय हेतुपच्चये एकूनपञ्ञासं पुच्छा।

तत्थ एकमूलकावसाना नव, एकमूलदुकावसाना नव, एकमूल-तिकावसाना तिस्सो, दुकमूलएकावसाना नव, दुकमूलदुकावसाना नव, दुकमूलतिकावसाना तिस्सो, तिकमूलएकावसाना तिस्सो, तिकमूलदुकावसाना तिस्सो, तिकमूलतिकावसाना एका ति एवमेता मूलवसेना पि वेदितब्बा।

१. वत्वा स्या.।

यथा च हेतुपच्चये एकूनपञ्ञासं, आरम्मणपच्चयादीसु पि तथेवा ति सब्बेसु पि चतुवीसतिया पच्चयेसु—

सहस्समेकं च सतं, छ सत्तति पुनापरा ।
पुच्छा सम्पिण्डिता होन्ति, नयम्हि एकमूलके ॥

३६. ततो परं **हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया** (प. १.१५) ति दुमूलकनयो आरद्धो । तत्थ हेतारम्मणदुको...पे०...हेतुअविगतदुको ति हेतुपच्चयेन सद्धिं तेवीसति दुका होन्ति । तेसु हेतुपच्चये विय हेतारम्मणदुके पि एकूनपञ्ञासं पुच्छा, तासु पाळियं द्वे येव दस्सिता । यथा च हेतारम्मणदुके एकूनपञ्ञासं तथा हेताधिपतिदुकादीसु पि । तत्थ पठमपुच्छावसेन हेताधिपतिदुको, हेतानन्तरदुको, हेतुसमनन्तरदुको ति पटिपाटिया तयो दुके दस्सेत्वा परियोसाने हेतु अविगतदुको दस्सितो, सेसं सङ्खित्तं । पुच्छा परिच्छेदो पनेत्थ एवं वेदितब्बो ।

सहस्समेकं च सतं, सत्तवीसति मेव च ।
दुकेसु तेवीसतिया, पुच्छा होन्ति दुमूलके ॥

३७. ततो परं **हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया अधिपतिपच्चया** (प. १.१५) ति तिमूलकनयो आरद्धो । तत्थ हेतारम्मणदुकेन सद्धिं अधिपतिपच्चयादीसु बावीसतिया पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन बावीसति तिका होन्ति । तेसु पठमपुच्छावसेन पठमत्तिकं च दुतियतिकं च दस्सेत्वा परियोसानतिको दस्सितो, सेसं सङ्खित्तं । यथा पन दुकेसु, B. 398 एवं तिकेसु पि एकमेकस्मिं तिके एकूनपञ्ञासं कत्वा सब्बेसु पि बावीसतिया तिकेसु—

सहस्समेकं पुच्छानं, अट्ठसत्ततिमेव च ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि तिकमूलके ॥

३८. ततो परं **हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया अधिपतिपच्चया अनन्तरपच्चया** (प. १.१५) ति चतुमूलकनयो आरद्धो । तत्थ पठमत्तिकेन सद्धिं अनन्तरपच्चयादीसु एकवीसतिया पच्चयेसु एकमेकस्स

योजनावसेन एकवीसति चतुक्का होन्ति । तेसु द्वे चतुक्के दस्सेत्वा सेसं सङ्खित्तं । इधा पि एकमेकस्मिं चतुक्के एकूनपञ्ञासं कत्वा सब्बेसु पि एकवीसतिया चतुक्केसु—

सहस्समेकं पुच्छानं, एकूनतिंस पुनापरा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि चतुमूलके ॥

ततो परं पञ्चमूलकं आदिं कत्वा याव सब्बमूलका देसना कता, उत्तरि[1] वत्तब्बं[1] सब्बं सङ्खिपित्वा हेट्ठा वुत्तं च उत्तरि[2] वत्तब्बं च एकतो कत्वा पाळियं "एकमूलकं, दुकमूलकं, तिकमूलकं, चतुमूलकं, पञ्चमूलकं, सब्बमूलकं असम्मुय्हन्तेन वित्थारेतब्बं" ति नयो दस्सितो । तत्थ एकमूलकादीसु यं वत्तब्बं, तं वुत्तमेव । पञ्चमूलके पन पठमचतुक्केन सद्धिं समनन्तरपच्चयादीसु समवीसतिया पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन समवीसति पञ्चका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि नव पुच्छानं, असीति च पुनापरा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि पञ्चमूलके ॥

छमूलके पठमपञ्चकेन सद्धिं सहजात-पच्चयादीसु एकूनवीसतिया पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन एकूनवीसति छक्का होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि नव पुच्छानं, एकतिंस ततो परा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि छक्कमूलके ॥

B. 399 सत्तमूलके पठमछक्केन सद्धिं अञ्ञमञ्ञपच्चयादीसु अट्ठारससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन अट्ठारस सत्तका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि अट्ठ पुच्छानं, द्वासीति च ततो परा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि सत्तमूलके ॥

१-१. तं म. ।
२. उपरि म. ।

अट्ठमूलके पठमसत्तकेन सद्धिं निस्सयपच्चयादीसु सत्तरससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन सत्तरस अट्ठका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि अट्ठ पुच्छानं, तेत्तिंसा च ततो परा।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि अट्ठमूलके॥

नवमूलके पठमअट्ठकेन सद्धिं उपनिस्सयपच्चयादीसु सोळससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन सोळस नवका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि सत्त पुच्छानं, चतुरासी ति ततो परा।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि नवमूलके॥

दसमूलके पठमनवकेन सद्धिं पुरेजातपच्चयादीसु पन्नरससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन पन्नरस दसका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

सतानि सत्त पुच्छानं, पञ्चतिंस ततो परा।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नयम्हि दसमूलके॥

एकादसमूलके पठमदसकेन सद्धिं पच्छाजातपच्चयादीसु चुद्दससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन चुद्दस एकादसका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

छ सतानि च पुच्छानं, छळासीति ततो परा।
नयम्हि पुच्छा गणिता, एकादसकमूलके॥

द्वादसमूलके पठमएकादसकेन सद्धिं आसेवनपच्चयादीसु तेरससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन तेरसद्वादसका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

छ सतानि च पुच्छानं, सत्ततिंस ततो परा। B. 400
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये द्वादसमूलके॥

तेरसमूलके पठमद्वादसकेन सद्धिं कम्मपच्चयादीसु द्वादससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन द्वादस तेरसका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा–

सतानि पञ्च पुच्छानं, अट्ठासीति पुना परा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये तेरसमूलके ॥

चुद्दसमूलके पठमतेरसकेन सद्धिं विपाकपच्चयादीसु एकादससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन एकादस चुद्दसका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा–

सतानि पञ्च पुच्छानं, तिंस चाथ नवा परा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये चुद्दसमूलके ॥

पन्नरसमूलके पठमचुद्दसकेन सद्धिं आहारपच्चयादीसु दससु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन दस पन्नरसका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा–

सतानि चत्तारि पुच्छानं, नवुति च ततो परा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये पन्नरसमूलके ॥

सोळसमूलके पठमपन्नरसकेन सद्धिं इन्द्रियपच्चयादीसु नवसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन नव सोळसका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा–

सतानि चत्तारि चत्ता-लीसेका[1] चेव पुनापरा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये सोळसमूलके ॥

सत्तरसमूलके पठमसोळसकेन सद्धिं झानपच्चयादीसु अट्ठसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन अट्ठ सत्तरसका होन्ति । तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा –

सतानि तीणि पुच्छानं, नवुति द्वे पुनापरा ।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये सत्तरसमूलके ॥

१. चालीसं, एका स्या. ।

अट्ठारसमूलके पठमसत्तरसकेन सद्धिं मग्गपच्चयादीसु सत्तसु B. 401 पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन सत्त अट्ठारसका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा--

सतानि तीणि पुच्छानं, तेचत्तारीसमेव च।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये अट्ठारसमूलके ॥

एकूनवीसतिमूलके पठमअट्ठारसकेन सद्धिं सम्पयुत्तपच्चयादीसु छसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन छ एकूनवीसतिका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

द्वे सता नवुति चेव, चतस्सो च पुनापरा।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये एकूनवीसतिके[1] ॥

वीसतिमूलके पठमएकूनवीसतिकेन सद्धिं विप्पयुत्तपच्चयादीसु पञ्चसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन पञ्च वीसतिका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

द्वे सता होन्ति पुच्छानं, चत्ताळीसा च पञ्च च।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये वीसतिमूलके ॥

एकवीसतिमूलके पठमवीसतिकेन सद्धिं अत्थि-पच्चयादीसु चतूसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन चत्तारो एकवीसतिका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा —

सतं छ नवुति चेव, पुच्छा होन्ति सम्पिण्डिता।
गणिता लक्खणञ्ञूहि, एकवीसतिके नये ॥

द्वावीसतिमूलके पठमएकवीसतिकेन सद्धिं नत्थि-पच्चयादीसु तीसु पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन तयो द्वावीसतिका होन्ति। तेसु एकमेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा—

चत्तालीसाधिकं सतं, सत्त चेव पुना परा।
पुच्छा गणनतो होन्ति, नये द्वावीसति मूलके।

---

१. एकूनवीसके स्या.।

B. 402 तेवीसतिमूलके पठमद्वावीसतिकेन सद्धिं द्वीसु विगताविगत-पच्चयेसु एकमेकस्स योजनावसेन द्वे तेवीसतिका होन्ति । तेसु एकमेकस्मि एकूनपञ्ञासं कत्वा—

अट्ठनवुतिमेविध, पुच्छा गणनतो मता ।
नयम्हि तेवीसतिमे, तेवीसतिकमूलके ॥

चतुवीसतिमूलको पन सब्बपच्चयानं समोधानवसेन वेदितब्बो, सब्बमूलको ति वुत्तो । तत्थ एकूनपञ्ञासमेव पुच्छा होन्ति ति सब्बा-पेता हेतुपच्चयपदमेव गहेत्वा एकमूलकादीनं सब्बमूलकपरियोसानानं वसेन सत्थारा देवपरिसति वित्थारतो विभत्ता पुच्छा इध सङ्खेपेन दस्सिता ।

तासं पन सब्बासं पि अयं गणनपिण्डो—एकमूलकनयस्मिं हि एकादससतानि छसत्तति च पुच्छा आगता । हेतुपच्चयनये तेनेव मूलकेन एकूनपञ्ञासं कत्वा इमस्मिं हेतुपच्चयमूलके गहेतब्बा, सेसा सेसपच्चय-मूलकेसु पक्खिपितब्बा । दुमूलके सत्तवीसानि एकादससतानि, तिमूलके सहस्सं अट्ठसत्तति च, चतुमूलके सहस्सं एकूनतिंसं च, पञ्चमूलके असीताधिकानि नवसतानि, छमूलके एकतिंसानि नवसतानि, सत्तमूलके द्वासीतानि अट्ठसतानि, अट्ठमूलके तेत्तिंसानि अट्ठसतानि, नवमूलके चतुरासीतानि सत्तसत्तानि, दसमूलके पञ्चतिंसानि सत्तसतानि, एकादसमूलके छासीतानि छसतानि, द्वादसमूलके सत्ततिं-सानि छसतानि, तेरसमूलके अट्ठासीतानि पञ्चसतानि, चुद्दसमूलके एकूनचत्तालीसानि पञ्चसतानि, पन्नरसमूलके नवुतानि चत्तारिसतानि, सोळसमूलके एकचत्तालीसानि चत्तारिसत्तानि, सत्तरसमूलके द्वानवुतानि तीणिसतानि, अट्ठारसमूलके तेचत्ताळीसानि तीणि सतानि, एकूनवीसतिमूलके चतुनवुतानि द्वेसतानि, वीसतिमूलके पञ्च चत्तालीसानि द्वे सतानि, एकवीसतिमूलके छनवुति सतं, द्वावीसतिमूलके सत्तचत्तालीससतं, तेवीसतिमूलके अट्ठनवुति, सब्बमूलके एकूनपञ्ञासा

ति एवं हेतुपदं आदिं कत्वा विभत्तेसु एकमूलकादीसु—

> चुद्दसेव सहस्सानि, पुन सत्तसतानि च ।
> पुच्छा हेतुपदस्सेव, एकमूलादिभेदतो ति ॥

३९. एवं हेतुपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलकतो पट्ठाय याव B. 403 सब्बमूलकनया पुच्छाभेदं दस्सेत्वा इदानि आरम्मणपच्चयं आदिं कत्वा दस्सेतुं **सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य आरम्मणपच्चया हेतुपच्चया** (प. १. १५.) ति आदिमाह ।

तत्थ **आरम्मणपच्चया हेतुपच्चया** ति एत्तावता आरम्मणपच्चयं आदिं कत्वा हेतुपच्चयपरियोसानो एकमूलकनयो दस्सितो । ततो परं **आरम्मणपच्चया अधिपतिपच्चया** ति दूकमूलकं आरद्धं । तत्थ इमं पठमदुकं चेव आरम्मणाविगतदुकं च दस्सेत्वा सेसं सङ्खित्तं । **आरम्मण-पच्चया हेतुपच्चया** ति अयं ओसानदुको पि न दस्सितो । सचे पन कत्थ चि वाचनामग्गे सन्दिस्सति, स्वेव वाचनामग्गो गहेतब्बो । ततो परं आरम्मणपच्चयवसेन तिकमूलकादयो अदस्सेत्वाव अधिपतिपच्चयं आदिं कत्वा एककादयो दस्सेतुं **अधिपतिपच्चया, अनन्तरपच्चया, समनन्तरपच्चया, सहजातपच्चया, अञ्ञमञ्ञपच्चया** ति सत्तकमेव वुत्तं, तं एकमूलकवसेन वा सब्बमूलकवसेन वा वेदितब्बं ।

ततो परं अविगतपच्चयं आदिं कत्वा दुमूलकमेव दस्सेतुं-**अविगत-पच्चया हेतुपच्चया** ति आदि आरद्धं । तत्थ अविगतहेतुदुको, अवि-गतारम्मणदुको, अविगताधिपतिदुको, ति पटिपाटिया तयो दुके वत्वा परियोसाने च अविगतविगतदुको एको दुको दस्सितो । ततो अविगत-पच्चयवसेनेव तिमूलकं दस्सेतुं—"अविगतपच्चया हेतुपच्चया आरम्मण-पच्चया, अविगतपच्चया हेतुपच्चया अधिपतिपच्चया, अविगतपच्चया हेतुपच्चया अनन्तरपच्चया" ति एवं पटिपाटिया तयो तिके वत्वा "अविगतपच्चया हेतुपच्चया विगतपच्चया" ति परियोसानत्तिको वुत्तो ।

४०. ततो अविगतपच्चयवसेनेव चतुमूलकं दस्सेतुं "अविगतपच्चया हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया अधिपतिपच्चया, अविगतपच्चया हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया अनन्तरपच्चया" ति द्वे चतुक्के वत्वा "विगतपच्चया" ति पदं उद्धरित्वा ठपितं, सेसं सब्बं सङ्खित्तं। तस्स सङ्खित्तभावं दस्सेतुं "एकेकस्स पदस्स एकमूलकं, दुमूलकं, तिमूलकं, सब्बमूलकं असम्मुय्हन्तेन वित्थारेतब्बं" ति वुत्तं। तस्मा यथा हेतुपच्चयं आदिं कत्वा हेतु-आदिपदवसेन एकमूलके एकादसपुच्छा सतानि छसत्तति च पुच्छा...पे०... सब्बमूलके एकूनपञ्ञासं, एवं आरम्मण-
B. 404 पच्चयादीसु पि एकमेकं आदिं कत्वा आरम्मणादि पदवसेन एकमेकस्स पदस्स एकमूलके एकादसपुच्छा सतानि छ सत्तति च पुच्छा...पे०... सब्बमूलके एकूनपञ्ञासा ति एकेकस्स पदस्स एकमूलकादि भेदे सत्तसत्ताधिकानि चुद्दस पुच्छा सहस्सानि होन्ति। तासं सब्बेसु पि चतुवीसतिया पच्चयेसु अयं गणनपरिच्छेदो —

द्वापञ्ञाससहस्सानट्ठ, सतानि तीणि सतसहस्सानि।
कुसलत्तिकस्स पुच्छा, अनुलोमनयम्हि सुविभत्ता॥

यथा च कुसलत्तिकस्स, एवं वेदनात्तिकादीनं पी ति सब्बेसु पि द्वावीसतिया तिकेसु—

एकसट्ठिसहस्सानि, छसतानि सत्तसत्तति।
सतसहस्सानि पुच्छानं, तिकभेदे पभेदतो॥

सङ्खित्ता वाचनामग्गे।

दुकेसु पन "सिया हेतुं धम्मं पटिच्च हेतुधम्मो उप्पज्जेय हेतुपच्चया" ति एवं हेतुं पटिच्च हेतु, हेतुं पटिच्च न-हेतु, हेतुं पटिच्च हेतु च न-हेतु च, न-हेतुं पटिच्च न-हेतु, न-हेतुं पटिच्च हेतु, न-हेतुं पटिच्च हेतु च न-हेतु च, हेतुं च न-हेतुं च पटिच्च हेतु, हेतुं च न-हेतुं च पटिच्च न हेतु, हेतुं च न-हेतुं च पटिच्च हेतु च न हेतु चा ति एकमेकस्मिं दुके हेतुपच्चयादीसु एकमेकस्मिं पच्चये नव पुच्छा होन्ति। तासु हेतुपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलके द्वे सतानि सोळस च

पुच्छा होन्ति। तासु हेतुपच्चयस्सेव अञ्ञेन असम्मिस्सा नव पुच्छा गहेतब्बा, सेसा अट्ठ[1]वारेन[1] गहिता।

तासं दुकमूलकादीसु तेवीसतिया वारेसु एकेकं नवकं अपनेत्वा याव सब्बमूलका अयं गणनपरिच्छेदो——दुकमूलके ताव एकमूलके दस्सितेसु द्वीसु सोळसाधिकेसु पुच्छासतेसु नव अपनेत्वा द्वे सतानि सत्त च पुच्छा होन्ति, ततो नव अपनेत्वा तिमूलके अट्ठनवुतिसतं। एवं पुरिमपुरिमतो नव नव अपनेत्वा चतुमूलके एकूननवुतिसतं, पञ्चमूलके असीतिसतं, छमूलके एकसत्ततिसतं, सत्तमूलके द्वासट्ठिसतं, अट्ठमूलके तेपण्णाससतं, नवमूलके चतुचत्ताळीससतं, दसमूलके पञ्चतिंससतं, B. 405 एकादसमूलके छब्बीससतं, द्वादसमूलके सत्तरसाधिकसतं, तेरसमूलके अट्ठाधिकसतं, चुद्दसमूलके नवनवुति, पन्नरसमूलके नवुति, सोळसमूलके एकासीति, सत्तरसमूलके द्वासत्तति, अट्ठारसमूलके तेसट्ठि, एकूनवीसतिमूलके चतुपञ्ञास, वीसतिमूलके पञ्चचत्ताळीसं, एकवीसतिमूलके छत्तिंसं, द्वावीसतिमूलके सत्तवीस, तेवीसतिमूलके अट्ठारस, सब्बमूलके नवा ति।

यथा पनेतानि हेतुपच्चयवसेन एकमूलके सोळसाधिकानि द्वे पुच्छा सतानि...पे०...सब्बमूलके नव, एवं आरम्मणपच्चयादीसु पि एकमेकं आदिं कत्वा आरम्मणादिपदवसेन एकेकस्स पदस्स एकमूलके सोळसाधिकानि द्वे पुच्छा सतानि...पे०...सब्बमूलके नवा ति एकेकस्स पदस्स एकमूलकादिभेदे द्वे पुच्छा सहस्सानि सत्तसतानि च पुच्छा होन्ति। तासं सब्बेसु पि चतुवीसतिया पच्चयेसु अयं गणनपरिच्छेदो—

चतुसट्ठिसहस्सानि, पुन अट्ठसतानि च।
पुच्छा हेतुदुकस्सेव, अनुलोम-नये मता॥

१-१. अत्थवारेन स्या.।

यथा च हेतुदुकस्स, एवं सहेतुकदुकादीनं पी ति सब्बस्मिं पि दुकसते—

सट्ठिसतसहस्सानि, चत्तारि च ततोपरं।
असीति च सहस्सानि, पुच्छा दुकसते विदू ॥

अयं ताव सुद्धिके तिकपट्ठाने चेव दुकपट्ठाने च पुच्छानं गणनपरिच्छेदो ।

यं पन ततो परं द्वावीसतिके गहेत्वा दुकसते पक्खिपित्वा **दुकतिकपट्ठानं** नाम देसितं, तत्थ "सिया हेतुं कुसलं धम्मं पटिच्च हेतु कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया" ति एवं द्वावीसतिया तिकेसु एकेकं तिकं दुकानं सतेन सतेन सद्धिं योजेत्वा दस्सेतब्बानं पुच्छानं हेट्ठा वुत्तनयेन सब्बेसं एकमूलकादीनं वसेन गहेत्वा[1] परिच्छेदो वेदितब्बो ।

यं पि ततो परं दुकसतं गहेत्वा द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा **तिकदुकपट्ठानं** नाम देसितं, तत्था पि "सिया कुसलं हेतुं धम्मं पटिच्च
B. 406 कुसलो हेतु धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया" ति एवं दुकसते एकेकं दुकं द्वावीसतिया तिकेहि सद्धिं योजेत्वा दस्सेतब्बानं पुच्छानं हेट्ठा वुत्तनयेन सब्बेसं एकमूलकादीनं वसेन गहेत्वा परिच्छेदो वेदितब्बो ।

यं पि ततो परं तिके तिकेसु येव पक्खिपित्वा **तिकतिकपट्ठानं** नाम देसितं, तत्था पि "सिया कुसलं सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं धम्मं पटिच्च कुसलो सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तो उप्पज्जेय्य धम्मो हेतुपच्चया" ति एवं द्वावीसतिया तिकेसु एकेकं तिकं सेसेहि एकवीसतिया तिकेहि सद्धिं योजेत्वा दस्सेतब्बानं पुच्छानं हेट्ठा वुत्तनयेन सब्बेसं एकमूलकादीनं वसेन गहेत्वा परिच्छेदो वेदितब्बो ।

यं पि ततो परं दुके दुकेसु येव पक्खिपित्वा **दुकदुकपट्ठानं** नाम देसितं, तत्था पि "सिया हेतुं सहेतुकं धम्मं पटिच्च हेतु सहेतुको धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया" ति एवं दुकसते एकेकं दुकं सेसेहि नवनवुतिया

१. गणेत्वा स्मा. ।

दुकेहि सद्धिं योजेत्वा दस्सेतब्बानं पुच्छानं हेट्ठा वुत्तनयेन सब्बेसं एकमूलकादीनं वसेन गहेत्वा परिच्छेदो वेदितब्बो ।

४१. तथागतेन हि सब्बं पेतं पभेदं दस्सेत्वा व देवपरिसाय धम्मो देसितो, धम्मसेनापतिस्स पन तेन "अज्ज इदञ्चिदञ्च देसितं" ति सङ्खिपित्वा नयदस्सनमत्तेनेव देसना अक्खाता । थेरेना पि सङ्खिपित्वा व वाचनामग्गो पवत्तितो, सो थेरेन पवत्तितनयेनेव सङ्गीतिकाले सङ्गहं आरोपितो ।

तं पनस्स सङ्खेपनयं दस्सेतुं **तिकञ्च पट्ठानवरं** (प.१.१६) ति अयं गाथा ठपिता । तस्सत्थो—**तिकञ्च पट्ठानवरं** ति पवरं तिकपट्ठानञ्च । **दुकुत्तमं** ति उत्तमं सेट्ठं दुकपट्ठानं च । **दुकतिकञ्चेवा** ति दुकतिकपट्ठानञ्च । **तिकदुकञ्चा** ति तिकदुकपट्ठानं च । **तिकतिकञ्चेवा** ति तिकतिकपट्ठानं च । **दुकदुकञ्चा** ति दुकदुकपट्ठानं च । **छ अनुलोमम्हि नया सुगम्भीरा** ति एते तिकपट्ठानादयो सुट्ठु गम्भीरा छ नया अनुलोमम्हि वेदितब्बा ति ।

तत्थ द्वे अनुलोमानि—धम्मानुलोमं च पच्चयानुलोमं च । तत्थ "कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो" ति एवं अभिधम्ममातिका पदेहि सङ्गहितानं धम्मानं अनुलोमदेसना वसेन पवत्तं **धम्मानुलोमं** नाम । B. 407
"हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया" ति एवं चतुवीसतिया पच्चयानं अनुलोमदेसना वसेन पवत्तं **पच्चयानुलोमं** नाम ।

तत्थ हेट्ठा अट्ठकथायं "तिकं च पट्ठानवरं…पे०…छ अनुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति अयं गाथा धम्मानुलोमं सन्धाय वुत्ता । इध पन अयं गाथा तस्मिं धम्मानुलोमे पच्चयानुलोमं सन्धाय वुत्ता । तस्मा "छ अनुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति अट्ठकथागाथाय धम्मानुलोमे तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो । इमस्मिं पनोकासे "हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया" ति एवं पवत्ते पच्चयानुलोमे एते धम्मानुलोमे तिकपट्ठानादयो "छ नया सुगम्भीरा" ति एवमत्थो वेदितब्बो । तेसु अनुलोमे तिकपट्ठाने कुसलत्तिकमत्तस्सेव वसेन अयं इमस्मिं पटिच्च वारस्स पण्णत्तिवारे सङ्खिपित्वा पुच्छापभेदो दस्सितो ।

सेसेसु पन तिकेसु सेसपट्ठानेसु च एका पि पुच्छा न दस्सिता। ततो परेसु पन सहजातवारादीसु कुसलत्तिकस्सा पि वसेन पुच्छं अनुद्धरित्वा लब्भमानकवसेन विस्सज्जनमेव दस्सितं। "छ अनुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति वचनतो पन इमस्मिं पच्चयानुलोमे छ पि एते पट्ठाननया पुच्छावसेन उद्धरित्वा दस्सेतब्बा। पट्ठानं वण्णयन्तानं हि आचरियानं भारो एसो ति।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

२. पच्चयपच्चनीयवण्णना

४२-४४. इदानि पच्चनीयं होति। तं दस्सेतुं **सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य न हेतुपच्चया** (प. १.१८) ति आदि आरद्धं। तत्थ अनुलोमपुच्छा हि सम्पमाणो व पुच्छा परिच्छेदो। तेनेवेत्थ "यथा अनुलोमे हेतुपच्चयो वित्थारितो, एवं पच्चनीये पि न हेतुपच्चयो वित्थारेतब्बो" ति वत्वा पुन परियोसाने "यथा अनुलोमे एकेकस्स पदस्स एकमूलकं, दुमूलकं, तिमूलकं चतुमूलकं याव तेवीसतिमूलकं, एवं पच्चनीये पि वित्थारेतब्बं" ति वुत्तं। **तेवीसतिमूलकं** ति इदं चेत्थ दुमूलकं येव सन्धाय वुत्तं। परियोसाने पन सब्बमूलकं चतुवीसतिमूलकं पि होति येव। तं सब्बं सङ्खित्तमेवा ति।

B. 408 **तिकञ्च पट्ठानवरं...पे०...छ पच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा** (प. १.१८) ति एत्था पि द्वे पच्चनीयानि—धम्मपच्चनीयं च पच्चयपच्चनीयं च। तत्थ "कुसला धम्मा" ति एवं अभिधम्ममातिका पदेहि सङ्गहितानं धम्मानं "न कुसलं धम्मं पटिच्च न कुसलो धम्मो" ति पच्चनीयदेसना वसेन पवत्तं **धम्मपच्चनीयं** नाम। "न हेतुपच्चया नारम्मणपच्चया" ति एवं चतुवीसतिया पच्चयानं पच्चनीयदेसनावसेन पवत्तं **पच्चयपच्चनीयं** नाम। तत्थ हेट्ठा अट्ठकथायं "तिकञ्च पट्ठानवरं...पे०...छ पच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति अयं गाथा

धम्मपच्चनीयं सन्धाय वुत्ता। इध पन अयं गाथा धम्मानुलोमे येव पच्चयपच्चनीयं सन्धाय वुत्ता। तस्मा "छ पच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति अट्ठकथागाथाय धम्मपच्चनीये तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो। इमस्मिं पनोकासे न हेतुपच्चया नारम्मणपच्चया ति एवं पवत्ते पच्चयपच्चनीये एते धम्मानुलोमे येव तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो।

तेसु अनुलोमतिकपट्ठाने येव कुसलत्तिकमत्तस्स वसेन अयं इमस्मिं पटिच्चवारस्स पण्णत्तिवारे सङ्खिपित्वा पुच्छा पभेदो दस्सितो। सेसेसु पन तिकेसु सेसपट्ठानेसु च एका पि पुच्छा न दस्सिता। ततो परेसु पन सहजातवारादीसु कुसलत्तिकस्सा पि वसेन पुच्छं अनुद्धरित्वा लब्भमानकवसेन विस्सज्जनमेव दस्सितं। "छ पच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति वचनतो पन इमस्मिं पच्चयपच्चनीये छ पि एते पट्ठान-नया पुच्छा वसेन उद्धरित्वा दस्सेतब्बा। पट्ठानं वण्णयन्तानं हि आचरियानं भारो एसो ति।

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

३. पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना

४५-४८. इदानि अनुलोमपच्चनीयं होति। तं दस्सेतुं **सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया न आरम्मणपच्चया** ति आदि आरद्धं। तत्थ "हेतुपच्चया न आरम्मण-पच्चया...पे०...हेतुपच्चया न अविगतपच्चया" ति हेतुपदस्स सेसेसु तेवीसतिया पच्चयेसु एकेकेन सद्धिं योजनावसेन हेतुपदादिके एकमूलके तेवीसति अनुलोमपच्चनीयानि। तेसु एकेकस्मिं एकूनपञ्ञासं कत्वा सत्तवीसाधिकानि एकादसपुच्छासतानि होन्ति। दुमूलके पन हेतारम्मणपदानं सेसेसु द्वावीसतिया पच्चयेसु एकेकेन सद्धिं योजना- B. 409
वसेन द्वावीसति अनुलोमपच्चनीयानी ति एवं अनुलोमे वुत्तेसु सब्बेसु एकमूलकादीसु एकेकं पदं परिहापेत्वा अवसेसानं वसेन पुच्छागणना

वेदितब्बा । एकमूलकादीसु चेत्थ या पुच्छा पाळियं आगता, या च न आगता, ता सब्बा हेट्ठा वुत्तनयानुसारेनेव वेदितब्बा ।

तिकञ्च पट्ठानवरं...पे०...छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा ति एत्थ पन हेट्ठा वुत्तनयेनेव द्वे अनुलोमपच्चनीयानि – धम्मानुलोमपच्चनीयं पच्चयानुलोमपच्चनीयं च । तत्थ "कुसला धम्मा" ति एवं अभिधम्ममातिकापदेहि सङ्गहितानं धम्मानं "कुसलं धम्मं पटिच्च न कुसलो धम्मो" ति अनुलोमपच्चनीयदेसनावसेन पवत्तं **धम्मानुलोमपच्चनीयं** नाम ।

"हेतुपच्चया न आरम्मणपच्चया" ति एवं चतुवीसतिया पच्चयेसु लब्भमानपदानं अनुलोमपच्चनीयदेसना वसेन पवत्तं **पच्चयानुलोमपच्चनीयं** नाम । तत्थ हेट्ठा अट्ठकथायं "तिकञ्च पट्ठानवरं...पे०... छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति अयं गाथा धम्मानुलोमपच्चनीयं सन्धाय वुत्ता । इध पन अयं गाथा धम्मानुलोमे येव पच्चयानुलोमपच्चनीयं सन्धाय वुत्ता । तस्मा "छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति अट्ठकथा गाथाय धम्मानुलोमपच्चनीये तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो । इमस्मिं पनोकासे हेतुपच्चया नारम्मणपच्चया ति एवं पवत्ते पच्चयानुलोमपच्चनीये एते धम्मानुलोमे येव तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो ।

तेसु अनुलोमे तिकपट्ठाने येव कुसलत्तिकमत्तस्स वसेन अयं इमस्मिं पटिच्चवारस्स पण्णत्तिवारे सङ्खिपित्वा पुच्छापभेदो दस्सितो । सेसेसु पन तिकेसु सेसपट्ठानेसु च एका पि पुच्छा न दस्सिता । ततो परेसु पन सहजातवारादीसु कुसलत्तिकस्सा पि वसेन पुच्छं अनुद्धरित्वा लब्भमानकवसेन विस्सज्जनमेव दस्सितं । "छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा" ति वचनतो पन इमस्मिं पच्चयानुलोमपच्चनीये छ पि एते पट्ठाननया पुच्छावसेन उद्धरित्वा दस्सेतब्बा । पट्ठानं वण्णयन्तानं हि आचरियानं भारो एसो ति ।

पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(४) पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना

४९-५२. इदानि पच्चनीयानुलोमं होति। तं दस्सेतुं सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य **न हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया** ति आदि आरद्धं। तत्थ अनुलोमपच्चनीयपुच्छा हि समप्पमाणो एव पुच्छापरिच्छेदो। एकमूलकादीसु चेत्थ या पुच्छा पाळियं आगता, या च न आगता, ता सब्बा हेट्ठा वुत्तनयानुसारेनेव वेदितब्बा। B. 410

तिकञ्च पट्ठानवरं···पे०···छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा (प.१.१९) ति एत्था पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव द्वे पच्चयानुलोमानि—धम्मपच्चनीयानुलोमं, पच्चयपच्चनीयानुलोमं च। तत्थ "कुसला धम्मा" ति एवं अभिधम्ममातिकापदेहि सङ्गहितानं धम्मानं "न कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो" ति पच्चनीयानुलोमदेसनावसेन पवत्तं **धम्मपच्चनीयानुलोमं** नाम। "न हेतु पच्चया आरम्मणपच्चया" ति एवं चतुवीसतिया पच्चयेसु लब्भमानपदानं पच्चयपच्चनीयानुलोमदेसनावसेन पवत्तं **पच्चयपच्चनीयानुलोमं** नाम।

तत्थ हेट्ठा अट्ठकथायं "तिकञ्च पट्ठानवरं···पे०···छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति अयं गाथा धम्मपच्चनीयानुलोमं सन्धाय वुत्ता। इध पन अयं गाथा धम्मानुलोमे येव पच्चयपच्चनीयानुलोमं सन्धाय वुत्ता। तस्मा "छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति अट्ठकथाय धम्मपच्चनीयानुलोमे तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो। इमस्मिं पनोकासे न हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया ति एवं पवत्ते पच्चयपच्चनीयानुलोमे एते धम्मानुलोमे येव तिकपट्ठानादयो छ नया सुगम्भीरा ति एवमत्थो वेदितब्बो।

तेसु अनुलोमतिकपट्ठाने येव कुसलत्तिकमत्तस्स पि वसेन अयं इमस्मिं पटिच्चवारस्स पण्णत्तिवारे सङ्खिपित्वा पुच्छापभेदो दस्सितो। सेसेसु पन तिकेसु सेसपट्ठानेसु च एका पि पुच्छा न दस्सिता। ततो परेसु पन सहजातवारादीसु कुसलत्तिकस्सा पि वसेन पुच्छं अनुद्धरित्वा लब्भमानक-

वसेन विस्सज्जनमेव दस्सितं। "छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा" ति वचनतो पन इमस्मिं पच्चयपच्चनीयानुलोमे छ पि एते पट्ठाननया पुच्छावसेन उद्धरित्वा दस्सेतब्बा। पट्ठानं वण्णयन्तानं हि आचरियानं भारो एसो ति।

पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना निट्ठिता
पुच्छावारवण्णना निट्ठिता

१. कुसलत्तिकवण्णना

१. पटिच्चवारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमविभङ्गवारवण्णना

B. 411 १. इदानि या एता पण्णत्तिवारे कुसलत्तिकं निस्साय हेतुपच्चयादिवसेन एकूनपञ्ञासं आदिं कत्वा नयमत्तं दस्सेन्तेन अपरिमाणा पुच्छा दस्सिता। तत्थ कुसलाकुसलादीनं सहुप्पत्तिया अभावतो या पुच्छा "कुसलं धम्मं पटिच्च अकुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया" ति एवं विस्सज्जनं न लभन्ति। ता पहाय या विस्सज्जनं लभन्ति, ता येव विस्सज्जेतुं अयं **कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** (प. १.२०) ति आदिना नयेन पटिच्चवारस्स निद्देसवारो आरद्धो।

तत्थ सिया—सचे इमा हेतुपच्चयादिवसेन एकूनपञ्ञासं पुच्छा सब्बसो विस्सज्जनं न लभन्ति, अथ कस्मा दस्सिता? ननु या लभन्ति, तायेव दस्सेतब्बा ति? आम, दस्सेतब्बा सियुं। तथा दस्सियमाना पन सब्बेसु तिकदुकपट्ठानादीसु एकेकस्मिं तिके, दुके, दुकतिके, तिकदुके, तिकतिके, दुकदुके च सङ्खेपं अकत्वा दस्सेतब्बा येव भवेय्युं। कस्मा? यस्मा या कुसलत्तिके लभन्ति, न तायेव वेदनात्तिकादीसु। धम्मानुलोमपच्चनीये च तिकपट्ठाने वितक्कत्तिकपीतित्तिकानं विस्सज्जने सब्बापेता विस्सज्जनं लभन्ति, तस्मा उक्कट्ठपरिच्छेदेन एकेकस्मिं तिके

यत्तकाहि पुच्छाहि भवितब्बं सब्बा कुसलत्तिके दस्सिता । एवं दस्सितासु हि या तत्थ विस्सज्जनं न लभन्ति, ता पहाय या लभन्ति, ता वुच्चमाना सक्का सुखेन विजानितुं ति सुखेन विजाननत्थं सब्बा पि कुसलत्तिके दस्सिता । या पनेत्थ विस्सज्जनं न लभन्ति, ता पहाय या लभन्ति, ता येव विस्सज्जिता ति वेदितब्बा ।

तत्थ **कुसलं धम्मं पटिच्चा** ति चतुभूमककुसलधम्मेसु वेदना-क्खन्धादिभेदं एकं धम्मं पटिच्च पटिगन्त्वा सहुप्पत्तिसङ्खातेन सदिस-भावेन पत्वा, तेन सद्धिं एकतो पवत्तिभावं[1] उपगन्त्वा ति अत्थो । **कुसलो धम्मो** ति चतुभूमककुसलधम्मेसु येव सञ्ञाक्खन्धादिभेदो एको धम्मो । **उप्पज्जती** ति उप्पादतो याव निरोधगमना उद्धं पज्जति, निब्बत्तती ति पि अत्थो । अत्तानं लभति, उप्पादादयो तयो पि खणे B. 412 पापुणाती ति वुत्तं होति । **हेतुपच्चया** ति कुसलहेतुना हेतुपच्चयभावं साधेन्तेन ।

एवं "उप्पज्जेय्या" ति पुच्छाय "उप्पज्जती" ति विस्सज्जनं वत्वा इदानि यं धम्मं पटिच्च यो धम्मो उप्पज्जति, तं धम्मं खन्धवसेन दस्सेतुं **कुसलं एकं खन्धं** ति आदिमाह । तत्थ **एकं** ति वेदनादीसु चतूसु यं किञ्चि एकं । **तयो खन्धा** ति यो यो पच्चयभावेन गहितो, तं तं ठपेत्वा अवसेसा तयो खन्धा ।

तयो खन्धे ति वेदनादीसु यो एको खन्धो उप्पज्जती ति गहितो, तं ठपेत्वा सेसे तयो । **द्वे खन्धे** ति वेदनासञ्ञादुकादीसु छसु दुकेसु ये केचि द्वे खन्धे पटिच्च । **द्वे खन्धा** ति ये ये पच्चय-भावेन गहिता, ते ते ठपेत्वा अवसेसा द्वे खन्धा कुसलहेतुना हेतुपच्चय-भावं साधेन्तेन उप्पज्जन्ती ति अत्थो ।

यस्मा पन एको खन्धो एकस्सेव द्विन्नं येव वा, द्वे वा पन एकस्सेव पच्चयो नाम नत्थि, तस्मा "एकं खन्धं पटिच्च एको खन्धो, एकं खन्धं पटिच्च द्वे खन्धा, द्वे खन्धे पटिच्च एको खन्धो" ति न वुत्तं ।

---

१. उप्पत्तिभावं म. ।

कुसलं धम्मं पटिच्च अब्याकतो धम्मो उप्पज्जती (प. १. २०) ति आदीसु पि वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। **चित्तसमुट्ठानं रूपं** ति इदं पटिच्चट्ठस्स सहजातट्ठत्ता यं कुसलेन सहजातं चेव हेतुपच्चयं च लभति, तं दस्सेतुं वुत्तं। परतो पि एवरूपेसु ठानेसु अयमेव नयो।

विपाकाब्याकतं किरियाब्याकतं ति एत्थ हेतुपच्चयाभावतो अहेतुकं, रूपेन सद्धिं अनुप्पत्तितो आरुप्पविपाकं च न गहेतब्बं। **पटिसन्धिक्खणे** ति कटत्तारूपसङ्खातस्स अब्याकतस्स अब्याकतं पटिच्च उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। **विपाकाब्याकतं** ति तस्मिं खणे विज्जमानाब्याकतवसेन वुत्तं। **खन्धे**[1] **पटिच्च वत्थु, वत्थुं पटिच्च खन्धा** ति इदं कटत्तारूपग्गहणेन वत्थुम्हि गहिते पि वत्थुं पटिच्च खन्धानं उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं[1]।

एकं महाभूतं ति आदि रूपाब्याकतं पटिच्च रूपाब्याकतस्स उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। **एकं खन्धं** ति आदीसु वुत्तनयेनेव पनेत्थ अत्थयोजना वेदितब्बा। एवं रूपाब्याकतम्हि भूते पटिच्च भूतानं उप्पत्तिं
B. 413 वत्वा इदानि भूते पटिच्च उपादारूपानं उप्पत्तिं दस्सेतुं **महाभूते पटिच्च चित्तसमुट्ठानं** (प. १.२१) ति आदि वुत्तं। एवं सन्ते उपादारूपं ति एत्तकमेव वत्तब्बं, इतरद्वयं कस्मा वुत्तं ति? महाभूते पि पटिच्च उप्पत्ति दस्सनत्थं। यञ्हि हेट्ठा "चित्तसमुट्ठानं च रूपं कटत्ता च रूपं" ति दस्सितं, तं न केवलं खन्धे येव च पटिच्च उप्पज्जति, महाभूते पि पन पटिच्च उप्पज्जती ति दस्सनत्थमिदं वुत्तं ति वेदितब्बं। तत्थ चित्तसमुट्ठानं पवत्तेयेव, कटत्ता रूपं पटिसन्धियं पि। **उपादारूपं** ति तस्सेव उभयस्स विसेसनं।

कुसले खन्धे च महाभूते च पटिच्चा ति एत्थ चित्तसमुट्ठाना व महाभूता गहिता। **चित्तसमुट्ठानं रूपं** ति एत्थ पन भूतरूपं पि उपादारूपं पि गहितं। "एकं महाभूतं पटिच्च तयो महाभूता" ति

१-१. खन्धे पटिच्च वत्थुं ति इदं कटत्तारूपग्गहणेन वत्थुम्हि गहिते पि खन्धे पटिच्च वत्थुनो उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। वत्थुं पटिच्च खन्धा ति वत्थुं पटिच्च खन्धानं उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं स्या.।

आदिना नयेन हि भूतरूपं पि खन्धे च महाभूते च पटिच्च उप्पज्जति । **महाभूते पटिच्च उपादारूपं** ति वुत्तनयेन उपादारूपं पि । **अकुसलञ्च अब्याकतञ्चा** ति पञ्हाविस्सज्जनेसु पि एसेव नयो । एवं हेतुपच्चये नव पुच्छा विस्सज्जिता । एतायेव हि एत्थ लब्भन्ति, सेसा चत्तालीसं मोघपुच्छा ति न विस्सज्जिता । इमिना उपायेन आरम्मणपच्चयादीसु पि पुच्छाविस्सज्जनानं अत्थो वेदितब्बो । तत्थ तत्थ पन विचारेतब्बयुत्तकमेव विचारयिस्साम ।

२. आरम्मणपच्चये ताव रूपस्स आरम्मणपच्चयवसेन अनुप्पत्तितो तासु नवसु रूपमिस्सका पहाय तिस्सो व पुच्छा विस्सज्जिता । तेनेव च कारणेन "वत्थुं पटिच्च खन्धा" ति वत्वा "खन्धे पटिच्च वत्थू" ति न वुत्तं । न हि तं आरम्मणपच्चयेन उप्पज्जति ।

३. अधिपतिपच्चये **विपाकाब्याकतं** ति लोकुत्तरमेव सन्धाय वुत्तं । तेनेवेत्थ "पटिसन्धिक्खणे" ति न गहितं । सेसं हेतुपच्चयसदिसमेव ।

४. अनन्तरसमनन्तरेसु पि रूपं न लब्भती ति आरम्मणपच्चये विय तिस्सो व पुच्छा ।

५. सहजातपच्चये **पटिसन्धिक्खणे** ति पञ्चवोकारे पटिसन्धिवसेन वुत्तं । हेट्ठा पन पच्चयविभङ्गे "ओक्कन्तिक्खणे" ति आगतं तं पि इमिना सद्धिं अत्थतो एकं, ब्यञ्जनमत्तमेव हेत्थ नानं ति । अपि च "तिण्णं सन्निपाता गब्भस्स अवक्कन्ति होती" (म. नि. १.३२७) ति B. 414 वचनतो **ओक्कन्ती** ति पञ्चवोकारपटिसन्धियावेतं नामं । **पटिसन्धी** ति सब्बभवसाधारणं । इध पन "कटत्ता च रूपं" ति आदिवचनतो पञ्चवोकारपटिसन्धियेव अधिप्पेता । सा हि रूपस्स पि अरूपस्स पि पच्चयभावं चेव पच्चयुप्पन्नभावं च सङ्गण्हाति, तस्मा परिपुण्णविस्सज्जना होती ति गहिता ।

बाहिरं एकं महाभूतं ति अनिन्द्रियबद्धेसु पठवीपासाणादीसु महाभूतं सन्धाय वुत्तं । पच्चयविभङ्गवारस्मिं हि चत्तारो महाभूता

ति अज्झत्तिकं च बाहिरं च एकतो कत्वा गहितं। सङ्खेपदेसना हि सा। अयं पन वित्थारदेसना, तस्मा सब्बं विभजित्वा दस्सेन्तो "बाहिरं एकं महाभूतं" ति आदिमाह। **असञ्ञसत्तानं एकं महाभूतं पटिच्चा** (प. १.२४) ति द्विसन्ततिसमुट्ठानभूतवसेन वुत्तं।

महाभूते पटिच्च **कटत्तारूपं** ति इदं पन कम्मसमुट्ठानवसेनेव वुत्तं। **उपादारूपं** ति उतुसमुट्ठानवसेनेव।

६. अञ्ञमञ्ञपच्चये **खन्धे पटिच्च वत्थु, वत्थुं पटिच्च खन्धा** (प. १.२४) ति चतुन्नं पि खन्धानं एकतो वत्थुना अञ्ञमञ्ञपच्चयतं दस्सेतुं वुत्तं।

७. निस्सयपच्चये यस्मा पटिच्चट्ठो नाम सहजातट्ठो, तस्मा या हेट्ठा पच्चयविभङ्गवारे चक्खायतनादीनं निस्सयपच्चयता दस्सिता, न सा गहिता। चक्खायतनादीनि हि पुरेजातानि हुत्वा पच्चया होन्ति, इध सहजातमेव लब्भति। तेनेव वुत्तं—"निस्सयपच्चयो सहजातपच्चयसदिसो" ति।

८. उपनिस्सयपच्चये रूपस्स उपनिस्सयपच्चयाभावा तीणेव विस्सज्जनानि लब्भन्ति, तेन वुत्तं "आरम्मणपच्चयसदिसं" ति। तत्थ किञ्चा पि न सब्बे कुसला कुसलाब्याकता आरम्मणूपनिस्सयं लभन्ति, ये पन लभन्ति, तेसं वसेनेतं वुत्तं ति वेदितब्बं।

९. पुरेजातपच्चये **वत्थुं पुरेजातपच्चया** ति वत्थुं पटिच्च वत्थुना पुरेजातपच्चयतं साधेन्तेन उप्पज्जन्ती ति अत्थो। **विपाकाब्याकतं एकं खन्धं** ति एत्थ यं विपाकाब्याकतस्स वत्थु ओक्कन्तिक्खणे सहजातपच्चयो होति, तं पुरेजातपच्चयभाजनियत्ता इध न गहेतब्बं। B. 415 ये पि कुसलादयो आरुप्पे पुरेजातपच्चयं न लभन्ति, ते पि पुरेजातपच्चयभाजनियतो येव इध न गहेतब्बा। आरम्मणं पन नियमतो पुरेजातपच्चयभावं न लभति। रूपायतनादीनि हि चक्खुविञ्ञाणादीनं येव पुरेजातपच्चयतं साधेन्ति, मनोविञ्ञाणधातुया अतीतानागतानि

पि आरम्मणानि[1] होन्ति येव । तस्मा इध न गहितं । खन्धवसेन हि अयं देसना, न विञ्ञाणधातुवसेन । "विपाकाब्याकतं एकं खन्धं" ति देसनाय च सब्बा पि विञ्ञाणधातुयो गहिता, न चक्खुविञ्ञाण-धातु-आदयो एवा ति ।

पच्छाजातो कुसलाकुसलानं पच्चयो न होति, अब्याकतस्स पि उपत्थम्भको व न जनको, तस्मा "उप्पज्जति पच्छाजातपच्चया" ति एवं वत्तब्बो एकधम्मो पि नत्थी ति पच्छाजातपच्चयवसेन विस्सज्जनं न कतं ।

१०. आसेवनपच्चये कामं सब्बा किरिया आसेवनपच्चयं न लभन्ति, लब्भमानवसेन पन "किरियाब्याकतं" ति वुत्तं । तस्मा जवनकिरियावेत्थ गहिता ति वेदितब्बा ।

११. कम्मपच्चये कुसलाकुसलेसु एकक्खणिको कम्मपच्चयो वेदितब्बो, तथा किरियाब्याकते । विपाकाब्याकते पन नानाक्खणिको पि, तथा पटिसन्धिक्खणे महाभूतानं । चित्तसमुट्ठानानं पन एकक्ख-णिको । कटत्तारूपानं नानाक्खणिको व, तथा असञ्ञसत्तरूपानं । कटत्तारूपं पनेत्थ जीवितिन्द्रियं । सेसं न एकन्ततो कम्मसमुट्ठानत्ता उपादारूपं ति वुत्तं । एवं सन्ते पि इध कम्मसमुट्ठानमेव अधिप्पेतं ।

१२. विपाकपच्चये कुसलाकुसलं किरियं च न लब्भती ति अब्याकतवसेनेव विस्सज्जनं कतं । **चित्तसमुट्ठानं** (प. १.२६) ति विपाकचित्तसमुट्ठानमेव । **कटत्तारूपं** ति यथा लाभवसेन इन्द्रियरूपं च वत्थुरूपं च । **उपादारूपं** ति तदवसेसं तस्मिं समये विज्जमानकं उपादारूपं ।

१३. आहारपच्चये सब्बेसं पि कुसलादीनं खन्धानं चित्तसमुट्ठान-रूपस्स च अरूपाहारवसेन उप्पत्ति वेदितब्बा, तथा पटिसन्धिक्खणे महाभूतानं । **चित्तसमुट्ठानं** ति भवङ्गादिचित्तसमुट्ठानं । **आहारसमुट्ठानं** ति कबळीकाराहारसमुट्ठानं । **चित्तसमुट्ठानं** ति कुसलाकुसलचित्त- B. 416

१. आरम्मणं म. ।

समुट्ठानमेव। पच्चयविभङ्गवारे आहारपटिपाटिया पठमं कबळीकारो आहारो दस्सितो, इध पन कुसलं धम्मं ति पुच्छावसेन पठमं अरूपाहारा दस्सिता ति वेदितब्बा।

१४. इन्द्रियपच्चये पच्चयविभङ्गे इन्द्रियपटिपाटिया पठमं चक्खुन्द्रियादीनि दस्सितानि, इध पन कुसलादिपुच्छावसेन पठमं अरूपिन्द्रियानं पच्चयता दस्सिता। तत्थ कुसलादीसु यथालाभवसेन अरूपिन्द्रिया गहेतब्बा। असञ्ञसत्तानं भूतरूपेसु पि जीवितिन्द्रियं ति।

१५. झानमग्गपच्चयेसु हेतुपच्चयसदिसमेव विस्सज्जनं, तेनेवेत्थ "हेतुपच्चयसदिसं" ति वुत्तं।

१६. सम्पयुत्तपच्चये विस्सज्जनं आरम्मणपच्चयगतिकं, तेनेवेत्थ "आरम्मणपच्चयसदिसं" ति वुत्तं।

१७. विप्पयुत्तपच्चये **वत्थुं विप्पयुत्तपच्चया** (प. १.२७) ति वत्थुं पटिच्च विप्पयुत्तपच्चया, वत्थुना विप्पयुत्तपच्चयतं साधेन्तेन उप्पज्जन्ती ति अत्थो। **खन्धे विप्पयुत्तपच्चया** ति खन्धे पटिच्च विप्पयुत्तपच्चया, खन्धेहि विप्पयुत्तपच्चयतं साधेन्ते हि उप्पज्जती ति अत्थो। **खन्धा वत्थुं विप्पयुत्तपच्चया** ति वत्थुं पटिच्च खन्धा विप्पयुत्तपच्चया। वत्थुना विप्पयुत्तपच्चयतं साधेन्तेन उप्पज्जन्ती अत्थो। **चित्तसमुट्ठानरूपं खन्धे विप्पयुत्तपच्चया** ति खन्धे पटिच्च विप्पयुत्तपच्चया चित्तसमुट्ठानं रूपं खन्धेहि विप्पयुत्तपच्चयतं साधेन्तेहि उप्पज्जती ति अत्थो। सेसविस्सज्जनेसु पि **वत्थुं विप्पयुत्तपच्चया** ति आदीसु पि वुत्तनयेनेवत्थो वेदितब्बो। विपाकाब्याकते चेत्थ वत्थुग्गहणेन चक्खादीनि सङ्गहितब्बानि। **एकं महाभूतं** ति आदि रूपाब्याकतस्स पच्चयभावं दस्सेतुं वुत्तं। **चित्तसमुट्ठानं** ति अब्याकत-चित्तसमुट्ठानं पि कुसलाकुसलचित्तसमुट्ठानं पि।

अत्थिपच्चये सब्बं सहजातपच्चयगतिकं। तेनेवेत्थ "सहजात-पच्चयसदिसं" ति वुत्तं।

नत्थिविगता आरम्मणपच्चयगतिका, अविगतं सहजातगतिकं। तेनेवेत्थ "आरम्मणपच्चयसदिसं, सहजातपच्चयसदिसं" ति वुत्तं। **इमे तेवीसतिपच्चया** ति सङ्खिपित्वा दस्सितानं वसेनेतं वुत्तं। B. 417 **वित्थारेतब्बा** ति या पुच्छा विस्सज्जनं लभन्ति, तासं वसेन वित्थारेतब्बा। अयं हेतुपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलके पच्चयानुलोमे पटिच्चवारस्स कुसलत्तिकविस्सज्जने अत्थवण्णना।

पच्चयानुलोमविभङ्गवारवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयानुलोमसङ्ख्यावारवण्णना

२१. इदानि ये एत्थ हेतुपच्चयादीसु एकेकस्मिं पच्चये विस्सज्जनवारा लद्धा, ते गणनवसेन दस्सेतुं **हेतुया नवा** ति आदि आरद्धं। तत्थ हेतुया नवा ति हेतुपच्चये नव पुच्छाविस्सज्जनवारा होन्ति। सेय्यथीदं—कुसलेन कुसलं, कुसलेन अब्याकतं, कुसलेन कुसलाब्याकतं; अकुसलेन अकुसलं, अकुसलेन अब्याकतं, अकुसलेन अकुसलाब्याकतं, अब्याकतेन अब्याकतं, कुसलाब्याकतेन अब्याकतं, अकुसलाब्याकतेन अब्याकतं ति।

२२. **आरम्मणे तीणी** (प. १.२९) ति कुसलेन कुसलं, अकुसलेन अकुसलं, अब्याकतेन अब्याकतं। **अधिपतिया नवा** ति हेतुया वुत्तसदिसा व। द्वादससु हि पच्चयेसु नव नवा ति वुत्तं। सब्बेसु पि पुच्छाविस्सज्जनानि हेतुपच्चयसदिसानेव। विभङ्गे पन अत्थि विसेसो। दससु पच्चयेसु तीणि तीणी ति वुत्तं। सब्बेसु पि पुच्छाविस्सज्जनानि आरम्मणसदिसानेव। विभङ्गे पन अत्थि विसेसो। अञ्ञमञ्ञपच्चयस्मिं हि अब्याकतपदस्स विस्सज्जने रूपं पि लब्भति, तथा पुरेजात पच्चये। आसेवनपच्चये विपाकानि चेव वीथिचित्तानि च न लब्भन्ति।

विपाके एकं ति अब्याकतमेव। एकमेत्थ सङ्खेपतो नव तीणि एकं ति, तिविधो व वारपरिच्छेदो। वित्थारतो द्वादस नवका, दस तिका,

एकं एककं ति सब्बेसु पि तेवीसतिया पच्चयेसु एकूनचत्तालीसाधिकं वारसतं होति, एकूनचत्तालीसाधिकं च पुच्छासतं। एकूनचत्तालीसाधिकं पुच्छाविस्सज्जनसतं ति पि तस्सेव नामं।

एवं हेतुपच्चयादिके एकमूलके गणनं दस्सेत्वा इतो परेसु दुमूलकादीसु वित्थारदेसनं सङ्खिपित्वा एकमूलके दस्सिताय देसनाय लब्भमानगणनञ्ञेव आदाय वारपरिच्छेदं दस्सेतुं दुमूलके ताव **हेतुपच्चया**
B. 418 **आरम्मणे तीणी** ति आदिमाह। तत्रिदं लक्खणं—बहुगणनो पि पच्चयो अबहुगणनेन सद्धिं युत्तो. तेन समानगणनो व होति। तेन वुत्तं—हेतुपच्चया आरम्मणे तीणी" ति। हेतुआरम्मणदुके आरम्मणे वुत्तानि तीणेव विस्सज्जनानि लब्भन्ती ति अत्थो। समानगणनो पन समानगणनेन सद्धिं युत्तो अपरिहीनगणनो व होति। तेन वुत्तं—"हेतुपच्चया अधिपतिया नवा" ति। हेताधिपतिदुके नवेव विस्सज्जनानि लब्भन्ती ति अत्थो।

विपाके एकं ति हेवितुपाकदुके विपाके वुत्तं एकमेव विस्सज्जनं लब्भती ति एवं ताव दुमूलके वारपरिच्छेदो वेदितब्बो।

तिमूलकादीसु पि इदमेव लक्खणं। तेनेवाह—**हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया अधिपतिया तीणी** ति। हेतारम्मणाधिपतितिके आरम्मणे वुत्तानि तीणेव विस्सज्जनानि लब्भन्ती ति अत्थो। एवं सब्बत्थ नयो नेतब्बो।

द्वादसमूलके पन विपाकपच्चयो न लब्भति, तस्मा **आसेवनपच्चया कम्मे तीणी** ति वत्वा विपाकं अपरामसित्वा **आहारे तीणी** ति वुत्तं। तेरसमूलकादीसु पि एसेव नयो। ते पन सङ्खिपित्वा तेवीसतिमूलकोवेत्थ दस्सितो। सो दुविधो होति—सासेवनो वा सविपाको वा। तत्थ पठमं सासेवनो दस्सितो, सो तीणेव विस्सज्जनानि लभति। तेन वुत्तं "आसेवनपच्चया अविगते तीणी" ति। सविपाको पन आसेवनं न लभति, तस्मा तं पहाय विपाकवसेन गणनाय दस्सनत्थं अनन्तरायेव "हेतुपच्चया···पे०···विपाकपच्चया आहारे एकं" ति एकं नयं दस्सेत्वा पच्छा तेवीसतिमूलको व दस्सितो।

एतेसु पन द्वीसु तेवीसतिमूलकेसु किञ्चा पि एकस्मिं विपाकपच्चयो नत्थि, एकस्मिं आसेवनपच्चयो, पच्छाजातपच्चयो पन उभयत्था पि। रुळ्हीसद्देन पनेते तेवीसतिमूलकात्वेव वेदितब्बा। तेसु सासेवने आसेवनस्स वसेन सब्बत्थ तीणेव विस्सज्जनानि, सविपाके विपाकपच्चयस्स वसेन एकमेवा ति अयं हेतुपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलकादीसु गणना। यं पनेतं हेतुमूलकानन्तरं "आरम्मणे ठितेन सब्बत्थ तीणेव पञ्हा" ति वुत्तं, तं आरम्मणपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलके पि दुमूलकादीसु पि सब्बत्थ आरम्मणपदे चेव आरम्मणेन सद्धिं सेसपच्चययोजनासु B. 419
च यत्थ नवहि भवितब्बं, तत्थ तयो व पञ्हा होन्ती ति दस्सनत्थं वुत्तं। विपाकपदे पन विपाकपदेन सद्धिं सेसपच्चययोजनासु च एको व पञ्हो होती ति। इति यं हेट्ठा अवोचुम्ह "बहुगणनो पि पच्चयो अबहुगणनेन सद्धिं युत्तो तेन समानगणनो होती" ति, तं सुवुत्तमेव।

इदानि ये आरम्मणादीनं पच्चयानं वसेन एकमूलकादयो दस्सेतब्बा, तेसु एकमूलको ताव हेतु एकमूलकेनेव सदिसो ति एकस्मिं पि पच्चयेन दस्सितो। आरम्मणपच्चयवसेन पन दुमूलके गणनं दस्सेतुं **आरम्मणपच्चया हेतुया तीणि, अधिपतिया तीणि···पे०···अविगते तीणी** ति वुत्तं। एत्थ च "आरम्मणपच्चया अधिपतिया तीणि···पे०···अविगते तीणी" ति वत्तब्बे ये हेतुपच्चयादयो पच्चया बहुगणना, तेसं ऊनतरगणनेहि च समानगणनेहि च सद्धिं संसन्दने या गणना लब्भति, तं दस्सेतुं आरम्मणपच्चयस्स पुरिमभागे ठितं पि हेतुपच्चयं पच्छिमभागे व ठपेत्वा "आरम्मणपच्चया हेतुया तीणी" ति वुत्तं। तेनेतं आविकरोति— आरम्मणपच्चयो येन येन बहुतरगणनेन वा समानगणनेन वा पच्चयेन सद्धिं दुकतिकादिभेदं गच्छति, सब्बत्थ तीणेव पञ्हा विस्सज्जनानि वेदितब्बानि। विपाकपच्चयेन पन सद्धिं संसन्दने एकमेव लब्भति, तं विपाकपच्चयादिकाय गणनाय आविभविस्सती ति इध न दस्सितं। या चेसा दुमूलके गणना दस्सिता, तिमूलकादीसु पि एसा व गणना ति आरम्मणपच्चयवसेन तिमूलकादयो न वित्थारिता।

इदानि अधिपतिपच्चयादिवसेन दुमूलकादीसु गणनं दस्सेतुं **अधिपतिपच्चया हेतुया नवा** ति आदि वुत्तं। तत्था पि वुत्तनयेनेव

पच्चयसन्निवेसो वेदितब्बो। यथा च अधिपतिपच्चया हेतुया नव, एवं सेसेसु पि हेतुना समानगणनासु नवेव। इति यो यो पच्चयो आदिम्हि तिट्ठति, तेन तेन सद्धिं समानगणनानं संसन्दने आदिम्हि ठितस्स वसेन गणना होति। तेन पन सद्धिं ऊनतरगणनानं संसन्दने ऊनतरगणनानं येव वसेन गणना होती ति वेदितब्बो। यथा च आरम्मणपच्चयवसेन एवं अधिपतिपच्चयवसेना पि ततो परेसं
B. 420 अनन्तरादीनं वसेना पि तिमूलकादयो न वित्थारिता। तस्मा दुमूलके दस्सितगणनावसेनेव सब्बत्थ साधेतब्बा। तेनेव वुत्तं "एकेकं पच्चयं मूलकं कातून सज्झायमग्गेन गणेतब्बा" ति।

पच्चयानुलोमसङ्ख्यावारवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

३४. पच्चयपच्चनीयं पन यस्मा कुसलपदे न लब्भति कुसलधम्मस्स हेतुपच्चयेन विना अनुप्पत्तितो, तस्मा **अकुसलं धम्मं पटिच्चा** (प. १.३२) ति आदि आरद्धं। तत्थ **नहेतुपच्चया** ति हेतुपच्चयपटिक्खेपो हेतुपच्चयं विना अञ्ञेन पच्चयेन उप्पज्जती ति अत्थो। **विचिकिच्छासहगतो उद्धच्चसहगतो मोहो** ति अयं हि सम्पयुत्तधम्मानं चेव चित्तसमुट्ठानरूपस्स च सयं हेतुपच्चयो होति, अञ्ञस्स पन सम्पयुत्तहेतुनो अभावा नहेतुपच्चया उप्पज्जती ति ठपेत्वा हेतुपच्चयं सेसेहि अत्तनो अनुरूपपच्चयेहि उप्पज्जति। इमिना नयेन सब्बपच्चयपटिक्खेपेसु अत्थो वेदितब्बो। **अहेतुकं विपाकाब्याकतं** ति इदं रूपसमुट्ठापकवसेनेव वेदितब्बं। अञ्ञेसु पि एवरूपेसु एसेव नयो।

नअधिपतिपच्चये कामं अधिपति पि अत्तना सद्धिं दुतियस्स अधिपतिनो अभावा न अधिपतिपच्चयं लभति, यथा पन विचिकिच्छुद्धच्चसहगतो मोहो अहेतुको, न तथा अधिपतयो[1] एव निराधिपति। छन्दादीसु पन अञ्ञतरं अधिपतिं अकत्वा कुसलादीनं उप्पत्तिकाले

१. अधिपतिं स्या.।

सब्बे पि कुसलादयो निराधिपतिनो। तस्मा मोहं विय विसुं अधिपति-मत्तमेव अनुद्धरित्वा सब्बसङ्गाहिकवसेन एसा "एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा" ति आदिका देसना कता ति वेदितब्बा।

नानन्तरनसमनन्तरेसु नारम्मणे विय रूपमेव पच्चयुप्पन्नं। तेन वुत्तं—"नारम्मणपच्चयसदिसं" ति। सहजातपच्चयो परिहीनो। यथा चेस, तथा निस्सय-अत्थिअविगतपच्चया पि। किं कारणा? एतेहि विना कस्सचि अनुप्पत्तितो। सहजातनिस्सय-अत्थि-अविगतपच्चये पि हि पच्चक्खाय एको पि रूपारूपधम्मो नुप्पज्जति, तस्मा ते परिहीना। नअञ्ञमञ्ञपच्चयविभङ्गे **पटिसन्धिक्खणे विपाकाब्याकते खन्धे** B. 421 **पटिच्च कटत्तारूपं** ति हदयवत्थुवज्जं वेदितब्बं।

नउपनिस्सयपच्चयविभङ्गे रूपमेव पच्चयुप्पन्नं, तञ्हि उपनिस्सयं न लभति। अरूपं पन किञ्चा पि आरम्मणूपनिस्सयपकतूपनिस्सये न लभेय्य, अनन्तरूपनिस्सयमुत्तकं पन नत्थि। तेन वुत्तं—"नारम्मण-पच्चयसदिसं" ति।

४०. नपुरेजाते **चित्तसमुट्ठानरूपं** (प. १. ३५) ति पञ्चवोकार-वसेन वुत्तं।

४१. नपच्छाजातपच्चया ति एत्थ सहजात-पुरेजातपच्चया सङ्गहं गच्छन्ति। तस्मा सहजातपच्चयसदिसा एत्थ पाळि, सा न-अधिपतिपच्चये वित्थारिता ति इध सङ्खित्ता। नासेवनपच्चये कुसला-कुसला पठमजवनवसेन वेदितब्बा, तथा किरियाब्याकतं। पाळि पन इधा पि नअधिपतिपच्चये वित्थारितवसेन वेदितब्बा। तेनेवाह "न-पच्छाजातपच्चयं पि नासेवनपच्चयं पि नाधिपतिपच्चयसदिसं" ति।

४२. नकम्मपच्चये विपाकचेतना नानाक्खणिककम्मपच्चयं लभती ति न गहिता। नाहारपच्चये एकच्चं रूपमेव पच्चयुप्पन्नं, तथा नइन्द्रियपच्चये।

४५-४६. नझानपच्चये पञ्चविञ्ञाणधम्मा चेव एकच्चं च रूपं पच्चयुप्पन्नं । पञ्चविञ्ञाणस्मिं हि वेदना च चित्तेकग्गता च दुब्बलत्ता उपनिज्झानलक्खणं न पापुणन्ती ति झानपच्चये न गहिता ।

४७. नमग्गपच्चये अहेतुकविपाककिरियं चेव एकच्चं च रूपं पच्चयुप्पन्नं । नसम्पयुत्त नोनत्थि-नोविगतेसु रूपमेव पच्चयुप्पन्नं । तेन वुत्तं "नारम्मणपच्चयसदिसं" ति ।

५१. **नहेतुया द्वे** ति एकमूलकगणनाय यथा पाळिमेव निय्याति ।

दुमूलके **नहेतुपच्चया नारम्मणे एकं** ति एत्थ किञ्चा पि बहुगणनेन सद्धिं ऊनतरगणनस्स संसन्दने ऊनतरगणनवसेन नहेतुया विय द्वीहि भवितब्बं । नारम्मणवसेन पन अरूपधम्मानं परिहीनत्ता अब्याकतं पटिच्च रूपाब्याकतस्स उप्पत्तिं सन्धाय "एकं" ति वुत्तं ।
B. 422 सब्बेसु एककेसु पि एसेव नयो । द्वे ति वुत्तट्ठाने पन नहेतुया लद्धवसेन वारद्वयं वेदितब्बं ।

तिमूलकादीसु पन सब्बेसु नारम्मणपच्चयस्स अपरिहीनत्ता एकमेव विस्सज्जनं ति अयं पच्चनीये नहेतुपच्चयं आदिं कत्वा एकमूलकादीसु गणना ।

नारम्मणपच्चयादयो पन एकमूलके ताव पुरिमेन सदिसत्ता इधा पि न दस्सिता येव । नारम्मणपच्चयवसेन दुमूलके **नारम्मणपच्चया, नहेतुया एकं** ति नहेतु दुमूलके वुत्तमेव । **नाधिपतिया पञ्चा** ति नारम्मणपच्चये लद्धवसेन वेदितब्बा ति एवं सब्बसंसन्दनेसु ऊनतरगणनस्सेव पच्चयस्स वसेन गणना वेदितब्बा । यत्थ यत्थ च नारम्मणपच्चयो पविसति, तत्थ तत्थ रूपमेव पच्चयुप्पन्नं । नानन्तर-नसमनन्तर-नअञ्ञमञ्ञ-नउपनिस्सय-नाहार-नइन्द्रिय - नसम्पयुत्त-नोनत्थि-नोविगतपच्चयानं पविट्ठट्ठाने पि एसेव नयो । नाहार-नइन्द्रिय-नझान-नमग्गपच्चया सब्बत्थ सदिसविस्सज्जना । नसहजातादिचतुक्कं इधा पि परिहीनमेवा ति इदमेत्थ लक्खणं । इमिना पन लक्खणेन सब्बेसु

दुमूलकादीसु "अयं पच्चयो मूलं, अयमेत्थ दुमूलको, अयं तिमूलको, अयं सब्बमूलको" ति सल्लक्खेत्वा ऊनतरगणनस्स पच्चयस्स वसेन गणना वेदितब्बा ति ।

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(३) पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना

७९. इदानि अनुलोमपच्चनीये गणनं दस्सेतुं **हेतुपच्चया नारम्मणे पञ्चा** (प. १. ४४) ति आदि आरद्धं । तत्थ हेताधिपतिमग्गपच्चयेसु अनुलोमतो ठितेसु सहजातादयो चत्तारो सब्बट्ठानिकपच्चया, आहारिन्द्रियझानमग्गपच्चया चत्तारो ति इमे अट्ठ पच्चनीयतो न लब्भन्ति । हेतुपच्चयादिवसेन हि उप्पज्जमानो धम्मो इमे अट्ठ पच्चये अलभन्तो नाम नत्थि ।

आरम्मणअनन्तरसमनन्तरउपनिस्सयसम्पयुत्तनत्थिविगतपच्चयेसु पन अनुलोमतो ठितेसु अरूपट्ठानिका पच्चनीकतो न लब्भन्ति । न हि B. 423
आरम्मणपच्चयादीहि उप्पज्जमाना अनन्तरसमनन्तरपच्चयादयो न लब्भन्ति । सहजातअञ्ञमञ्ञनिस्सयकम्माहारिन्द्रियअत्थिअविगतपच्चयेसु पन अनुलोमतो ठितेसु चत्तारो सब्बट्ठानिकायेव, पच्चनीकतो न लब्भन्ति । एतेसं हि पच्चयानं वसेन उप्पज्जमानो सब्बट्ठानिके अलभन्तो नाम नत्थि । पच्छाजातपच्चयस्स अनुलोमतो ठानं नाम नत्थि । एवं सेसेसु अनुलोमतो ठितेसु ये च लब्भन्ति, ये च न लब्भन्ति, ते सल्लक्खेत्वा सब्बेसु पि दुमूलकादीसु नयेसु तेसं तेसं पच्चयानं संसन्दने ऊनतरगणनानं येव वसेन गणना वेदितब्बा ति ।

पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(४) पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना

१३८. इदानि पच्चनीयानुलोमे गणनं दस्सेतुं **नहेतुपच्चया आरम्मणे द्वे** (प. १. ५५) ति आदि आरद्धं । तत्थ हेतुम्हि पच्चनीकतो ठिते ठपेत्वा अधिपतिं अवसेसा अनुलोमतो लब्भन्ति । पच्छाजातो

पन अनुलोमतो सब्बत्थेव न लब्भति, ये नव पच्चया "अरूपानञ्ञेवा" ति वुत्ता, तेसु पुरेजातं च आसेवनं च ठपेत्वा अवसेसेसु सत्तसु पच्चनीकतो ठितेसु सेसा अरूपट्ठानिका अनुलोमतो न लब्भन्ति। यो हि आरम्मणादीहि नुप्पज्जति, न सो अनन्तरादयो लभति। पटिसन्धिविपाको पन पुरेजाततो, सब्बविपाको च सद्धिं किरियमनोधातुया आसेवनतो अनुप्पज्जमानो पि अनन्तरादयो लभति, तस्मा "पुरेजातं च आसेवनं च ठपेत्वा ति वुत्तं।

पुरेजातपच्छाजातआसेवनविपाकविप्पयुत्तेसु पच्चनीकतो ठितेसु एकं[1] ठपेत्वा अवसेसा अनुलोमतो लब्भन्ति। कम्मपच्चये पच्चनीकतो ठिते ठपेत्वा विपाकपच्चयं अवसेसा अनुलोमतो लब्भन्ति। आहारिन्द्रियेसु पच्चनीकतो ठितेसु ठपेत्वा सब्बट्ठानिके चेव अञ्ञमञ्ञकम्माहारिन्द्रियपच्चये च अवसेसा अनुलोमतो न लब्भन्ति, इतरे युज्जमानक-
B. 424 वसेन लब्भन्ति। झानपच्चये पच्चनीकतो ठिते। हेतुअधिपतिआसेवनमग्गपच्चया अनुलोमतो न लब्भन्ति। मग्गपच्चये पच्चनीकतो ठिते हेताधिपतिपच्चया अनुलोमतो न लब्भन्ति। विप्पयुत्तपच्चये पच्चनीकतो ठिते पुरेजातपच्चयं ठपेत्वा अवसेसा अनुलोमतो लब्भन्ति। एवं तेसु तेसु पच्चयेसु पच्चनीकतो ठितेसु ये ये अनुलोमतो न लब्भन्ति, ते ते ञत्वा तेसं तेसं पच्चयानं संसन्दने ऊनतरगणनानं वसेन गणना वेदितब्बा।

दुमूलकादीसु च नयेसु यं यं पच्चयं आदिं कत्वा ये ये दुकादयो दस्सिता, ते ते लब्भमानालब्भमानपच्चयवसेन यथा यथा दस्सिता, तथा तथा साधुकं सल्लक्खेतब्बा। तत्थ यं नहेतुवसेन दुमूलकादयो नये दस्सेन्तेन **नहेतुपच्चया नारम्मणपच्चया...पे०...नासेवनपच्चया** ति वत्वा "याव आसेवना सब्बं सदिसं" ति वुत्तं। तस्स "नअञ्ञमञ्ञपच्चया सहजाते एकं" ति आदीहि सदिसता वेदितब्बा। यं पन 'नकम्मे गणिते पञ्च गण्हाती[2]" ति सीहळभासाय लिखितं, तस्सत्थो—नहेतु-

१. अविगतं स्या.।
२. पञ्ञाती ति सी.।

पच्चयं आदिं कत्वा नकम्मपच्चया ति एवं नकम्मपच्चयेन घटिते सहजाते एकं ति एवं दस्सिता पञ्चेव पच्चया अनुलोमतो लब्भन्ति, न अञ्ञेति। एवं अञ्ञेसु पि एवरूपेसु ठानेसु ब्यञ्जनं अनादियित्वा अधिप्पेतत्थो येव गहेतब्बो। एवरूपं हि ब्यञ्जनं अत्तनो सञ्ञानिबन्धनत्थं पोराणेहि सकसकभासाय लिखितं।

अपि च इमस्मिं पच्चनीयानुलोमे पच्चयुप्पन्नधम्मेसु पि अत्थि धम्मो कम्मपच्चयं लभति, न इन्द्रियपच्चयं। सो असञ्ञेसु चेव पञ्चवोकारे पवत्ते च रूपजीवितिन्द्रियवसेन वेदितब्बो। अत्थि धम्मो मग्गपच्चयं लभति, नहेतुपच्चयं। सो विचिकिच्छुद्धच्चसहजातमोहवसेन वेदितब्बो। अत्थि धम्मो झानपच्चयं लभति, नमग्गपच्चयं। सो मनोधातु अहेतुकमनोविञ्ञाणधातुवसेन वेदितब्बो। यत्थ कटत्तारूपानि नानाक्खणिककम्मवसेनेव कम्मपच्चयं लभन्ति, तत्थ रूपधम्मा हेताधिपति विपाकिन्द्रियझानमग्गपच्चये न लब्भन्ति, सब्बट्ठानिका पच्चनीया न होन्ति। अहेतुके अधिपतिपच्चयो नत्थी ति इमेसं पि पकिण्णकानं वसेनेत्थ गणनवारो असम्मोहतो वेदितब्बो।

तत्रायं नयो—**नहेतुपच्चया आरम्मणे द्वे** ति एत्थ ताव B. 425
अहेतुकमोहो चेव अहेतुकविपाककिरिया च पच्चयुप्पन्नं, तस्मा अकुसलेनाकुसलं, अब्याकतेन अब्याकतं सन्धायेत्थ द्वे ति वुत्तं। सेसेसु पि एसेव नयो। आसेवने पन विपाकं न लब्भति, तथा किरियमनोधातु। तस्मा किरियाहेतुमनोविञ्ञाणधातुवसेनेत्थ अब्याकतेन अब्याकतं वेदितब्बं। **विपाके एकं** ति अब्याकतेन अब्याकतमेव। **मग्गे एकं** ति अकुसलेन अकुसलमेव।

नारम्मणमूलके हेतुया पञ्च ति रूपमेव सन्धाय वुत्तं। तं हि कुसलं अकुसलं अब्याकतं कुसलाब्याकतं अकुसलाब्याकतं चा ति पञ्च कोट्ठासे पटिच्च उप्पज्जति। सब्बपञ्चकेसु एसेव नयो। **अञ्ञमञ्ञे एकं** ति भूतरूपानि चेव वत्थुं च सन्धाय वुत्तं। तानि हि नारम्मणपच्चया अञ्ञमञ्ञपच्चया उप्पज्जन्ति। तिमूलके पि एसेव नयो।

नाधिपतिमूलके **हेतुया नवा** ति अनुलोमे हेतुम्हि वुत्तानेव। **तीणी** ति आदीनि पि हेट्ठा अनुलोमे वुत्तसदिसानेव। तिमूलके द्वे ति हेट्ठा नहेतुपच्चया आरम्मणे वुत्तसदिसानेव।

नपुरेजातमूलके **हेतुया सत्ता** ति हेट्ठा आरुप्पे कुसलं एकं खन्धं पटिच्चा" ति आदिना नयेन पुरेजाते दस्सितानेव। सब्बसत्तकेसु एसेव नयो। नकम्ममूलके **हेतुया तीणी** ति आदीसु चेतना व पच्चयुप्पन्ना। तस्मा कुसलं अकुसलं अब्याकतं च पटिच्च उप्पत्तिं सन्धाय तीणी ति वुत्तं। इमिना नयेन "एकं द्वे तीणि पञ्च सत्त नवा" ति आगतट्ठानेसु गणना वेदितब्बा। "चत्तारि छ अट्ठा" ति इमा पन तिस्सो गणना नत्थे वा ति।

पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना निट्ठिता
पटिच्चवार-अत्थवण्णना निट्ठिता

२. सहजातवारअत्थवण्णना

B. 426 १८२. सहजातवारे **कुसलं धम्मं सहजातो** (प. १.१४) ति कुसलं धम्मं पटिच्च तेन सहजातो हुत्वा ति अत्थो। सेसमेत्थ पटिच्चवारे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अवसाने पनस्स "पटिच्चत्तं[1] नाम सहजातत्तं,[2] सहजातत्तं नाम पटिच्चत्तं ति इदं उभिन्नं पि एतेसं वारानं अत्थतो निन्नानाकरणभावदस्सनत्थं वुत्तं। अत्थतो हि एते द्वे पि निन्नानाकरणा। एवं सन्ते पि अञ्ञमञ्ञस्स अत्थनियमनत्थं वुत्ता। "चक्खुं च पटिच्च रूपे चा" ति आदीसु हि असहजातं पि पटिच्च उप्पज्जती ति वुच्चति। सहजातं पि च उपादारूपं भूतरूपस्स पच्चयो न होति। इति पटिच्चवारेन सहजातपच्चयभावं, सहजातवारेन च पटिच्चा ति वुत्तस्स सहजातभावं नियमेतुं उभोपेते वुत्ता। अपि च तथा बुज्झनकानं अज्झासयवसेन देसनाविलासेन निरुत्तिपटिसम्भिदाप्पभेदजाननवसेन चा पि एते उभो पि वुत्ता ति।

सहजातवारअत्थवण्णना निट्ठिता

---

१. पटिच्चट्ठं सी.; पटिच्चत्थं स्या.।

२. सहजातट्ठं सी.; सहजातत्थं स्या.।

३. पच्चयवारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

१६१. पच्चयवारे **कुसलं धम्मं पच्चया** (प. १.६७) ति कुसलधम्मे पतिट्ठितो हुत्वा कुसलं धम्मं निस्सयट्ठेन पच्चयं कत्वा ति अत्थो। **कुसलं एकं खन्धं पच्चया** ति कुसलं एकं खन्धं निस्सयपच्चयं कत्वा तयो खन्धा उप्पज्जन्ति हेतुपच्चया ति वुत्तं होति। इमिनानुपायेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। **वत्थुं पच्चया विपाकाब्याकता किरियाब्याकता खन्धा** ति इदं पञ्चवोकारे पवत्तिवसेन वुत्तं। पञ्चवोकारे पवत्तियं हि खन्धानं पुरेजातं वत्थुनिस्सयपच्चयो होति। पटिच्चट्ठस्स पन सहजातट्ठत्ता पटिच्चवारे एस नयो न लब्भती ति पटिसन्धियं सहजातमेव वत्थुं सन्धाय "वत्थुं पटिच्च खन्धा" ति वुत्तं। **कुसलं एकं खन्धञ्च वत्थुञ्च पच्चया तयो खन्धा** ति आदीसु पि इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो।

१६३. **अब्याकतं धम्मं पच्चया कुसलो च अब्याकतो चा** (प.१.६८) B. 427
ति कुसलाब्याकतानं हेतुपच्चयवसेन एकतो उप्पत्तिं सन्धाय वुत्तं। कुसलुप्पत्तिक्खणस्मिं हि वत्थुं निस्साय कुसला खन्धा, चित्तसमुट्ठाने च महाभूते निस्साय चित्तसमुट्ठानं उपादारूपं हेतुपच्चयवसेन एकतो उप्पज्जति। इति पच्चयभूतस्स अब्याकतस्स नानत्ते पि पच्चयुप्पन्नानं हेतुपच्चयवसेन एकतो उप्पत्तिं सन्धायेतं वुत्तं ति वेदितब्बं। अञ्ञेसु पि एवरूपेसु ठानेसु एसेव नयो। एवं इमस्मिं हेतुपच्चये सहजातं च पुरेजातं च निस्सयट्ठेन पच्चयं कत्वा सत्तरस पञ्हा विस्सज्जिता। तत्थ खन्धा चेव भूता च सहजातवसेन, वत्थु सहजातपुरेजातवसेन गहितं।

पटिच्चवारे पन सहजातवसेन पच्चयो लब्भति, तस्मा तत्थ नवे व पञ्हा विस्सज्जिता। ये पनेते एत्थ सत्तरस पञ्हा विस्सज्जिता, तेसु एकादिके एकावसाने विस्सज्जने कुसलादीसु एकपच्चयतो एको पच्चयुप्पन्नो। एकादिके दुकावसाने एकपच्चयतो नानापच्चयुप्पन्नो। दुकादिके एकावसाने नानापच्चयतो एको पच्चयुप्पन्नो। दुकादिके दुकावसाने नानापच्चयतो नानापच्चयुप्पन्नो।

१९९. आरम्मणपच्चयादीसु पि इमिनावुपायेन पञ्हाविस्सज्जनप्पभेदो वेदितब्बो। यं पनेतं आरम्मणपच्चये **वत्थुं पच्चया खन्धा** ति वुत्तं, तं पटिसन्धिक्खणे विपाकक्खन्धेयेव सन्धाय वुत्तं। चक्खुविञ्ञाणादीनि अब्याकतं निस्साय आरम्मणपच्चयेन उप्पज्जन्तानं पभेददस्सनत्थं वुत्तानि। पुन **वत्थुं पच्चया** (प. १.६६) ति पवत्ते विपाककिरियाब्याकतानं उप्पत्तिदस्सनत्थं वुत्तं। सेसं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं। एवं इमस्मिं आरम्मणपच्चये सहजातं च पुरेजातं च पच्चयं कत्वा सत्त पञ्हा विस्सज्जिता।

तत्थ खन्धा सहजातवसेन, वत्थु सहजातपुरेजातवसेन, चक्खायतनादीनि पुरेजातवसेनेव गहितानि। पटिच्चवारे पन सहजातवसेनेव पच्चयो लब्भति। तस्मा तत्थ तयो व पञ्हा विस्सज्जिता।

२०१. अधिपतिपच्चये विपाकाब्याकतं लोकुत्तरमेव वेदितब्बं।

२०२. अनन्तरसमनन्तरा रूपाभावेन आरम्मणसदिसा। परतो आसेवननत्थिविगतेसु पि एसेव नयो।

B. 428 २०३. सहजातपच्चये **कटत्तारूपं उपादारूपं** ति उपादारूपसङ्खातं कटत्तारूपं। इदं असञ्ञसत्तानञ्ञेव रूपं सन्धाय वुत्तं। चक्खायतनादीनि पञ्चवोकारवसेन वुत्तानि।

२०४. अञ्ञमञ्ञपच्चये च **यथा आरम्मणपच्चया एवं** (प.१.७१) ति विस्सज्जनसमतं सन्धाय वुत्तं। पच्चयुप्पन्नेसु पन नानत्तं अत्थि।

२०५. उपनिस्सयपच्चये **आरम्मणपच्चयसदिसं** ति रूपाभावतो पि विस्सज्जनसमताय पि वुत्तं।

वत्थुं पुरेजातपच्चया ति आदीनं पटिच्चवारे वुत्तनयेनेवत्थो गहेतब्बो।

२०९. कम्मपच्चये **तीणी** (प.७३) ति कुसलं पच्चया कुसलो अब्याकतो कुसलाब्याकतो चा ति एवं तीणि वेदितब्बानि। अकुसले पि एसेव नयो।

विप्पयुत्तपच्चये **खन्धे विप्पयुत्तपच्चया** ति खन्धे निस्साय विप्पयुत्तपच्चया उप्पज्जन्ती ति अत्थो। **खन्धा वत्थुं विप्पयुत्तपच्चया** ति खन्धा वत्थुं निस्साय विप्पयुत्तपच्चया उप्पज्जन्ती ति अत्थो। सेसं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

इदानि यथा लद्धानि विस्सज्जनानि गणनवसेन दस्सेतुं **हेतुया सत्तरसा** ति आदिमाह। तत्थ **हेतुया सत्तरसा** ति कुसलेन कुसलं, कुसलेन अब्याकतं, कुसलेन कुसलाब्याकतं ति एवं कुसलवसेन एकादिकानि एकावसानानि **द्वे**, दुकावसानं एकं ति तीणि वुत्तानि होन्ति, तथा अकुसलवसेन। अब्याकतेन अब्याकतं, तेनेव कुसलं, अकुसलं, कुसलाब्याकतं अकुसलाब्याकतं च; कुसलाब्याकतेहि कुसलं, अब्याकतं, कुसलाब्याकतं; अकुसलाब्याकतेहि अकुसलं, अब्याकतं, अकुसलाब्याकतं ति एवं सत्तरस वेदितब्बानि।

आरम्मणे सत्ता ति कुसलेन कुसलं; अकुसलेन अकुसलं, अब्याकतेन अब्याकतं, कुसलं, अकुसलं; कुसलाब्याकतेन कुसलं; अकुसलाब्याकतेन अकुसलं ति एवं सत्त।

विपाके एकं ति अब्याकतेन अब्याकतमेव। एवमेत्थ सत्तरस, B. 429
सत्त, एकं ति तयो वारपरिच्छेदा होन्ति। तेसु द्वादस सत्तरसका, दस[1] सत्तका, एकं एककं ति ते सब्बे साधुकं सल्लक्खेत्वा परतो दुकतिकादिवसेन पच्चयसंसन्दने ऊनतरगणनस्स वसेन गणना वेदितब्बा। सक्काहि इमाय गणनाय दुकमूलादीसु वारपरिच्छेदे जानितुं ति पुन "कुसलं धम्मं पच्चया कुसलो धम्मो" ति अनामसित्वा गणनवसेनेव वारपरिच्छेदं दस्सेतुं **हेतुपच्चया आरम्मणे सत्ता** ति आदि आरद्धं।

---

१. एकादस स्या.।

तत्थ कुसलं धम्मं पच्चया कुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया आरम्मणपच्चया। कुसलं एकं खन्धं पच्चया तयो खन्धा ति इमिना नयेन आरम्मणे लद्धविस्सज्जनानि वित्थारेतब्बानि। अयं ताव अनुलोमे नयो।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

२२५. पच्चनीये पन कुसलं न लब्भती ति **अकुसलं धम्मं पच्चया** (प. १.७६) ति अकुसलमेव आदिं कत्वा विस्सज्जनं आरद्धं। तं यथा पाळिमेव निय्याति। यं हेत्थ वत्तब्बं सिया, तं पटिच्चवारस्स पच्चनीये वुत्तमेव।

यं पनेतं पच्चनीये लद्धविस्सज्जनपरिच्छेदं गणनतो दस्सेतुं **नहेतुया चत्तारी** ति आदि वुत्तं, तत्थ चत्तारि, सत्तरस, सत्त, पञ्च, तीणि, एकं ति छ परिच्छेदा। तेसं वसेन दुकतिकादीसु पच्चयसंसन्दने गणना वेदितब्बा। यो हि पच्चयो सत्तरस विस्सज्जनानि लभति, तेन सद्धिं सदिससंसन्दने सत्तरस, ऊनतरसंसन्दने सेसा छ पि परिच्छेदा लब्भन्ति। एवं सेसेसु पि अधिकपरिच्छेदं ठपेत्वा समसमा ऊनतरा च लब्भन्ती ति।

एत्थ च अधिकतरा न लब्भन्ती ति अयमेत्थ नियमो। समसमा पन ऊनतरा च अत्था विरोधे सति लब्भन्ति। तेनेत्थ "नहेतुपच्चया नारम्मणे एकं" ति आदि वुत्तं। एत्थ हि नहेतुया चतुन्नं, नारम्मणे पञ्चन्नं आगतत्ता नहेतुवसेन चत्तारी ति वत्तब्बं सिया, नारम्मणेन सद्धिं घटितत्ता पन आरम्मणधम्मो विरुज्झती ति अकुसलं धम्मं पच्चया B. 430 अकुसलो धम्मो, अब्याकतं धम्मं पच्चया अकुसलो, अकुसलं च अब्याकतं च धम्मं पच्चया अकुसलो ति तीणि विस्सज्जनानि परिहीनानि।

अब्याकतं धम्मं पच्चया अब्याकतो ति रूपवसेन एकमेव वुत्तं। एवं सब्बत्थ विरुद्धाविरुद्धं ञत्वा लब्भमानपरिच्छेदो वेदितब्बो। अपिचेत्थ इदं नयमत्तदस्सनं। **नाधिपतिया चत्तारी** ति नहेतुया लद्धानेव। सेसचतुक्केसु पि एसेव नयो।

नानन्तरे एकं ति अहेतुकचित्तसमुट्ठानस्स चेव सेसरूपस्स च वसेन अब्याकतेन अब्याकतं। एवं सब्बेसु एककेसु युज्जमानकरूपं जानितब्बं। **नपुरेजाते द्वे** ति इधा पि नहेतुवसेन चत्तारी ति वत्तब्बं सिया, नपुरेजातेन सद्धिं घटितत्ता पन अब्याकतं धम्मं पच्चया अकुसलो, अकुसलं च अब्याकतं च धम्मं पच्चया अकुसलो ति वत्थुपुरेजातवसेन द्वे विस्सज्जनानि परिहीनानि। आरुप्पे पन अहेतुकमोहस्स अहेतुककिरियस्स च वसेन द्वे वुत्तानि। **नविप्पयुत्ते द्वे** ति आरुप्पे अहेतुकाकुसलकिरियवसेन द्वे। नोनत्थि नोविगतेसु एकं ति सब्बस्स रूपस्स वसेन अब्याकतेन अब्याकतं दट्ठब्बं। तिकादीसु अपुब्बं नत्थि।

नारम्मणमूलके पन **नाधिपतिया पञ्च** ति नारम्मणे लद्धानेव। **नकम्मे एकं** ति एत्थ चित्तसमुट्ठानं च कटत्तारूपं च अग्गहेत्वा सेसरूपवसेन अब्याकतेन अब्याकतं वेदितब्बं।

नाधिपतिमूलके **नपुरेजाते सत्त** ति नपुरेजाते लद्धानेव। **नपच्छाजाते सत्तरस** (प. १. ८३) ति इमानि पि तत्थ लद्धानि सत्तरसेव। नानन्तरनसमनन्तर-नअञ्ञमञ्ञ-नउपनिस्सय-नसम्पयुत्त-नोनत्थि-नोविगतमूलकानि नारम्मणमूलकसदिसानेव। इमिना व नयमत्तदस्सनेन सब्बत्थ आगतानागतं लब्भमानालब्भमानं च वेदितब्बं ति।

पच्चनीयवण्णना निट्ठिता

इमिना येव पन लक्खणेन अनुलोमं पुरतो कत्वा अनुलोमपच्चनीये पच्चनीयं पुरतो कत्वा पच्चनीयानुलोमे च गणनपरिच्छेदो आगतानागतं लब्भमानालब्भमानं च वेदितब्बं ति।

पच्चयवारअत्थवण्णना निट्ठिता

४. निस्सयवारअत्थवण्णना

२७७. निस्सयवारे **कुसलं धम्मं निस्साया** (प. १. १००) ति B. 431
कुसलं धम्मं पतिट्ठट्ठेन निस्सयं कत्वा ति अत्थो। सेसमेत्थ पच्चयवारे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अवसाने पनस्स "**पच्चयत्तं** नाम निस्सयत्तं,

निस्सयत्तं नाम पच्चयत्तं" ति इदं उभिन्नं पि एतेसं वारानं अत्थतो निन्नानाकरणभावदस्सनत्थं वुत्तं। अत्थतो हि एते पि पटिच्चसहजाता विय निन्नानाकरणा। एवं सन्ते पि अञ्ञमञ्ञस्स अत्थनियमनत्थं वुत्ता।

अविज्जापच्चया सङ्खारा ति आदीसु हि अनिस्साय वत्तमानं नानाक्खणिकं पि "पच्चया उप्पज्जती" ति वुत्तं। अञ्ञमञ्ञं अल्लीयित्वा ठितकट्ठादीसु च एकं एकस्स निस्सयपच्चयो न होति, तथा उपादारूपं महाभूतस्स निस्सयपच्चयो न होति येव। इति पच्चयवारेन निस्सयपच्चयभावं निस्सयवारेन च पच्चया ति वुत्तस्स सहजातपुरेजातभावं नियमेतुं उभोपेते वुत्ता। अपि च तथा बुज्झनकानं अज्झासयवसेन देसनाविलासेन निरुत्तिपटिसम्भिदाप्पभेदजाननवसेन चा पि एते उभो पि वुत्ता ति।

निस्सयवारअत्थवण्णना निट्ठिता

५. संसट्ठवारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

२८६. संसट्ठवारे **कुसलं धम्मं संसट्ठो** (प. १. १०४) ति कुसलं धम्मं एकुप्पादादिलक्खणेन सम्पयोगट्ठेन पच्चयं कत्वा ति अत्थो। **कुसलं एकं खन्धं संसट्ठो** ति कुसलं एकं खन्धं सम्पयुत्तपच्चयं कत्वा तयो खन्धा उप्पज्जन्ति हेतुपच्चया ति वुत्तं होति। इमिना उपायेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। इमस्मिं पन हेतुपच्चये अरूपधम्मस्सेव सम्पयोगट्ठेन पच्चयं कत्वा तयो पञ्हा विस्सज्जिता। यथा च हेतुपच्चये, तथा आरम्मणपच्चयादीसु पि, केवलं विपाकपच्चये एकमेव विस्सज्जनं।

इदानि यथा लद्धानि विस्सज्जनानि गणनवसेन दस्सेतुं **हेतुया तीणी** ति आदि वुत्तं। तत्थ सब्बतिकेसु कुसलेन कुसलं, अकुसलेन
B. 432 अकुसलं, अब्याकतेन अब्याकतं ति अयमेव नियमो। एकके पन

अब्याकतेन अब्याकतमेव लब्भती ति एवमेत्थ बावीसतिया पच्चयेसु तीणि, विपाके एकं ति द्वे परिच्छेदा। पच्छाजाते अनुलोमं नत्थि। तस्मा तीणि एकं ति इमेसञ्ञेव वसेन दुकतिकादीसु पच्चयसंसन्दने यत्थ विपाकपच्चयो पविसति; तत्थ एकं, सेसेसु तीणी ति एवं गणना वेदितब्बा। सेसमेत्थ अनुलोमे उत्तानत्थमेवा ति।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

२९९. पच्चनीये पन कुसलं न लब्भती ति अकुसलमेव आदिं कत्वा विस्सज्जनं कतं, तं उत्तानत्थमेव। यं पनेत्थ पच्चनीये विस्सज्जनपरिच्छेदं गणनतो दस्सेतुं **नहेतुया द्वे** (प.१.१०७) ति आदि वुत्तं, तत्थ द्वे तीणि एकं ति तयो परिच्छेदा। तेसं वसेन दुकतिकादीसु पच्चयसंसन्दने गणना वेदितब्बा। इधा पि अधिकतरगणनानं ऊनतरगणनेन सद्धिं संसन्दने ऊनतरगणनमेव लब्भति, समगणनेन सद्धिं समगणनं। यस्मा चेत्थ अरूपधम्मायेव पच्चयुप्पन्ना, तस्मा नहेतु-नाधिपति - नपुरेजात - नपच्छाजात-नासेवन-नकम्म-नविपाक-नझान-न-मग्ग-नविप्पयुत्तवसेन दसेव पच्चया पच्चनीकतो दस्सिता, सेसा चुद्दस न लब्भन्ति। ये पि लब्भन्ति, तेसु पि विपाके पच्चयुप्पन्ने नकम्म-नविपाका न लब्भन्ति।

नहेतुपच्चया नाधिपतिया द्वे ति नहेतुया लद्धं द्वयमेव। सेस-द्वयेसु पि एसेव नयो। **नकम्मे एकं** ति अहेतुककिरियचेतनं पच्चयुप्पन्नं कत्वा अब्याकतेन अब्याकतं। **नविपाके द्वे** ति अहेतुकमोहकिरियवसेन द्वे। **नझाने एकं** ति अहेतुकपञ्चविञ्ञाणवसेन अब्याकतविस्सज्जनं वेदितब्बं। **नमग्गे एकं** ति अहेतुकविपाककिरियवसेन अब्याकत-विस्सज्जनं। इमिना उपायेन सब्बसंसन्दनेसु अत्थो वेदितब्बो ति।

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(३) पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना

३१७. अनुलोमपच्चनीये हेट्ठा वुत्ता नहेतुआदयो दसेव पच्चनीयतो लब्भन्ति, न सेसा। ये पि लब्भन्ति, तेसु हेतुम्हि अनुलोमतो ठिते झानमग्गा पच्चनीयतो न लब्भन्ती ति सब्बं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ति।

पच्चयानुलोमपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(४) पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना

B. 433 ३३२. पच्चनीयानुलोमे नहेतुपच्चयुप्पन्नेसु अहेतुकमोहो व झानमग्गपच्चयं लभति, सेसा न लभन्ति। नझानपच्चये अट्ठाहेतुकचित्तानि पि। **नकम्मपच्चया नहेतुपच्चया नाधिपतिपच्चया नपुरेजातपच्चया आरम्मणे एकं** ति आरुप्पे अहेतुककिरियचेतनावसेन अब्याकतेन अब्याकतं। इमिना उपायेन यं लब्भति, यं च न लब्भति, तस्स वसेन सब्बत्थ गणना वेदितब्बा ति।

पच्चयपच्चनीयानुलोमवण्णना निट्ठिता

संसट्ठवारअत्थवण्णना निट्ठिता

६. सम्पयुत्तवारअत्थवण्णना

३४०. सम्पयुत्तवारे **कुसलं धम्मं सम्पयुत्तो** (प.१.१२१) ति कुसलं धम्मं सम्पयुत्तपच्चयं कत्वा ति अत्थो। सेसमेत्थ संसट्ठवारे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। अवसाने पनस्स "संसट्ठत्तं नाम सम्पयुत्तत्तं, सम्पयुत्तत्तं नाम संसट्ठत्तं" ति इदं उभिन्नं पि एतेसं वारानं अत्थतो निन्नानाकरणभावदस्सनत्थं वुत्तं।

अत्थतो हि एते पि पटिच्चसहजाता विय पच्चयनिस्सया विय च निन्नानाकरणा। एवं सन्ते पि अञ्ञमञ्ञस्स अत्थनियमनत्थं वुत्ता। "संसट्ठा योजिता हया" (जा. २.१६२) ति आदीसु हि असम्पयुत्तं पि संसट्ठं ति वुच्चति। "या सा वीमंसा कोसज्जसहगता कोसज्जसम्पयुत्ता"

(सं० नि० २.५६) ति आदीसु अयं[1] सम्पयुत्तट्ठो नाम[1] असंसट्ठं वोकिण्णं पि सम्पयुत्तं ति । इति संसट्ठवारेन एकुप्पादलक्खणस्स सम्पयुत्तस्स संसट्ठभावं सम्पयुत्तवारेन च संसट्ठस्स एकुप्पादादिलक्खणस्स सम्पयुत्तभावं नियमेतुं उभो पेते वुत्ता । अपि च तथा बुज्झनकानं अज्झासयवसेन देसनाविलासेन निरुत्तिपटिसम्भिदाप्पभेदजाननवसेन चा पि एते उभो पि वुत्ता ति ।

एतेसु पन छसु वारेसु अत्थि कोचि पच्चयो एकन्तं अनुलोमतो न तिट्ठति, पच्चनीकतो व तिट्ठति; अत्थि एकन्तं पच्चनीकतो न तिट्ठति, अनुलोमतो व तिट्ठति; अत्थि अनेकन्तं अनुलोमतो चेव तिट्ठति, पच्चनीकतो चा ति इदं पकिण्णकं वेदितब्बं । तत्थ पठमो पञ्हो पच्छाजातस्स, B. 434 दुतियो महाचतुक्कस्स, ततियो युज्जमानकानं सेसानं वसेन वेदितब्बो ति ।

सम्पयुत्तवारअत्थवण्णना निट्ठिता

७. पञ्हावारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

(१) विभङ्गवारवण्णना

हेतुपच्चयविभङ्गो

३४९. पञ्हावारे "सिया कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना कुसलत्तिके उद्धरितब्बपुच्छानं लब्भमानवसेन विस्सज्जनं दस्सेतुं **कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो** (प. १.१८३) ति आदि वुत्तं । कुसलो च नामेस सयं उप्पज्जन्तो ठपेत्वा पच्छाजातं च विपाकं च सेसेहि द्वावीसतिया पच्चयेहि उप्पज्जति । कुसलस्स पच्चयो होन्तो ठपेत्वा पुरेजातपच्छा-

१-१. म पोत्थके नत्थि ।

जातविपाकविप्पयुत्ते सेसेहि वीसतिया पच्चयेहि पच्चयो होति। तस्मा ये हि पच्चयेहि कुसलो कुसलस्स पच्चयो होति, ते पच्चये पटिपाटिया दस्सेतुं **हेतुपच्चयेना** ति आदि आरद्धं।

तत्थ या एसा पच्चयविभङ्गवारे विय "हेतुसम्पयुत्तकानं धम्मानं" ति अकत्वा "हेतू सम्पयुत्तकानं खन्धानं" ति देसना कता, तस्सा एव करणे इदं पयोजनं—तत्थ हि सुञ्ञट्ठं दीपेतुं धम्मानं ति वुत्तं। इध पच्चयतो उप्पज्जमाना धम्मा रासितो उप्पज्जन्ति, न एकेकतो ति रासट्ठं दीपेतुं खन्धानं ति वुत्तं। पटिच्चवारादिसु वा खन्धवसेन पच्चयुप्पन्नदेसना आरुळ्हा ति तेनेवानुक्कमेन इधा पि आरुळ्हा ति। कस्मा पनेतेसु एवं आरुळ्हा ति? असङ्करतो विभागदस्सनत्थं। "एकं धम्मं पटिच्च सेसा धम्मा" ति हि आदिना नयेन वुच्चमाने असुकधम्मं नाम निस्साय असुकधम्मा ति न सक्का असङ्करतो पच्चये पच्चयुप्पन्ने च जानितुं, एवं सन्ते उद्देसनिद्देसा निब्बिसेसा सियुं। तस्मा असङ्करतो विभागदस्सनत्थं एवं आरुळ्हा ति वेदितब्बा।

चित्तसमुट्ठानानं ति इदं यस्स अब्याकतस्स कुसलो हेतुपच्चयेन पच्चयो होति, तमेव दस्सेतुं वुत्तं। पच्चयविभङ्गे पन कुसलादिवसेन विभागं अकत्वा सामञ्ञतो सब्बेसं हेतूनं वसेन उप्पन्नरूपदस्सनत्थं चित्तसमुट्ठानानं ति अवत्वा तं समुट्ठानानं ति वुत्तं। तस्मा तत्थ अब्याकतहेतुसमुट्ठानरूपं, ओक्कन्तिक्खणे कटत्तारूपं पि सङ्गहं[1] गतं[1]। इमिना उपायेन सेसेसु पि एवरूपेसु विस्सज्जनेसु अत्थो वेदितब्बो।

आरम्मणपच्चयविभङ्गो

B. 435 ३५२. **दानं दत्वा** ति देय्यधम्मं चजित्वा। याय वा चेतनाय सो दीयति, सा चेतना दानं। **दत्वा** ति तं चेतनं परियोदापेत्वा विसुद्धं कत्वा। **सीलं समादियित्वा** (प. १.१२३) ति पञ्चङ्गादिवसेन[2] निच्चसीलं गण्हित्वा। इमिना समादानविरति येव दस्सिता। सम्पत्त-

१-१ सङ्गहितं स्या.। २. पञ्चङ्गदसङ्गादिवसेन स्या.।

विरतिसमुच्छेदविरतियो पन लोके सीलं ति अपाकटत्ता न वुत्ता। किञ्चा पि न वुत्ता, आरम्मणपच्चया पन होन्ति येव। तत्थ **समुच्छेद-विरति** सेक्खानं येव **कुसलस्स** आरम्मणं होति, न इतरेसं।

उपोसथकम्मं कत्वा ति "पाणं न हने, न चादिन्नमादिये" (अं. ति. १.१९८) ति एवं वुत्तं उपोसथदिवसेसु अट्ठङ्गउपोसथकिरियं कत्वा। **तं पच्चवेक्खती** ति तं कुसलं सेक्खो पि पुथुज्जनो पि पच्च-वेक्खति, अरहा पि पच्चवेक्खतेव। अरहतो पि हि पुब्बे कतं कुसलं कुसलमेव, येन पन चित्तेन पच्चवेक्खति, तं किरियचित्तं नाम होति। तस्मा "एतं कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्सा" ति इमस्मिं अधिकारे न लब्भति।

पुब्बे सुचिण्णानी ति "दत्वा समादियित्वा कत्वा" ति हि आसन्ने कतानि वुत्तानि, इमानि न आसन्ने कतानी ति वेदितब्बानि। दानादीहि वा सेसानि कामावचरकुसलानि दस्सेतुं इदं वुत्तं। **झाना वुट्ठहित्वा** ति झाना वुट्ठहित्वा। अयमेव वा पाळि। **सेक्खा गोत्रभुं** ति सोतापन्नं सन्धाय वुत्तं। सो हि गोत्रभुं पच्चवेक्खति। **वोदानं** ति इदं पन सकदागामी-अनागामिनो सन्धाय वुत्तं। तेसं हि तं चित्तं वोदानं नाम होति। **सेक्खा** ति सोतापन्न-सकदागामी-अनागामिनो। **मग्गा वुट्ठहित्वा** ति मग्गफलभवङ्गातिक्कमवसेन अत्तना पटिलद्धा मग्गा वुट्ठहित्वा, सुद्धमग्गतो येव पन वुट्ठाय पच्चवेक्खणं नाम नत्थि।

कुसलं अनिच्चतो ति एत्थ विपस्सनूपगं तेभूमककुसलमेव वेदितब्बं, विपस्सनाकुसलं पन कामावचरमेव। **चेतोपरियञाणेना** ति रूपावचरकुसलं दस्सेति। **आकासानञ्चायतनं** ति आदीहि अरूपावचरकुसलारम्मणवसेन उप्पज्जमानं अरूपावचरकुसलमेव। **कुसला खन्धा इद्धिविधञाणस्सा** ति आदीहि पुग्गलं अनामसित्वा धम्मवसेन दस्सेति। तेनेवेत्थ हेट्ठा गहितं पि चेतोपरियञाणं पुन वुत्तं।

अस्सादेती ति सोमनस्ससहगतलोभसम्पयुत्तचित्ते हि अनुभवति चेव रज्जति च। **अभिनन्दती** ति सप्पीतिकतण्हावसेन नन्दति

B. 436 हट्ठपहट्ठो होति, दिट्ठाभिनन्दनाय वा अभिनन्दति । **रागो उप्पज्जती** ति अस्सादेन्तस्स रागो उप्पज्जति नाम । इदं अट्ठ पि लोभसहगतानि गहेत्वा वुत्तं । **दिट्ठि उप्पज्जती** ति अभिनन्दन्तस्स अत्ता अत्तनियं ति आदिवसेन चतूहि पि चित्तेहि सम्पयुत्ता दिट्ठि उप्पज्जति । असन्निट्ठानगतस्स पनेत्थ विचिकिच्छा उप्पज्जति । विक्खेपगतस्स उद्धच्चं, अकतं वत मे कल्याणं ति विप्पटिसारिनो दोमनस्सं । **तं आरब्भा** ति तानि सुचिण्णानि आरम्मणं कत्वा ति अत्थो । बहुवचनस्स हेस एकवचनादेसो, जातिवसेन वा एकवचनमेवेतं ।

अरहा मग्गा वुट्ठहित्वा ति मग्गवीथियं फलानन्तरस्स भवङ्गस्स अतिक्कमवसेन वुट्ठहित्वा । पच्चवेक्खणचित्तानि पनस्स किरियाब्याकतानि । एवं किरियाब्याकतस्स आरम्मणपच्चयं दस्सेत्वा पुन विपाकाब्याकतस्स दस्सेतुं **सेक्खा वा** ति आदिमाह । **कुसले निरुद्धे** ति विपस्सनाजवनवीथिया पच्छिन्नाय । **विपाको** ति कामावचरविपाको । **तदारम्मणता** ति तदारम्मणताय, तं कुसलस्स जवनस्स आरम्मणभूतं विपस्सितकुसलं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जती ति अत्थो । न केवलं च तदारम्मणवसेनेव, पटिसन्धिभवङ्गचुतिवसेना पि । विपाको हि कम्मं आरम्मणं कत्वा गहितपटिसन्धिकस्स कुसलारम्मणो होति येव, सो पन दुब्बिञ्ञेय्यत्ता इध न दस्सितो ।

कुसलं अस्सादेती ति आदि अकुसलजवनावसाने कुसलारम्मणविपाकं दस्सेतुं वुत्तं । **विञ्ञाणञ्चायतनविपाकस्सा** ति इदं दुब्बिञ्ञेय्यं पि समानं महग्गतविपाकस्स तदारम्मणभावेन अनुप्पत्तितो लब्भमानकवसेन वुत्तं । **किरियस्सा** ति अरहत्तं पत्वा असमापन्नपुब्बे आकासानञ्चायतने पटिलोमतो वा एकन्तरिकवसेन वा समापन्नकिरियाय । **चेतोपरियञाणस्सा** ति आदीनि परतो आवज्जनाय योजेतब्बानि । या एतेसं आवज्जना, तस्सा कुसला खन्धा आरम्मणपच्चयेन पच्चयो ति अयञ्हेत्थ अत्थो ।

रागं ति अत्तनो वा परस्स वा रागं । अत्तनो रागवसेन पनेत्थ वण्णना पाकटा होति । **अस्सादेती** ति आदीनि वुत्तत्थानेव ।

विचिकिच्छादीसु पन तीसु अस्सादेतब्बताय अभावेन "अस्सादेती" ति न वुत्तं। दिट्ठि पनेत्थ उप्पज्जति, सा अस्सादेती ति पदस्स परिहीनत्ता आगतपटिपाटिया पठमं न वुत्ता। विचिकिच्छादीसु येव P. 437 तं तं सभागं पठमं वत्वा तस्स तस्स अनन्तरा वुत्ता। इमेसु च पन रागादीसु "किं मे पापधम्मा उप्पज्जन्ती" ति अक्खन्तिवसेन वा, "कतं पापं कतं लुद्धं" ति विप्पटिसारादिवसेन वा दोमनस्सुप्पत्ति वेदितब्बा।

चक्खुं अनिच्चतो ति विपस्सनानुक्कमेन दस[1] ओळारिकायतनानि वत्थुरूपं चा ति एकादस रूपानि पाकटत्ता गहितानि। पुन रूपायतनादीनि चक्खुविञ्ञाणादीनं आरम्मणत्ता गहितानि। यस्मा पनेसा विञ्ञाणकायवसेन देसना, न धातुवसेन, तस्मा मनोधातु न गहिता। एवं सब्बत्थ गहितागहितं वेदितब्बं। **फलं पच्चवेक्खन्ति निब्बानं पच्चवेक्खन्ती** ति पच्चवेक्खणकुसलस्स आरम्मणदस्सनत्थं वुत्तं।

अधिपतिपच्चयविभङ्गो

३६१. आरम्मणाधिपतिनिद्देसे सेक्खपुथुज्जनानं वसेन चतुभूमककुसलं दस्सितं, तथा सहजाताधिपतिनिद्देसे। अरहतो उत्तमधम्मं अधिगतत्ता लोकियकुसलेसु गुरुकारो नत्थी ति अग्गमग्गो व दस्सितो।

अनन्तरपच्चयविभङ्गो

३६५. अनन्तरपच्चये **पुरिमा पुरिमा** (प० १.१२८) ति एकभूमका पि नानाभूमका पि कुसला एकतो कत्वा वुत्ता। **अनुलोमं गोत्रभुस्स, अनुलोमं वोदानस्सा** ति नानारम्मणवसेन। **गोत्रभु मग्गस्स, वोदानं मग्गस्सा** ति नानाभूमिवसेन। **कुसलं वुट्ठानस्सा** ति एत्थ पन **कुसलं** ति तेभूमककुसलं। **वुट्ठानं** ति तेभूमकविपाकं। तेहि कुसलजवनवीथितो वुट्ठहन्ति, तस्मा वुट्ठानं ति वुच्चति। तं दुविधं होति—तदारम्मणं भवङ्गं च। तत्थ कामावचरकुसलस्स उभयं पि वुट्ठानं होति, महग्गतस्स भवङ्गमेव।

---

१. म. पोत्थके नत्थि।

मग्गो फलस्सा ति इदं यस्मा लोकुत्तरविपाकं जवनवीथिपरिया-पन्नत्ता वुट्ठानं नाम न होति, तस्मा विसुं वुत्तं । **अनुलोमं सेक्खाया** ति असेक्खाय कुसलं अनन्तरं न होति, तस्मा विभागं करोति । **फलसमापत्तिया** ति सोतापत्तिफल-सकदागामिफल-अनागामिफल-समापत्तिया पि । **फलसमापत्तिया** ति अनागामिफलसमापत्तिया । अकुसले दुविधं पि वुट्ठानं लब्भति ।

विपाकाब्याकता किरियाब्याकता ति एत्थ विपाकाब्याकता
B 438 विपाकाब्याकतानं येव, किरियाब्याकता किरियाब्याकतानं येव वेदितब्बा । **भवङ्गं आवज्जनाया** ति आदि वोमिस्सकवसेन वुत्तं । तत्थ **किरिया** ति कामावचरकिरिया । सा दुविधस्सा पि वुट्ठानस्स अनन्तरपच्चयो होति, महग्गता भवङ्गस्सेव । इति ये हेट्ठा पच्चयविभङ्ग-निद्देसे "पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा पच्छिमानं पच्छिमानं कुसलानं धम्मानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आरभित्वा कुसलं कुसलस्स, कुसलं अब्याकतस्स, अकुसलं अकुसलस्स, अकुसलं अब्याकतस्स, अब्याकतं अब्याकतस्स, अब्याकतं कुसलस्स, अब्याकतं अकुसलस्सा ति सत्त वारा दस्सिता; तेसं वसेन इध सङ्खेपतो अनन्तरपच्चयो विभत्तो । वित्थारतो पनेत्थ—

दसधा सत्तरसधा, समसट्ठिविधेन च ।
बहुधा पि च निद्देसं, साधुकं उपलक्खये ।

अयं हि अनन्तरपच्चयो न केवलं सत्तधा व निद्देसं लभति, कुसलं पन कुसलस्स विपाकस्स; अकुसलं अकुसलस्स विपाकस्स; विपाकं विपाकस्स किरियस्स; किरियं कुसलस्स अकुसलस्स विपाकस्स किरियस्सा ति एवं दसधा पि निद्देसं लभति ।

न केवलं दसधा येव, कुसलं पन कुसलस्स कुसलविपाकस्स अकुसलविपाकस्स; अकुसलं अकुसलस्स अकुसलविपाकस्स कुसल-विपाकस्स; कुसलविपाकं कुसलविपाकस्स अकुसलविपाकस्स किरियस्स; अकुसलविपाकं अकुसलविपाकस्स कुसलविपाकस्स किरियस्स; किरियं

किरियस्स कुसलस्स अकुसलस्स कुसलविपाकस्स अकुसलविपाकस्सा ति एवं सत्तरसधा निद्देसं लभति ।

न केवलं च सत्तरसधा व, समसट्ठिविधेना पि निद्देसं लभतेव । कथं ? कामावचरकुसलं हि भूमिभेदेन चतुब्बिधस्स कुसलस्स अनन्तरपच्चयो होति, रूपावचरारूपावचरं सकसकभूमिकस्से वा ति कुसलं कुसलस्स छब्बिधेन अनन्तरपच्चयो । कामावचरकुसलं पन कामावचरकुसलविपाकस्स अकुसलविपाकस्स रूपावचरविपाकस्स अरूपावचरविपाकस्स लोकुत्तरविपाकस्स; रूपावचरकुसलं रूपावचरविपाकस्स कामावचरकुसलविपाकस्स; अरूपावचरकुसलं कामावचरकुसलविपाकस्स रूपावचरअरूपावचरलोकुत्तरविपाकस्स; लोकुत्तरकुसलं लोकुत्तरविपाकस्सा ति कुसलं विपाकस्स द्वादसविधेन अनन्तरपच्चयो । B. 439

अकुसलं अकुसलस्स अकुसलविपाकस्स तेभूमककुसलविपाकस्सा ति पञ्चविधेन अनन्तरपच्चयो ।

कामावचरकुसलविपाकं कामावचरकुसलविपाकस्स अकुसलविपाकस्स रूपावचरविपाकस्स अरूपावचरविपाकस्सा ति कामावचरकुसलविपाकं विपाकस्स चतुब्बिधेन अनन्तरपच्चयो । रूपावचरविपाकं तेभूमककुसलविपाकस्सा ति तिविधेन अनन्तरपच्चयो । अरूपावचरविपाकं अरूपावचरविपाकस्स कामावचरकुसलविपाकस्सा ति दुविधेन अनन्तरपच्चयो । लोकुत्तरविपाकं चतुभूमककुसलविपाकस्सा ति चतुब्बिधेन अनन्तरपच्चयो । एवं कुसलविपाकं विपाकस्स तेरसधा पि अनन्तरपच्चयो ।

अकुसलविपाकं अकुसलविपाकस्स कामावचरकुसलविपाकस्सा ति दुविधेन अनन्तरपच्चयो । एवं सब्बथा पि विपाकं विपाकस्स पञ्चदसविधेन अनन्तरपच्चयो ।

कामावचरकुसलविपाकं पन कामावचरकिरियस्स, तथा अकुसलविपाकं, तथा रूपावचरविपाकं, तथा अरूपावचरविपाकं चा ति विपाकं किरियस्स च चतुब्बिधेन अनन्तरपच्चयो ।

कामावचरकिरियं तेभूमककिरियस्स, रूपावचरारूपावचरकिरियं[1] रूपावचरारूपावचरानञ्ञेवा ति किरियं किरियस्स पञ्चविधेन अनन्तरपच्चयो।

कामावचरकिरियं अकुसलविपाकस्स चेव चतुभूमककुसलविपाकस्स च, रूपावचरकिरियं कामावचरकुसलविपाकरूपावचरविपाकानं अरूपावचरकिरियं चतुभूमककुसलविपाकस्सा पी ति किरियं विपाकस्स एकादसविधेन अनन्तरपच्चयो।

कामावचरकिरियं पन कामावचरकुसलस्स अकुसलस्सा ति कुसलाकुसलानं दुविधेन अनन्तरपच्चयो होति। एवं समसट्ठिविधेना पि निद्देसं लभति।

न केवलं च समसट्ठिविधेनेव, बहुविधेना पि लभतेव। कथं? कामावचरपठममहाकुसलचित्तं ताव अत्तनो, चतुन्नं च रूपावचरकुसलानं पादकयोगेन सोळसन्नं सोमनस्सलोकुत्तरानं ति एकवीसतिया च कुसलानं, जवनपरियोसाने तदारम्मणभवङ्गवसेन उप्पज्जमानानं एकादसन्नं कामावचरविपाकानं, भवङ्गवसेनेव पवत्तानं रूपावचरा-
B. 440 रूपावचरविपाकानं, फलसमापत्तिवसेन पवत्तानं द्वादसन्नं लोकुत्तरविपाकानं ति एवं एकवीसतिया कुसलानं; द्वत्तिंसाय विपाकानं ति तेपञ्ञासाय चित्तानं अनन्तरपच्चयो होति। तथा दुतियकुसलचित्तं। ततियचतुत्थानि पन ठपेत्वा उपरिभूमककुसलानि च लोकुत्तरविपाकानि च सेसएकवीसति चित्तानं। पञ्चमछट्ठानि अत्तनो च, नवन्नं च उपरिभूमकउपेक्खाकुसलानं, तेवीसतिया च विपाकानं ति तेत्तिंसाय। सत्तमअट्ठमानि एकवीसतिया व।

पञ्चरूपावचरकुसलानि अत्तनो अत्तनो पच्छिमानं रूपावचरकुसलानं, चतुन्नं पि ञाणसम्पयुत्तमहाविपाकानं, पञ्चन्नं रूपावचरविपाकानं चा ति दसन्नं। एतेनेव च नयेन अरूपावचरकुसलेसु पठमं अत्तनो विपाकेन सद्धिं एकादसन्नं, दुतियं द्वादसन्नं, ततियं तेरसन्नं,

---

१. सककिरिया नञ्ञे वा ति स्या.।

चतुत्थं चुद्दसन्नं फलसमापत्तिया चा ति पन्नरसन्नं लोकुत्तरकुसलं अत्तनो अत्तनो विपाकस्सेव ।

अट्ठसु लोभसहगतेसु एकेकं अकुसलं एकादसन्नं कामावचरविपाकमनोविञ्ञाणधातूनं नवन्नं, महग्गतविपाकानं अत्तनो अत्तनो पच्छिमस्स चा ति एकवीसतिया । द्वे दोमनस्ससहगतानि उपेक्खासहगतानं छन्नं कामावचरविपाकमनोविञ्ञाणधातूनं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति सत्तन्नं । विचिकिच्छुद्धच्चसहगतद्वयं सोमनस्ससहगताहेतुकविपाकेन सद्धिं एकादसन्नं कामावचरविपाकमनोविञ्ञाणधातूनं नवन्नं रूपावचरारूपावचरविपाकानं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति एकवीसतिया ।

कुसलविपाकपञ्चविञ्ञाणा कुसलविपाकमनोधातुया, मनोधातु द्विन्नं विपाकमनोविञ्ञाणधातूनं । तासु द्वीसु सोमनस्ससहगता दसन्नं विपाकमनोविञ्ञाणधातूनं भवङ्गभूतानं तदारम्मणकाले अत्तनो पच्छिमस्स वोट्ठब्बनकिरियस्स चा ति द्वादसन्नं । उपेक्खासहगताहेतुकमनोविञ्ञाणधातु पन आवज्जनमनोधातुया दिट्ठानिकाय आवज्जनमनोविञ्ञाणधातुया दसन्नं च विपाकमनोविञ्ञाणधातूनं ति द्वादसन्नमेव । तिहेतुकमहाविपाका सोमनस्ससहगताहेतुकवज्जानं दसन्नं पि कामावचरविपाकमनोविञ्ञाणधातूनं रूपावचरारूपावचरविपाकानं आवज्जनद्वयस्स चा ति एकवीसतिया, दुहेतुकविपाका ठपेत्वा महग्गतविपाके सेसानं द्वादसन्नं । पञ्चरूपावचरविपाका तेभूमककुसलविपाकसहेतुकपटिसन्धिचित्तानं सत्तरसन्नं आवज्जनद्वयस्स चा ति एकूनवीसतिया । B 441

अरूपावचरविपाकेसु पठमं कामावचरकुसलविपाकतिहेतुकपटिसन्धिचित्तानं, चतुन्नं अरूपावचरविपाकचित्तानं चतुन्नं मनोद्वारावज्जनस्स चा ति नवन्नं । दुतियं हेट्ठिमविपाकं वज्जेत्वा अट्ठन्नं, ततियं द्वे हेट्ठिमानि वज्जेत्वा सत्तन्नं, चतुत्थं तीणि हेट्ठिमानि वज्जेत्वा छन्नं चत्तारि लोकुत्तरविपाकानि तिहेतुकविपाकानं तेरसन्नं अत्तनो अत्तनो पच्छिमस्स चा ति चुद्दसन्नं ।

अकुसलविपाकपञ्चविञ्ञाणा अकुसलविपाकमनोधातुया, मनोधातु अकुसलविपाकाहेतुक-मनोविञ्ञाणधातुया। सा तदारम्मणकाले अत्तनो पच्छिमस्स चुतिकाले पटिसन्धिवसेन भवङ्गवसेन च पवत्तानं इतरेसं पि नवन्नं कामावचरविपाकानं उपेक्खासहगतानं द्विन्नं परित्तकिरियानं चा ति द्वादसन्नं। किरियमनोधातु दसन्नं विञ्ञाणानं हसितुप्पाद-किरिया पञ्चवोकारे भवङ्गवसेन पवत्तानं नवन्नं तिहेतुकविपाकानं, तदारम्मणवसेन पवत्तानं पञ्चन्नं सोमनस्ससहगतविपाकानं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति अग्गहितग्गहणेन तेरसन्नं। वोट्ठपनकिरिया ठपेत्वा किरियमनोधातुं दसन्नं कामावचरकिरियानं, कामावचरकुसलाकुसलानं पञ्चवोकारे भवङ्गवसेन पवत्तानं पन्नरसन्नं विपाकचित्तानं चा ति पञ्च-चत्ताळीसाय।

कामावचरतिहेतुकसोमनस्ससहगतकिरियद्वयं भवङ्गवसेन पवत्तानं तेरसन्नं तिहेतुकविपाकानं तदारम्मणवसेन पञ्चन्नं सोमनस्ससहगत-विपाकानं परिकम्मवसेन पवत्तमानानं चतुन्नं रूपावचरकिरियानं अरहत्तफलसमापत्तिया अत्तनो पच्छिमस्स चा ति अग्गहितग्गहणेन द्वावीसतिया[1] दुहेतुकसोमनस्स-सहगत-किरियद्वयं यथा वुत्तानं तेरसन्नं भवङ्गचित्तानं पञ्चन्नं तदारम्मणानं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति अग्गहितग्गहणेन सत्तरसन्नं। कामावचरतिहेतुकउपेक्खासहगत-किरियद्वयं तेसं येव तेरसन्नं भवङ्गानं, तदारम्मणवसेन पवत्तानं छन्नं उपेक्खासहगतविपाकानं, परिकम्मवसेन पवत्तानं एकिस्सा रूपावचर-किरियाय चतुन्नं अरूपावचरकिरियानं अरहत्तफलसमापत्तिया अत्तनो पच्छिमस्स चा ति अग्गहितग्गहणेन चतुवीसतिया।

B. 442 दुहेतुकउपेक्खासहगतकिरियद्वयं तेसं येव तेरसन्नं भवङ्गानं छन्नं तदारम्मणानं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति अग्गहितग्गहणेन अट्ठारसन्नं। रूपावचरकिरियेसु एकेकं नवन्नं पञ्चवोकारे तिहेतुकभवङ्गानं अत्तनो पच्छिमस्स चा ति दसन्नं। अरूपावचरकिरियेसु पठमं पञ्चवोकारे नवन्नं भवङ्गानं, चतुवोकारे एकस्स अत्तनो पच्छिमस्स चा ति एका-

१. पञ्चवीसतिया सी.; स्या.।

दसन्नं। दुतियं चतुवोकारे द्वे भवङ्गानि लभति। ततियं तीणि, चतुत्थं चत्तारि फलसमापत्ति चा ति तेसु एकेकं यथा पटिपाटिया एकादसन्नं द्वादसन्नं तेरसन्नं पञ्चदसन्नं च अनन्तरपच्चयो होति। एवं बहुविधेना पि निद्देसं लभति।

तेन वुत्तं—

दसधा सत्तरसधा, समसट्ठिविधेन च।
बहुधा पि च निद्देसं, साधुकं, उपलक्खये ति॥

समनन्तरपच्चयविभङ्गो

३६६. समनन्तरपच्चयादयो उत्तानत्थायेव।

उपनिस्सयपच्चयविभङ्गो

३७१. उपनिस्सये **सद्धं उपनिस्साया** (प. १.१३५) ति कम्मकम्मफल-इधलोकपरलोकादीसु सद्धं उपनिस्सयं कत्वा। यथा हि पुरिसो हेट्ठा पठवियं उदकं अत्थी ति सद्दहित्वा पठविं खनति, एवं सद्धो कुलपुत्तो दानादीनं फलं च आनिसंसं च सद्दहित्वा दानादीनि पवत्ते ति। तस्मा "सद्धं उपनिस्साया" ति वुत्तं।

सीलं उपनिस्साया ति आदीसु पि इमे सीलादयो धम्मे उपनिस्सयं कत्वा ति अत्थो। सीलवा हि सीलानुभावेसु सीलानुसंसेसु च कुसलो सीलं उपनिस्साय सीलवन्तानं दानं देति, उपरूपरि सीलं समादियति सुपरिसुद्धं अखण्डं, चातुद्दसी आदीसु पक्खदिवसेसु उपोसथकम्मं करोति, सीलसम्पदं निस्साय झानादीनि उप्पादेति। बहुस्सुतो पि दानादिपुञ्ञकिरियायत्ता सब्बसम्पत्तियो दानादीनं च सङ्किलेस-वोदानादिभेदं सुतमयाय पञ्ञाय पटिविज्झित्वा ठितो सुतं उपनिस्साय दानादीनि पवत्ते ति। चागवा पि चागाधिमुत्तो अत्तनो चागसम्पदं

उपनिस्साय दानं देति, सीलवन्तो हुत्वा दिन्नं महप्फलं ति सीलं समादियति, उपोसथकम्मं करोति, ताय पटिपत्तिया परिसुद्धचित्तो झानादीनि उप्पादेति ।

पञ्ञवा पि इध लोकपरलोकहितं चेव लोकसमतिक्कमनूपायं च उपपरिक्खन्तो "सक्का इमाय पटिपत्तिया इध लोकहितं पि परलोकहितं पि लोकसमतिक्कमनूपायं च सम्पादेतुं" ति पञ्ञं उपनिस्साय
B. 443 दानादीनि पवत्तेति । यस्मा पन न केवलं सद्धादयो दानादीनं येव उपनिस्सया, अत्तनो अपरभागे उप्पज्जमानानं सद्धादीनं पि उपनिस्सया एव, तस्मा **सद्धा सीलं सुतं चागो पञ्ञा सद्धाय सीलस्स सुतस्स चागस्स पञ्ञाया** ति वुत्तं ।

परिकम्मं ति अनन्तरं अग्गहेत्वा पुब्बभागे परिकम्मं गहेतब्बं । **यथाकम्मूपगञाणस्स अनागतंसञाणस्सा** ति इमेसं द्विन्नं दिब्बचक्खुपरिकम्ममेव, परिकम्मं विसुं नत्थि । दिब्बचक्खुस्सेव परिभण्डञाणानि एतानि, तस्मिं इज्झमाने इज्झं ति एवं सन्ते पि तदधिमुत्तताय सहितं दिब्बचक्खुपरिकम्मं तेसं परिकम्मं ति वेदितब्बं । न हि एतानि सब्बेसं दिब्बचक्खुकानं समगतिकानि होन्ति । तस्मा भवितब्बमेत्थ परिकम्मविसेसेना ति ।

दिब्बचक्खु दिब्बाय सोतधातुया ति दूरे रूपानि दिस्वा तेसं सद्दं सोतुकामस्स दिब्बचक्खु दिब्बसोतधातुविसुद्धिया उपनिस्सयो होति । तेसं पन सद्दं सुत्वा तत्थ गन्तुकामतादिवसेन दिब्बसोतधातु इद्धिविधञाणस्स उपनिस्सयो होति । एवं सब्बत्थ तस्स तस्स उपकारकभाववसेन उपनिस्सयपच्चयता वेदितब्बा ।

मग्गं उपनिस्साय अनुप्पन्नं समापत्तिं ति तेन तेन मग्गेन सिथिलीकतपारिपन्थकत्ता[1] पहीनपारिपन्थकत्ता च तं तं समापत्तिं उप्पादेन्ती ति तेसं मग्गो समापत्तिया उपनिस्सयो होति । **विपस्सन्ती**

---

१. ० पारिपन्थिकत्ता सी. ।

ति उपरूपरिमग्गत्थाय विपस्सन्ति। **अत्थपटिसम्भिदाया** ति आदि पटिसम्भिदानं मग्गपटिलाभेनेव इज्झनतो वुत्तं। एवं इद्धानं च पनेतासं पच्छा तेसु तेसु आरम्मणेसु पवत्तिया मग्गो व उपनिस्सयो नाम होति।

सद्धं उपनिस्साय मानं जप्पेती ति अहमस्मि सद्धो पसन्नो ति मानं पवत्ते ति। **दिट्ठिं गण्हाती** ति तस्मिं तस्मिं वचने सद्धावसेनेव गन्त्वा पञ्ञाय अत्थं अनुपपरिक्खन्तो "अत्थि पुग्गलो" ति आदिवसेन दिट्ठिं गण्हाति।

सीलं सुतं चागं पञ्ञं ति अहमस्मि सीलवा सुतवा चागी पञ्ञासम्पन्नो ति मानं जप्पेति। सीलसुतचागपञ्ञासु पन मानमञ्ञनं विय दिट्ठिमञ्ञनं उप्पादेन्तो दिट्ठिं गण्हाति। **रागस्सा** ति आदीसु सद्धादिसम्पदं उपनिस्साय अत्तुक्कंसनकाले तेसु एकेको धम्मो रागस्स, परवम्भनकाले दोसस्स, उभयेन सम्पयुत्तस्स मोहस्स, वुत्तप्पकारानं मानदिट्ठीनं, सद्धादिसम्पदं उपनिस्साय भवभोगसम्पत्तिपत्थनाय उपनिस्सयो होति। एवमेत्थ लोकियकुसलं येव दस्सितं। लोकुत्तरं पन B. 444
सन्तं पणीतं उत्तमं अकुसलविद्धंसनं। तस्मा चन्दो विय अन्धकारतमानं न अकुसलस्स उपनिस्सयो होती ति न गहितं।

आतापेती ति आदि कायिकदुक्खवसेन अब्याकतधम्मदस्सनत्थं वुत्तं। सद्धो हि सद्धं निस्साय अतिसीतं अतिउण्हं ति अनोसक्कित्वा नानप्पकारानि नवकम्मवेय्यावच्चादीनि करोन्तो अत्तानं आतापेति परितापेति, भोगं उप्पादेत्वा पुञ्ञानि करिस्सामी ति परियेट्ठिमूलकं दुक्खं पच्चनुभोति। सीलवा पि सीलानुरक्खणत्थं अब्भोकासिकत्तादिवसेन अत्तानं आतापेति परितापेति, पिण्डचारिकत्तादिवसेन परियेट्ठिमूलकं दुक्खं पच्चनुभोति। सुतवा पि बाहुसच्चानुरूपं पटिपत्तिं पटिपज्जिस्सामी ति वुत्तनयेनेव पटिपज्जन्तो अत्तानं आतापेति परितापेति, परियेट्ठिमूलकं दुक्खं पच्चनुभोति। चागवा पि चागाधिमुत्तताय अत्तनो यापनमत्ते पि पच्चये अनवसेसेत्वा परिच्चजन्तो, अङ्गादिपरिच्चागं वा पन करोन्तो अत्तानं आतापेति परितापेति, परिच्चजितब्बस्स वत्थुनो उप्पाद-

नत्थं परियेट्ठिमूलकं दुक्खं पच्चनुभोति। पञ्ञवा पि उपरूपरि पञ्ञं वड्ढेस्सामी ति सप्पञ्ञतं निस्साय सीतुण्हादीनि अगणेत्वा सज्झाय-मनसिकारेसु योगं करोन्तो अत्तानं आतापेति परितापेति, मिच्छाजीवे आदीनवं सम्माजीवे च आनिसंसं दिस्वा मिच्छाजीवं पहाय परिसुद्धेन आजीवेन जीवितवुत्तिं परियेसन्तो परियेट्ठिमूलकं दुक्खं पच्चनुभोति।

कायिकस्स सुखस्सा ति सद्धादिसम्पत्तिं उपनिस्साय उप्पन्नानि सुखोपकरणानि परिभुञ्जनकाले सद्धादिसमुट्ठानपणीतरूपफुटकायस्स च तेसं वसेन अविप्पटिसारमूलकपामोज्जपीतिसमुट्ठानरूपफुटकायस्स च सुखुप्पत्तिकाले तेसं कटत्ता उप्पन्नविपाकसुखकाले च कायिकस्स सुखस्स, वुत्तनयेनेव दुक्खुप्पत्तिकाले सद्धादिगुणसम्पत्तिं असहमाने हि पयुत्तवध-बन्धनादिकाले च कायिकस्स दुक्खस्स, सद्धादयो उपनिस्साय पवत्तिफलसमापत्तिकाले पन फलसमापत्तिया एतेसु एकेको उपनिस्सय-पच्चयेन पच्चयो होती ति वेदितब्बो।

कुसलं कम्मं ति कुसलचेतना अत्तनो विपाकस्स उपनिस्सय-पच्चयो, सा पन बलवचेतना व लब्भति, न दुब्बला। तत्रिदं वत्थु—एका किर इत्थी उब्बन्धितुकामा रुक्खे रज्जुं लग्गेत्वा संविधातब्बं
B. 445 संविदहति। अथेको चोरो रत्तिभागे तं गेहं उपसङ्कमित्वा "इमाय रज्जुया किञ्चिदेव बन्धित्वा हरिस्सामी" ति सत्थेन छिन्दितुं उपगतो। अथ सा रज्जु आसीविसो हुत्वा सुसूति अकासि। चोरो भीतो अपसक्कि। इत्थी अत्तनो निवेसना निक्खमित्वा रज्जुपासे गीवं पटिमुञ्चित्वा उब्बन्धा कालमकासि। एवं बलवचेतना अन्तराये निवारेत्वा अत्तनो विपाकस्स उपनिस्सयो होति।

न पनेतं एकन्ततो गहेतब्बं। कतोकासं हि कम्मं एव विपाकस्स अन्तरायं पटिबाहित्वा विपच्चति, विपाकजनकं पन कम्मं विपाकस्स उपनिस्सयपच्चयो न होती ति न वत्तब्बं। **कम्मं** ति एत्थ चतुभूमकं पि वेदितब्बं। यं पन परतो "मग्गो फलसमापत्तिया" ति वुत्तं, तं अचेतनावसेन। तेनेतं दीपेति—यो कोचि विपाकजनको धम्मो, सो अत्तनो विपाकस्स उपनिस्सयपच्चयो होती ति।

रागं उपनिस्साय पाणं हनती ति यस्मिं वत्थुस्मिं सारत्तो होति, तस्मिं वा विरुद्धं, तस्स वा अत्थाय पाणं हनति। अदिन्नादानादीसु पि एतेनेवुपायेन अत्थो वेदितब्बो।

सन्धिं छिन्दती ति अदिन्नादानवसेन वुत्तं। तत्थ **सन्धिं** ति गेहसन्धिं। **निल्लोपं हरती** ति निलीयित्वा हरति। **एकागारिकं करोती** ति बहूहि सद्धिं एकमेव गेहं परिवारेत्वा विलुम्पति। **परिपन्थे तिट्ठती** ति पन्थदूहनकम्मं करोति। **दोसं उपनिस्साया** ति आदीसु "अनत्थं मे अचरी" ति आदिवसेन उप्पन्नं दोसं उपनिस्सयं कत्वा।

मोहं उपनिस्साया ति पाणातिपातादीसु आदीनवपटिच्छादकं मोहं उपनिस्सयं कत्वा। **मानं उपनिस्साया** ति अहं किं हनितुं न सक्कोमि, आदातुं न सक्कोमी ति मानं उपनिस्सयं कत्वा। केनचि वा पन अवञ्ञातो होति परिभूतो हीळितो, तं ओमानं उपनिस्सयं कत्वा ति पि अत्थो। **दिट्ठिं उपनिस्साया** ति यञ्ञादीसु ब्राह्मणादयो विय पादसिकमिलक्खादयो विय च दिट्ठिं उपनिस्सयं कत्वा।

पत्थनं उपनिस्साया ति "सचे मे इदं नाम इज्झिस्सति, एवरूपं ते बलिकम्मं करिस्सामी" ति एवं देवतायाचनसङ्खातं वा, असुकं नाम मे घातेत्वा[1] देहि, असुकस्स सन्तकं आहर, एहि वा मे एतानि कम्मानि करोन्तस्स सहायो होही" ति एवमादिं वा पत्थनं उपनिस्सयं कत्वा। **रागो दोसो मोहो मानो दिट्ठि पत्थना रागस्सा** ति। एत्थ रागो B. 446
रागस्सा पि उपनिस्सयो होति दोसादीनं पि। दोसादीसु पि एसेव नयो।

पाणातिपातो पाणातिपातस्सा ति पाणातिपाती असंवरे ठितत्ता अञ्ञं पि पाणं हनति। यो वा एतेन हतो, तस्स ञातिमित्तेहि उपद्दुतो तेसु अञ्ञं पि हनति। एवं पाणातिपातो पाणातिपातस्स उपनिस्सय-पच्चयेन पच्चयो। भण्डसामिकं पन गोपकं वा घातेत्वा परभण्डहरणे, सामिकं घातेत्वा तस्स दारातिक्कमे, नाहं हनामी ति मुसाभणने,

---

१. आनेत्वा स्या.।

कतस्स पटिच्छादनत्थाय अकतस्स वा करणत्थाय पेसुञ्ञं उपसंहारे, तेनेव नयेन फरुसा वाचा निच्छारणे, सम्फप्पलापभणने, परं हनित्वा अभिज्झायितब्बपरवित्तूपकरणाभिज्झायने, यो तेन घातितो होति; तस्स मित्तामच्चा उच्छिज्जन्तू ति आदि चिन्तने "एवं मे पाणातिपातो निज्जिण्णो भविस्सती" ति दुक्करकारिकादिवसेन दिट्ठिगहणकाले च। पाणातिपातो अदिन्नादानादीनं पि उपनिस्सयो होति। इमिना उपायेन अदिन्नादानादिमूलकेसु पि चक्केसु अत्थो वेदितब्बो।

मातुघातिकम्मं मातुघातिकम्मस्सा ति अञ्ञं मातरं हनन्तं दिस्वा "वट्टति एवं कातुं" ति अत्तनो मातरं हनन्तस्स वा, एकस्मिं भवे हन्त्वा अपरस्मिं पि हननवसेन वा, एकस्मिं येव भवे "गच्छ, मे मातरं हनाही" ति पुनप्पुनं आणापनवसेन वा, द्वीहि पहारेहि नियतमरणाय दुतियपहारदानवसेन वा मातुघातिकम्मं मातुघातिकम्मस्स उपनिस्सयो होति। सेसानि पि यथायोगं इमिना व नयेन वेदितब्बानि। यस्मा पन बलवाकुसलं दुब्बलाकुसलस्स उपनिस्सयो न होति, तस्मा कम्मपथानन्तरियकम्मवसेनेव देसना कता ति वदन्ति।

तं न एकन्ततो गहेतब्बं। पाणातिपातादीनि हि कत्वा "कस्मा एवमकासी" ति चोदियमानो कोपमत्तकं पि करोति। विप्पटिसारी पि होति। अप्पमत्तके पि च किलेसे उप्पन्ने तं वड्ढेत्वा वीतिक्कमं करोति। तस्मा बलवं दुब्बलस्स दुब्बलं च बलवस्सा पि उपनिस्सयो होति येव। यं पन पच्चयविभङ्गस्स उद्देसवण्णनायं वुत्तं "बलवकारणट्ठेन उपनिस्सयो होती" ति, तं कारणभावस्सेव बलवताय वुत्तं, न उपनिस्सयपच्चयधम्मानं। कम्मकिलेसा हि बलवन्तो पि दुब्बला पि बलवकारणं होन्ति येव।

रागं उपनिस्साय दानं देती ति आदीसु अहो वताहं चातुम्महारा-
B. 447 जिकानं देवानं सहब्यतं उपपज्जेय्यं ति उपपत्तिभवे वा भोगेसु वा रागं उपनिस्साय दानं देति। सीलसमादानउपोसथकम्मेसु पि एसेव नयो। झानं पन रागविक्खम्भनत्थाय, विपस्सनं रागस्स पहानत्थाय, मग्गं समुच्छेदनत्थाय उप्पादेन्तो रागं उपनिस्साय उप्पादेति नाम। वीत-

अब्याकतो पि अब्याकतस्स तिविधेन, तथा कुसलस्स, तथा अकुसलस्सा B. 449
ति । एवं कुसलो अट्ठविधेन, अकुसलो छब्बिधेन, अब्याकतो नवविधेना ति तेवीसतिविधेन उपनिस्सयो भाजितो ति वेदितब्बो ।

पुरेजातपच्चयविभङ्गो

३७२. पुरेजाते चक्खादीनि ओळारिकवसेन वुत्तानि । आपोधातुआदीनि पि पन पुरेजातारम्मणानि होन्ति येव । **वत्थु पुरेजातं चक्खायतनं** (प. १.१४३) ति आदि यं वत्थु हुत्वा पुरेजातं होति, तं दस्सेतुं वुत्तं । **वत्थु विपाकाब्याकतानं** ति पवत्तियं पुरेजातपच्चयं सन्धाय वुत्तं ।

पच्छाजातपच्चयविभङ्गो

३७३. पच्छाजाते **इमस्स कायस्सा** (प. १.१४४) ति चातुमहाभूतिककायस्स । **पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो** ति उपत्थम्भनवसेन पच्छाजातो हुत्वा पच्चयो । उपत्थम्भकट्ठेन पच्चयत्ता येव हेस पच्छाजातपच्चयो ति इमस्मिं पञ्हावारे अनुलोमतो आगतो ।

आसेवनपच्चयविभङ्गो

३७४. आसेवनपच्चये **अनुलोमं गोत्रभुस्सा** ति आदीनं विसुं गहणे हेट्ठा वुत्तनयेनेव कारणं वेदितब्बं ।

कम्मपच्चयविभङ्गो

३७५. कम्मपच्चये **कुसला चेतना सम्पयुत्तकानं** (प.१.१४५) ति एत्थ सहजातनानाक्खणिकविभागस्स अभावतो सहजाता ति न वुत्ता । अब्याकतविस्सज्जने पन सो विभागो अत्थि, तस्मा तत्थ वुत्ता । पटिसन्धिग्गहणं कटत्तारूपानं वसेन कतं । **चेतना वत्थुस्सा** ति किञ्चा पि पटिसन्धिक्खणे वत्थुपतिट्ठिता अरूपधम्मा वत्थुपच्चया वत्तन्ति, चेतना पन वत्थुस्सा पि पच्चयो ति दस्सेतुं वुत्तं ।

विपाकपच्चयविभङ्गो

३७६. विपाकपच्चये पटिसन्धिवारे इमिना व नयेन अत्थो वेदितब्बो ।

आहारपच्चयविभङ्गो

३७७. आहारपच्चये **इमस्स कायस्सा** (प.१.१४७) ति इमस्मिं चतुसन्ततिवसेन पवत्ते चातुमहाभूतिककाये आहारसमुट्ठानस्स जनकवसेन, सेसस्स उपत्थम्भकवसेन आहारपच्चयेन पच्चयो।

इन्द्रियपच्चयादिविभङ्गा

३७८. इन्द्रियपच्चयादीसु पि पटिसन्धिवारो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

विभङ्गवारवण्णना निट्ठिता

२. सङ्ख्यावारवण्णना

(१) हेतुमूलकनयो

B. 450 ३८७. इदानेत्थ यथा लद्धानि विस्सज्जनानि गणनावसेन दस्सेतुं **हेतुया सत्त** (प.१.१५४) ति आदि वुत्तं। तत्थ **सत्ता** ति कुसलेन कुसलं, अब्याकतं, कुसलाब्याकतं ति तीणि। तथा अकुसलेन; अब्याकतेन अब्याकतमेवा ति एवं सत्त।

आरम्मणे नवा ति एकमूलकएकावसानानि नव।

अधिपतिया दसा ति कुसलं कुसलस्स सहजाततो चेव आरम्मणतो च; अकुसलस्स आरम्मणतो व; अब्याकतस्स सहजाततो चेव आरम्मणतो च; कुसलाब्याकतस्स सहजाततो वा ति कुसलमूलकानि चत्तारि। अकुसलं अकुसलस्स सहजाततो चेव आरम्मणतो च; अब्याकतस्स सहजाततो व; तथा अकुसलाब्याकतस्सा ति अकुसलमूलकानि तीणि। अब्याकतो अब्याकतस्स सहजाततो चेवारम्मणतो च; कुसलस्सारम्मणतो व, तथा अकुसलस्सा ति अब्याकतमूलकानि तीणी ति एवं दस। एत्थ पन आरम्मणाधिपति पि सत्तधा, सहजाताधिपति पि सत्तधा व लब्भति।

अनन्तरे सत्ता ति कुसलमूलकानि द्वे, तथा अकुसलमूलकानि, अब्याकतमूलकानि तीणी ति एवं सत्त। समनन्तरे पि एतानेव।

रागभावत्थाय पन अभिञ्ञं समापत्तिं च उप्पादेन्तो रागं उपनिस्साय उप्पादेति नाम। एत्तावता हि वीतरागो नाम होति।

सद्धाया ति दानादिवसेन पवत्तसद्धाय सीलादीसु पि एसेव नयो। यथेव हि दानादिवसेन सद्धादयो उप्पादेन्तो रागं उपनिस्साय उप्पादेति नाम, एवं रागादयो पि सद्धादीनं उपनिस्सयपच्चया नाम होन्ती ति वेदितब्बा। **तस्स पटिघातत्थाया** ति तस्स पटिबाहनत्थाय, विपाकोकासस्स अनुप्पादनत्थाया ति अत्थो। सप्पटिघातेसु ताव एवं होतु, यानि पन अप्पटिघातानि आनन्तरियकम्मानि, तेसु "तस्स पटिघातत्थाया" ति कस्मा वुत्तं ति ? तस्स अज्झासयवसेन। तप्पटिघातत्थाय पवत्तेमी ति हिस्स अज्झासयो, तं गहेत्वा एवं वुत्तं।

रागं उपनिस्साय अत्तानं आतापेती ति यत्थ रत्तो, तस्स दुक्करेन पत्तिं सम्पस्सन्तो एवं करोती ति सब्बं पुरिमनयेनेव वेदितब्बं। **कायिकस्स सुखस्सा** ति रागादिसमतिक्कमवसेन कुसलं कत्वा पटिलद्धसुखस्स वा रागादिवसेन अनादीनवदस्साविनो कामे परिभुञ्जनवसेन उप्पन्नसुखस्स वा। **दुक्खस्सा** ति आतापनादिवसेन उप्पन्नसुखस्स वा रागादिहेतु पवत्तबधबन्धनादिवसेन उप्पन्नदुक्खस्स वा। **फलसमापत्तिया** ति रागादयो समुच्छिन्दित्वा वा उप्पादिताय तेहि वा अट्टीयमानेन समापन्नाय।

कायिकं सुखं ति आदीसु सुखे उप्पन्ने तं अस्सादेत्वा पुनप्पुनं तथारूपेहेव पच्चयेहि तं उप्पादेन्तस्स पुरिमं पच्छिमस्स उपनिस्सयो होति। सीतादीसु पन अग्गिसन्तापनादीनि अतिसेवन्तस्स पुब्बभागे सुखं अपरभागे दुक्खस्स, "सुखो वत, इमिस्सा परिब्बाजिकाय तरुणाय लोमसाय बाहाय सम्फस्सो" ति कामेसु पातब्यतं आपज्जन्तस्स इध कायिकं सुखं नेरयिकस्स कायिकदुक्खस्स, अरोगभावेन पन सुखिनो फलसमापत्तिं समापज्जन्तस्स कायिकं सुखं फलसमापत्तिया उपनिस्सय- B: 448
पच्चयो होति। दुक्खपटिघाताय पन सुखं सेवन्तस्स दुक्खपटिघाताय च भगवतो विय आबाधं विक्खम्भेत्वा फलसमापत्तिं समापज्जन्तस्स कायिकदुक्खं कायिकसुखस्स चेव फलसमापत्तिया च उपनिस्सयपच्चयो

होति । उतुसप्पायो सुखस्स चेव फलसमापत्तिया च, असप्पायो दुक्खस्स । उतुअसप्पायं वा अभिभवित्वा समापत्तिसमुट्ठितरूपवसेन उप्पन्नं सुखं अनुभवितुकामस्स असप्पायो पि उतुफलसमापत्तिया पच्चयो व । भोजनसेनासनेसु पि एसेव नयो ।

पुन **कायिकं सुखं** ति आदीनि केवलं एकतो दस्सितानि । हेट्ठा वुत्तनयेनेव पनेसं पच्चयभावो वेदितब्बो । **फलसमापत्ति कायिकस्स सुखस्सा** ति समापत्तिसमुट्ठानरूपवसेन उप्पन्नस्स सुखस्स । तं हेस समापत्तितो वुट्ठाय अनुभवति ।

कायिकं सुखं उपनिस्साय दानं ति आदीसु "अहो वत, मे इदं सुखं न परिहायेय्या" ति पत्तस्स वा अपरिहायनवसेन; "अहो वताहं आयतिं एवरूपं सुखं पापुणेय्यं" ति अप्पत्तस्स वा पत्तिवसेन; दुक्खे पि "अहो वत, मे दुक्खं परिहायेय्या" ति पत्तस्स परिहायनवसेन वा; "आयत्ति एवरूपं नुप्पज्जेय्या" ति अनुप्पादपत्थनावसेन वा सुखदुक्खानं उपनिस्सयता वेदितब्बा । उतुभोजनसेनासनानि वुत्तनयानेव ।

पुन **कायिकं सुखं** ति आदीसु यस्मा "साधु खो मारिस, मोग्गल्लान, तं बुद्धं सरणं, गमनं होती" (सं० नि० ३.२४१) ति सुखप्पत्तानं पि, "सम्मासम्बुद्धो वत, सो भगवा, यो एवरूपस्स दुक्खस्स परिञ्ञाय धम्मं देसेती" (उदा.७६) ति दुक्खप्पत्तानं पि सद्धा उप्पज्जति । सुखदुक्खेहि च संयोगवियोगत्थाय सीलादिपरिपूरणं करेय्य, तस्मा सुखदुक्खानि सद्धादीनं उपनिस्सयभावेन दस्सितानि । उतूआदीनि पि यथायोगं योजेतब्बानि ।

कायिकं सुखं उपनिस्साय पाणं हनती ति आदीसु पि वुत्तनयानुसारेनेव सुखादीनं उपनिस्सयता वेदितब्बा ।

इमस्मिं पन उपनिस्सयभाजनीये कुसलो कुसलस्स तिविधेना पि उपनिस्सयो, अकुसलस्स दुविधेन, अब्याकतस्स तिविधेन । अकुसलो अकुसलस्स तिविधेन, कुसलस्स एकविधेन, अब्याकतस्स दुविधेन ।

विसभागा, सहजातादयो सभागा[1]। कस्मा ? तथा भावाभावतो। हेतुपच्चयो हि येसं हेतुपच्चयो होति, तेसं सहजातादिपच्चयो पि होति, आरम्मणादिपच्चयो पन न होती ति आरम्मणादयो तस्स विसभागा नाम। तस्मा सो तेहि, ते वा तेन सद्धिं, न योजेतब्बा। पुरेजातपच्छाजातसम्पयुत्तविप्पयुत्त-अत्थिनत्थिविगताविगता च अञ्ञमञ्ञविरुद्धा, ते पि अञ्ञमञ्ञं न योजेतब्बा। तत्थ अयोजनीये वज्जेत्वा योजनीयेहि योगे ये वारा लब्भन्ति, ते सङ्खेपतो दस्सेतुं **हेतुपच्चया अधिपतिया चत्तारी** ति आदि वुत्तं।

तत्थ किञ्चा पि हेतुपच्चयस्स अधिपतिना संसन्दने ऊनतरगणनवसेन सत्तहि वारेहि भवितब्बं, यस्मा पन अधिपतीसु वीमंसा व हेतुपच्चयो, न इतरे, तस्मा विसभागे वज्जेत्वा सभागवसेन "चत्तारी" ति वुत्तं।

तानि एवं वेदितब्बानि—कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं, कुसलो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं, कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स च धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानञ्च रूपानं, अब्याकतो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; विपाकाब्याकता किरियाब्याकता वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानञ्च रूपानं ति।

एत्थ च विपाकाब्याकता लोकुत्तरतो व गहेतब्बा। आरम्मणपच्चयअनन्तरपच्चयादयो पन विसभागत्ता न योजिता। इमिना उपायेन सब्बत्थ लब्भमानं च अलब्भमानं च ञत्वा लब्भमानवसेन वारा उद्धरितब्बा।

सहजाते सत्ता ति हेतुया लद्धानेव। **अञ्ञमञ्ञे तीणी** ति सुद्धिकअञ्ञमञ्ञे लद्धानेव। **निस्सये सत्ता** ति हेतुया लद्धानेव। **विपाके एकं**

---

१. तस्स ०स्या।

B. 453 ति सुद्धिकविपाके लद्धमेव। **इन्द्रियमग्गेसु चत्तारी** ति हेट्ठा वुत्तनयानेव। **सम्पयुत्ते तीणी** ति सुद्धिकसम्पयुत्ते लद्धानेव। **विप्पयुत्ते तीणी** ति कुसलादि[१]चित्तसमुट्ठानं रूपं पच्चुप्पन्नं कत्वा वेदितब्बानि। **अत्थि-अविगतेसु सत्ता** ति हेतुया लद्धानेव।

एवं येहि अधिपतिपच्चयादीहि एकादसहि पच्चयेहि सद्धिं हेतुपच्चयो योजनं लभति, तेसं वसेन दुमूलकनये गणनं दस्सेत्वा इदानि तिमूलकादीसु तस्स दस्सनत्थं लक्खणं ठपेन्तो **हेतुसहजातनिस्सय-अत्थिअविगतं ति सत्ता** ति आदिमाह।

पोत्थकेसु पन निस्सउपनिस्सअधिपाति एवमादि परिहीनक्खरानि पच्चयनामानि लिखन्ति, तं सञ्ञाकरणमत्तवसेन लिखितं। तस्मा तादिसेसु ठानेसु परिपुण्णा पाळि कातब्बा। यं पनिदं लक्खणं ठपितं, तेन इदं दीपेति–अयं हेतुपच्चयो सहजातादीहि चतूहि सद्धिं संसन्दने अत्तनो विभङ्गे लद्धानि सत्तेव विस्सज्जनानि लभति। सचे पनेत्थ अञ्ञमञ्ञपच्चयो पविसति, अञ्ञमञ्ञे लद्धानि तीणि लभति। सचे सम्पयुत्तपच्चयो पविसति, तानेव तीणि लभति। सचे विप्पयुत्तपच्चयो पविसति, हेतुविप्पयुत्तदुके लद्धानि तीणि लभति। सचे विपाकपच्चयो पविसति,सब्बेहि विपाकसभागेहि सद्धिं संसन्दने एवमेव विस्सज्जनं लभति। सचे पनेत्थ इन्द्रियमग्गपच्चया पविसन्ति, तेहि सद्धिं दुमूलके लद्धानि चत्तारि येव लभति। सचे तेहि सद्धिं अञ्ञमञ्ञपच्चयो पविसति, हेताधिपतिदुके दस्सितेसु चतूसु विस्सज्जनेसु "कुसलो धम्मो अब्याकतस्स, कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स चा" ति द्वे अपनेत्वा सेसानि द्वे लभति। सचे पि तत्थ सम्पयुत्तपच्चयो पविसति, तानेव द्वे लभति। सचे पन विप्पयुत्तपच्चयो पविसति, इतरानि द्वे लभति। सचे पन तेसु विपाकपच्चयो पविसति, सब्बत्थ एकमेव लभति। अधिपतिना पन सद्धिं हेताधिपतिदुकतो ऊनतरगणनेसु अप्पविसन्तेसु चत्तारि येव लभति। ऊनतरगणनेसु पविसन्तेसु तेसं वसेन

१. कुसलादीवि सी.।

सहजाते नवा ति कुसलमूलकानि तीणि, अकुसलमूलकानि तीणि, अब्याकतमूलकं एकं, तथा कुसलाब्याकतमूलकं, अकुसलाब्याकतमूलकं चा ति एवं नव।

अञ्ञमञ्ञे तीणी ति कुसलेन कुसलं, अकुसलेन अकुसलं, अब्याकतेन अब्याकतं ति एवं तीणि।

निस्सये तेरसा ति सहजाततो व कुसलमूलकानि तीणि, तथा अकुसलमूलकानि, तथा अब्याकतमूलकानि। एत्थ पन पुरेजातं पि लब्भति। अब्याकतं हि अब्याकतस्स सहजातं पि होति पुरेजातं पि; कुसलस्स पुरेजातमेव तथा अकुसलस्स। पुन कुसलाब्याकतो सहजात-पुरेजाततो कुसलस्स, सहजाततो व अब्याकतस्स, तथा अकुसलाब्याकतो ति एवं तेरस।

उपनिस्सये नवा ति एकमूलकेकावसाना नव। तेसं विभङ्गे तेवीसति भेदा दस्सिता। तेसु आरम्मणूपनिस्सये सत्त, अनन्तरूपनिस्सये सत्त, पकतूपनिस्सये नव होन्ति। **पुरेजाते तीणी** ति अब्याकतो अब्याकतस्स, कुसलस्स, अकुसलस्सा ति एवं तीणि।

पच्छाजाते तीणी ति कुसलो अब्याकतस्स, अकुसलो अब्याकतस्स, अब्याकतो अब्याकतस्सा ति एवं तीणि। B. 451

आसेवने तीणि अञ्ञमञ्ञसदिसानि।

कम्मे सत्त हेतुसदिसानि। तत्थ द्वीसु विस्सज्जनेसु नानाक्खणिककम्मं पि आगतं, पञ्चसु सहजातमेव।

विपाके एकं अब्याकतेन अब्याकतं।

आहारइन्द्रियझानमग्गेसु सत्त हेतुसदिसानेव। इन्द्रियं पनेत्थ सहजातपुरेजातवसेन आगतं।

सम्पयुत्ते तीणि अञ्ञमञ्ञसदिसानि।

विसभागा, सहजातादयो सभागा[1]। कस्मा ? तथा भावाभावतो। हेतुपच्चयो हि येसं हेतुपच्चयो होति, तेसं सहजातादिपच्चयो पि होति, आरम्मणादिपच्चयो पन न होती ति आरम्मणादयो तस्स विसभागा नाम। तस्मा सो तेहि, ते वा तेन सद्धिं, न योजेतब्बा। पुरेजातपच्छाजातसम्पयुत्तविप्पयुत्त-अत्थिनत्थिविगताविगता च अञ्ञमञ्ञविरुद्धा, ते पि अञ्ञमञ्ञं न योजेतब्बा। तत्थ अयोजनीये वज्जेत्वा योजनीयेहि योगे ये वारा लब्भन्ति, ते सङ्खेपतो दस्सेतुं **हेतुपच्चया अधिपतिया चत्तारी** ति आदि वुत्तं।

तत्थ किञ्चा पि हेतुपच्चयस्स अधिपतिना संसन्दने ऊनतरगणनवसेन सत्तहि वारेहि भवितब्बं, यस्मा पन अधिपतीसु वीमंसा व हेतुपच्चयो, न इतरे, तस्मा विसभागे वज्जेत्वा सभागवसेन "चत्तारी" ति वुत्तं।

तानि एवं वेदितब्बानि—कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं, कुसलो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा चित्तसमुट्ठानानं रूपानं, कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स च धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; कुसला वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानञ्च रूपानं, अब्याकतो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो अधिपतिपच्चयेन पच्चयो; विपाकाब्याकता किरियाब्याकता वीमंसा सम्पयुत्तकानं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानञ्च रूपानं ति।

एत्थ च विपाकाब्याकता लोकुत्तरतो व गहेतब्बा। आरम्मणपच्चयअनन्तरपच्चयादयो पन विसभागत्ता न योजिता। इमिना उपायेन सब्बत्थ लब्भमानं च अलब्भमानं च ञत्वा लब्भमानवसेन वारा उद्धरितब्बा।

सहजाते सत्ता ति हेतुया लद्धानेव। **अञ्ञमञ्ञे तीणी** ति सुद्धिकअञ्ञमञ्ञे लद्धानेव। **निस्सये सत्ता** ति हेतुया लद्धानेव। **विपाके एकं**

१. तस्स ०स्या.।

B. 453 ति सुद्धिकविपाके लद्धमेव । **इन्द्रियमग्गेसु चत्तारी** ति हेट्ठा वुत्तनयानेव । **सम्पयुत्ते तीणी** ति सुद्धिकसम्पयुत्ते लद्धानेव । **विप्पयुत्ते तीणी** ति कुसलादि[1]चित्तसमुट्ठानं रूपं पच्चयुप्पन्नं कत्वा वेदितब्बानि । **अत्थि-अविगतेसु सत्ता** ति हेतुया लद्धानेव ।

एवं येहि अधिपतिपच्चयादीहि एकादसहि पच्चयेहि सद्धिं हेतुपच्चयो योजनं लभति, तेसं वसेन दुमूलकनये गणनं दस्सेत्वा इदानि तिमूलकादीसु तस्स दस्सनत्थं लक्खणं ठपेन्तो **हेतुसहजातनिस्सय-अत्थिअविगतं ति सत्ता** ति आदिमाह ।

पोत्थकेसु पन निस्सउपनिस्सअधिपाति एवमादि परिहीनक्खरानि पच्चयनामानि लिखन्ति, तं सञ्ञाकरणमत्तवसेन लिखितं । तस्मा तादिसेसु ठानेसु परिपुण्णा पाळि कातब्बा । यं पनिदं लक्खणं ठपितं, तेन इदं दीपेति–अयं हेतुपच्चयो सहजातादीहि चतूहि सद्धिं संसन्दने अत्तनो विभङ्गे लद्धानि सत्तेव विस्सज्जनानि लभति । सचे पनेत्थ अञ्ञमञ्ञपच्चयो पविसति, अञ्ञमञ्ञे लद्धानि तीणि लभति । सचे सम्पयुत्तपच्चयो पविसति, तानेव तीणि लभति । सचे विप्पयुत्तपच्चयो पविसति, हेतुविप्पयुत्तदुके लद्धानि तीणि लभति । सचे विपाकपच्चयो पविसति,सब्बेहि विपाकसभागेहि सद्धिं संसन्दने एवमेव विस्सज्जनं लभति । सचे पनेत्थ इन्द्रियमग्गपच्चया पविसन्ति, तेहि सद्धिं दुमूलके लद्धानि चत्तारि येव लभति । सचे तेहि सद्धिं अञ्ञमञ्ञपच्चयो पविसति, हेताधिपतिदुके दस्सितेसु चतूसु विस्सज्जनेसु "कुसलो धम्मो अब्याकतस्स, कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स चा" ति द्वे अपनेत्वा सेसानि द्वे लभति । सचे पि तत्थ सम्पयुत्तपच्चयो पविसति, तानेव द्वे लभति । सचे पन विप्पयुत्तपच्चयो पविसति, इतरानि द्वे लभति । सचे पन तेसु विपाकपच्चयो पविसति, सब्बत्थ एकमेव लभति । अधिपतिना पन सद्धिं हेताधिपतिदुकतो ऊनतरगणनेसु अप्पविसन्तेसु चत्तारि येव लभति । ऊनतरगणनेसु पविसन्तेसु तेसं वसेन

१. कुसलादीवि सी. ।

द्वे एकं ति लभति । एवं तेसं तेसं पच्चयानं समायोगे लब्भमानं गणनं विदित्वा तिमूलकादीसु गणना उद्धरितब्बा ति ।

एतेसु पन घटनेसु सब्बपठमानि चत्तारि घटनानि सामञ्ञतो B. 454 नवन्नं पि हेतूनं वसेन वुत्तानि अविपाकानि । अब्याकतेन अब्याकत-विस्सज्जने पनेत्थ विपाकहेतु पि लब्भति ।

ततो परानि पञ्च घटनानि विपाकहेतुवसेन वुत्तानि । तत्थ सब्बे पि सहजातविपाका चेव विपाकसहजातरूपा च । तेसु पठमे घटने विपाका चेव तं समुट्ठानरूपा च लब्भन्ति, दुतिये विपाका चेव पटिसन्धियं च वत्थुरूपं । ततिये अरूपधम्मा व । चतुत्थे विपाकचित्तसमुट्ठानरूपमेव लब्भति । पञ्चमे वत्थुरूपमेव ।

ततो परानि पञ्चदस घटनानि इन्द्रियमग्गयुत्तानि अमोहहेतुवसेन वुत्तानि । तत्थ पठमानि नव निराधिपतीनि, पच्छिमानि छ साधि-पतीनि । निराधिपतिकेसु पि पठमानि चत्तारि सामञ्ञतो सब्बत्थ अमोहवसेन वुत्तानि, पच्छिमानि पञ्च विपाकामोहवसेन ।

तत्थ निराधिपतिकेसु पठमे **चत्तारी** ति हेट्ठा हेताधिपतिदुके दस्सितानेव । दुतिये चित्तसमुट्ठानरूपं परिहायति । ततिये वत्थुरूपं परिहायति । चतुत्थे कुसलो धम्मो चित्तसमुट्ठानानं, अब्याकतो तं समुट्ठा-नानं ति रूपमेव लब्भति । ततो परानि विपाकयुत्तानि पञ्च हेट्ठा वुत्त-नयानेव । साधिपतिकेसु पठमानि तीणि घटनानि सामञ्ञतो विपाका-विपाकहेतुवसेन वुत्तानि । तेसु पठमे चत्तारि वुत्तनयानेव । दुतिये रूपं परिहायति, ततिये अरूपं परिहायति । ततो परानि तीणि विपाकहेतु-वसेन वुत्तानि । तेसु पठमे रूपारूपं लब्भति, दुतिये अरूपमेव, ततिये रूपमेव । एवं पि तेसं तेसं पच्चयानं समायोगे लब्भमानं गणनं विदित्वा तिमूलकादीसु गणना उद्धरितब्बा ति ।

हेतुमूलकनयो निट्ठितो

(२) आरम्मणादिमूलकनया

२६२. आरम्मणमूलके पि अधिपतिपच्चयादयो सत्त आम्मणेन सभागा, सेसा सोळस विसभागा ति ते अयोजेत्वा सत्तेव योजिता। तेसु **अधिपतिया सत्ता** (प. १.१५६) ति कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स, अकुसलस्स धम्मस्स, अब्याकतस्सा ति एवं कुसलमूलानि तीणि, अकुसलमूलं एकं, अब्याकतमूलानि तीणी ति सत्त। **निस्सये तीणी** ति वत्थुवसेन अब्याकतमूलानेव। उपनिस्सये सत्त हेट्ठिमानि एव। **पुरेजाते तीणी** ति वत्थारम्मणवसेन अब्याकतमूलानि।
B. 455 **विप्पयुत्ते तीणी** ति वत्थुवसेनेव। **अत्थि अविगतेसु तीणी** ति वत्थारम्मणवसेन। यथा पन हेतुमूलके लक्खणदस्सनत्थं घटनानि ठपितानि, तथा आरम्मणमूलकादीसु पि।

तत्थ यानि ताव इमस्मिं आरम्मणमूलके पञ्च घटनानि ठपितानि। तत्थ पठमं आरम्मणाधिपतिवसेन साधिपतिकं। तत्थ **सत्ता** ति आरम्मणाधिपतिदुके लद्धविस्सज्जनानेव। दुतियं निराधिपतिकं। तत्थ **तीणी** ति वत्थारम्मणवसेन आरम्मणवसेनेव वा अब्याकतमूलानि। ततियं निस्सयेन वुत्तं। तत्थ **तीणी** ति वत्थुवसेन अब्याकतमूलानि। **चतुत्थपञ्चमानि** साधिपतिकानि। तेसु चतुत्थे **एकं** ति वत्थारम्मणवसेन आरम्मणवसेनेव वा अब्याकतमूलं अकुसलं। पञ्चमे **एकं** ति निस्सयतो अब्याकतमूलकं अकुसलं। एवमिधा पि लब्भमानवसेन तिकादीसु गणना वेदितब्बा। तथा अधिपतिमूलकादीसु। आरम्मणइन्द्रियविपाकवसेन वित्थारयोजनं पन अवत्वा तत्थ तत्थ वत्तब्बयुत्तकमेव वदामा ति।

३६४. अधिपतिमूलके **सहजाते सत्ता** (प. १.१५६) ति सहजाताधिपतिवसेन कुसलमूलानि तीणि, अकुसलमूलानि तीणि, अब्याकतमूलं एकं। सहजातेन पन सद्धिं आरम्मणाधिपति, आरम्मणाधिपतिना च सद्धिं सहजातं न लब्भति। **अञ्ञमञ्ञे तीणी** ति सहजाताधिपतिवसेनेव। **निस्सये अट्ठा** ति कुसलमूलानि तीणि, अकुसलमूलानि तीणि, अब्याकतमूलानि द्वे। अब्याकतो हि अधिपति

अब्याकतस्स सहजाततो चेव आरम्मणतो च निस्सयो होति, अकुसलस्स आरम्मणतो व। कुसलस्स पन उभयथा पि न होती ति अब्याकतमूलानि द्वे येवा ति एवं अट्ठ। **उपनिस्सये सत्त** आरम्मण-सदिसानेव।

पुरेजाते एकं ति अब्याकताधिपति आरम्मणवसेन अकुसलस्स। **विपाके एकं** अब्याकतेन अब्याकतं लोकुत्तरं। आहारादीसु सत्त हेट्ठा एकमूलके लद्धानेव। **विप्पयुत्ते चत्तारी** ति कुसलेन अब्याकतं, तथा अकुसलेन, अब्याकतेन अब्याकतं च कुसलं च। अत्थि अविगतेसु अट्ठ निस्सयसदिसानेव।

घटनानि पनेत्थ पटिपाटिया आरम्मणादीहि अयोजेत्वा पठमं अत्थिअविगतेहि योजितानि। किं कारणा ति? उभयाधिपति-मिस्सकत्ता। तत्थ पठमे घटने आरम्मणाधिपतिवसेन वत्थारम्मणं लब्भति, दुतिये निस्सयवसेन गरुं कत्वा अस्सादेन्तस्स वत्थुमेव, ततिये B. 456
सहजाताधिपतिवसेन कुसलादयो रूपानं, आरम्मणाधिपतिवसेन वत्थु अकुसलस्स। ततो परानि तीणि घटनानि आरम्मणाधिपतिवसेन वुत्तानि। तत्थ पठमे **सत्ता** ति हेट्ठा वुत्तानेव। दुतिये **एकं** ति पुरे-जातानि वत्थारम्मणानि अकुसलस्स। ततिये वत्थुमेव अकुसलस्स। ततो परानि तीणि घटनानि विपाकाविपाक-साधारणानि सहजाताधि-पतिवसेन वुत्तानि। तत्थ पठमे रूपारूपं लब्भति, दुतिये अरूपमेव, ततिये रूपमेव। ततो परानि तीणि विपाकाधिपतिवसेन वुत्तानि। तेसु पि पठमे रूपारूपं लब्भति, दुतिये अरूपं, ततिये रूपमेव। ततो परानि छ घटनानि आहारिन्द्रिययुत्तानि चित्ताधिपतिवसेन वुत्तानि। तत्थ तीणि अविपाकानि, तीणि सविपाकानि। तेसु गणना पाकटा येव। ततो परानि छ घटनानि तथेव विरियाधिपतिवसेन वुत्तानि।

ननु च अधिपतिपटिपाटिया पठमं विरियाधिपतिवसेन वत्तब्बानि सियुं, कस्मा तथा न वुत्तानी ति? परतो हेतुवसेन वुत्तघटनेहि सदि-सत्ता। परतो हि हेतुवसेन घटनानि अमोहस्स वीमंसाधिपतित्ता

वीमंसाय च सम्मादिट्ठिभावतो मग्गसम्पयुत्तानि । विरियं पि च सम्मावायाममिच्छावायामभावेन मग्गो ति तेन सद्धिं घटनानि परतो हेतुवसेन वुत्तघटनेहि सदिसानी ति परिवत्तेत्वा वुत्तानि । तेसु पि गणना पाकटा येव ।

४०१-२. अनन्तरसमनन्तरमूलकेसु सत्ता (प. १.१५८) ति कुसलो कुसलस्स अब्याकतस्स च, तथा अकुसलो, अब्याकतो तिण्णन्नं पी ति एवं सत्त । कम्मे **एकं** ति कुसला मग्गचेतना अत्तनो विपाकाब्याकतस्स । घटनानि पनेतेसु तीणि तीणि येव । तानि बहुतरपटिपाटिया वुत्तानि ।

सहजातअञ्ञमञ्ञनिस्सयमूलकेसु ये ये दुकमूलके पच्चया वुत्ता, ते ते येव आदितो ठितेन सभागा । तस्मा दुकमूलके गणनं ञत्वा ये उपरि पच्चया घटिता, तेसु ऊनतरगणनस्स वसेन सब्बघटनेसु गणना वेदितब्बा ।

४०४-६. तत्थ सहजातमूलके दस घटनानि । तेसु पञ्च अविपाकानि,
B. 457 पञ्च सविपाकानि । तत्थ अविपाकेसु ताव पठमे कुसलो कुसलस्स अब्याकतस्स, कुसलाब्याकतस्स, कुसलाब्याकतो अब्याकतस्सा ति चत्तारि, तथा अकुसलो, अब्याकतो अब्याकतस्सेवा ति एवं नव । तत्थ कुसलाकुसलादिकेसु अट्ठसु विस्सज्जनेसु अरूपं चेव चित्तसमुट्ठानरूपं च लब्भति । अब्याकते वत्थुरूपं पि । दुतिये घटने अब्याकतविस्सज्जने रूपेसु वत्थुमेव लब्भति, ततिये तीसु पि अरूपमेव, चतुत्थे चित्तसमुट्ठानरूपमेव, पञ्चमे पटिसन्धियं वत्थुना सद्धिं अरूपधम्मा । सविपाकेसु पठमे विपाका चेव विपाकचित्तसमुट्ठानरूपं च, दुतिये विपाका चेव वत्थुरूपं च, ततिये विपाकमेव, चतुत्थे विपाकचित्तसमुट्ठानमेव, पञ्चमे वत्थुरूपमेव लब्भति ।

४०७-८. अञ्ञमञ्ञमूलके छ घटनानि । तेसु पठमानि तीणि अविपाकानि, पच्छिमानि तीणि सविपाकानि । तेसु गणना पाकटायेव ।

४०९. निस्सयमूलके **निस्सयपच्चया आरम्मणे तीणी** (प.१.१५९) ति वत्थुं आरम्मणं कत्वा पवत्तकुसलादिवसेन वेदितब्बानि। **उपनिस्सये एकं** ति वत्थुं आरम्मणूपनिस्सयं कत्वा उप्पन्नाकुसलं। सेसं दुमूलके हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

इमस्मिं पन निस्सयपच्चये वीसति घटनानि। तेसु पुरिमानि छ घटनानि पुरेजातसहजातवसेन वुत्तानि, ततो चत्तारि पुरेजातवसेनेव, ततो दस सहजातवसेनेव। तत्थ पठमे घटने **तेरसा** ति निस्सयपच्चयविभङ्गे वुत्तानेव। दुतिये **अट्ठा** ति सहजाताधिपतिवसेन सत्त, वत्थुं गरुं कत्वा अकुसलं चा ति अट्ठ। ततिये सत्त इन्द्रियपच्चये लद्धानेव। चतुत्थे पञ्च विप्पयुत्ते लद्धानि। पञ्चमे **चत्तारी** ति कुसलादीनि चित्तसमुट्ठानानं, वत्थु च अकुसलस्स।

छट्ठे **तीणी** ति कुसलादीनि चित्तसमुट्ठानस्स। पुरेजातवसेन चतूसु पठमे **तीणी** ति वत्थु कुसलादीनं, चक्खादीनि च अब्याकतस्स। दुतिये वत्थुमेव कुसलादीनं। ततिये **एकं** ति वत्थु अकुसलस्स। चतुत्थे चक्खादीनि विञ्ञाणपञ्चकस्स। सहजातवसेन दस सविपाकाविपाकवसेन द्विधा भिन्दित्वा सहजातमूलके वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि।

४१३. उपनिस्सयमूलके **आरम्मणे सत्त** (प.१.१६०) ति आरम्मणूपनिस्सये लद्धानेव। **अधिपतिया सत्त** ति तानेव। अनन्तरसमनन्तरेसु अनन्तरूपनिस्सये लद्धानेव। **निस्सये एकं** ति वत्थु अकुसलस्स। **पुरेजाते एकं** ति तस्सेव वत्थुं वा आरम्मणं वा। **आसेवने तीणि** अनन्तरूपनिस्सयवसेन। **कम्मे द्वे** पकतूपनिस्सयवसेन। लोकुत्तरकुसलचेतना पन अनन्तरूपनिस्सयो पि होति। **विप्पयुत्ते एकं** आरम्मणूपनिस्सयवसेन, तथा अत्थिअविगतेसु। नत्थिविगतेसु सत्त अनन्तरसमानेव। B. 458

उपनिस्सयमूलकानि पन सत्त घटनानि होन्ति। तत्थ पुरिमानि तीणि आरम्मणूपनिस्सयवसेन वुत्तानि। तत्थ पठमे **सत्ता** ति कुसलो कुसलादीनं, तथा अब्याकतो, अकुसलो अकुसलस्सेवा ति एवं सत्त।

दुतिये **एकं** ति चक्खादिअब्याकतं अकुसलस्स। ततिये वत्थु अकुसलस्स। ततो परानि द्वे अनन्तरूपनिस्सयवसेन वुत्तानि। तेसु गणना पाकटायेव। ततो द्वे अनन्तरपकतूपनिस्सयवसेन वुत्तानि। तत्थ पठमे लोकियकुसलाकुसलचेतनापच्चयभावतो गहेतब्बा, दुतिये लोकुत्तरकुसला व।

४१५. पुरेजातमूलके **आरम्मणे तीणी** (प. १. १६१) ति अब्याकतो कुसलादीनं। **अधिपतिया एकं** ति अब्याकतो अकुसलस्स। सेसेसु पि एसेव नयो। एत्थ पन सत्त घटनानि। तेसु पठमं वत्थारम्मणवसेन वुत्तं, दुतियं वत्थुवसेनेव, ततियं आरम्मणवसेन, चतुत्थं वत्थुस्स आरम्मणकालवसेन, पञ्चमं आरम्मणाधिपतिवसेन, छट्ठं वत्थुनो आरम्मणाधिपतिकालवसेन, सत्तमं चक्खादिवसेन।

४१७. पच्छाजातमूलके वीसति पच्चया न युज्जन्ति, तयो व योजनं लभन्ति। एकमेवेत्थ घटनं, तं कायस्स कुसलादीनं वसेन वेदितब्बं। आसेवनमूलके पि एकमेव घटनं।

४२१. कम्ममूलके **अनन्तरे एकं** (प. १. १६२) ति मग्गचेतनावसेन वुत्तं। **अञ्ञमञ्ञे तीणी** ति एत्थ पटिसन्धियं वत्थु पि गहेतब्बं। **उपनिस्सये द्वे** ति अनन्तरपकतूपनिस्सयवसेन हेट्ठा वुत्तानेव। एवं सेसानि पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि। एत्थ पन एकादस घटनानि। तत्थ पठमानि द्वे पकतूपनिस्सयानन्तरूपनिस्सयविभागतो नानाक्खणिककम्मवसेन वुत्तानि। ततो परानि चत्तारि विपाकाविपाकतो एकक्खणिककम्मवसेन वुत्तानि। तत्थ पठमे अरूपेन सद्धिं चित्तसमुट्ठानरूपं लभति, दुतिये अरूपेन सद्धिं वत्थु, ततिये अरूपमेव, चतुत्थे
B. 459
चित्तसमुट्ठानरूपमेव। पटिसन्धियं पन कटत्तारूपम्पि लभति। ततो परानि पञ्च सविपाकानि, तानि हेट्ठा वुत्तनयानेव।

४२४. विपाकमूलके पञ्च घटनानि उत्तानत्थानेव।

४२७. आहारमूलके **सत्त** (प. १. १६३) ति आदीनि वुत्तनयानेव। घटनानि पनेत्थ चतुत्तिंस। तेसु पठमानि पञ्च विपाकाविपाक-

सामञ्ञतो वुत्तानि । तत्थ पठमे चत्तारो पि आहारा लब्भन्ति; दुतिये तयो अरूपाहारा व । ततिये वत्थु पि पच्चयुप्पन्नं होति, चतुत्थे तं परिहायति । पञ्चमे रूपमेव पच्चयुप्पन्नं । ततो परानि पञ्च सविपाकघटनानि, तानि हेट्ठा वुत्तनयानेव । ततो परानि नव घटनानि चेतनाहारवसेन वुत्तानि । ततो परानि नव निराधिपतिविञ्ञाणाहारवसेन । ततो परानि साधिपतिविञ्ञाणाहारवसेन छ घटनानि वुत्तानि । तत्थ तीणि विपाकाविपाकसामञ्ञवसेन वुत्तानि । तीणि विपाकवसेनेव । तत्थ लोकियानं विपाकानं अभावतो वत्थु परिहायति ।

४३१. इन्द्रियमूलके **पुरेजाते एकं** (प. १. १६५) ति चक्खुन्द्रियादीनं वसेन अब्याकतेन अब्याकतं । सेसं दुमूलकं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । घटनानि पनेत्थ छ सत्तति । तत्थ पठमे सब्बानि पि इन्द्रियानि पच्चयट्ठेन लब्भन्ति । दुतिये रूपजीवितिन्द्रियं हायति । न हि तं निस्सयो होति । ततिये अरूपिन्द्रियानि रूपानं । चतुत्थे चक्खादीनि चक्खुविञ्ञाणादीनं । ततो परानि नव घटनानि सहजातअरूपिन्द्रियवसेन वुत्तानि, ततो नव मग्गभूतानं इन्द्रियानं वसेन, ततो नव झानङ्गभूतानं, ततो नव झानमग्गभूतानं, ततो नव मनिन्द्रियवसेनेव, ततो साधिपतीनि छ, ततो विरियवसेन मग्गसम्पयुत्तानि छ, ततो अमोहहेतुवसेन निराधिपतीनि नव, साधिपतीनि छ । तेसु सब्बेसु विपाकपच्चयेन अयुत्तानि च युत्तानि च हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि ।

४४४. झानमूलके पि दुमूलकं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । घटनानि पनेत्थ छत्तिंस । तेसु पठमानि नव इन्द्रियमग्गभावं अनामसित्वा साधारणझानङ्गवसेनेव वुत्तानि । ततो परानि नव इन्द्रिय- B. 460
भूतझानङ्गवसेन, ततो नव मग्गभूतझानङ्गवसेन, ततो नव इन्द्रियमग्गभूतझानङ्गवसेन । चतूसु पि च एतेसु नवकेसु आदितो चत्तारि चत्तारि विपाकाविपाकसाधारणानि । अवसाने पञ्च पञ्च विपाकानेव, तानि हेट्ठा वुत्तनयानेव ।

४४६. मग्गमूलके पि दुमूलकं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। घटनानि पनेत्थ सत्तपञ्ञास। तेसु पठमानि नव इन्द्रियझानभावं अनामसित्वा सुद्धिकमग्गवसेनेव वुत्तानि। ततो नव इन्द्रियभूतमग्गवसेन, ततो नव झानभूतमग्गवसेन, ततो नव इन्द्रियझानभूतमग्गवसेन, ततो छ अधिपतिभूतमग्गवसेन, ततो नव निराधिपतिमग्गहेतुवसेन, ततो छ साधिपतिमग्गहेतुवसेन, तत्थ नवकेसु पञ्च पञ्च छक्केसु तीणि तीणि विपाकानि। सेसानि साधारणानि, तानि हेट्ठा वुत्तनयानेव।

सम्पयुत्तमूलके दुमूलकं उत्तानत्थमेव। एत्थ पन द्वे येव घटनानि। तत्थ एकं साधारणवसेन, एकं विपाकवसेन वुत्तं।

४५६. विप्पयुत्तमूलके पि दुमूलकं उत्तानत्थमेव। घटनानि पनेत्थ तेरस। तत्थ पठमे **पञ्चा** ति कुसलो अब्याकतस्स, तथा अकुसलो, अब्याकतो तिण्णन्नं पि। एत्थ च इमे विप्पयुत्तादयो सहजाता पि होन्ति, पच्छाजातपुरेजाता पि। दुतिये पुरेजातसहजाता व, ततिये ते येव अधिपतिवसेन। तत्थ कुसलो अब्याकतस्स तथा अकुसलो, अब्याकतो पन अब्याकतस्स च आरम्मणाधिपतिवसेन अकुसलस्स चा ति एवं चत्तारि। चतुत्थे **तीणी** ति कुसलादीनि अब्याकतस्स। इन्द्रियानि पनेत्थ रूपानि पि अरूपानि पि। पञ्चमे पच्चया अरूपा व, छट्ठे वत्थुवसेन रूपा व, सत्तमे कुसलाब्याकतानं विपस्सनावसेन, अकुसलस्स अस्सादनवसेन वत्थुमेव। अट्ठमे तदेवाकुसलस्स, नवमे चक्खादीनि अब्याकतस्स, दसमे कुसलादयो चित्तसमुट्ठानानं, एकादसमे पटिसन्धियं वत्थु खन्धानं, द्वादसमे पटिसन्धियं खन्धा कटत्तारूपानं, तेरसमे पटिसन्धियं खन्धा वत्थुस्स।

B. 461 ४६३. अत्थिपच्चयमूलके **उपनिस्सये एकं** ति आरम्मणूपनिस्सयवसेन अब्याकतं अकुसलस्स। सेसं दुमूलके उत्तानमेव। घटनानि पनेत्थ एकूनतिंस। तेसु पठमे अरूपवत्थारम्मणमहाभूतइन्द्रियाहारानं वसेन सहजातपुरेजातपच्छाजातपच्चया लब्भन्ति। दुतिये पच्छाजातकबळीकाराहारा न लब्भन्ति। पठमदुतियघटनानेव अधिपतिना

सद्धिं उपरि ततियचतुत्थानि कतानि। पुन पठममेव चतूहि आहारेहि सद्धिं पञ्चमं, रूपिन्द्रियेहि सद्धिं छट्ठं, रूपारूपिन्द्रियेहि सद्धिं सत्तमं कतं। दुतियमेव वा पन इन्द्रियेहि सद्धिं सत्तमं कतं। पठमदुतियानेव विप्पयुत्तपच्चयेन सद्धिं अट्ठमनवमानि। तेसु नवमं अधिपतिना सद्धिं दसमं कतं। ततो एकादसमे पच्चयवसेन वत्थु हायति। द्वादसमे अरूपधम्मा येव पच्चया, तेरसमे वत्थारम्मणा, चुद्दसमे वत्थुमेव, पन्नरसमे आरम्मणमेव, सोळसमे वत्थुमेव आरम्मणं, सत्तरसमे पन तदेव आरम्मणाधिपतिभावेन, अट्ठारसमे पि तदेवारम्मणूपनिस्सयवसेन, एकूनवीसतिमे चक्खादयो व पच्चया। इमानि एकूनवीसति पकिण्णकघटनानि नाम सहजातं अग्गहेत्वा वुत्तानि। ततो परानि दस सहजातवसेन वुत्तानि।

४६७-७०. नत्थिविगतमूलकेसु अनन्तरसमनन्तरमूलकेसु विय उपनिस्सयासेवनकम्मवसेन तीणि येव घटनानि, अविगतमूलकं अत्थिमूलकसदिसमेवा ति।

यानि पनेतानि इमस्मिं पञ्हावारे घटनानि वुत्तानि, तानि सब्बानि पि दुविधानियेव—पकिण्णकतो सहजाततो च। तत्थ सब्बेसं पि आरम्मणमूलकादीनं आदितो सहजातं अग्गहेत्वा वुत्तानि **पकिण्णकानि** नाम। तानि आरम्मणमूलके पञ्च पि, अधिपतिमूलके छ, अनन्तरमूलके तीणि पि, तथा समनन्तरमूलके, निस्सयमूलके दस, उपनिस्सयमूलके सत्त, पुरेजातमूलके सत्त, पच्छाजातमूलके एकमेव, तथा आसेवनमूलके, कम्ममूलके द्वे, आहारमूलके एकं, इन्द्रियमूलके चत्तारि, विप्पयुत्तमूलके नव, अत्थिमूलके एकूनवीसती, नत्थिमूलके तीणि, पि, तथाविगतमूलके। अविगतमूलके एकूनवीसती ति सब्बानि पि सतञ्चेव तीणि च होन्ति। सहजातनिस्सयभावेन पनेतानि पकिण्णकानी ति वुत्तानि।

B. 462 यानि पन सहजातं लब्भन्ति, तानि **सहजातघटनानि** नामा ति वुच्चन्ति। तानि आरम्मणमूलके अनन्तरसमनन्तर -उपनिस्सय[1]-पुरेजातपच्छाजातआसेवननत्थिविगतमूलकेसु न लब्भन्ति। न हि ते पच्चया सहजातानं पच्चया होन्ति। यथा च सहजातानं न होन्ति, तथा हेतुसहजातअञ्ञमञ्ञविपाकझानमग्गसम्पयुत्तपच्चया[2]। असहजातानं ति हेतुमूलके सब्बानि चतुवीसति पि घटनानि सहजातघटनानेव। तथा अधिपतिमूलके चतुवीसति, सहजातमूलके दस पि, अञ्ञमञ्ञमूलके छ पि, निस्सयमूलके दस, कम्ममूलके नव, विपाकमूलके पञ्च पि, आहारमूलके तेत्तिस, इन्द्रियमूलके द्वासत्तति झानमूलके छत्तिंसा पि, मग्गमूलके सत्तपञ्ञासं पि, सम्पयुत्तमूलके द्वे पि, विप्पयुत्तमूलके चत्तारि, अत्थिमूलके दस, अविगतमूलके दसा ति सब्बानि पि तीणि सतानि द्वादस च होन्ति। इति पुरिमानि सतं तीणि च इमानि च द्वादसुत्तरानि तीणि सतानी ति सब्बानि पि पञ्चदसाधिकानि चत्तारि घटनसतानि पञ्हावारे आगतानि।

तेसु ये ये पच्चयधम्मा नामवसेन न पाकटा हुत्वा पञ्ञायन्ति, ते पि हेतुमूलकादीनं नयानं आदितो विपाकाविपाकसामञ्ञतो वुत्तेसु घटनेसु दस्सेतब्बा। द्वादसेव हि हेतू छ आरम्मणा चत्तारो अधिपतयो चत्तारो आहारा बीसति इन्द्रियानि सत्त झानङ्गानि द्वादस मग्गङ्गानी ति एते पच्चयधम्मा नाम। तेसु ये ये धम्मा एकन्तेन कुसला, एकन्तेनेव अकुसला, एकन्तेन कुसलविपाका, एकन्तेनेवाकुसलविपाका, एकन्तेनेव विपाका, एकन्तेनेव अविपाका ते ते साधुकं सल्लक्खेत्वा ये तत्थ विपाका, ते विपाकघटनेसु, ये अविपाका, ते अविपाकघटनेसु यथायोगं योजेतब्बा ति।

आरम्मणादिमूलकनया निट्ठिता

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

---

१. म. पोत्थके नत्थि।

२. ० पच्चयानं सी.।

२. पच्चयपच्चनीयवण्णना

(१) सङ्ख्यावारवण्णना

४७५. इदानि पच्चनीयं होति। तत्थ यथा पटिच्च वारादीसु "अकुसलं धम्मं पटिच्च अकुसलो धम्मो उप्पज्जति नहेतुपच्चया" ति आदिना नयेन लब्भमाना पञ्हा लब्भमानानं पच्चयानं वसेन सरूपतो व वित्थारिता। B. 463 एवं अवित्थारेत्वा एकेन लक्खणेन सङ्खेपतो पच्चनीयं दस्सेतुं धम्मसङ्गाहकेहि **कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स आरम्मण-पच्चयेन पच्चयो** (प. १. १७७) ति आदिना नयेन अनुलोमतो कुसलादीनं पच्चया उद्धटा। ते च खो पच्चया समूहवसेन, नो एकेकपच्चयवसेनेव; तस्मा ये यत्थ समूहतो दस्सिता, विभजित्वा वेदितब्बा।

सब्बे पि हि इमे चतुवीसति पच्चया अट्ठसु पच्चयेसु सङ्गहं गच्छन्ति। कतरेसु अट्ठसु? आरम्मणे, सहजाते, उपनिस्सये, पुरेजाते, पच्छाजाते, कम्मे, आहारे, इन्द्रिये ति।

कथं? ठपेत्वा हि इमे अट्ठ पच्चये सेसेसु सोळससु हेतुपच्चयो अञ्ञमञ्ञ-विपाक-झान-मग्ग-सम्पयुत्तपच्चयो ति इमे छ पच्चया एकन्तेन सहजाता हुत्वा सहजातानञ्ञेव पच्चयभावतो सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छन्ति।

अनन्तरपच्चयो समनन्तर-आसेवन-नत्थि-विगतपच्चयो ति इमे पन पञ्च उप्पज्जित्वा निरुद्धा अत्तनो अनन्तरं उप्पज्जमानानञ्ञेव पच्चयभावतो अनन्तरूपनिस्सयलक्खणेन उपनिस्सये सङ्गहं गच्छन्ति।

निस्सयपच्चयो सहजातपुरेजातभेदतो दुविधो। तत्थ सहजात-निस्सयो सहजातानञ्ञेव निस्सयपच्चयभावतो सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छति, पुरेजातनिस्सयो पुरेजातपच्चये सङ्गहं गच्छति।

अधिपतिपच्चयो पि सहजाताधिपति आरम्मणाधिपतिवसेन दुविधो। तत्थ सहजाताधिपति सहजातानं येव अधिपतिपच्चयभावतो

सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छति । आरम्मणाधिपति आरम्मणूपनिस्सयो होति ये वा ति आरम्मणूपनिस्सयलक्खणेन उपनिस्सयपच्चये सङ्गहं गच्छति ।

विप्पयुत्तपच्चयो सहजातपुरेजातपच्छाजातभेदतो तिविधो । तत्थ सहजात-विप्पयुत्तो सहजातानञ्ञेव विप्पयुत्तपच्चयभावतो सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छति । पुरेजातविप्पयुत्तो पुरे उप्पज्जित्वा पच्छा उप्पज्जमानानं पच्चयभावतो पुरेजाते सङ्गहितो । पच्छाजातविप्पयुत्तो पच्छा उप्पज्जित्वा पुरे उप्पन्नानं उपत्थम्भनवसेन पच्चयभावतो पच्छाजातपच्चये सङ्गहं गच्छति ।

अत्थिपच्चय-अविगतपच्चया सहजातपुरेजातपच्छाजातआहारिन्द्रियानं चेव अत्थि अविगतेसु च एकेकस्स वसेन छहि भेदेहि ठिता । तत्थ सहजातअत्थिअविगता सहजातानञ्ञेव अत्थिअविगतपच्चय-
B. 464 भावतो । सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छन्ति । पुरेजाता पुरे उप्पज्जित्वा पच्छा उप्पज्जमानानं पच्चयभावतो पुरेजातपच्चये सङ्गहं गच्छन्ति । पच्छा जाता पच्छा उप्पज्जित्वा पुरे उप्पन्नानं उपत्थम्भनवसेन पच्चयभावतो पच्छाजातपच्चये सङ्गहं गच्छन्ति ।

आहारभूता कबळीकाराहारपच्चये सङ्गहं गच्छन्ति । इन्द्रियभूता रूपजीवितिन्द्रियपच्चये सङ्गहं गच्छन्ती ति एवं इमे सोळसपच्चया इमेसु अट्ठसु पच्चयेसु सङ्गहं गच्छन्ती ति वेदितब्बा ।

इमेसं पि पन अट्ठन्नं पच्चयानं अञ्ञमञ्ञं सङ्गहो अत्थि येव । आदितो निद्दिट्ठो हि आरम्मणपच्चयो अधिपति-अनधिपतिभेदेन दुविधो । तत्थ अधिपतिभूतो आरम्मणूपनिस्सयलक्खणेन उपनिस्सये सङ्गहं गच्छति । अनधिपतिभूतो सुद्धो आरम्मणपच्चयो व ।

कम्मपच्चयो पि सहजातनानाक्खणिकवसेन दुविधो । तत्थ सहजातकम्मं अत्तना सहजातानञ्ञेव कम्मपच्चयभावतो सहजाते येव सङ्गहं गच्छति । नानाक्खणिककम्मं बलवदुब्बलवसेन दुविधं । तत्थ बलवकम्मं विपाकधम्मानं उपनिस्सयो व हुत्वा पच्चयो होती ति

उपनिस्सये सङ्गहं गच्छति । बलवं पि पन रूपानं दुब्बलं च अरूपानं नानाक्खणिककम्मपच्चयेनेव पच्चयो ।

आहारपच्चयो पि रूपारूपतो दुविधो । तत्थ अरूपाहारो अत्तना सहजातानञ्ञेव पच्चयो होती ति सहजातपच्चये सङ्गहं गच्छति । रूपाहारो सहजातपुरेजातपच्छाजातानं पच्चयो न होति । अत्तनो पन उप्पादक्खणं अतिक्कमित्वा ठितिप्पत्तो आहारपच्चयतं साधेती ति आहारपच्चयो व होति ।

इन्द्रियपच्चयो पि रूपारूपतो दुविधो । तत्थ अरूपिन्द्रियपच्चयो अत्तना सहजातानञ्ञेव इन्द्रियपच्चयतं साधेती ति सहजाते येव सङ्गहं गच्छति । रूपिन्द्रियपच्चयो पन अज्झत्तबहिद्धाभेदतो दुविधो । तत्थ अज्झत्तं इन्द्रियपच्चयो पुरे उप्पज्जित्वा पच्छा उप्पज्जमानानं ससम्पयुत्तधम्मानं चक्खुविञ्ञाणादीनं इन्द्रियपच्चयो होती ति पुरेजाते येव सङ्गहं गच्छति । बाहिरो इन्द्रियपच्चयो नाम रूपजीवितिन्द्रियं, तं सहजातानं पच्चयो होन्तं पि अनुपालनमत्तवसेनेव होति, न जनकवसेना ति इन्द्रियपच्चयो व होति ।

एवं इमे अट्ठ पच्चया अञ्ञमञ्ञं पि सङ्गहं गच्छन्ती ति वेदितब्बा । अयं ताव अट्ठसु पच्चयेसु अवसेसानं सोळसन्नं चेव तेसं येव च अट्ठन्नं अञ्ञमञ्ञवसेन सङ्गहनयो ।

इदानि इमेसं अट्ठन्नं पच्चयानं एकेकस्मिं चतुवीसतिया पि पच्चयेसु B. 465
ये ये सङ्गहं गच्छन्ति, ते ते वेदितब्बा । तत्थ अट्ठन्नं ताव सब्बपठमे आरम्मणपच्चये आरम्मणपच्चयो व सङ्गहं गच्छति, न सेसा तेवीसति ।

दुतिये सहजातपच्चये हेतुपच्चयो सहजाताधिपतिपच्चयो सहजातपच्चयो अञ्ञमञ्ञपच्चयो सहजातनिस्सयपच्चयो सहजातकम्मपच्चयो विपाकपच्चयो सहजातआहारपच्चयो सहजातइन्द्रियपच्चयो झानपच्चयो मग्गपच्चयो सम्पयुत्तपच्चयो सहजातविप्पयुत्तपच्चयो सहजातत्थिपच्चयो सहजाताविगतपच्चयो ति इमे पन्नरस पच्चया सङ्गहं गच्छन्ति ।

ततिये उपनिस्सयपच्चये अधिपतिभूतो आरम्मणपच्चयो आरम्मणभूतो अधिपतिपच्चयो अनन्तर-समनन्तर-उपनिस्सय-आसेवन-पच्चया नानाक्खणिको बलवकम्मपच्चयो नत्थिपच्चयो विगतपच्चयो ति इमे नव पच्चया सङ्गहं गच्छन्ति ।

चतुत्थे पुरेजातपच्चये पुरेजातनिस्सयपच्चयो पुरेजातपच्चयो पुरेजातिन्द्रियपच्चयो पुरेजातविप्पयुत्तपच्चयो पुरेजातत्थिपच्चयो परेजाताविगतपच्चयो ति इमे छ पच्चया सङ्गहं गच्छन्ति ।

पञ्चमे पच्छाजातपच्चये पच्छाजातपच्चयो पच्छाजातविप्पयुत्त-पच्चयो पच्छाजातत्थिपच्चयो पच्छाजाताविगतपच्चयो ति इमे चत्तारो पच्चया सङ्गहं गच्छन्ति ।

छट्ठे कम्मपच्चये नानाक्खणिककम्मपच्चयो व सङ्गहितो ।

सत्तमे आहारपच्चये कबळीकाराहारवसेनेव आहारपच्चयो आहारत्थिपच्चयो आहाराविगतपच्चयो ति इमे तयो पच्चया सङ्गहिता ।

अट्ठमे इन्द्रियपच्चये रूपजीवितिन्द्रियपच्चयो इन्द्रियत्थिपच्चयो इन्द्रियाविगतपच्चयो ति इमे तयो पच्चया सङ्गहं गच्छन्ति ।

एवं इमेसं अट्ठन्नं पच्चयानं एकेकस्मिं इमे चिमे च पच्चया सङ्गहं गता ति ञत्वा ये यत्थ सङ्गहं गता, ते तस्स गणनेन गहिता व होन्ती ति वेदितब्बा ।

एवं सब्बपच्चयसङ्गाहकानं इमेसं अट्ठन्नं पच्चयानं वसेन एकून-पञ्ञासाय पञ्हेसु इमस्मिं पच्चनीये "कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति आदयो इमे पन्नरस पञ्हा उद्धरित्वा विस्सज्जिता । तत्थ कुसलो कुसलस्स, कुसलो अकुसलस्स, कुसलो अब्याकतस्स, कुसलो कुसलाब्याकतस्सा ति कुसलादिका चत्तारो
B. 466 पञ्हा; तथा अकुसलादिका; अब्याकतो पन अब्याकतस्स, अब्याकतो कुसलस्स, अब्याकतो अकुसलस्सा ति अब्याकतादिका तयो; कुसलो च अब्याकतो च कुसलस्स; तथा अब्याकतस्स; अकुसलो च अब्याकतो च

अकुसलस्स; तथा अब्याकतस्सा ति दुमूलकेकावसाना चत्तारो होन्ति। तेसु पठमे पञ्हे ये हि भवितब्बं, ते सब्बे सङ्गहेत्वा तयो पच्चया वुत्ता। दुतिये द्वे, ततिये पञ्च, चतुत्थे एको व, पञ्चमे तयो, छट्ठे द्वे, सत्तमे पञ्च, अट्ठमे एको व, नवमे सत्त, दसमे तयो, एकादसमे तयो, द्वादसमे द्वे, तेरसमे चत्तारो, चुद्दसमे द्वे, पन्नरसमे पि चत्तारो व। ते "सहजातपच्चयेना" ति अवत्वा "सहजातं पच्छाजातं" ति वुत्ता। तत्थ कारणं परतो वक्खाम[1]।

समासतो पनेत्थ एको द्वे तयो चत्तारो पञ्च सत्ता ति छळेव पच्चयपरिच्छेदा होन्ति। अयं पञ्हावारस्स पच्चनीये उक्कट्ठवसेन पञ्हापरिच्छेदो चेव ते ते पच्चये सङ्गहेत्वा दस्सितपच्चयपरिच्छेदो च। "नहेतुपच्चयो" ति आदीसु हि चतुवीसतिया पि पच्चयपच्चनीयेसु एकपच्चनीये पि इतो उद्धं पञ्हा वा पच्चया वा न लब्भन्ति, हेट्ठा लब्भन्ति। तस्मा येसु पञ्हेसु "कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स च धम्मस्स सहजातपच्चयेन पच्चयो" ति एवं एको व पच्चयो आगतो, तस्मिं पच्चये पटिक्खित्ते ते पञ्हा परिहायन्ति। यस्मिं पन पञ्हे "कुसलो धम्मो अकुसलस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति एवं द्वे पच्चया आगता।

तत्थ नारम्मणपच्चया ति एवं एकस्मिं पच्चये पटिक्खित्ते पि इतरस्स पच्चयस्स वसेन सो पञ्हो लब्भतेव। तेसु पन द्वीसु पि पच्चयेसु पटिक्खित्तेसु सो वारो पच्छिज्जति। एवमेव येसु पञ्हेसु तयो चत्तारो पञ्च सत्त वा लब्भन्ति, तेसु ठपेत्वा पटिक्खित्ते पच्चये अवसेसानं वसेन ते पञ्हा लब्भन्ति येव। सब्बेसु पन पच्चयेसु पटिक्खित्तेसु सब्बे पि ते वारा पच्छिज्जन्ती ति इदमेव चेत्थ लक्खणं। इमिना लक्खणेन आदितो पट्ठाय तेसु तेसु पञ्हेसु सङ्खिपित्वा वुत्तपच्चयानं पभेदो च तस्मिं तस्मिं पच्चनीये तेसं तेसं पञ्हानं परिहानि च वेदितब्बा।

१. वण्णयिस्साम स्या.।

B. 467 तत्रायं वित्थारकथा—पठमपञ्हे ताव तीहि पच्चयेहि एकूनवीसति पच्चया दस्सिता। कथं? कुसलो हि कुसलस्स पुरेजातपच्छाजात-विपाकविप्पयुत्तेहेव पच्चयो न होति, सेसेहि वीसतिया होति, तेसु आरम्मणपच्चयो एको व, सहजाते पन सब्बसङ्गाहिकवसेन पन्नरस पच्चया सङ्गहं गच्छन्ती ति वुत्ता। तेसु हेतुपच्चये पटिक्खित्ते चुद्दस होन्ति। कुसलो पन कुसलस्स नेव विपाकपच्चयो न, विप्पयुत्तपच्चयो ति ते द्वे अपनेत्वा सेसे द्वादस सन्धाय सहजातपच्चयेन पच्चयो ति वुत्तं। उप-निस्सयपच्चये पि सब्बसङ्गाहिकवसेन नव पच्चया सङ्गहं गच्छन्ती ति वुत्ता। तेसु अधिपतिभूतो आरम्मणपच्चयो आरम्मणभूतो च अधिपति-पच्चयो आरम्मणूपनिस्सयवसेन उपनिस्सयमेव अनुपविट्ठो। कुसलो पन कुसलस्स नानाक्खणिककम्मपच्चयो न होती ति तं अपनेत्वा सेसे छ सन्धाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो ति वुत्तं।

एवं पठमपञ्हे तीहि पच्चयेहि एकूनवीसतिपच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा। तेसु इमस्मिं हेतुपच्चनीये "कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स नहेतुपच्चयेन पच्चयो ति दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा तं पच्चवेक्खति, पुब्बे सुचिण्णानि पच्चवेक्खती" ति एवमादिना आरम्मणपच्चयादीसु वुत्तनयेनेव उद्धरित्वा पाळि दस्सेतब्बा। आरम्मण-पच्चये पन पटिक्खित्ते तस्स वित्थारं अपनेत्वा हेतुपच्चयवित्थारं पक्खि-पित्वा सा येव पाळि दस्सेतब्बा, सेसपच्चयपटिक्खेपेसु पि एसेव नयो। तस्मिं पन पच्चये पटिक्खित्ते ये वारा परिहायन्ति, ते परतो वक्खाम[1]।

दुतिये पञ्हे पन द्वीहि पच्चयेहि तयो पच्चया दस्सिता। कथं? कुसलो हि अकुसलस्स अनन्तरादिवसेन पच्चयो न होति। तस्मा ते अपनेत्वा आरम्मणूपनिस्सयवसेन सङ्गहितं आरम्मणाधिपतिं चेव पक-तूपनिस्सयं च सन्धाय उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो ति वुत्तं। तस्मा सुद्धो आरम्मणपच्चयो आरम्मणाधिपतिवसेन अधिपतिपच्चयो उपनिस्सयपच्चयो ति दुतियपञ्हे द्वीहि पच्चयेहि इमे तयो पच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा।

१. वण्णयिस्साम स्या.।

तततियपञ्हे पन पञ्चहि पच्चयेहि अट्ठारस पच्चया दस्सिता । कथं ? कुसलो हि अब्याकतस्स अञ्ञमञ्ञपुरेजातासेवनविपाकसम्पयुत्तेहि येव पच्चयो न होति, सेसेहि एकूनवीसतिया होति । तेसु आरम्मणपच्चयो एको । यस्मा पन कुसलो अब्याकतस्स अञ्ञमञ्ञविपाकसम्पयुत्तवसेन पच्चयो न होति, हेतुपच्चयो पटिक्खित्तो, कम्मपच्चयो विसुं गहितो, तस्मा इमे पञ्च अपनेत्वा सहजातेन दस पच्चया दस्सिता । उपनिस्सयेन हेट्ठा वुत्तेसु छसु ठपेत्वा आसेवनं सेसा पञ्च । पच्छाजातो एको व, तथा सहजातनानाक्खणिकवसेन दुविधो पि कम्मपच्चयो ति एवं ततियपञ्हे पञ्चहि पच्चयेहि इमे अट्ठारस पच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा । B. 468

चतुत्थपञ्हे पन एकेन पच्चयेन दस । कथं ? कुसलो हि कुसलाब्याकतस्स सहजाते वुत्तेसु पन्नरससु अञ्ञमञ्ञविपाकसम्पयुत्तविप्पयुत्तेहि पच्चयो न होति, हेतुपच्चयो पटिक्खित्तो । इति इमे पञ्च अपनेत्वा सेसा दस पच्चया एत्थ एकेन पच्चयेन दस्सिता ति वेदितब्बा ।

यथा च इमेसु कुसलादिकेसु चतूसु, तथा अकुसलादिकेसु पि चतूसु पञ्हेसु तेहि तेहि पच्चयेहि ते ते येव पच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा ।

ततो परानं अब्याकतादीनं तिण्णं पञ्हानं पठमपञ्हे सत्तहि पच्चयेहि तेवीसति पच्चया दस्सिता । कथं ? अब्याकतो हि अब्याकतस्स चतुवीसतिया पि पच्चयेहि पच्चयो होति । हेतुपच्चये पन पटिक्खित्ते तेवीसति होन्ति । तेसु आरम्मणपच्चयो एको व । यस्मा पनेत्थ असहजातानं पि सङ्गहणत्थं आहारिन्द्रियपच्चया विसुं गहिता । तस्मा इमे तयो अपनेत्वा सहजातेन द्वादस पच्चया दस्सिता ।

उपनिस्सयेन हेट्ठा वुत्ता छ, पुरेजातो एको व, तथा पच्छाजातआहारिन्द्रियपच्चया ति एवमेत्थ सत्तहि पच्चयेहि इमे तेवीसति पच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा ।

दुतिये तीहि पच्चयेहि द्वादस दस्सिता। कथं ? आरम्मणपच्चयो एको, उपनिस्सयेन पन आरम्मणूपनिस्सयवसेन आरम्मणाधिपतिअन-
B. 469 न्तरसमनन्तरनत्थिविगतउपनिस्सयपच्चयो ति छ दस्सिता। पुरेजातेन पुरेजातनिस्सयविप्पयुत्तअत्थिअविगता पञ्च ति एवमेत्थ तीहि पच्चयेहि इमे द्वादस पच्चया दस्सिता ति वेदितब्बा। ततिये पि एसेव नयो।

ततो परानं दुकमूलकानं चतुन्नं पञ्हानं पठमपञ्हे "सहजातपच्चयेन पुरेजातपच्चयेना" ति अवत्वा "सहजातं पुरेजातं" ति वुत्तेहि द्वीहि निस्सयअत्थिअविगतवसेन तयो पच्चया दस्सिता। कुसला हि खन्धा वत्थुना सद्धिं एकतो कुसलस्स पच्चयभावं साधयमाना किञ्चा पि सहजाता, सहजातपच्चया पन न होन्ति वत्थुमिस्सकत्ता। तस्मा तेसं सहजातानं निस्सयअत्थि-अविगतानं वसेन सहजातं ति वुत्तं। वत्थुम्हि पि एसेव नयो। तं पि हि किञ्चा पि पुरेजातं, खन्धमिस्सकत्ता पन पुरेजातपच्चयो न होति। केवलं पुरेजातानं निस्सयादीनं वसेन पुरेजातं ति वुत्तं।

दुतियपञ्हे "सहजातं पच्छाजातं आहारं इन्द्रियं" ति वुत्तेहि चतूहि पि सहजातनिस्सयअत्थिअविगतवसेन चत्तारो पच्चया दस्सिता। इमस्मिं हि वारे सहजातपच्चयो लब्भति, पच्छाजातपच्चयादयो न लब्भन्ति। पच्छाजातानं पन आहारिन्द्रियसङ्खातानं च अत्थिअविगतानं वसेनेतं वुत्तं।

कुसला हि खन्धा अब्याकता च महाभूता उपादारूपानं सहजात-पच्चयेन निस्सयपच्चयेन अत्थिअविगतपच्चयेही ति चतुधा पच्चया होन्ति। पच्छाजाता पन कुसला तेहि येव भूतेहि सद्धिं तेसञ्ञेव उपादारूपानं अत्थिअविगतवसेन पच्चयो। कबळीकाराहारो पि पच्छाजातेहि कुसलेहि सद्धिं पुरेजातस्स कायस्स अत्थिअविगतवसेनेव पच्चयो। रूपजीवितिन्द्रियं पि पच्छाजातेहि कुसलेहि सद्धिं कटत्तारूपानं अत्थिअविगतपच्चयेनेव पच्चयो। इति इमं चतुधा पच्चयभावं सन्धाय

“सहजातं पच्छाजातं, आहारं इन्द्रियं” ति इदं वुत्तं। पच्छाजाताहारिन्द्रियपच्चया पनेत्थ न लब्भन्ति येव। परतो अकुसलमिस्सकपञ्हाद्वये पि एसेव नयो ति। एवमेत्थ तेसु तेसु पञ्हेसु सङ्खिपित्वा वुत्तपच्चयानं पभेदो वेदितब्बो। तस्मिं तस्मिं पन पच्चये तेसं तेसं पञ्हानं परिहानापरिहानिं परतो आविकरिस्सामा ति।

सङ्ख्यावारवण्णना निट्ठिता

३. पच्चनीयगणनवण्णना

नहेतुमूलकनयो

४८०. इदानि एते “कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्सा” ति B. 470 आदयो अनुलोमवसेन पन्नरस वारा दस्सिता। यस्मा पच्चनीये पि एते येव, न इतो उद्धं; हेट्ठा पन होन्ति, तस्मा यस्स यस्स पच्चयस्स पच्चनीये ये ये वारा लब्भन्ति, ते ते आदितो पट्ठाय गणनवसेन दस्सेतुं **नहेतुया पन्नरसा** (प. १.१७८) ति आदि आरद्धं।

तत्थ **नहेतुया** सब्बेसं पि यथादस्सितानं पच्चयानं वसेन पन्नरस लब्भन्ति। **नारम्मणे** सहजाते हेतुपच्चयो पविसति। तस्मिं तस्मिं वारे सुद्धो आरम्मणपच्चयो परिहायति, सेसपच्चयवसेन ते वारा विस्सज्जनं लभन्ति। यथा च नारम्मणे, एवं सेसेसु पि। सहजाते हेतुपच्चयो पविसति। तस्मिं तस्मिं च वारे नउपनिस्सये नअनन्तरे ति एवं पच्चनीयतो ठिता पच्चया परिहायन्ति, अवसेसपच्चयवसेन ते ते वारा विस्सज्जनं लभन्ति।

नसहजाते पन “कुसलो धम्मो कुसलस्स च अब्याकतस्स च, अकुसलो धम्मो अकुसलस्स च अब्याकतस्स च, कुसलो च अब्याकतो च धम्मा कुसलस्स, अकुसलो च अब्याकतो च धम्मा अकुसलस्सा” ति इमे चत्तारो वारा परिहायन्ति। एतेसं हि चतुन्नं पुरिमेसु द्वीसु सहजातपच्चयेन पच्चयो ति एकादसन्नं पच्चयानं वसेन एको व पच्चयसङ्गहो वुत्तो। ते तस्मिं पटिक्खित्ते अञ्ञेनाकारेन विस्सज्जनं न लभन्ति।

पच्छिमेसु द्वीसु निस्सयअत्थिअविगतपच्चये सन्धाय "सहजातं पुरेजातं" ति वुत्तं । ते सहजाते पटिक्खित्ते अवसेसानं हेतुआदीनं च पुरेजातानं चेव निस्सयअत्थिअविगतानं वसेन विस्सज्जनं न लभन्ति, तस्मा इमे चत्तारो पि वारा परिहायन्ति । अवसेसानं वसेन "एकादसा" ति वुत्तं ।

तत्थ सिया—यथा हेतुम्हि पटिक्खित्ते सेसानं अधिपतिआदीनं वसेन ते वारा लद्धा, एवं सहजाते पटिक्खित्ते अवसेसानं हेतुआदीनं वसेन कस्मा न लब्भन्ती ति ? निप्पदेसत्ता । हेतुआदयो हि सहजातानं एकदेसमत्ततो सप्पदेसा, तस्मा तेसु पटिक्खित्तेसु अञ्ञेसं वसेन ते वारा लब्भन्ति । सहजातो पन निप्पदेसो सब्बे पि हेतुआदयो गण्हाति, तस्मा तस्मिं पटिक्खित्ते सब्बे पि ते पटिक्खित्ता होन्ति । न
B. 471 हि असहजाता हेतुपच्चयादयो नाम अत्थि । इति सहजातस्स निप्पदेसत्ता तस्मिं पटिक्खित्ते सब्बे पि ते उभो पि वारा न लब्भन्ति ।

"सहजातं पुरेजातं" ति विस्सज्जितवारेसु पन किञ्चा पि सहजातपच्चयो येव नत्थि, यस्मा पनेत्थ सहजाता व अरूपक्खन्धा निस्सयअत्थिअविगतवसेन पच्चया, सहजाते च पटिक्खित्ते एकन्तेन सहजातनिस्सयअत्थिअविगता पटिक्खित्ता होन्ति, तस्मा तस्स पटिक्खित्तत्ता ते पि वारा न लब्भन्ती ति एवं सब्बथापेत्थ इमे चत्तारो वारा परिहायन्ति । अवसेसानञ्ञेव वसेन एकादसा ति वुत्तं ।

नअञ्ञमञ्ञ-ननिस्सय-नसम्पयुत्ते पि ते येव वारा परिहायन्ति । कस्मा ? सहजातगतिकत्ता । यथेव हि अरूपधम्मभूतो सहजातपच्चयो निप्पदेसेन चत्तारो अरूपक्खन्धे गण्हाति, तथा अञ्ञमञ्ञनिस्सयसम्पयुत्ता पी ति सहजातगतिकत्ता एतेसु पि पटिक्खित्तेसु ते वारा न लब्भन्ती ति वेदितब्बा । तेन वुत्तं **नअञ्ञमञ्ञे एकादस, ननिस्सये एकादस, नसम्पयुत्ते एकादसा** ति ।

तत्थ सिया—किञ्चा पि इमे अविसेसेन कुसलादिभेदानं चतुन्नं खन्धानं सङ्गाहकत्ता सहजातगतिका, कुसलो पन कुसलाब्याकतस्स

ठपेत्वा सहजातपच्चयं अञ्ञथा पच्चयो व न होति, तस्मा तस्मिं पटिक्खित्ते सो वारो परिहायतु। कुसलो पन कुसलाब्याकतानं नेव अञ्ञमञ्ञपच्चयो होति, तस्मिं पटिक्खित्ते सो वारो कस्मा परिहायती ति? अञ्ञमञ्ञपच्चयधम्मवसेन पवत्तिसब्भावतो। यथेव हि कुसलाब्याकता कुसलस्स सहजातपच्चयो व न होन्ति। सहजातधम्मवसेन पन निस्सयपच्चयादीहि पवत्तिसब्भावतो तस्मिं पटिक्खित्ते सो वारो परिहायति, एवमिधा पि अञ्ञमञ्ञपच्चयधम्मवसेन सहजातादीहि पवत्तिसब्भावतो तस्मिं पटिक्खित्ते सो वारो परिहायति।

नअञ्ञमञ्ञपच्चयेन पच्चयो ति पदस्स हि अयमत्थो—ये धम्मा अञ्ञमञ्ञपच्चयसङ्खं गता, न तेहि पच्चयो। कुसलो च कुसलाब्याकतानं सहजातादिवसेन पच्चयो होन्तो अञ्ञमञ्ञपच्चयधम्मेहेव पच्चयो होति, तस्मा तस्मिं पटिक्खित्ते सो वारो परिहायति। यथा च सो वारो, तथा सेसा पि तयो ति चत्तारो पि ते वारा परिहायन्ति।

ननिस्सये एकादसा ति एत्था पि यस्मा तेसं वारानं एकन्तेन B. 472
सहजातपच्चयधम्मा व निस्सयभूता, तस्मा निस्सये पटिक्खित्ते परिहायन्ति।

नपुरेजाते तेरसा (प. १.१७९) ति सहजातं पुरेजातं ति वुत्तविस्सज्जने द्विमूलके द्वे अपनेत्वा तेरस। यथा हि ते सहजाते पटिक्खित्ते पुरेजातनञ्ञेव निस्सयअत्थिअविगतानं वसेन विस्सज्जनं न लभन्ति, तथा पुरेजाते पि पटिक्खित्ते सहजातानञ्ञेव निस्सयअत्थिअविगतानं वसेन विस्सज्जनं न लभन्ति, तस्मा ते अपनेत्वा तेरसा ति वेदितब्बा।

नपच्छाजाते पन्नरसा ति एत्थ "पच्छाजातपच्चयेन पच्चयो" ति वा "सहजातं पच्छाजातं आहारं इन्द्रियं" ति वा आगतट्ठानेसु ठपेत्वा पच्छाजातं अवसेसवसेन पि ते पञ्हा लब्भन्ति, तस्मा पन्नरसेव वुत्ता। **नकम्मे** ति आदीसु यस्मा कम्मविपाकाहारिन्द्रियझानमग्गा पि कुसलादिभेदानं चतुन्नं खन्धानं एकदेसो व, तस्मा ठपेत्वा ते धम्मे अवसेस-

धम्मवसेन सहजातधम्मा पच्चया होन्ती ति एकं पि पञ्हाविस्सज्जनं न परिहीनं। **नसम्पयुत्ते एकादसा** ति यस्मा तेसु चतूसु वारेसु सम्पयुत्तधम्मा सहजातादिपच्चयेन पच्चया होन्ति, तस्मा सम्पयुत्तपच्चयपटिक्खेपेन ते येव वारा परिहायन्ती ति वेदितब्बा।

नविप्पयुत्ते नवा ति दुमूलकएकावसाना चत्तारो एकमूलकदुकावसाना द्वे चा ति इमे छ वारा एकन्तेन विप्पयुत्तपच्चयधम्मेहि युत्ता। ते हि सहजातादिवसेन पच्चया होन्ति, तस्मा विप्पयुत्ते पटिक्खित्ते सब्बे पि ते परिहायन्ती ति नवेव लब्भन्ति। तेन वुत्तं "नविप्पयुत्ते नवा" ति। नोअत्थिनोअविगतेसु पि ते येव वेदितब्बा। एकन्तेन हि ते वारा अत्थिअविगतपच्चयधम्मयुत्ता, तस्मा ते तेसं पटिक्खेपे परिहायन्ति। ये पि लब्भन्ति, तेसु आरम्मणवसेन अनन्तरादिवसेन वा विस्सज्जनानि कातब्बानि। सहजातपुरेजातपच्छाजातआहारिन्द्रियभेदतो पञ्चन्नं अत्थिअविगतानं विप्पयुत्तधम्मानं वा वसेन न कातब्बानी ति।

एवं पच्चनीये लद्धवारे गणनतो दस्सेत्वा इदानि दुमूलकादिवसेन पच्चयगणनं दस्सेतुं **नहेतुपच्चया नारम्मणे पन्नरसा** ति आदि आरद्धं। तत्थ नहेतुमूलकदुकेसु अतिरेकगणनो ऊनतरगणनेन सद्धिं योजितो ऊनतरगणनो व होति।

B. 473 तिमूलके **नउपनिस्सये तेरसा** ति कुसलो अकुसलस्स, अकुसलो कुसलस्सा ति द्वे वारा परिहायन्ति। कस्मा? नारम्मणेन सद्धिं नउपनिस्सयस्स घटितत्ता। आरम्मणवसेन हि उपनिस्सयवसेन च इमेसं पवत्ति। तञ्च उभयं पटिक्खित्तं। आरम्मणाधिपति च आरम्मणूपनिस्सयग्गहणेन गहितो होति येव।

छमूलके पि **नउपनिस्सये तेरसा** ति ते येव तेरस।

सत्तमूलके पन **नउपनिस्सये सत्ता** (प. १. १८०) ति नसहजातेन सद्धिं घटितत्ता तत्थ परिहीनेहि चतूहि सद्धिं "कुसलो कुसलस्स, कुसलो अकुसलस्स, अकुसलो अकुसलस्स, अकुसलो कुसलस्सा" ति इमे अनन्तरूपनिस्सयपकतूपनिस्सयवसेन

पवत्तमाना चत्तारो ति अट्ठपरिहायन्ति, तस्मा अवसेसानं वसेन सत्ता ति वुत्तं। **नपुरेजाते एकादसा** ति नसहजातेन सद्धिं घटितत्ता एकादस। **नपच्छाजाते नवा** ति तेसु एकादससु सहजातं पच्छाजातं आहारं इन्द्रियं ति लद्धविस्सज्जनेसु दुमूलके अब्याकतन्ते द्वे वारे अपनेत्वा। ते हि सहजाते पटिक्खित्ते पि पच्छाजातवसेन अपरिहीना। सहजातेन पन सद्धिं पच्छाजाते पटिक्खित्ते परिहायन्ती ति सेसानं वसेन नवा ति वुत्तं।

अट्ठमूलके **ननिस्सये एकादसा** ति सब्बं हेट्ठा वुत्तसदिसमेव।

नवमूलके **नउपनिस्सये पञ्च** ति कुसलादयो अब्याकतन्ता तयो दुमूलका अब्याकतन्ता द्वे चा ति पञ्च। तेसु नानाक्खणिककम्मकबळीकारआहाररूपजीवितिन्द्रियपच्छाजातधम्मवसेन विस्सज्जनं वेदितब्बं।

दसमूलके **नपुरेजाते पञ्च** ति आदीसु पि ते येव। **नपच्छाजाते तीणी** ति पच्छाजातवसेन लब्भमाने दुमूलके अब्याकतन्ते द्वे अपनेत्वा अवसेसा। नविप्पयुत्ते पि ते येव तयो। **नोअत्थिया द्वे** ति नानाक्खणिककम्मवसेन कुसलं च अकुसलं च कटत्तारूपस्स। विपाकं पनेत्थ नउपनिस्सयेन सद्धिं घटितत्ता न लब्भति।

एकादसमूलके हेट्ठा वुत्तसदिसा व गणना। द्वादसमूलके **नकम्मे एकं** ति अब्याकतेन अब्याकतं। तत्थ च आहारिन्द्रियवसेन विस्सज्जनं वेदितब्बं। तेरसमूलकादीसु पि सब्बत्थ **एकं** ति आगतट्ठाने इदमेव गहेतब्बं। नाहारे पन इन्द्रियवसेन विस्सज्जनं वेदितब्बं। नइन्द्रिये आहारवसेन। चुद्दसमूलकादीसु नकम्मेन सद्धिं घटितत्ता नोअत्थिनोअविगता न लब्भन्ती ति न वुत्ता। **नाहारपच्चया नझानपच्चया** B. 474
ति नइन्द्रियं अपनेत्वा वुत्तं। तस्मा तत्थ इन्द्रियवसेन एकं वेदितब्बं। **नविपाकपच्चया नइन्द्रियपच्चया** ति नाहारं अपनेत्वा वुत्तं, तस्मा तत्थ आहारवसेन एकं वेदितब्बं। इमेसु पन द्वीसु पच्चनीयतो ठितेसु गणना नाम नत्थि, तस्मा एकतो न दस्सिता ति।

नहेतुमूलकनयो निट्ठितो

नारम्मणादिमूलकनयो

४८२. नारम्मणमूलकादीसु पि पन्नरस तेरस एकादस नवा ति सब्बदुकेसु चत्तारो व मूलगणनपरिच्छेदा। तिकादीसु पन बहुपच्चय-समायोगे इतरानि पि सत्त पञ्च तीणि द्वे एकं ति परिच्छिन्नगणनानि विस्सज्जनानि लब्भन्ति येव। तेसु येसं पच्चयानं समायोगे यं यं लब्भति, तं तं हेट्ठा वुत्तनयेन साधुकं सल्लक्खेत्वा उद्धरितब्बं। सब्बेसु चेतेसु नारम्मणमूलकादीसु नारम्मणादीनि पदानि अतिक्कन्तेन हेतुपदेन सद्धिं पठमं बन्धित्वा व चक्कानि कतानि। यस्मा पन तानि नहेतुमूलके वुत्तसदिसानेव होन्ति, तस्मा वित्थारेन अदस्सेत्वा सङ्खेपं कत्वा दस्सितानि। तत्थ यथा नहेतुमूलके नारम्मणनउपनिस्सया विसुं विसुं पन्नरस वारे लभन्ता पि समायोगे तेरस लभिंसु, एवं सब्बत्थ तेरसेव लभन्ति। यथा च नारम्मणनसहजाते हि सद्धिं नउपनिस्सये सत्त वारा होन्ति, एवं नउपनिस्सयनारम्मणेहि सद्धिं नसहजाते पि सत्त।

ननिस्सयपच्चया नउपनिस्सयपच्चया नपच्छाजाते तीणी ति कुसलादीनि अब्याकतन्तानि। तेसु कटत्तारूपं च आहारसमुट्ठानं च पच्चयुप्पन्नं।

४९१-९२. नाहारनइन्द्रियमूलकेसु चतुक्केसु नकम्मेन सद्धिं अघटितत्ता नहेतुमूलके विय एकेन्तेन लब्भन्ति। नइन्द्रियमूलके न-उपनिस्सये च नपुरेजाते च ठपेत्वा **नाहारे तीणी ति कातब्बं** ति न-इन्द्रियपच्चयतो पट्ठाय इमे द्वे पच्चये घटेत्वा नइन्द्रियपच्चया...पे०... नउपनिस्सयपच्चया नाहारे तीणी ति। नइन्द्रियपच्चया...पे०... नपुरेजातपच्चया नाहारे तीणी ति एवं इमेहि पच्चयेहि सद्धिं नाहार-
B. 475 पच्चये च गणना कातब्बा ति अत्थो।

तत्थ **तीणी** ति कुसलादीनेव अब्याकतस्स। तत्थ कुसलाकुसला कटत्तारूपानं पुरेजातस्स च कायस्स पच्छाजातपच्चयेन, अब्याकता पन चित्तचेतसिका पच्छाजातपच्चयेनेवा ति इमेसं वसेन तीणि विस्सज्जनानि कातब्बानि। परतो पन नपच्छाजातेन सद्धिं घटितत्ता

नाहारे द्वे ति वुत्तं। तत्थ कटत्तारूपवसेन कुसलं अब्याकतस्स, तथा अकुसलं ति एत्तकमेव लब्भति। आहारस्स पन पटिक्खित्तत्ता कबळीकाराहारो अत्थिअविगतवसेना पि पच्चयभावं न लभति।

नविप्पयुत्तमूलकस्स चतुमूलके **नउपनिस्सये पञ्चा** ति कुसलो सहजातकुसलस्स, कुसलो कटत्तारूपसङ्खातस्स अब्याकतस्स, अकुसलो सहजातअकुसलस्स, तथा कटत्तारूपसङ्खातस्स अब्याकतस्स, अब्याकतो सहजातअब्याकतस्सा ति एवं पञ्च। **नविप्पयुत्तपच्चया···पे०···न-उपनिस्सये तीणी** ति हेट्ठा वुत्तनयेनेव कुसलादयो तयो अब्याकतस्स।

नोअत्थिपच्चया नहेतुया नवा ति नहेतुपच्चया नोअत्थिया वुत्ता नवे व। सब्बे पि हि ते एकमूलकेकावसाना अनन्तरपकतूपनिस्सय-वसेन लब्भन्ति। **नारम्मणे नवा** ति पि ते येव नारम्मणे ठत्वा न-उपनिस्सये द्वे कातब्बा। **याव निस्सयम्पी** ति नोअत्थिमूलके नये "नोअत्थिपच्चया नहेतुपच्चया नारम्मणपच्चया" ति एवं चक्कबन्ध-गमनेन नारम्मणपच्चये ठत्वा इमेहि वा तीहि, इतो परेसु नाधिपति-आदीसु अञ्ञतरञ्ञतरेन वा सद्धिं याव निस्सयपच्चयं पापुणाति, ताव गन्त्वा[1] नउपनिस्सये द्वे विस्सज्जनानि कातब्बानी ति अत्थो।

एवं लक्खणं ठपेत्वा पुन नारम्मणतो पट्ठाय याव निस्सया सत्त पच्चये गहेत्वा **नउपनिस्सये द्वे** ति आह। तत्थ नोअत्थिपच्चया नहेतुपच्चया नारम्मणपच्चया नउपनिस्सये द्वे, नोअत्थिपच्चया न-हेतुनारम्मणनाधिपतिपच्चया नउपनिस्सये द्वे ति एवं नारम्मणतो पुरिमपच्छिमेहि निस्सयपरियोसानेहि सब्बपदेहि सद्धिं योजना कातब्बा। द्वे ति पनेत्थ कुसलो अब्याकतस्स, अकुसलो अब्याकतस्सा B. 476 ति नानाक्खणिककम्मवसेन कटत्तारूपस्स पच्चयवसेन वेदितब्बानि। नउपनिस्सयपदेन सद्धिं नपुरेजातादीसु सब्बत्थ द्वे। कम्मपच्चयो पनेत्थ न गहितो। तस्मिं हि गहिते ते पि द्वे वारा छिज्जन्ति, विस्सज्जन-

१. ठत्वा सी.।

मेव न लब्भति। एवं येन येन सद्धिं यस्स यस्स संसन्दने। यं लब्भति, यं च परिहायति, तं सब्बं साधुकं सल्लक्खेत्वा सब्बपच्चनीयेसु गणना उद्धरितब्बा ति।

नारम्मणादिमूलकनयो निट्ठितो

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(३) पच्चय-अनुलोमपच्चनीयवण्णना

४९८. अनुलोमपच्चनीये "हेतुया सत्त, आरम्मणे नवा" ति एवं अनुलोमे 'नहेतुया पन्नरस, नारम्मणे पन्नरसा' ति एवं पच्चनीये च लद्धगणनेसु पच्चयेसु यो पच्चयो अनुलोमतो ठितो, तस्स अनुलोमे लद्धवारेहि सद्धिं ये पच्चनीयतो ठितस्स पच्चनीये लद्धवारेसु सदिसवारा, तेसं वसेन गणना वेदितब्बा। अनुलोमस्मिं हि हेतुपच्चये "हेतुया सत्ता" ति सत्त वारा लद्धा, पच्चनीये नारम्मणपच्चये "नारम्मणे पन्नरसा" ति पन्नरस लद्धा। तेसु ये हेतुया सत्त वुत्ता, तेहि सद्धिं नारम्मणे वुत्तेसु पन्नरससु "कुसलो कुसलस्स, अब्याकतस्स, कुसलाब्याकतस्स, अकुसलो अकुसलस्स, अब्याकतस्स, अकुसलाब्याकतस्स, अब्याकतो अब्याकतस्सा" ति इमे सत्तसदिसा। ते सन्धाय **हेतुपच्चया नारम्मणे सत्ता** ति वुत्तं। **नाधिपतिया सत्ता** (प.१.१९५) ति आदीसु पि एसेव नयो।

नसहजातस्स पन हेतुपच्चयस्स अभावा नसहजाते एको पि न लब्भति, तस्मा तेन सद्धिं योजना न कता। **नअञ्ञमञ्ञे** कुसलादयो तयो रूपाब्याकतस्स लब्भन्ति, ते सन्धाय **तीणी** ति वुत्तं। तथा **नसम्पयुत्ते**। **नविप्पयुत्ते** पन कुसलं[1] कुसलस्स, अकुसलं अकुसलस्स, अब्याकतं[2] अब्याकतस्सा ति अरूपधम्मवसेन तीणि वेदितब्बानि।
B.477 ननिस्सय-नोअत्थि-नोअविगता नसहजातो विय न लब्भन्ति येवा ति तेहि पि सद्धिं योजना न कता। एवमेत्थ सत्त तीणी ति द्वे येव गणनपरिच्छेदा, तेसं वसेन ऊनतरगणनेन सद्धिं अतिरेकगणनस्स पि गणनं परिहापेत्वा पच्चयघटनेसु गणना वेदितब्बा।

१. कुसलो स्या.। २. अब्याकतो स्या.।

तत्थ **हेतुसहजातनिस्सयअत्थिअविगतं** ति **नारम्मणे सत्ता** ति कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो, सहजातनिस्सयअत्थि-अविगतपच्चयेन पच्चयो, नारम्मणपच्चयेन पच्चयो। कुसला हेतू सम्पयुत्तकानं खन्धानं हेतुपच्चयेन पच्चयो, सहजातनिस्सयअत्थिअविगतपच्चयेन पच्चयो, नारम्मणपच्चयेन पच्चयो ति इमिना नयेन सत्त वारा उद्धरितब्बा। **नाधिपतिया सत्ता** ति आदीसु पि एसेव नयो। दुतिये घटने अञ्ञमञ्ञस्स पविट्ठत्ता ठपेत्वा नसम्पयुत्तं सेसेसु **तीणी** ति वुत्तं। नसम्पयुत्ते पन अञ्ञमञ्ञविप्पयुत्तं पटिसन्धिनामरूपं सन्धाय एकं ति वुत्तं। अञ्ञमञ्ञपच्चयो चेत्थ अनुलोमघटने पविट्ठत्ता पच्चनीयतो न लब्भति, तस्मा "नअञ्ञमञ्ञे" ति न वुत्तं। यथा चेत्थ, एवं सेसघटनेसु पि पविट्ठपच्चया पच्चनीयतो न लब्भन्ती ति न वुत्ता। ततियघटने सम्पयुत्तस्स पविट्ठत्ता सब्बत्थ तीणियेव। चतुत्थघटने विप्पयुत्तस्स पविट्ठत्ता तीणि कुसलादीनि चित्तसमुट्ठानरूपस्स। पञ्चमे विपाकस्स पविट्ठत्ता सब्बत्थ एकं अब्याकतेन अब्याकतं। इतो परेसु पि विपाकसम्पयुत्तेसु एसेव नयो।

हेतुसहजातनिस्सयइन्द्रियमग्गअत्थिअविगतं ति नारम्मणे चत्तारी (प. १. १९७) ति कुसलो कुसलस्स, अब्याकतस्स, कुसलाब्याकतस्स; अब्याकतो अब्याकतस्सा ति इमेसं वसेन वेदितब्बानि। सेसेसु पि एसेव नयो। **नअञ्ञमञ्ञे द्वे** ति कुसलो अब्याकतस्स, तथा अब्याकतो। परतो पि द्वीसु एसेव नयो। इमिना उपायेन सब्बघटनेसु लब्भमानवसेन गणना वेदितब्बा।

सब्बानि पि चेतानि इमस्मिं अनुलोमपच्चनीये सहजातवसेन चेव पकिण्णकवसेन च पन्नरसाधिकानि चत्तारि घटनसतानि वुत्तानि। तेसु तस्मिं तस्मिं घटने ये अनुलोमतो ठिता पच्चया, तेसं एको पि पच्चनीयतो न लब्भति। हेतुमूलके चेत्थ पठमे घटने अनुलोमतो पञ्चन्नं पच्चयानं ठितत्ता पच्चनीयतो एकूनवीसति पच्चया आगता। एवं सेसेसु पि अनुलोमतो ठितावसेसा पच्चनीयतो आगता। अनुलो- B. 478

मतो चेत्थ बहूसु पि ठितेसु[1] पच्चनीयतो एकेको व आगतो ति वेदितब्बो। यथा च हेतुमूलके, एवं आरम्मणादिमूलकेसु पि सब्बमेतं विधानं यथानुरूपतो वेदितब्बं ति।

पच्चय-अनुलोमपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

४. पच्चनीयानुलोमवण्णना

(१) नहेतुमूलकनयो

५७९. पच्चनीयानुलोमे पि "हेतुया सत्त, आरम्मणे नवा" ति एवं अनुलोमे "नहेतुया पन्नरस, नारम्मणे पन्नरसा" ति एवं पच्चनीये च लद्धगणनेसु पच्चयेसु यो पच्चनीयतो ठितो, तस्स पच्चनीयतो लद्धवारेसु ये अनुलोमतो टितस्स अनुलोमतो लद्धवारेहि सदिसा वारा, तेसं वसेन गणना वेदितब्बा। पच्चनीयस्मिं हि नहेतुपच्चये "नहेतुया पन्नरसा" ति पन्नरस वारा लद्धा, अनुलोमे आरम्मणपच्चये "आरम्मणे नवा" ति नव वारा लद्धा। तत्थ ये नहेतुया पन्नरस वुत्ता, तेसु ये वारा आरम्मणे वुत्तेहि नवहि सदिसा, तेसं वसेन गणना वेदितब्बा। तत्थ ये आरम्मणे नव वुत्ता, ते नहेतुया वुत्तेसु पन्नरससु कुसलो "कुसलाकुसलाब्याकतानं, अकुसलो अकुसलकुसलाब्याकतानं, अब्याकतो अब्याकतकुसलाकुसलानं" ति इमेहि नवहि सदिसा, ते सन्धाय **नहेतुया आरम्मणे नवा** ति वुत्तं।

अधिपतिया दसा (प. १. २५६) ति आदीसु पि एसेव नयो। आरम्मणादीनं हि अनुलोमगणनाय ये वारा वुत्ता नहेतुपच्चयेन सद्धिं संसन्दने पि ते सब्बे लब्भन्ती ति वेदितब्बा। "कुसलो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स नहेतुपच्चयेन पच्चयो आरम्मणपच्चयेन पच्चयो, दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा तं पच्चवेक्खति, पुब्बे सुचिण्णानि पच्चवेक्खती" ति इमिना उपायेन तेसं पाळि[2] उद्धरितब्बा[2]।

---

१. पच्चयेसु स्या.।

२-२. पालिद्धारो वेदितब्बो स्या.।

नहेतुपच्चया अधिपतिया दस ति एत्थ ठपेत्वा वीमंसाधिपतिं सेसाधिपतिवसेन अनुलोमविभङ्गे आगतवारा उद्धरितब्बा । एवमेत्थ नव दस सत्त तीणि तेरस एकं ति छ गणनपरिच्छेदा, तेसं वसेन ऊन- B. 479
तरगणनेन सद्धिं अतिरेकगणनस्सा पि गणनं परिहापेत्वा नहेतुमूलकादीनं नयानं तिमूलकादीसु सब्बसंसन्दनेसु गणना वेदितब्बा । इदं ताव साधारणलक्खणं । न पनेतं सब्बसंसन्दनेसु गच्छति, येहि पन पच्चयेहि सद्धिं येसं पच्चयानं संसन्दने ये वारा विरुज्झन्ति, ते अपनेत्वा अवसेसानं वसेन पेत्थ गणना वेदितब्बा ।

नहेतुपच्चया नारम्मणपच्चया अधिपतिया सत्त ति एत्थ हि कुसलो अकुसलस्स; अब्याकतो कुसलस्स, अकुसलस्सा ति इमे आरम्मणाधिपतिवसेन लब्भमाना तयो वारा विरुज्झन्ति । कस्मा ? नारम्मणपच्चया ति वुत्तत्ता । तस्मा ते अपनेत्वा सहजाताधिपतिनयेनेवेत्थ "कुसलो कुसलस्स, अब्याकतस्स, कुसलाब्याकतस्स; अकुसलो अकुसलस्स, अब्याकतस्स, अकुसलाब्याकतस्स; अब्याकतो अब्याकतस्सा" ति सत्त वारा वेदितब्बा । ते पि नहेतुपच्चया ति वचनतो ठपेत्वा वीमंसाधिपतिं सेसाधिपतीनं वसेन । एवं सब्बत्थ ऊनतरगणनपच्चयवसेन अविरुज्झमानगणनवसेन च गणना वेदितब्बा ।

येसु च पच्चयेसु पच्चनीयतो ठितेसु ये अनुलोमतो न तिट्ठन्ति, ते पि वेदितब्बा । सेय्यथीदं—अनन्तरे पच्चनीयतो ठिते समनन्तरासेवननत्थिविगता अनुलोमतो न तिट्ठन्ति, सहजाते पच्चनीयतो ठिते हेतुअञ्ञमञ्ञविपाकझानमग्गसम्पयुत्ता अनुलोमतो न तिट्ठन्ति, निस्सये पच्चनीयतो ठिते वत्थुपुरेजातो अनुलोमतो न तिट्ठति । आहारे वा इन्द्रिये वा पच्चनीयतो ठिते हेतुअञ्ञमञ्ञविपाकझानमग्गसम्पयुत्ता अनुलोमतो न तिट्ठन्ति । आरम्मणे पन पच्चनीयतो ठिते अधिपतिउपनिस्सया अनुलोमतो न तिट्ठन्ति, आरम्मणाधिपतिआरम्मणूपनिस्सया पन न लब्भन्ति । इमिना उपायेन सब्बत्थ यं लब्भति, यं च न लब्भति, तं जानित्वा लब्भमानवसेन वारा उद्धरितब्बा ।

तत्थ सब्बेसु पि तिमूलकादीसु **अनन्तरे सत्ता** ति आदयो दुमूलके लद्धवारायेव सत्तमूलकादीसु पन **नसहजातपच्चया निस्सये तीणी** ति पुरेजातवसेन वत्थुनिस्सये तीणि । **कम्मे द्वे** नानाक्खणिकवसेनेव ।
B. 480 **आहारे एकं** कबळीकाराहारवसेन । **इन्द्रिये एकं** छ[1] रूपिन्द्रियवसेन । कमेन गन्त्वा **विप्पयुत्ते तीणी** ति कुसलादीनं अब्याकतन्तानि पच्छाजातवसेन । **अत्थिअविगतेसु पञ्च** ति तानि चेव तीणि, कुसलाब्याकता अब्याकतस्स, अकुसलाब्याकता अब्याकतस्सा ति इमानि च द्वे पच्छाजाताहारिन्द्रियवसेना ति । पच्छाजातपच्चयस्स पच्चनीकभावतो पट्ठाय पन **अत्थिअविगतेसु एकं** ति अब्याकतो अब्याकतस्स आहारिन्द्रियवसेन । नाहारे गहिते नइन्द्रियपच्चया ति न[2] गहेतब्बं । तथा नइन्द्रिये गहिते नाहारपच्चया ति । कस्मा ? द्वीसु एकतो गहितेसु गणेतब्बवारस्स अभावतो । झानमग्गादीसु पि पच्चनीकतो ठितेसु आहारतो वा इन्द्रियतो वा एकं अनुलोमं अकत्वा व अवसाने **इन्द्रिये एकं, अत्थिया एकं, अविगते एकं, आहारे एकं, अत्थिया एकं, अविगते एकं** ति वुत्तं । सेसमेत्थ उत्तानत्थमेवा ति ।

नहेतुमूलकनयो निट्ठितो

(२) नारम्मणादिमूलकनयो

५८०. नारम्मणमूलकादीसु **नअञ्ञमञ्ञमूलके नअञ्ञमञ्ञपच्चया हेतुया तीणी** (प.१.२६०) ति कुसलादीनि चित्तसमुट्ठानानं । **अधिपतिया अट्ठ** ति अधिपतिया वुत्तेसु दससु "कुसलो कुसलाब्याकतस्स[3], अकुसलो अकुसलाब्याकतस्सा[4]" ति द्वे अपनेत्वा सेसानि अट्ठ । **सहजाते पञ्च** ति हेतुया वुत्तेहि तीहि सद्धिं "कुसलो च अब्याकतो च अब्याकतस्स, अकुसलो च अब्याकतो च अब्याकतस्सा" ति इमे द्वे । **निस्सये सत्त** ति तेहि पञ्च हि सद्धिं "अब्याकतो कुसलस्स, अब्याकतो अकुसलस्सा" ति इमे द्वे वत्थुवसेन । **कम्मे तीणी** ति

१. म. पोत्थके नत्थि ।
२. सी. पोत्थके नत्थि ।
३. कुसलस्स स्या. ।
४. अकुसलस्स स्या. ।

हेतुया वुत्तानेव । सेसतिकेसु पि एसेव नयो । **अधिपतिया तीणी** ति हेट्ठा वुत्तानेव ।

नाहारमूलके **अञ्ञमञ्ञे तीणी** ति ठपेत्वा आहारे सेसचेतसिकवसेन वेदितब्बानि । यथा च हेट्ठा, तथा इधा पि नाहारनइन्द्रियेसु एकेकमेव गहितं, न द्वे एकतो ।

नसम्पयुत्तपच्चया हेतुया तीणी ति हेट्ठा नअञ्ञमञ्ञे वुत्तानेव । B. 481 **अधिपतिया अट्ठा** ति हेट्ठा[1] वुत्तानेव ।

नविप्पयुत्तमूलके **कम्मे पञ्चा** ति कुसलादिचेतना सहजातकुसलादीनं, नानाक्खणिका कुसलाकुसलचेतना कम्मसमुट्ठानरूपस्सा ति एवं पञ्च । **आहारिन्द्रियेसु तीणि** सहजातसदिसानि । **झानमग्गादीसु तीणि** हेतुसदिसानि ।

नोअत्थिमूलके यस्मा हेतु नोअत्थि नाम न होति, नियमतो अत्थियेव, तस्मा तं अग्गहेत्वा **नारम्मणे नवा** ति वुत्तं । यथा च हेतु, तथा अञ्ञे पि अत्थिपच्चयलक्खणयुत्ता एत्थ अनुलोमतो न तिट्ठन्ति । **कम्मे द्वे** ति इदं पन नानाक्खणिककम्मवसेन वुत्तं । पच्चनीयतो सब्बे लब्भन्ति । यं पन अनुलोमतो लब्भमानं पि अग्गहेत्वा ततो पुरेतरा पच्चया पच्चनीयतो गय्हन्ति, सो पच्छा योजनं लभति । तेनेवेत्थ "नोअत्थिपच्चया नहेतुपच्चया···पे०···नोअविगतपच्चया कम्मे द्वे" ति वुत्तं ।

कस्मा पनेस सकट्ठानेयेव न गहितो ति ? यस्मा अवसेसेसु पि पच्चनीयतो ठितेसु एको व अनुलोमतो लब्भति । इदं हि इमस्मिं पच्चयानुलोमे लक्खणं—यो सब्बेसु पच्चनीयतो ठितेसु एको व अनुलोमतो लब्भति, सो पच्छा वुच्चती ति । **नोअत्थिपच्चया नोहेतुपच्चया···पे०···नोअविगतपच्चया उपनिस्सये नवा** ति एत्था पि एसेव नयो । इदं पन पकतूपनिस्सयवसेन वुत्तं । इमिना उपायेन सब्बत्थ लब्भमानं अलब्भमानं पुरेवुत्तं पच्छावुत्तं च वेदितब्बं ति ।

नारम्मणादिमूलकनयो निट्ठितो
कुसलत्तिकवण्णना निट्ठिता

---

१. म. पोत्थके नत्थि ।

२. वेदनात्तिकवण्णना

१. पटिच्चवारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

१. वेदनात्तिके तिस्सो वेदना रूपं निब्बानं ति इमे धम्मा न लब्भन्ति, तस्मा **एकं खन्धं पटिच्च द्वे खन्धा** (प. १.२७१) ति आदि वुत्तं। पटिसन्धिक्खणे **सुखाय वेदनाय** ति सहेतुकपटिसन्धिवसेन
B. 482 वुत्तं। दुक्खवेदना पटिसन्धियं न लब्भती ति दुतियवारे पटिसन्धिग्गहणं न कतं। ततियवारे **पटिसन्धिक्खणे** ति सहेतुकपटिसन्धिवसेन वुत्तं। सेसमेत्थ इतो परेसु च पच्चयेसु यथापाळिमेव निय्याति। सब्बत्थ तयो तयो वारा वुत्ता। तेन वुत्तं **हेतुया तीणि**…पे०…**अविगते तीणी** ति।

पच्चयसंसन्दने पन सहेतुकाय विपाकदुक्खवेदनाय अभावतो हेतुमूलकनये **विपाके द्वे** ति वुत्तं। अधिपतिआदीहि सद्धिं संसन्दनेसु पि विपाके द्वे येव। कस्मा ? विपाके दुक्खवेदनाय अधिपतिझान-मग्गानं अभावतो। येहि च सद्धिं संसन्दने विपाके द्वे वारा लब्भन्ति, विपाकेन सद्धिं संसन्दने तेसु पि द्वे येव।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

८. पच्चनीये नपुरेजाते आरुप्पे च पटिसन्धियं च दुक्खवेदनाय अभावतो द्वे वारा आगता। नविप्पयुत्ते पि आरुप्पे दुक्खाभावतो द्वे येव। सब्बअरूपधम्मपरिग्गाहका पन सहजातादयो पच्चया इमस्मिं पच्चनीयवारे परिहायन्ति। कस्मा ? वेदनासम्पयुत्तस्स धम्मस्स वेदनासम्पयुत्तं पटिच्च सहजातादीहि विना अनुप्पत्तितो पच्छाजात-पच्चयञ्च विना व उप्पत्तितो।

पच्चयसंसन्दने पन **नपुरेजाते एकं** ति आरुप्पे पटिसन्धियं च अहेतुकादुक्खमसुखवेदनासम्पयुत्तं सन्धाय वुत्तं। **नकम्मे द्वे** ति अहेतुक-किरियसम्पयुत्तचेतनावसेन वुत्तं। सुखाय हि अदुक्खमसुखाय च

वेदनाय सम्पयुत्ते धम्मे पटिच्च ताहि वेदनाहि सम्पयुत्ता अहेतुककिरियचेतना उप्पज्जन्ति । नहेतुपच्चया[1] नविपाके पि एसेव नयो । **नविप्पयुत्ते एकं** ति आरुप्पे आवज्जनवसेन वुत्तं । इमिना उपायेन सब्बसंसन्दनेसु गणना वेदितब्बा ।

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

(३) पच्चयानुलोमपच्चनीयादिवण्णना

२६. अनुलोमपच्चनीये पच्चनीये लद्धपच्चया एवं पच्चनीयतो तिट्ठन्ति । पच्चनीयानुलोमे सब्बा रूपधम्मपरिग्गाहका सहजातादयो अनुलोमतो व तिट्ठन्ति, न पच्चनीयतो । अहेतुकस्स पन चित्तुप्पादस्स अधिपति नत्थी ति अधिपतिपच्चयो अनुलोमतो न तिट्ठति । पटिच्चवारादीसु पन पच्छाजातो अनुलोमतो न लब्भति येवा ति परिहीनो । ये चेत्थ अनुलोमतो लब्भन्ति, ते पच्चनीयतो लब्भमानेहि सद्धिं परिवत्तेत्वा पि योजितायेव । तेसु तीणि द्वे एकं ति तयो व B. 483
वारपरिच्छेदा, ते सब्बत्थ यथानुरूपं सल्लक्खेतब्बा[2] । यो चायं पटिच्चवारे वुत्तो, सहजातवारादीसु पि अयमेव वण्णनानयो ।

पच्चयानुलोमपच्चनीयादिवण्णना निट्ठिता

२. पञ्हावारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

३८. पञ्हावारे पन **सम्पयुत्तकानं खन्धानं** ति तेन सद्धिं सम्पयुत्तकानं खन्धानं तेहि येव वा हेतूहि सुखवेदनादीहि वा ।

विप्पटिसारिस्सा (प. १. २८३) ति दानादीसु ताव "कस्मा मया इदं कतं, दुट्ठु मे कतं, अकतं सेय्यो सिया" ति एवं विप्पटिसारिस्स । झानपरिहानियं पन "परिहीनं मे झानं, महाजानियो

---

१. ० न कम्मपच्चया स्या. ।

२. सल्लक्खेत्वा वेदितब्बा स्या. ।

वतम्ही" ति एवं विप्पटिसारिस्स। **मोहो उप्पज्जती** ति दोससम्पयुत्त-मोहो। तथा **मोहं अरब्भा** ति दोससम्पयुत्तमोहमेव।

सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं भवङ्गं अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तस्स भवङ्गस्सा ति तदारम्मणसङ्खातं पिट्ठिभवङ्ग मूलभवङ्गस्स। **वुट्ठानस्सा** ति तदारम्मणस्स भवङ्गस्स वा। उभयं पि हेतं कुसलाकुसलजवनतो वुट्ठितत्ता वुट्ठानं ति वुच्चति। **किरियं वुट्ठानस्सा** ति एत्था पि एसेव नयो। **फलं वुट्ठानस्सा** ति फलचित्तं भवङ्गस्स। भवङ्गेन हि फलतो वुट्ठितो नाम होति। परतो "वुट्ठानं" ति आगतट्ठानेसु पि एसेव नयो।

दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता खन्धा ति दोमनस्ससम्पयुत्ता अकुसला खन्धा। **अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तस्स वुट्ठानस्सा** ति तदारम्मणसङ्खातस्स आगन्तुकभवङ्गस्स वा उपेक्खासम्पयुत्त-मूलभवङ्गस्स वा। सचे पन सोमनस्ससहगतं मूलभवङ्गं होति, तदारम्मणस्स च उप्पत्तिकारणं न होति, जवनस्स आरम्मणतो अञ्ञस्मिं पि आरम्मणे अदुक्खमसुखवेदनं अकुसलविपाकं उप्पज्जतेव। तं पि हि जवनतो वुट्ठितत्ता वुट्ठानं ति वुच्चति। सहजातपच्चयादिनिद्देसा उत्तानत्थायेव। न हेत्थ किञ्चि अत्थि, यं न सक्का सिया हेट्ठा वुत्तनयेन वेदेतुं, तस्मा साधुकं उपलक्खेतब्बं।

६२. इदानि यस्मिं यस्मिं पच्चये ये ये वारा लद्धा, सब्बे ते सङ्खिपित्वा गणनाय दस्सेतुं **हेतुया तीणी** (प. १. २६७) ति आदि
B. 484 वुत्तं। तत्थ सब्बानि तीणि सुद्धानं तिण्णं पदानं वसेन वेदितब्बानि। आरम्मणे नव एकमूलकेकावसानानि। अधिपतिया पञ्च सहजाताधिपति-वसेन अमिस्सानि[1] तीणि, आरम्मणाधिपतिवसेन च "सुखाय सम्पयुत्तो सुखाय सम्पयुत्तस्स, अदुक्खमसुखाय सम्पयुत्तो अदुक्खम-सुखाय सम्पयुत्तस्सा" ति द्वे, तानि न गणेतब्बानि। सुखाय पन सम्पयुत्तो अदुक्खमसुखाय, अदुक्खमसुखाय सम्पयुत्तो सुखाया ति इमानि द्वे गणेतब्बानी ति एवं पञ्च।

१. असमिस्सानि स्या.।

अनन्तरसमनन्तरेसु सत्ता ति सुखा द्विन्नं, तथा दुक्खा, अदुक्खमसुखा तिण्णं पी ति एवं सत्त ।

उपनिस्सये नवा ति सुखसम्पयुत्तो सुखसम्पयुत्तस्स तीहि पि उपनिस्सयेहि, दुक्खसम्पयुत्तस्स पकतूपनिस्सयेनेव, उपेक्खासम्पयुत्तस्स तीहि पि, दुक्खसम्पयुत्तो दुक्खसम्पयुत्तस्स अनन्तरपकतूपनिस्सयेहि, सुखसम्पयुत्तस्स पकतूपनिस्सयेन, अदुक्खमसुखसम्पयुत्तस्स द्विधा, अदुक्खमसुखसम्पयुत्तो अदुक्खमसुखसम्पयुत्तस्स तिविधा पि, तथा सुखसम्पयुत्तस्स, दुक्खसम्पयुत्तस्स अनन्तरपकतूपनिस्सयेही ति एवं नव । पच्चयभेदतो पनेत्थ पकतूपनिस्सया नव, अनन्तरूपनिस्सया सत्त, आरम्मणूपनिस्सया चत्तारो ति वीसति उपनिस्सया ।

पुरेजातपच्छाजाता पनेत्थ छिज्जन्ति । न हि पुरेजातपच्छाजाता वा अरूपधम्मा अरूपधम्मानं पच्चया होन्ति ।

कम्मे अट्ठा (प. १. २६८) ति सुखसम्पयुत्तो सुखसम्पयुत्तस्स द्विधा पि, दुक्खसम्पयुत्तस्स नानाक्खणिकतो व तथा इतरस्स । दुक्खसम्पयुत्तो दुक्खसम्पयुत्तस्स द्विधा पि, सुखसम्पयुत्तस्स नत्थि, इतरस्स नानाक्खणिकतो व, अदुक्खमसुखसम्पयुत्तो अदुक्खमसुखसम्पयुत्तस्स द्विधा पि, इतरेसं नानाक्खणिकतो ति एवं अट्ठ । पच्चयभेदतो पनेत्थ नानाक्खणिका अट्ठ, सहजाता तीणी ति एकादस कम्मपच्चया । यथा च पुरेजातपच्छाजाता, एवं विप्पयुत्तपच्चयो पेत्थ छिज्जति । अरूपधम्मा हि अरूपधम्मानं विप्पयुत्तपच्चयो न होन्ति ।

नत्थिविगतेसु सत्त अनन्तरसदिसा व । एवमेत्थ तीणि पञ्च सत्त अट्ठ नवा ति पञ्च गणनपरिच्छेदा । तेसं वसेन पच्चयसंसन्दने ऊनतरगणनेन सद्धिं संसन्दनेसु अतिरेकं च अलब्भमानं च अपनेत्वा गणना वेदितब्बा ।

हेतुया सद्धिं आरम्मणं न लब्भति, तथा अनन्तरादयो । B. 485
अधिपतिया द्वे ति दुक्खपदं ठपेत्वा सेसानि द्वे । दुक्खसम्पयुत्तो हि

हेतु अधिपति नाम नत्थि, तस्मा सो न लब्भती ति अपनीतो । सेसद्वयेसु पि एसेव नयो ।

६३-५. इति हेतुमूलके द्वे येव गणनपरिच्छेदा, तेसं वसेन छ घटनानि वुत्तानि । तेसु पठमं अविपाकभूतानं ञाणविप्पयुत्तनिराधिपति-धम्मानं वसेन वुत्तं, दुतियं तेसञ्ञेव विपाकभूतानं, ततियचतुत्थानि तेसञ्ञेव ञाणसम्पयुत्तानं, पञ्चमं अविपाकभूतसाधिपतिअमोहवसेन, छट्ठं विपाकभूतसाधिपतिअमोहवसेन । पठमं वा सब्बहेतुवसेन, दुतियं सब्बविपाकहेतुवसेन, ततियं सब्बामोहहेतुवसेन, चतुत्थं सब्बविपाका-मोहहेतुवसेन । पञ्चमं सब्बसाधिपतिअमोहवसेन, छट्ठं सब्बसाधिपति-विपाकामोहवसेन ।

६६. आरम्मणमूलके **अधिपतिया चत्तारी** ति आरम्मणाधि-पतिवसेन सुखं सुखस्स, अदुक्खमसुखस्स, अदुक्खमसुखं अदुक्खम-सुखस्स, सुखस्सा ति एवं चत्तारि । उपनिस्सये पि आरम्मणूपनिस्सय-वसेन चत्तारो वुत्ता । घटनानि पनेत्थ एकमेव । अधिपतिमूलकादीसु पि हेट्ठा वुत्तनयेनेव यं लब्भति यं च न लब्भति, तं सब्बं साधुकं सल्लक्खेत्वा संसन्दनघटनगणना वेदितब्बा ।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

८६. पच्चनीयम्हि कुसलत्तिके वुत्तनयेनेव अनुलोमतो पच्चये उद्धरित्वा तत्थ लद्धानं वारानं वसेन पच्चनीयतो गणनवसेन **नहेतुया नवा** (प. १.३०५) ति सब्बपच्चयेसु नव वारा दस्सिता । ते एकमूलकेकावसानानं नवन्नं विस्सज्जनानं वसेन "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तो धम्मो सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तस्स धम्मस्स नहेतुपच्चयेन पच्चयो, सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तेन चित्तेन दानं दत्वा" ति आदिना नयेन पाळिं उद्धरित्वा दस्सेतब्बा ।

पच्चयसंसन्दने पनेत्थ **नहेतुपच्चया**...पे०...**नउपनिस्सये अट्ठा** ति नानाक्खणिककम्मपच्चयवसेन वेदितब्बा । दुब्बलकम्मं हि विपाकस्स न

उपनिस्सयो होति । केवलं पन नानाक्खणिककम्मपच्चयेनेव पच्चयो होति । सेसमेत्थ अनुलोमपच्चनीय-पच्चनीयानुलोमेसु च तेसं तेसं पच्चयानं योगे लद्धवारवसेन सक्का हेट्ठा वुत्तनयेनेव गणेतुं, तस्मा न वित्थारितं ति ।

पच्चयपच्चनीयवण्णना निट्ठिता

वेदनात्तिकवण्णना निट्ठिता

३. विपाकत्तिकवण्णना

१. पटिच्चवारअत्थवण्णना

(१) पच्चयानुलोमवण्णना

१. विपाकत्तिके **विपाकं धम्मं पटिच्च विपाको धम्मो** B. 486
उप्पज्जति हेतुपच्चया (प. १.३०९) ति ये हेतुपच्चये तेरस वारा, वुत्ता, ते सङ्खिपित्वा गणनाय दस्सेतुं **हेतुया तेरसा** ति वुत्तं । **आरम्मणे पञ्च** ति आदीसु पि एसेव नयो । एवमेत्थ तेरस पञ्च नव सत्त तीणि द्वे ति छ गणनपरिच्छेदा, तेसं वसेन पच्चयसंसन्दने हेट्ठा वुत्तनयेनेव गणना वेदितब्बा ।

पच्चयानुलोमवण्णना निट्ठिता

(२) पच्चयपच्चनीयवण्णना

२४. पच्चनीये पि **विपाकं धम्मं पटिच्च विपाको धम्मो उप्पज्जति नहेतुपच्चया** (प. १. ३१५) ति ये नहेतुपच्चये दस वारा वुत्ता, ते सङ्खिपित्वा गणनाय दस्सेतुं **नहेतुया दसा** ति वुत्तं । **न-आरम्मणे पञ्चा** ति आदीसु पि एसेव नयो । एवमेत्थ दस पञ्च तेरस द्वादस द्वे एकं नव तीणी ति अट्ठ गणनपरिच्छेदा, तेसं वसेन पच्चय-संसन्दने हेट्ठा वुत्तनयेनेव वित्थारतो गणना वेदितब्बा । पाळि पन सङ्खित्ता, एतेसञ्ञेव पन लद्धगणनरपरिच्छेदानं वारानं वसेन संसन्दित्वा अनुलोमपच्चनीयं पच्चनीयानुलोमं च वेदितब्बं । सहजातवारो इमिना व एकगतिको । पच्चयनिस्सयसंसट्ठसम्पयुत्तवारा यथा पाळिमेव निय्यन्ति ।

(७) पञ्हावारअत्थवण्णना

९०. पञ्हावारे **कुसलाकुसले निरुद्धे** (प. १. ३३८) ति एतस्मिं विपस्सनावसेन पवत्ते कुसले सारज्जनादिवसेन पवत्ते अकुसले च निरुद्धे। **विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती** ति कामावचरविपाको तदारम्मणताय उप्पज्जति। ये पन "विपस्सनाजवनानं विचिकिच्छुद्धच्चानं च परियोसाने तदारम्मणं नत्थी" ति वदन्ति, ते इमाय तन्तिया पटिसेधेतब्बा।

आकासानञ्चायतनकुसलं विञ्ञाणञ्चायतनस्स किरियस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो ति अरहत्तं पत्वा असमापन्नपुब्बा समापत्तियो पटिलोमतो समापज्जन्तस्स वसेनेतं वुत्तं। इमिना उपायेन सब्बविस्सज्जनेसु साधुकं पाळिं उपपरिक्खित्वा अत्थो वेदितब्बो।

हेतुया सत्त, आरम्मणे नव, अधिपतिया दसा ति आदीसु पि सहजाताधिपतिवसेन आरम्मणाधिपतिवसेन सहजातनिस्सयवसेन
B. 487 पुरेजातनिस्सयवसेन अनन्तरूपनिस्सयवसेन आरम्मणूपनिस्सयवसेन पकतूपनिस्सयवसेन सहजातविप्पयुत्तवसेन पुरेजातपच्छाजातविप्पयुत्तवसेना ति यत्थ यत्थ यथा यथा यत्तकानि विस्सज्जनानि लब्भन्ति, तत्थ तत्थ तथा तथा तानि सब्बानि सल्लक्खेतब्बानि। तथा पच्चनीयादीसु अनुलोमवसेन वारुद्धरणं, अनुलोमतो लद्धवारानं पच्चनीयतो गणना, पच्चयसंसन्दनं, अनुलोमपच्चनीये पच्चनीयानुलोमे च सुद्धिकेसु चेव संसन्दनवसेन च पवत्तेसु हेतुमूलकादीसु लब्भमानवारगणना, अलब्भमानानं अलब्भमानता ति सब्बं हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। यथा चेत्थ, एवं इतो परेसु पि तिकदुकेसु। पट्ठानपकरणं हि पाळितो व अनन्तं अपरिमाणं। तस्स पदपटिपाटिया अत्थं वण्णयिस्सामी ति पटिपन्नस्स अतिदीघायुकस्सा पि आयु नप्पहोति। न चस्स एकदेसं वण्णेत्वा सेसम्हि नयतो दस्सियमाने न सक्का अत्थो जानितुं, तस्मा इतो परं एत्तकं पि अवत्वा सेसेसु तिकदुकेसु हेट्ठा अवुत्तप्पकारत्ता यं यं अवस्सं

वत्तब्बं, तं तदेव वक्खाम । यं पन अवत्वा गमिस्साम, तं पाळिनयेनेव वेदितब्बं ति ।

पञ्हावारअत्थवण्णना निट्ठिता
विपाकत्तिकवण्णना निट्ठिता

४ उपादिन्नत्तिकवण्णना

७. पञ्हावारअत्थवण्णना

१. उपादिन्नुपादानियत्तिकस्स पञ्हावारे वत्थु **उपादानियानं खन्धानं पुरेजातपच्चयेन पच्चयो** (प. १.३९२) ति पवत्तिं सन्धाय वुत्तं । पटिसन्धियं पन तं पुरेजातं न होति ।

उपादिन्नुपादानियो कबळीकाराहारो उपादिन्नुपादानियस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो (प.१.३९७) ति एत्थ उपादिन्नुपादानियो कबळीकाराहारो नाम कम्मसमुट्ठानानं रूपानं अब्भन्तरगता ओजा । **उपादिन्नुपादानियस्स कायस्सा** ति तस्सेव कम्मसमुट्ठानरूपकायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो । रूपजीवितिन्द्रियं विय कटत्तारूपानं अनुपालनउपत्थम्भनवसेन पच्चयो, न जनकवसेन । यं पन मण्डूकादयो गिलित्वा ठितानं अहिआदीनं कायस्स जीवमानकमण्डूकादिसरीरे ओजा आहारपच्चयेन पच्चयो ति वदन्ति, तं न गहेतब्बं । न हि B. 488
जीवमानकसरीरे ओजा अञ्ञस्स सरीरस्स आहारपच्चयतं साधेति ।

अनुपादिन्नुपादानियस्स कायस्सा ति एत्थ पन जनकवसेना पि लब्भति । **उपादिन्नुपादानियस्स च अनुपादिन्नुपादानियस्स** चा ति एत्थ एकस्स उपत्थम्भकवसेन, एकस्स जनकवसेन, उभिन्नं पि वा उपत्थम्भकवसेनेव वुत्तो । द्वे पन आहारा एकतो पच्चया होन्ता उपत्थम्भका व होन्ति, न जनका । सेसमेत्थ पाळिमेव साधुकं ओलोकेत्वा वेदितब्बं ।

पञ्हावारअत्थवण्णना निट्ठिता
उपादिन्नत्तिकवण्णना निट्ठिता

५. सङ्किलिट्ठत्तिकवण्णना

१. सङ्किलिट्ठसङ्किलेसिकत्तिके सब्बं कुसलत्तिके वुत्तनयानुसारेनेव वेदितब्बं ।

सङ्किलिट्ठत्तिकवण्णना निट्ठिता

६. वितक्कत्तिकवण्णना

१. वितक्कत्तिके **यथाकम्मूपगञाणस्स परिकम्मं** (प.२.४६) ति दिब्बचक्खुपरिकम्ममेव तस्स उप्पादनत्थाय परिकम्मं । उप्पन्नस्स पन वळञ्जनकाले परिकम्मं सन्धायेतं वुत्तं । सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याति ।

वितक्कत्तिकवण्णना निट्ठिता

७. पीतित्तिकवण्णना

१. पीतित्तिके **सुखसहगतं भवङ्गं उपेक्खासहगतस्स भवङ्गस्स अनन्तरपच्चयेना** (प.२.१३३) ति तदारम्मणभवङ्गमूलभवङ्गानं वसेन वुत्तं । सेसमेत्थ सब्बं पाळिवसेनेव वेदितब्बं ।

पीतित्तिकवण्णना निट्ठिता

८. दस्सनत्तिकवण्णना

१. दस्सनत्तिके (प.२.१४७) **दस्सनेन पहातब्बो रागो उप्पज्जती** ति आदीसु दस्सनेन पहातब्बो पुथुज्जनस्स उप्पज्जति । भावनाय पहातब्बो सोतापन्नस्सा पी ति एवं उपरिमस्स उपरिमस्स हेट्ठिमा हेट्ठिमा नुप्पज्जन्ती ति वेदितब्बा । दस्सनेन पहातब्बो धम्मो भावनाय पहातब्बस्स धम्मस्स एकेन पि पच्चयेन पच्चयो न होति । सेसमेत्थ पाळि अनुगन्त्वा कुसलत्तिके वुत्तलक्खणवसेनेव वेदितब्बं ।

दस्सनत्तिकवण्णना निट्ठिता

९. दस्सनेनपहातब्बत्तिकवण्णना

१. दस्सनेन पहातब्बहेतुकत्तिके (प.२.१९१) दस्सनेनपहातब्बहेतुकादीनं विभागो अट्ठकथाकण्डे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। विचिकिच्छुद्धच्चसहगतो मोहो अहेतुकत्ता ततियपदे[1] पविट्ठो। एवमेत्थ येसं दस्सनभावनाहि पहातब्बो हेतु अत्थि, ते पहातब्बहेतुका। येसं सो नत्थि B. 489 ते नेव दस्सनेन न भावनायपहातब्बहेतुका ति इमं पहातब्बहेतुकविभागं ञत्वा सेसं दस्सनेनपहातब्बत्तिके चेव कुसलत्तिके च दस्सितलक्खणानुसारेनेव वेदितब्बं।

दस्सनेनपहातब्बहेतुकत्तिकवण्णना निट्ठिता

१०. आचयगामित्तिकवण्णना

१. आचयगामित्तिके (प. २.२५२) च पटिच्चवारसंसट्ठवारेसु अनुलोमं कुसलत्तिकसदिसमेव। सेसं विस्सज्जनतो गणनतो च यथापाळिमेव निय्याति।

आचयगामित्तिकवण्णना निट्ठिता

११. सेक्खत्तिकवण्णना

१. सेक्खत्तिके (प. २.२८८) असेक्खो धम्मो सेक्खस्स धम्मस्स न केनचि पच्चयेन पच्चयो। सेक्खो असेक्खस्स अनन्तरपकतूपनिस्सयो पन होति। सेसमेत्थ यथा पाळिमेव निय्याति, तथा परित्तत्तिके।

सेक्खत्तिकवण्णना निट्ठिता

१३. परित्तारम्मणत्तिकवण्णना

१. परित्तारम्मणत्तिके (प. २.३५८) **अप्पमाणारम्मणचेतना** ति सेक्खानं गोत्रभुचेतना, पच्चवेक्खणचेतना ति पि वत्तुं वट्टति। **विपाकानं परित्तारम्मणानं** ति पटिसन्धियं कम्मं आरम्मणं कत्वा,

---
१. ततियरासि स्या.।

पवत्ते चक्खुविञ्ञाणादिवसेनरूपादि आरम्मणं, तदारम्मणवसेन जवनेन गहितपरित्तारम्मणं च आरम्मणं कत्वा उप्पन्नानं। ये पन "गोत्रभुचित्तेन नत्थि पटिसन्धी" ति वदन्ति, ते इमिना सुत्तेन पटिसेधेतब्बा । सेसमेत्थ पाळिनयेनेव वेदितब्बं ।

परित्तारम्मणत्तिकवण्णना निट्ठिता

१४. हीनत्तिकवण्णना

१. हीनत्तिको (प. २.३७६) सङ्किलिट्ठत्तिकसदिसो ।

हीनत्तिकवण्णना निट्ठिता

१५. मिच्छत्तनियतत्तिकवण्णना

१. मिच्छत्तत्तिके (प. २.३७७) मिच्छत्तनियतो सम्मत्तनियतस्स, सम्मत्तनियतो वा मिच्छत्तनियतस्स केनचि पच्चयेन पच्चयो न होति । मिच्छत्तनियतो वा सम्मत्तनियतो वा सहजाताधिपतिरहितो नाम नत्थि । सम्मत्तनियते एकन्ततो आरम्मणपुरेजातं नत्थि, मिच्छत्तनियते सिया आरम्मणपुरेजातं । अनियतं चित्तं आरब्भ नियता मिच्छादिट्ठि उप्पज्जेय्य । सेसानियतं आरब्भ नियतं नुप्पज्जति, मिच्छत्तनियतं गरुं कत्वा न कोचि धम्मो उप्पज्जति । कुसलो मिच्छत्तस्स उपनिस्सयपच्चयो न होति । सेसमेत्थ पाळियं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं ।

मिच्छत्तनियतत्तिकवण्णना निट्ठिता

१६. मग्गारम्मणत्तिकवण्णना

१. मग्गारम्मणत्तिके (प. २.४०२) पटिच्चवारस्स अनुलोमे विपाकपच्चयो नत्थि । कम्मपच्चये पि इमस्मिं तिके नानाक्खणिकं न

लब्भति, तथा उप्पन्नत्तिकअतीतत्तिकेसु । पच्चनीये **अहेतुकं मग्गारम्मणं** ति अहेतुकं मग्गारम्मणं, आवज्जनं सन्धायेतं वुत्तं । सेसमेत्थ पाळिअनुसारेनेव वेदितब्बं ।

मग्गारम्मणत्तिकवण्णना निट्ठिता

१७. उप्पन्नत्तिकवण्णना

१. उप्पन्नत्तिके (प. २.४२३) च अतीतत्तिके च पटिच्चवारादयो नत्थि, पञ्हावारमत्तमेव लब्भति । कस्मा ? पटिच्चवारादयो हि सहजातपुरेजातानञ्ञेव होन्ति । इमे च तिका अतीतानागतमिस्सका । उप्पन्नत्तिके चेत्थ अनन्तरभागिया पि पच्चया न लब्भन्ति । कस्मा ? उप्पन्नत्तिके अतीतस्स अभावतो । उप्पन्नो च अनुप्पन्नो चा ति इमे चेत्थ द्वे धम्मा उप्पन्नस्स च अनुप्पन्नस्स चा ति इमेसं द्विन्नं न केनचि पच्चयेन पच्चयो । अनुप्पन्नो च उप्पादी चा ति इमे पन द्वे उप्पन्नस्स आरम्मणूपनिस्सयवसेन द्वीहि पच्चयेहि पच्चयो । सेसमेत्थ पाळियं आगतनयेनेव वेदितब्बं । B. 490

उप्पन्नत्तिकवण्णना निट्ठिता

१८. अतीतत्तिकवण्णना

१. अतीतत्तिके (प. २. ४३१) पच्चुप्पन्नं अतीतानागतस्स, अतीतानागतं च अतीतानागतस्स न केनचि पच्चयेन पच्चयो । निब्बानं पन द्वीसु पि इमेसु तिकेसु नेव पच्चयतो न पच्चयुप्पन्नतो लब्भति । सेसमिधा पि पाळियं आगतनयेनेव वेदितब्बं ।

अतीतत्तिकवण्णना निट्ठिता

२०. अज्झत्तत्तिकवण्णना

१. अज्झत्तत्तिके (प. २. ४५६) अज्झत्तबहिद्धापदं न गहितं। अज्झत्तबहिद्धासङ्खाता हि उभो रासयो नेव एकतो पच्चया होन्ति, न पच्चयुप्पन्ना; तस्मा हत्थतले ठपितस्स सासपस्स वण्णो पि हत्थतलवण्णेन सद्धिं एकतो आरम्मणं न होती ति वेदितब्बो। यथा च अज्झत्तबहिद्धापदं, एवमेत्थ अज्झत्तारम्मणत्तिके पि अज्झत्तबहिद्धारम्मणपदं न लब्भति। सेसं यथा पाळिमेव निय्याति।

अज्झत्तत्तिकवण्णना निट्ठिता

२२. सनिदस्सनसप्पटिघत्तिकवण्णना

१. सनिदस्सनत्तिके (प. २. ४८६) पि पाळिवसेनेव अत्थो गहेतब्बो। गणनापेत्थ पाळियं आगतवारे सङ्खिपित्वा हेट्ठा वुत्तनयेनेव संसन्दनेसु संसन्दित्वा वेदितब्बा ति।

सनिदस्सनसप्पटिघत्तिकवण्णना निट्ठिता
तिकमातिकावण्णना निट्ठिता

२. दुकपट्ठानवण्णना

हेतादिगोच्छकवण्णना

१. दुकपट्ठाने पि (प. ३. ३) सब्बदुकेसु पञ्हाविस्सज्जनानि चेव गणना च पाळियं आगतनयेनेव वेदितब्बा। अपिचेत्थ सहेतुकहेतुसम्पयुत्तदुकानं विस्सज्जनं हेतुदुकविस्सज्जनसदिसं; तथा हेतुचेवसहेतूकहेतूचेवहेतुसम्पयुत्तदुकानं, तथा सप्पच्चयसङ्खतदुकानं। **इदं दुकं यथा**
B. 491 **सप्पच्चयदुकं, एवं कातब्बं** (प. ३. ६०) ति इदं यस्मा सप्पच्चयो विय अप्पच्चयेन सङ्खतो पि ,असङ्खतेन सद्धिं योजनं न लब्भति,

तस्मा वुत्तं। सारम्मणचित्तसम्पयुत्तसंसट्ठदुका पि सदिसविस्सज्जनायेव; तथा आसवओघयोगगोच्छका। एते हि तयो अञ्ञमञ्ञं सदिसविस्सज्जनायेव।

अपि च लोकियसासवसंयोजनियगन्थनियनीवरणियपरामट्ठ-सङ्किलेसिकदुका आसवविप्पयुत्तसासव संयोजनविप्युत्तसंयोजनियगन्थ-विप्पयुत्तगन्थनियनीवरणविप्पयुत्तनीवरणियपरामासविप्पयुत्तपरामट्ठकिलेस-विप्पयुत्तसङ्किलेसिकपरियापन्नसउत्तरदुका ति इमे पि दुका समाना। किलेसदुकं संयोजनदुकसदिसं। सङ्किलिट्ठकिलेससम्पयुत्तनीवरण-सम्पयुत्तदस्सनेनपहातब्बसरणदुका पि समाना। तथा किलेसाचेव सङ्किलिट्ठनीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्तकिलेसा चेव किलेससम्प-युत्तदुका। इमिना नयेन सब्बेसं अत्थतो सदिसानं दुकानं विस्सज्जनानि सदिसानेव होन्ती ति वेदितब्बानि।

सब्बस्मिं पि पन पट्ठाने केनचि विञ्ञेय्यदुकं न लब्भति। आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च, संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च, गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता च, नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च, किलेसा चेव सङ्किलिट्ठा चा ति एवरूपेसु दुकेसु विपाकपच्चयो चेव नानाक्खणिककम्म-पच्चयो च न लब्भति। न हेतुसहेतुक-नहेतुअहेतुकेसु हेतुपच्चयो नत्थि। हेतू चेव हेतुसम्पयुत्ता च, आसवा चेव आसवसम्पयुत्ता च, गन्था चेव गन्थसम्पयुत्ता चा ति इमेसु दुकेसु नहेतु-नझानमग्गा न लब्भन्ति। संयोजना चेव संयोजनसम्पयुत्ता च, नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता च, किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च, किलेसा चेव सङ्किलिट्ठा चा ति इमेसु पन विचिकिच्छुद्धच्चसहगतस्स मोहस्स वसेन नहेतुपच्चयो लब्भति; नझान-नमग्गपच्चया न लब्भन्ती ति एवं सब्बदुकेसु लब्भमाना-लब्भमानं उपपरिक्खित्वा पाळिवसेनेव वारगणना वेदितब्बा ति।

दुकपट्ठानवण्णना निट्ठिता

हेतादिगोच्छकवण्णना निट्ठिता

३. दुकतिकपट्ठानवण्णना

१. दुकतिकपट्ठाने **हेतुं कुसलं धम्मं पटिच्च हेतु कुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** (प.५.३) ति एवं पञ्हामत्तुद्धारवसेनेव सङ्खेपतो
B. 492 देसना कता। "कुसलं अलोभं पटिच्च अदोसो अमोहो" ति आदिना पन नयेन वित्थारो वत्तब्बो सिया, सो हेट्ठा दस्सितनयेन सक्का अवुत्तो पि जानितुं ति एकपदे पि एकपच्चयो वा न वुत्तो। या पनेसा सङ्खेपतो देसना कता, सा एवं कता ति वेदितब्बा।

हेतुदुकेन हि सद्धिं कुसलपदं योजेत्वा पटिच्चवारे अनुलोमस्स चेव पच्चनीयस्स च वसेन सब्बे लब्भमानकपच्चया दस्सिता, अनुलोमपच्चनीय-पच्चनीयानुलोमनया चेव सहजातवारादयो च न दस्सिता, केवलं "पटिच्चवारसदिसं येव वित्थारेतब्बं" ति वुत्तं।

पञ्हावारे पञ्हं पि अविस्सज्जेत्वा केवलं पञ्हुद्धारमत्तं कत्वा अनुलोमपच्चनीयवसेनेव लब्भमानपच्चया दस्सिता। यथा च कुसलपदं, एवं अकुसलअब्याकतपदानि पि हेतुदुकेन सद्धिं योजेत्वा हेतुकुसलदुकतिकं निद्दिसितब्बं ति वुत्तं।

ततो परं **हेतुं सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं धम्मं** ति आदिना नयेन हेतुवेदनादुकतिकादीनि एकवीसति दुकतिकानि दस्सितानि। यस्मा पन हेतु नाम सनिदस्सनसप्पटिघो अनिदस्सनसप्पटिघो वा नत्थि, तस्मा हेतुपदेन सद्धिं सनिदस्सनसप्पटिघअनिदस्सनसप्पटिघपदानि न योजितानि। एवं हेतुदुकेन सद्धिं लब्भमानकवसेन द्वावीसति तिके योजेत्वा पुन ते सहेतुकदुकादीहि सरणदुकपरियोसानेहि सब्बदुकेहि सद्धिं योजिता।

तत्थ यं यं पदं येन येन पदेन सद्धिं योजनं न गच्छति, तं तं पाळियं येव न लब्भती ति वुत्तं। एवमेत्थ एकेन दुकेन सद्धिं बावीसति तिके योजेत्वा पुन अपरेन बावीसति, अपरेन बावीसती ति पटिपाटिया दुकसते लब्भमानदुकपदेहि सद्धिं द्वावीसतितिका योजिता ति द्वावीसति-

तिके गहेत्वा दुकसते पक्खिपित्वा दुकतिकपट्ठानं नाम देसितं। तत्थ येसु येसु ठानेसु नयं दस्सेत्वा पाळिया सङ्खेपो कतो, तेसु तेसु ठानेसु दस्सितनयानुरूपेन तस्सा वित्थारो वेदितब्बो ति।

दुकतिकपट्ठानवण्णना निट्ठिता

४. तिकदुकपट्ठानवण्णना

१. तिकदुकपट्ठाने पि **कुसलं हेतुं धम्मं पटिच्च कुसलो हेतु धम्मो** B. 493
उप्पज्जति हेतुपच्चया (प.५.२८२) ति पञ्हामत्तुद्धारवसेनेव देसना कता। तत्थ यथा हेट्ठा हेतुदुकेन सद्धिं कुसलपदं योजेत्वा सब्बपच्चयवसेन सब्बवारेसु सङ्खेपतो देसना कता, एवमिध कुसलत्तिकेन सद्धिं हेतुपदं योजेत्वा सब्बपच्चयवसेन सब्बवारेसु सङ्खेपतो देसना कता। यथा च हेतुपदं, एवं नहेतुपदं पि कुसलत्तिकेन सद्धिं योजेत्वा कुसलत्तिकहेतुदुकं निट्ठापितं।

ततो परं **सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं हेतुं धम्मं** ति आदिना नयेन वेदनात्तिकहेतुदुकादीनि एकवीसति तिकदुकानि दस्सितानि।

एवं बावीसतिया तिकेहि सद्धिं हेतुदुकं योजेत्वा पुन तेहि येव सद्धिं सहेतुकदुकादयो सरणदुकपरियोसाना लब्भमानवसेन सब्बदुका योजिता। इधा पि यं यं पदं योजनं न गच्छति, तं तं पाळियं येव पटिक्खित्तं। एवं दुकसतं गहेत्वा द्वावीसतिया तिकेसु पक्खिपित्वा तिकदुकपट्ठानं नाम देसितं। तत्रा पि येन येन नयेन पाळि सङ्खित्ता, सो सो नयो वित्थारतो वेदितब्बो ति।

तिकदुकपट्ठानवण्णना निट्ठिता

५. तिकतिकपट्ठानवण्णना

१. **तिकतिकपट्ठाने** पि **कुसलं सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं धम्मं पटिच्च कुसलो सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** (प. ५.४५५) ति पञ्हुद्धारवसेनेव सङ्खेपतो देसना कता। एत्थ च कुसलत्तिकं वेदनात्तिकादीहि, वेदनात्तिकादयो च कुसलत्तिकेना ति एवं

तिकेसु येव तिका पक्खित्ता । येन येन च पदेन सद्धिं यं यं पदं योजनं न गच्छति, तं तं हापेत्वा लब्भमानवसेनेव सब्बपच्चयेसु वारा च गणननया च दस्सिता, तस्मा ते साधुकं पाळिं उपपरिक्खित्वा वेदितब्बा । यथा च कुसलत्तिकं वेदनात्तिकादीहि, वेदनात्तिकादयो च तेन सद्धिं योजेत्वा वेदितब्बा; तथा एकेकं तिकं सेसेहि । सेसा च तेहि सद्धिं योजेत्वा वेदितब्बा ति ।

तिकतिकपट्ठानवण्णना निट्ठिता

६. दुकदुकपट्ठानवण्णना

B. 494 १. **दुकदुकपट्ठानेपि हेतुसहेतुकं धम्मं पटिच्च हेतुसहेतुको धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** (प. ५.४९५) ति पञ्हुद्धारवसेनेव सङ्खेपतो देसना कता । तत्थ हेतुदुकं सहेतुकदुकादीहि, सहेतुकदुकादीनि च तेन सद्धिं योजितानि । एकेकं पन दुकं सेसेहि, सेसा च तेहि सद्धिं पटिपाटिया योजेतब्बा । इदं हि दुकदुकपट्ठानं नाम 'दुकेसुयेव दुके पक्खिपित्वा' देसितं । तेनेत्थ सब्बदुकेहि सद्धिं सब्बदुकानं योजना वेदितब्बा । पाळि पन सङ्खित्ता । येन येन च पदेन सद्धिं यं यं पदं योजनं न गच्छति, तं तं हापेत्वा व देसना कता ति ।

दुकदुकपट्ठानवण्णना निट्ठिता

१. पच्चयानुलोमपट्ठानवण्णना

एत्तवता—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव तिकं दुकं च ।
तिकं तिकं चेव, दुकं दुकं च,
छ अनुलोमम्हि, नया सुगम्भीरा ति ॥

अट्ठकथायं वुत्तगाथाय दीपिता। **धम्मानुलोमपट्ठाने** छ नया निद्दिट्ठा होन्ति। पच्चयवसेन पनेत्थ एकेकस्मिं पट्ठाने अनुलोमादयो चत्तारो चत्तारो नया ति एकेन परियायेन चतुवीसतिनयपटिमण्डितं अनुलोमपट्ठानं येव वेदितब्बं ति।

पच्चयानुलोमपट्ठानवण्णना निट्ठिता

२. पच्चनीयपट्ठानवण्णना

इदानि कुसलादीनं पदानं पटिक्खेपवसेन धम्मानं पच्चनीयताय लद्धनामं **पच्चनीयपट्ठानं** दस्सेतुं **नकुसलं धम्मं पटिच्च नकुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** ति आदि आरद्धं। तत्थ **नकुसलं धम्मं पटिच्चा** ति कुसलस्स पच्चयभावं वारेति। **नकुसलो धम्मो उप्पज्जती** ति कुसलस्स उप्पत्तिं वारेति, तस्मा "अकुसलाब्याकतं एकं खन्धं पटिच्च अकुसलाब्याकता तयो खन्धा चित्तसमुट्ठानं च रूपं" ति एवमादिना नयेनेत्थ पञ्हं विस्सज्जितब्बं। तस्मिं तस्मिं पच्चये लद्धगणना पन पाळियं वुत्तायेव। ये पि वारा सदिसविस्सज्जना, ते पि तत्थेव दस्सिता। तस्मा सब्बमेत्थ हेट्ठा वुत्तनयानुसारेन पाळिं उपपरिक्खित्वा B. 495 वेदितब्बं। यथा चेत्थ, एवं दुकपट्ठाने, दुकतिकपट्ठाने, तिकदुकपट्ठाने तिकतिकपट्ठाने, दुकदुकपट्ठाने च।

एत्तावता—

तिकं च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकं चेव, तिकं दुकं च।
तिकं तिकं चेव, दुकं दुकं च,
छ पच्चनीयम्हि, नया सुगम्भीरा ति॥—

अट्ठकथायं वुत्तगाथाय दीपिता। **धम्मपच्चनीयपट्ठाने** छ नया निद्दिट्ठा होन्ति। पच्चयवसेन पनेत्थ एकेकस्मिं पट्ठाने अनुलोमादयो चत्तारो चत्तारो नया ति एकेन परियायेन चतुवीसतिनयपटिमण्डितं पच्चनीयपट्ठानञ्ञेव वेदितब्बं ति।

पच्चनीयपट्ठानवण्णना निट्ठिता

(३) अनुलोमपच्चनीयपट्ठानवण्णना

इदानि कुसलादीसु धम्मेसु पच्चयधम्मं अप्पटिक्खिपित्वा पच्चयुप्पन्नस्स कुसलादिभावपटिक्खेपवसेन धम्मानं अनुलोमपच्चनीयताय लद्धनामं **अनुलोमपच्चनीयपट्ठानं** दस्सेतुं **कुसलं धम्मं पटिच्च नकुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** ति आदि आरद्धं। तत्थ **कुसलं धम्मं पटिच्चा** ति कुसलस्स पच्चयभावं अनुजानाति। **नकुसलो धम्मो उप्पज्जती** ति कुसलस्सेव उप्पत्तिं वारेति। तस्मा "कुसले खन्धे पटिच्च चित्तसमुट्ठानं रूपं" ति आदिना नयेन विस्सज्जनं दस्सितं, तं सब्बं पाळिं ओलोकेत्वा साधुकं सल्लक्खेतब्बं। यम्पि येन सदिसं, यञ्च यत्थ लब्भति, या च येसं विस्सज्जनानं येसु पच्चयेसु गणनपरिच्छेदो, सो सब्बो पाळियं दस्सितो, तस्मा पाळियेव एत्थ अत्थो। यथा चेत्थ, एवं दुकपट्ठानादीसुपी ति।

एत्तावता—

तिकञ्च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकञ्चेव तिकं दुकञ्च।
तिकं तिकञ्चेव दुकं दुकञ्च,
छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा ति॥ –

B. 496 अट्ठकथायं वुत्तगाथाय दीपिता **धम्मानुलोमपच्चनीयपट्ठाने** छ नया निद्दिट्ठा होन्ति। पच्चयवसेन पनेत्थ एकेकस्मिं पट्ठाने अनुलोमादयो चत्तारो चत्तारो नया ति एकेन परियायेन चतुवीसति नयपतिमण्डितं अनुलोमपच्चनीयपट्ठानञ्जेव वेदितब्बं ति।

अनुलोमपच्चनीयपट्ठानवण्णना निट्ठिता

(४) पच्चनीयानुलोमपट्ठानवण्णना

इदानि कुसलादीसु धम्मेसु पच्चयधम्मं पटिक्खिपित्वा पच्चयुप्पन्नस्स कुसलादिभावं अप्पटिक्खेपवसेन धम्मानं पच्चनीयानुलोमताय लद्धनामं **पच्चनीयानुलोमपट्ठानं** दस्सेतुं **नकुसलं धम्मं पटिच्च**

अकुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया ति आदि आरद्धं । तत्थ **नकुसलं धम्मं पटिच्चा** ति कुसलस्स पच्चयभावं वारेति । **अकुसलो धम्मो उप्पज्जती** ति अकुसलस्स उप्पत्तिं अनुजानाति । नकुसलञ्हि अकुसलं अब्याकतं वा, तञ्च सहजातपच्चयं कत्वा उप्पज्जमानो कुसलो नाम नत्थि, तस्मा अकुसलाब्याकतवसेन देसना कता । तत्थ "अकुसलं एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा" ति एवं नकुसलं धम्मं पटिच्च विस्सज्जनं वेदितब्बं । **अब्याकतो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया** ति अयं पन पञ्हा "विपाकाब्याकतं किरियाब्याकतं एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा चित्तसमुट्ठानञ्च रूपं" ति विस्सज्जितो व । इति सब्बपञ्हेसु अविस्सज्जितस्स अत्थानुरूपं विस्सज्जितस्स च पाळि आगतमेव विस्सज्जनं । एकेकस्मिञ्च तिकदुके वारप्पभेदपच्चयगणनविधानं सब्बं हेट्ठा वुत्तनयानुसारेनेव वेदितब्बं ।

एत्तावता च—

तिकञ्च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकं तिकञ्चेव तिकं दुकञ्च ।
तिकं तिकञ्चेव दुकं दुकञ्च,
छ पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा ति॥—

अट्ठकथायं वुत्तगाथाय दीपिता । **धम्मपच्चनीयानुलोमपट्ठाने** छ नया निद्दिट्ठा होन्ति । पच्चयवसेन पनेत्थ एकेकस्मिं पट्ठाने अनुलोमादयो चत्तारो चत्तारो नया ति एकेन परियायेन चतुवीसतिनयपटिमण्डितं पच्चनीयानुलोमपट्ठानञ्ञेव वेदितब्बं ।

पच्चनीयानुलोमपट्ठानवण्णना निट्ठिता

पच्छिमिका कथा

एवं धम्मानुलोमादिवसेन चतूसु वारेसु एकेकस्मिं चतुवीसतिया B. 497
चतुवीसतिया नयानं वसेन छन्नवुतिनया होन्ति । तत्थ पच्चयनये अग्गहेत्वा एकेकस्मिं पट्ठाने तिकदुकादीनञ्ञेव छन्नं छन्नं नयानं वसेनेतं

चतुवीसतिनयपटिमण्डितं **समन्तपट्ठानमहापकरणं** वेदितब्बं। केचि पन 'कुसलारम्मणो धम्मो अकुसलारम्मणो धम्मो" ति आदिना नयेन आरम्मणमातिकं नाम ठपेत्वा" कुसलारम्मणो धम्मो कुसलारम्मणस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो "ति आदिना नयेन आरम्मणपट्ठानं नाम दस्सेत्वा अपरं 'पि फस्सादीनं वसेन पि फस्सपट्ठानं नाम उद्धरित्वा दस्सेन्ति। तं नेव पाळियं न अट्ठकथासु सन्दिस्सती ति इध न विचारितं। सङ्गीति-आरुळ्हपाळिवसेनेव पनेत्थ वण्णना कता ति वेदितब्बा।

एत्तावता च—

सम्मूळ्हा यत्थ पजा, तन्ताकुलादिभावमापन्ना।
नेकविधदुक्खगहनं, संसारं नातिवत्तन्ति॥
पच्चयभेदे कुसलो, लोके गरुतम्पि पच्चयाकारं।
अतिनिपुणगम्भीरं, जवनभूमिं बुद्धञाणस्स॥
कुसलादिधम्मभेदं, निस्साय नयेहि विविधगणनेहि।
वित्थारेन्तो सत्तम-मभिधम्मप्पकरणं सत्था॥
सुविहितसन्निट्ठानो, पट्ठानं नाम यं पकासेसि।
सद्धाय समारद्धा, या अट्ठकथा मया तस्स॥
आचरियानं वादं, अविहाय विभज्जवादिसिस्सानं।
अतिबहुविधन्तराये, लोकम्हि अनन्तरायेन॥
सा एवं[1] अज्ज कता,[2] चुद्दसमत्तेहि भाणवारेहि।
अत्थं पकासयन्ती, पट्ठानवरस्स सकलस्स॥
सन्निट्ठानं पत्ता, यथेव निट्ठं तथा बहुजनस्स।
सम्पापुणन्तु सीघं, कल्याणा सब्बसङ्कप्पा॥

B. 498 एत्तावता—

सत्तप्पकरणं नाथो, अभिधम्ममदेसयि।
देवातिदेवो देवानं, देवलोकम्हि यं पुरे॥

१. एसा स्या.। २. यथा स्या.।

तस्स अट्ठकथा एसा, सकलस्सा पि निट्ठिता ।
चिरट्ठितत्थं धम्मस्स, निट्ठपेन्तेन तं मया ॥
यं पत्तं कुसलं तस्स, आनुभावेन पाणिनो ।
सब्बे सद्धम्मराजस्स, ञत्वा धम्मं सुखावहं ॥
पापुणन्तु विसुद्धाय, सुखाय पटिपत्तिया ।
असोकमनुपायासं, निब्बाणसुखमुत्तमं ॥
चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो, धम्मे होन्तु सगारवा ।
सब्बे पि सत्ता कालेन, सम्मा देवो पवस्सतु ॥
यथा रक्खिंसु पोराणा, सुराजानो तथेविमं ।
राजा रक्खतु धम्मेन, अत्तनो व पजं पजं ति ।

निगमनकथा

परमविसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियपटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवादि- B. 499
गुणसमुदयसमुदितेन सकसमयसमयन्तरगहणज्झोगाहणसमत्थेन पञ्ञावेय्यत्तियसमन्नागतेन तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहतञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनितसुखविनिग्गतमधुरोदारवचनलावण्णयुत्तेन युत्तमुत्तवादिना वादीवरेन महाकविना पभिन्नपटिसम्भिदापरिवारे छळभिञ्ञादिप्पभेदगुणपटिमण्डिते उत्तरिमनुस्सधम्मे सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं थेरानं महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन विपुलविसुद्धबुद्धिना **बुद्धघोसो** ति गरूहि गहितनामधेय्येन थेरेन कता अयं सकलस्स पि अभिधम्मपिटकस्स अट्ठकथा—

ताव तिट्ठतु लोकस्मिं, लोकनित्थरणेसिनं ।
दस्सेन्ती कुलपुत्तानं, नयं पञ्ञाविसुद्धिया ॥
याव बुद्धा ति नामं पि, सुद्धचित्तस्स तादिनो ।
लोकम्हि लोकजेट्ठस्स, पवत्तति महेसिनो ति ॥

पट्ठान-अट्ठकथा निट्ठिता
पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा निट्ठिता

समत्ता च अभिधम्मपिटक-अट्ठकथा ।

पञ्चप्पकरणअट्ठकथा

यमक-अट्ठकथा

सद्दानुक्कमणिका

आ

इ

उ

यमकट्ठकथा-सद्दानुक्कमणिका निट्ठिता

पट्ठान-अट्ठकथा

सद्दानुक्कमणिका

व

सद्दानुक्कमणिका समत्ता

उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी
पुस्तकालय
ग्रन्थ आ० सं० 4526
संस्कृत भवनम् लखनऊ

25+½16